समालोचनार्थ

सम्पादक.

" अनेकान्त "

देहली।

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थ-सूची

[भाग ३]

[जयपुर के श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान बधीचन्दजी एवं दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियों के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची]

सम्पादक :—

कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम. ए., शास्त्री

अनूपचन्द न्यायतीर्थ
साहित्यरत्न,

प्रकाशक :—

बधीचन्द गंगवाल

मन्त्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर पार्क रोड़, जयपुर.

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर पार्क रोड, जयपुर (राजस्थान)

२. मैनेजर श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)

卐

प्रथम संस्करण
५०० प्रति

वीर निर्वाण संवत् २४८३
वि० सं० २०१४
अगस्त १९५७

मूल्य
७)

卐

मुद्रक :—
भँवरलाल न्यायतीर्थ,
श्री वीर प्रेस, जयपुर।

★ विषय सूची ★

क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से
शीघ्र प्रकाशित होनें वाली पुस्तकें

* *
*

१. प्रद्युम्नचरित :-

हिन्दी भाषा की एक अत्यधिक प्राचीन रचना जिसे कवि सधारु ने सवत १४११ (सन् १३५४) मे समाप्त किया था।

२. सदंसणचरिउ :-

अपभ्रंश भाषा का एक महत्त्वपूर्ण काव्य जो महाकवि नयनन्दि द्वारा सवत ११०० (सन १०४३) में लिखा गया था।

३. प्राचीन हिन्दी जैन पद संग्रह :-

६० से भी अधिक कवियों द्वारा रचे हुये २५०० हिन्दी पदों का अपूर्व सग्रह।

४. राजस्थान के जैन मूर्त्ति लेख एवं शिलालेख :

राजस्थान के १००० से अधिक प्राचीन मूर्त्तिलेखों एव शिलालेखों का सचित्र सग्रह।

५. हिन्दी के नये साहित्य की खोज :- [राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों से]

१४वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक रचित हिन्दी की अज्ञात एव अप्रकाशित रचनाओं का विस्तृत परिचय।

जैन शास्त्र-भण्डारों के ग्रन्थों के नीचे ऊपर लगाये जाने वाले कलात्मक पुट्ठों के चित्र—

जयपुर के चौधरियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक कलात्मक पुट्ठा
जिस पर चांदी के तारों से काम किया गया है।

जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत महा पं० टोडरमलजी द्वारा लिखित 'मोक्षमार्ग प्रकाश' का चित्र।

जयपुर के बैराठियों मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक पुट्ठा—
जिस पर खिले हुए फूलों का जाल बिछा हुआ है।

प्रकाशकीय

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली बात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान बीन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग में जयपुर के दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एवं आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार में संग्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में भी प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

इस तीसरे भाग में निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमाबाद, बसवा, करौली, बयाना आदि स्थानों के करीब ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग में प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एवं अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद संग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनायें, महाकवि नयनन्दि कृत सुदंसणचरिउ एवं राजस्थान के जैन मूर्त्तिलेख एवं शिलालेख आदि पुस्तकें प्रायः तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एवं जैनेतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन में जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचियां बनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से बन्द पडे रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सकें। यहाँ

हम समाज से एक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि राजस्थान अथवा अन्य स्थानों में प्राचीन शास्त्र भण्डार हों तो वे हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे हम वहां के भण्डारों की ग्रन्थ सूची तैयार करवा सकें। तथा उसे प्रकाश में ला सकें।

क्षेत्र के सीमित साधनों को देखते हुये साहित्य प्रकाशन का भारी कार्य जल्दी से नहीं हो रहा है इसका हमें भी दुःख है लेकिन भविष्य में यही आशा की जाती है कि इस कार्य में और भी तेजी आवेगी और हम अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित कराने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त में हम बधीचन्दजी एवं ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के व्यवस्थापकों को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने हमें शास्त्रों की सूची बनाने एवं समय समय पर ग्रन्थ देखने की पूरी सुविधाएं प्रदान की है।

जयपुर
ता० १५-६-५७

बधीचन्द गंगवाल

प्रस्तावना

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों में होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी बड़ी पदवियां देकर सम्मानित किया। अपनी अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर विशेषतः जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा का महत्त्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया। किन्तु इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवायें की हैं और इस दिशा में ब्राह्मण परिवारों की सेवाओं से भी अधिक जैन यतियों एवं गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवायी गयी तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों में विराजमान की गयी। जन साधारण के लिये नये नये ग्रंथों की उपलब्धि की गयी, प्राचीन एवं अनुपलब्ध साहित्य का संग्रह किया गया तथा जीर्ण एवं शीर्ण ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। उधर साहित्यिकों ने भी अपना जीवन साहित्य सेवा में होम दिया। दिन रात वे इसी कार्य में जुटे रहे। उनको अपने खान-पान एवं रहन-सहन की कुछ भी चिन्ता न थी। महापंडित टोडरमलजी के सम्बन्ध में तो यह किम्वदन्ती है कि साहित्य-निर्माण में व्यस्त रहने के कारण ६ मास तक उनके भोजन में नमक नहीं डाला गया किन्तु इसका उनको पता भी न लगा। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिये आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यसेवी जो अधिक विद्वान् नहीं थे वे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां करके ही साहित्य सेवा का महान पुण्य उपार्जन करते थे। राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों में ऐसे साहित्य-सेवियों के हजारों शास्त्र संग्रहीत हैं। विज्ञान के इस स्वर्णयुग में भी हम प्रकाशित ग्रंथों को शास्त्र-भण्डारों में इसलिये संग्रह करना नहीं चाहते कि उनका स्वाध्याय करने वाला कोई नहीं है किन्तु हमारे पूर्वजों ने इन शास्त्र भण्डारों में शास्त्रों का संग्रह केवल एक मात्र साहित्य सेवा के आधार पर किया था न कि स्वाध्याय करने वालों की संख्या को देख कर। क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज इन शास्त्र भण्डारों में इतने वर्षों के पश्चात् भी हमें हजारों की संख्या में हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत किये हुये नहीं मिलते।

जैन संघ की इस अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गांवों, कस्बों एवं नगरों में ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया। कुछ स्थानों के भण्डार भट्टारकों, यतियों एवं पांड्यों के अधिकार में रहे। ऐसे भण्डार श्वेताम्बर जैन समाज में अधिक हैं। राजस्थान में आज भी करीब ३०० गांव, कस्बे तथा नगर आदि होंगे जहाँ जैन शास्त्र संग्रहालय मिलते हैं। यह तीन सौ की संख्या स्थानों की संख्या है भण्डारों की नहीं। भण्डार तो किसी एक स्थान में दो तीन से लेकर २५-३० तक पाये जाते हैं। जयपुर में ३० से अधिक भण्डार हैं, पाटन में बीस से अधिक भण्डार हैं तथा बीकानेर आदि स्थानों में दस पन्द्रह के आस पास होंगे। सभी भण्डारों में शास्त्रों की संख्या भी एक सी नहीं है। यदि किसी किसी भण्डार में पन्द्रह हजार तक ग्रन्थ हैं तो किसी में दो सौ तीन सौ भी हैं। भण्डारों की आकार प्राकार के साथ साथ उनका महत्त्व भी अनेक दृष्टियों से भिन्न भिन्न है। यदि किसी भण्डार में प्राचीन प्रतियों का अधिक संग्रह है तो दूसरे भण्डार में किसी भाषा विशेष के ग्रंथों का अधिक संग्रह है। यदि किसी भण्डार में सैद्धान्तिक एवं धार्मिक ग्रन्थों का अधिक संग्रह है तो किसी भण्डार में काव्य, नाटक, रासा, व्याकरण, ज्योतिष आदि लौकिक साहित्य का अधिक संग्रह है। इनके अतिरिक्त किसी किसी भण्डार में जैनेतर साहित्य का भी पर्याप्त संग्रह मिलता है।

साहित्य संग्रह की इस दिशा में राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, अजमेर आदि स्थानों के भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय-वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों में, ताडपत्र, कपडा, और कागज इन तीनों पर ही ग्रंथ मिलते हैं किन्तु ताडपत्र के ग्रंथ तो जैसलमेर के भण्डारों में ही मुख्यतया संग्रहीत हैं अन्य स्थानों में उनकी संख्या नाम मात्र की है। कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम संख्या में मिलते हैं। अभी जयपुर के पार्श्वनाथ ग्रंथ भण्डार में कपड़े पर लिखा हुआ संवत् १५१६ का एक ग्रंथ मिला है। इसी तरह के ग्रंथ अन्य भण्डारों में भी मिलते हैं लेकिन उनकी संख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक संख्या कागज पर लिखे हुये ग्रंथों की है जो सभी भण्डारों में मिलते हैं तथा जो १३ वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। जयपुर के एक भण्डार में संवत् १३१६ (सन् १२६२) का एक ग्रंथ कागज पर लिखा हुआ सुरक्षित है।

यद्यपि जयपुर नगर को बसे हुये करीब २२५ वर्ष हुये हैं किन्तु यहाँ के शास्त्र-भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहां के प्रायः प्रत्येक मन्दिर एवं चैत्यालय में शास्त्र संग्रह किया हुआ मिलता है किन्तु आमेर शास्त्र भण्डार, बड़े मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पांडे लूणकरणजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, गोधों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पार्श्वनाथ के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लश्कर के मन्दिर

का शास्त्र भण्डार, छोटे दीवान जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, संघीजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, छाबड़ों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, जोबनेर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, नया मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, भाषाओं के महत्त्व-पूर्ण साहित्य का संग्रह है। उक्त भण्डारों की प्रायः सभी की ग्रंथ सूचियां तैय्यार की जा चुकी हैं जिससे पता चलता है कि इन भण्डारों में कितना अपार साहित्य संकलित किया हुआ है। राजस्थान के ग्रंथ भण्डारों के छोटे से अनुभव के आधार पर यह लिखा जा सकता है कि अपभ्रंश एवं हिन्दी की विभिन्न धाराओं का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संग्रहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवतः नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां प्रकाशित हो जाने के पश्चात् विद्वानों को इस दिशा में अधिक जानकारी मिल सकेगी।

ग्रंथ सूची का तृतीय भाग विद्वानों के समक्ष है। इसमें जयपुर के दो प्रसिद्ध भण्डार—बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार एवं ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—के ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय उपस्थित किया गया है। ये दोनों भण्डार नगर के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भण्डारों में से है।

बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

बधीचन्दजी का दि० जैन मन्दिर जयपुर के जैन पञ्चायती मन्दिरों में से एक मन्दिर है। यह मन्दिर गुमानपन्थ के आम्नाय का है। गुमानीरामजी महापंडित टोडरमलजी के सुपुत्र थे जिन्होंने अपना अलग ही गुमानपन्थ चलाया था। यह पन्थ दि० जैनों के तेरहपन्थ से भी अधिक सुधारक है तथा भट्टारकों द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। यह विशाल एवं कलापूर्ण मन्दिर नगर के जौंहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। काफी समय तक यह मन्दिर पं० टोडरमलजी, गुमानी-रामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का केन्द्रस्थल रहा है। पं० टोडरमलजी ने यहीं बैठकर गोमट्टसार, आत्मानु-शासन जैसे महान् ग्रंथों की हिन्दी भाषा एवं मोक्षमार्गप्रकाश जैसे महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक ग्रन्थ की रचना की थी। आज भी इस भण्डार में मोक्षमार्गप्रकाश, आत्मानुशासन एवं गोमट्टसार भाषा की मूल प्रतियां जिनको पंडितजी ने अपने हाथों से लिखा था, संग्रहीत हैं।

पञ्चायती मन्दिर होने के कारण तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक प्रगतियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश हिन्दी, राजस्थानी एवं ढूंढारी भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम संग्रह किया हुआ मिलता है। इन हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या १२७८ है। इनमें १६२ गुटके तथा शेष १११६ ग्रंथ हैं। हस्तलिखित ग्रंथ सभी विषय के हैं जिनमें सिद्धान्त, धर्म एवं आचार शास्त्र, अध्यात्म, पूजा, स्तोत्र आदि विषयों के अतिरिक्त, काव्य, चरित, पुराण, कथा, नीतिशास्त्र, सुभाषित आदि विषयों पर भी अच्छा संग्रह है। लेखक प्रशस्ति संग्रह में ४० लेखक प्रशस्तियां इसी भण्डार के ग्रन्थों पर से दी गयी हैं। इनसे पता चलता है कि भण्डार में

१५ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक की प्रतियों का अच्छा संग्रह है। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। हेमराज कृत प्रवचनसार भाषा एवं गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा, बनारसीदास का समयसार नाटक, भ० शुभचन्द्र का चारित्रशुद्धि विधान, पं० लालू का जिणदत्तचरित्र, पं० टोडरमलजी द्वारा रचित गोमट्टसार भाषा, आदि कितने ही ग्रन्थों की तो ऐसी प्रतियां हैं जो अपने अस्तित्व के कुछ वर्षों पश्चात् की ही लिखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी हैं जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द्र की आत्मानुशासन टीका, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामीचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदय नाटक, सुखदेव कृत वणिकप्रिया, वंशीधर की दस्तूरमालिका, पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि आदि उल्लेखनीय है।

भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाणकाव्य की वृत्ति की है जो संवत् १४८१ की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है। तथा सबसे नवीन प्रति सवत् १६८७ की अढाई द्वीप पूजा की है। इस प्रकार गत ५०० वर्षों में लिखा हुआ साहित्य का यहाँ उत्तम संग्रह है। भण्डार में मुख्य रूप में आमेर एवं सांगानेर इन दो नगरों से आये हुये ग्रन्थ हैं जो अपने २ समय में जैनों के केन्द्र थे।

ठोलियों के दि० जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार भी ठोलियों के दि० जैन मन्दिर में स्थित है। यह मन्दिर भी जयपुर के सुन्दर एवं विशाल मन्दिरों में से एक है। मन्दिर में विराजमान बिल्लोरी पाषाण की सुन्दर मूर्त्तियां दर्शनार्थियों के लिये विशेष आकर्षण की वस्तु है। जयपुर के किसी ठोलिया परिवार द्वारा निर्मित होने के कारण यह मन्दिर ठोलियों के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर पञ्चायती मन्दिर तो नहीं है किन्तु नगर के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। यहाँ का शास्त्र भण्डार एक नवीन एवं भव्य कमरे में विराजमान है। शास्त्र भण्डार के सभी ग्रन्थ वेष्टनों में बंधे हुये हैं एवं पूर्ण व्यवस्था के साथ रखे हुये हैं जिससे आवश्यकता पडने पर उन्हें सरलता से निकाला जा सकता है। पहिले गुटकों की कोई व्यवस्था नहीं थी तथा न उनकी सूची ही बनी हुई थी किन्तु अब उनको भी व्यवस्थित रूप से रख दिया गया है।

ग्रन्थ भण्डार में ५१५ ग्रन्थ तथा १४३ गुटके हैं। यहाँ पर प्राचीन एवं नवीन दोनों ही प्रकार की प्रतियों का संग्रह है जिससे पता चलता है कि भण्डार के व्यवस्थापकों का ध्यान सदैव ही हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की ओर रहा है। इस भण्डार में ऐसा अच्छा संग्रह मिल जावेगा ऐसी आशा सूची बनाने के प्रारम्भ में नहीं थी। किन्तु वास्तव में देखा जावे तो संग्रह अधिक न होने पर भी महत्त्वपूर्ण है और भाषा साहित्य के इतिहास की कितनी ही कडियां जोडने वाला है। यहाँ पर मुख्यतः संस्कृत और हिन्दी इन दो भाषाओं के ग्रन्थों का ही अधिक संग्रह है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो संवत् १४१६ (सन् १३५६) की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त योगीन्द्रदेव

का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एवं पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतियां उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर पूजापाठ संग्रह का एक गुटका है जिसमें ४७ पूजाओं का संग्रह है। गुटका प्राचीन है। प्रत्येक पूजा का मण्डल चित्र दिया हुआ है। जो रंगीन एवं सुन्दर है। इस सचित्र ग्रन्थ के अतिरिक्त वेष्टनों के २ पुट्ठे ऐसे मिले हैं जिनमें से एक पर तो २४ तीर्थंकरों के चित्र अंकित हैं तथा दूसरे पट्ठे पर केवल बेल बूटे हैं।

भण्डार में संग्रहीत गुटके बहुत महत्त्व के हैं। हिन्दी की अधिकांश सामग्री इन्हीं गुटकों में प्राप्त हुई है। भ० शुभचन्द्र, मेघराज, रघुनाथ, ब्रह्म जिनदास आदि कवियों की कितनी ही नवीन रचनायें प्राप्त हुई हैं जिनको हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त भण्डार में २ रासो मिले है जो ऐतिहासिक हैं तथा दिगम्बर भण्डारों में उपलब्ध होने वाले ऐसे साहित्य में सर्वप्रथम रासो हैं। इनमें एक पर्वत पाटणी का रासो है जो १६ वीं शताब्दी में होने वाले पर्वत पाटणी के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरा कृष्णदास बघेरवाल का रासो है जो कृष्णदास के जीवन पर तथा उनके द्वारा किये गये चान्दखेडी में प्रतिष्ठा महोत्सव पर विस्तृत प्रकाश डालता है। इसी प्रकार संवत् १७३३ में लिखित एक भट्टारक पट्टावलि भी प्राप्त हुई है जो हिन्दी में इस प्रकार की प्रथम पट्टावलि है तथा भट्टारक परम्परा पर प्रकाश डालती है।

भण्डारों में उपलब्ध नवीन साहित्य—

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है दोनों शास्त्र भण्डार ही हिन्दी रचनाओं के संग्रह के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। १४ वीं शताब्दी से लेकर २० वीं शताब्दी तक जैन एवं जैनेतर विद्वानों द्वारा निर्मित हिन्दी साहित्य का यहां अच्छा संग्रह है। हिन्दी साहित्य की नवीन कृतियों में कवि सुधारु का प्रद्युम्न चरित, (सं० १४११) कवि वीर कृत मणिहार गीत, आज्ञासुन्दर की विद्याविलास चौपई (१५१६), मुनि कनकामर की ग्यारहप्रतिमावर्णन, पद्मनाभ कृत डूंगर की बावनी (१५४३), विनयसमुद्र कृत विक्रमप्रबन्ध रास (१५७३) छीहल का उदर गीत एवं पद, ब्रह्म जिनदास का आदिनाथस्तवन, ब्र० कामराज कृत त्रेसठ शलाकापुरुषवर्णन, कनकसोम की जइतपदवेलि (१६२५), कुमदचन्द्र एवं पूनो की पद एवं विनतियां आदि उल्लेखनीय हैं। ये १४ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी के कुछ कवि हैं जिनकी रचनायें दोनों भण्डारों में प्राप्त हुई हैं। इसी प्रकार १७ वीं शताब्दी से १६ वीं शताब्दी के कवियों की रचनाओं में ब्र० गुलाल की विवेक चौपई, उपाध्याय जयसागर की जिनकुशलसूरि स्तुति, जिनरंगसूरि की प्रबोधबावनी एवं प्रस्ताविक दोहा, ब्र० ज्ञानसागर का व्रतकथाकोश, टोडर कवि के पद, पदमराज का राजुल का बारहमासा एवं पार्श्वनाथस्तवन, नन्द की यशोधर चौपई (१६७०), पोपटशाह कृत मदनमंजरी कथा प्रबन्ध, बनारसीदास कृत मांझा, मनोहर कवि की चिन्तामणि मनबावनी, लघु बावनी एवं सुगुरुसीख, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदयनाटक, मुनि मेघराज कृत संयम प्रवहणगीत (१६६८), रूपचन्द का अध्यात्म सवैय्या, भ० शुभचन्द्र कृत तत्त्वसार-

दोहा; समयसुन्दर का आत्मउपदेशगीत, क्षमाबत्तीसी एवं दानशीलसंवाद; सुखदेव कृत वणिकप्रिया, (१७१७) हर्षकीर्त्ति का नेमिनाथराजुलगीत, नेमीश्वरगीत, एवं मोरडा; अजयराज कृत नेमिनाथचरित (१७९३) एवं यशोधर चौपई (१७९२); कनककीर्त्ति का मेघकुमारगीत, गोपालदास का प्रमादीगीत एवं यदुरासो; थानसिंह का रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं सुबुद्धिप्रकाश (१८४७) दादूदयाल के दोहे, दूलह कवि का कविकुलकण्ठाभरण; नगरीदास का इश्कचिमन: एवं वैनविलास, वंशीधर कृत दस्तूरमालिका; भगवानदास के पद; मनराम द्वारा रचित अक्षरमाला, मनरामविलास, एवं धर्मसहेली; मुनि महेस की अक्षरबत्तीसी, रघुनाथ का गणभेद, ज्ञानसार, नित्यविहार एवं प्रसंगसार, श्रुतसागर का षट्मालवर्णन (१८२१); हेमराज कृत दोहाशतक; केशरीसिंह का वर्द्धमानपुराण (१८७३) चंपाराम का धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार, एवं भद्रबाहु-चरित्र, बाबा दुलीचन्द कृत धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रस एवं अलंकार अर्थशास्त्र, इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं। इनमें से बहुत सी तो ऐसी रचनायें हैं। जो सम्भवत: सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयी होंगी।

सचित्र साहित्य—

दोनों भण्डारों में हिन्दी एवं अपभ्रंश का महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध होने हुये सचित्र साहित्य का न मिलना जैन श्रावकों एवं विद्वानों की इस ओर उदासीनता प्रगट करती है। किन्तु फिर भी ठोलियों के मन्दिर में एक पूजा संग्रह प्राप्त हुआ है जो सचित्र है। इसमें पूजा के विधानों के मंडल चित्रित किये हुये हैं। चित्र सभी रंगीन है एवं कला पूर्ण भी हैं। इसी प्रकार एक शास्त्र के पुट्ठे पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र दिये हुये हैं। सभी रंगीन एवं कला पूर्ण हैं। यह पुट्ठा १६ वीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रन्थ—

इस दृष्टि से बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार उल्लेखनीय है। यहा पर महा पंडित टोडरमलजी द्वारा लिखित मोक्षमार्गप्रकाश एवं आत्मानुशासन भाषा एवं गोमट्टसार भाषा की प्रतियां सुरक्षित हैं। ये प्रतियां साहित्यिक दृष्टि से नहीं किन्तु इतिहास एवं पुरातत्त्व की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

विशाल पद साहित्य—

दोनों भण्डारों के गुटकों में हिन्दी कवियों द्वारा रचित पदों का विशाल संग्रह है। इन कवियों की संख्या ६० है जिनमें कबीरदास, वृन्द, सुन्दर, सूरदास आदि कुछ कवियों के अतिरिक्त शेष सभी जैन कवि हैं। इनमें अजयराज, छीहल, जगजीवन, जगतराम, मनराम, रूपचन्द, हर्षकीर्त्ति आदि के नाम उल्लेखनीय है। इन कवियों द्वारा रचित हिन्दी पद भाषा एवं भाव की दृष्टि से अच्छे हैं तथा जिनका प्रकाश में आना आवश्यक है। क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से ऐसे पद एवं भजनों का संग्रह

किया जा रहा है और शीघ्र ही करीब २५०० पदों का एक वृहद् संग्रह प्रकाशित करने का विचार है। जिससे कम से कम यह तो पता चल सकेगा कि जैन विद्वानों ने इस दिशा में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

गुटकों का महत्त्व—

वास्तव में यदि देखा जावे तो जितना भी महत्त्वपूर्ण एवं अनुपलब्ध साहित्य मिलता है उसका अधिकांश भाग इन्हीं गुटकों में संग्रहीत किया हुआ है। जैन श्रावकों को गुटकों में छोटी छोटी रचनायें संग्रहीत करवाने का बडा चाव था। कभी कभी तो वे स्वयं ही संग्रह कर लिया करते थे और कभी अन्य लेखकों के द्वारा संग्रह करवाते थे। इन दोनों भण्डारों में भी जितना हिन्दी का नवीन साहित्य मिला है उसका आधे से अधिक भाग इन्हीं गुटकों में संग्रह किया हुआ है। दोनों भण्डारों में गुटकों की संख्या ३०५ है। यद्यपि इन गुटकों में सर्वसाधारण के काम आने वाले स्तोत्र, पूजायें, कथायें आदि की ही अधिक संख्या है किन्तु महत्त्वपूर्ण साहित्य भी इन्हीं गुटकों में उपलब्ध होता है। गुटके सभी साइज के मिलते हैं। यदि किसी गुटके में १८-२० पत्र ही हैं तो किसी किसी गुटके में ४००-५०० पत्र तक हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के एक गुटके में ६५४ पत्र है जिनमें ४७ पूजाओं का संग्रह किया हुआ है। कुछ गुटकों में तो लेखनकाल उसके अन्त में दिया हुआ होता है किन्तु कुछ गुटकों में बीच बीच में भी लेखन-काल दे दिया जाता है अर्थात् जैसे जैसे पाठ समाप्त होते जाते हैं वैसे वैसे लेखनकाल भी दे दिया जाता है।

इन गुटकों में साहित्यिक एवं धार्मिक रचनाओं के अतिरिक्त आयुर्वेद के नुसखे भी बहुत मिलते हैं। यदि इन्ही नुसखों के आधार पर कोई खोज की जावे तो वह आयुर्वेदिक साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण चीज प्रमाणित हो सकती है। ये नुसखे हिन्दी भाषा में अनुभव के आधार पर लिखे हुये हैं।

आयुर्वेदिक साहित्य के अतिरिक्त किसी किसी गुटके में ऐतिहासिक सामग्री भी मिल जाती है। यह सामग्री मुख्यतः राजाओं अथवा बादशाहों की वंशावलि के रूप में होती है। कौन राजा कब राज्य सिंहासन पर बैठा तथा उसने कितने वर्ष, कितने महिने एवं कितने दिन तक शासन किया आदि विवरण दिया हुआ रहता है।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची में जयपुर के केवल दो शास्त्र भण्डारों की सूची है। हमारा विचार तो एक भण्डार की और सूची देना था लेकिन ग्रन्थ सूची के अधिक पत्र हो जाने के डर से नहीं दिया गया। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में जिन नवीन रचनाओं का उल्लेख आया है उनके आदि अन्त भाग भी दे दिये गये हैं जिससे विद्वानों को ग्रन्थ की भाषा, रचनाकाल, एवं ग्रन्थकार के सम्बन्ध में कुछ परिचय मिल सके।

इसके अतिरिक्त जो लेखक प्रशस्तियां अधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण थी उन्हें भी ग्रन्थ सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार सूची में १०६ ग्रन्थ प्रशास्तियां एवं ५५ लेखक प्रशस्तियां दी गयी हैं जो स्वयं एक पुस्तक के रूप में हैं।

प्रस्तुत सूची में एक और नवीन ढंग अपनाया गया है वह यह है कि अधिकांश ग्रन्थों की एक प्रति का ही सूची में परिचय दिया गया है। यदि उस ग्रन्थ की एक से अधिक प्रतियाँ हैं तो विशेष में उनकी संख्या को ही लिख दिया गया है लेकिन यदि दूसरी प्रति भी महत्वपूर्ण अथवा विशेष प्राचीन है तो उस प्रति का भी परिचय सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार करीब ५०० प्रतियों का परिचय ग्रन्थ-सूची में नहीं दिया गया जो विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतियां नहीं थी।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रत्येक भण्डार की ग्रन्थ सूची न होकर एक सूची में १०-१५ भण्डारों की सूची हो तथा एक ग्रन्थ किस किस भण्डार में मिलता है इतना मात्र उसमें दे दिया जावे जिससे प्रकाशन का कार्य भी जल्दी हो सके तथा भण्डारों की सूचियां भी आजावें। हमने इस शैली को अभी इसीलिये नहीं अपनाया कि इससे भण्डारों का जो भिन्न भिन्न महत्त्व है तथा उनमें जो महत्त्वपूर्ण प्रतियां हैं उनका परिचय ऐसी ग्रन्थ सूची में नहीं आसकेगा। यह तो अवश्य है कि बहुत से ग्रन्थ तो प्रत्येक भण्डार में समान रूप से मिलते हैं तथा ग्रन्थ सूचियों में बार बार में आते हैं जिससे कोई विशेष अर्थ प्राप्त नहीं होता। आशा है भविष्य में सूची प्रकाशन का यह कार्य किस दिशा में चलना चाहिये इस पर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञ विद्वान् अपनी अमूल्य परामर्श से हमें सूचित करेंगे जिससे यदि अधिक लाभ हो सके तो उसी के अनुसार कार्य किया जा सके।

ग्रन्थ सूची बनाने का कार्य कितना जटिल है यह तो वे ही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा में कार्य किया हो। इसलिये कमियां रहना आवश्यक हो जाता है। कौनसा ग्रन्थ पहिले प्रकाश में आ चुका है तथा कौनसा नवीन है इसका भी निर्णय इस सम्बन्ध की प्रकाशित पुस्तकें न मिलने के कारण जल्दी से नहीं किया जा सकता इससे यह होता है कि कभी कभी प्रकाश में आये हुये ग्रन्थ नवीन समझने की गल्ती हो जाया करती है। प्रस्तुत ग्रंथ सूची में यदि ऐसी कोई अशुद्धि हो गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे।

दोनों भण्डारों में जो महत्त्वपूर्ण कृतियां प्राप्त हुई है उनके निर्माण करने वाले विद्वानों का परिचय भी यहां दिया जा रहा है। यद्यपि इनमें से बहुत से विद्वानों के सम्बन्ध में तो हम पहिले से ही जानते हैं किन्तु उनकी जो अभी नवीन रचनायें मिली हैं उन्हीं रचनाओं के आधार पर उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। आशा है इस परिचय से हिन्दी साहित्य के इतिहास निर्माण में कुछ सहायता मिल सकेगी।

१. अचलकीर्त्ति

अचलकीर्त्ति १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। विषापहार स्तोत्र भाषा इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसका समाज में अच्छा प्रचार है। अभी जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में कर्म-बत्तीसी नाम की एक और रचना प्राप्त हुई है जो संवत् १७७७ में पूर्ण हुई थी। इन्होंने कर्मबत्तीसी में पावा नगरी एवं वीर संघ का उल्लेख किया है। इनकी एक रचना रविव्रतकथा देहली के भण्डार में संग्रहीत है।

२. अजयराज

१८ वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों में अजयराज पाटणी का नाम उल्लेखनीय है। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। पाटणीजी आमेर के रहने वाले तथा धार्मिक प्रकृति के प्राणी थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने हिन्दी में कितनी ही रचनायें लिखी थी। अब तक छोटी और बडी २० रचनाओं का तो पता लग चुका है इनमें से आदि पुराण भाषा, नेमिनाथचरित्र, यशोधरचरित्र, चरखा चउपई, शिव रमणी का विवाह, कक्काबत्तीसी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने कितनी ही पूजायें भी लिखी हैं। इनके द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। कवि ने हिन्दी में एक जिनजी की रसोई लिखी है जिसमें षट् रस व्यंजन का अच्छा वर्णन किया गया है।

अजयराज हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। इनकी रचनाओं में काव्यत्व के दर्शन होते हैं। इन्होंने आदिपुराण को संवत् १७६७, में यशोधरचौपई को १७९२ में तथा नेमिनाथचरित्र को संवत् १७९३ में समाप्त किया था।

३. ब्रह्म अजित

ब्रह्म अजित संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् थे। हनुमच्चरित में इनकी साहित्य निर्माण की कला स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ये गोलशृंगार वंश में उत्पन्न हुये थे। माता का नाम पीथा तथा पिता का नाम वीरसिंह था। भृगुकच्छपुर में नेमिनाथ के जिन मन्दिर में इनका मुख्य रूप से निवास था। ये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे।

हिन्दी में इन्होंने हंसा भावना नामक एक छोटी सी आध्यात्मिक रचना लिखी थी। रचना में ३७ पद्य हैं जिनमें संसार का स्वरूप तथा मानव का वास्तविक कर्त्तव्य क्या है, उसे क्या करना चाहिये तथा किसे छोडना चाहिये आदि पर प्रकाश डाला है। हंसा भावना अच्छी रचना है, तथा भाषा एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से पढने योग्य है। कवि ने इसे अपने गुरु विद्यानन्दि के उपदेश से बनायी थी।

४. अमरपाल

इन्होंने 'आदिनाथ के पंच मंगल' नामक रचना को संवत् १७७२ में समाप्त की थी। रचना में दिये हुये समय के आधार पर ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् ठहरते हैं। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा गंगवाल इनका गोत्र था। देहली के समीप स्थित जयसिंहपुरा इनका निवास स्थान था। आदिनाथ के पंचमंगल के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है।

५. आज्ञासुन्दर

ये खरतरगच्छ के प्रधान जिनवर्द्धनसूरि के प्रशिष्य एवं आनन्दसूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १५१६ में विद्याविलास चौपई की रचना समाप्त की थी। इसमें ३६४ पद्य हैं। रचना अच्छी है।

६. उदैराम

उदैराम द्वारा लिखित हिन्दी की २ जखडी अभी उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही जखडी ऐतिहासिक हैं तथा भट्टारक अनन्तकीर्ति ने संवत् १७८५ में सांभर (राजस्थान) में जो चातुर्मास किया था उसका उन दोनों में वर्णन किया गया है। दिगम्बर साहित्य में इस प्रकार की रचनायें बहुत कम मिलती हैं इस दृष्टि से इनका अधिक महत्व है। वैसे भाषा की दृष्टि से रचनायें साधारण हैं।

७. ऋषभदास निगोत्या

ऋषभदास निगोत्या का जन्म संवत १८४० के लगभग जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम शोभाचन्द था। इन्होंने संवत् १८८८ में मूलाचार की हिन्दी भाषा टीका सम्पूर्ण की थी। ग्रन्थ की भाषा ढूंढारी है तथा जिस पर पं० टोडरमलजी की भाषा का प्रभाव है।

८. कनककीर्त्ति

कनककीर्ति १७ वीं शताब्दी के हिन्दी के विद्वान थे। इन्होंने तत्वार्थसूत्र श्रुतसागरी टीका पर एक विस्तृत हिन्दी गद्य टीका लिखी थी। इसके अतिरिक्त कर्मघटावलि, जिनराजस्तुति, मेघकुमारगीत, श्रीपालस्तुति आदि रचनायें भी आपकी मिल चुकी है। कनककीर्ति हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। इनकी भाषा ढूंढारी हैं जिसमें 'है' के स्थान पर "छै" का अधिक प्रयोग हुआ है। गुटकों में इनके कितने ही पद भी मिले हैं।

९. कनकसोम

कनकसोम १६ वीं शताब्दी के कवि थे। 'जइतपदवेलि' इनकी इतिहास से सम्बन्धित कृति है जो संवत १६२५ में रची गयी थी। वेलि में उसी संवत में मुनि वाचकदया ने आगरे में जो चातुर्मास किया था उसका वर्णन दिया हुआ है। यह खरतरगच्छ की एक अच्छी पट्टावलि है कवि ने इसमें साधुकीर्त्ति आदि कितने ही विद्वानों के नामों का उल्लेख किया है। रचना में ४६ पद्य है। भाषा हिन्दी है लेकिन

गुजराती का प्रभाव है। कवि की एक और रचना आषाढाभूतिस्वाध्याय पहिले ही मिल चुकी है। जो गुजराती में है।

११. मुनि कनकामर

मुनिकनकामर द्वारा लिखित 'ग्यारह प्रतिमा वर्णन' अपभ्रंश भाषा का एक गीत है। कनकामर कौनसे शताब्दी के कवि थे यह तो इस रचना के आधार से निश्चित नहीं होता है। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं या इससे भी पूर्व की शताब्दी के थे। गीत में १२ प्रतिमाओं का वर्णन है जिसका प्रथम पद्य निम्न प्रकार है।

मुनिवर जंपइ मृगनयणी, अंसु जल्लोलीइय गिरवयणी।
नवनीलोपलकोमलनयणी, पहु कणयंवर भणमि पई।
किम्म इह लब्भइ सिवपुर रम्मणी, मुनिवर जंपइ मृगनयणी ॥ १ ॥

१२. कुलभद्र

सारसमुच्चय ग्रन्थ के रचयिता श्री कुलभद्र किस शताब्दी तथा किस प्रान्त के थे इसके विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं शताब्दी के पूर्व के विद्वान् थे। क्योंकि सारसमुच्चय की एक प्रति संवत् १५४५ में लिखी हुई बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के संग्रह में है। रचना छोटी ही है जिसमें ३३० श्लोक हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम ग्रन्थसारसमुच्चय भी है। ग्रन्थ की भाषा सरल एवं ललित है।

१३. किशनसिंह

ये सवाईमाधोपुर प्रान्त के रामपुरा गांव के रहने वाले थे। खण्डेलजाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। इनके पिता का नाम 'काना' था। ये दो भाई थे। इनसे बडे भाई का नाम सुखदेव था। अपने गांव को छोडकर ये सांगानेर आकर रहने लगे थे, जो बहुत समय तक जैन साहित्यिकों का केन्द्र रहा है। इन्होंने अपनी सभी रचनायें हिन्दी भाषा में लिखी हैं। जिनकी संख्या १५ से भी अधिक है। मुख्य रचनाओं में क्रियाकोशभाषा, (१७८४) पुण्याश्रवकथाकोश, (१७७२) भद्रबाहुचरित भाषा (१७८०) एवं बावनी आदि हैं।

१४. केशरीसिंह

पं० केशरीसिंह भट्टारकों के पंडित थे। इनका मुख्य स्थान जयपुर नगर के लश्कर के जैन मन्दिर में था। ये वहीं रहा करते थे तथा श्रद्धालु श्रावकों को धर्मोपदेश दिया करते थे। दीवान बालचन्द के सुपुत्र दीवान जयचन्द छाबडा की इन पर विशेष भक्ति थी और उन्हीं के अनुरोध से इन्होंने संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित वर्द्धमानपुराण की हिन्दी गद्य में भाषा टीका लिखी थी। पंडित जी ने इसे संवत् १८७३ में समाप्त की थी। पुराण की भाषा पर ढूढारी (जयपुरी) भाषा का प्रभाव है। ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार पुराण की भाषा का संशोधन वस्तुपाल छाबडा ने किया था।

१४. ब्रह्मगुलाल

ब्रह्मगुलाल हिन्दी भाषा के कवि थे यद्यपि कवि की अब तक छोटी २ रचनायें ही उपलब्ध हुई हैं किन्तु भाव एवं भाषा की दृष्टि से ये साधारणतः अच्छी हैं। इनकी रचनाओं में त्रेपनक्रिया, समवसरणस्तोत्र, जलगालनक्रिया, विवेकचौपई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विवेकचौपई अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में प्राप्त हुई है। कवि १७ वीं शताब्दी के थे।

१५. गोपालदास

गोपालदास की दो छोटी रचनायें यादुरासो तथा प्रमादीगीत जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के ६७ वें गुटके में संग्रहीत हैं। गुटके के लेखनकाल के आधार पर कवि १७ वीं शताब्दीया इससे भी पूर्व के विद्वान् थे। यादुरासों में भगवान नेमिनाथ के वन चले जाने के पश्चात् राजुल की विरहावस्था का वर्णन है जो उन्हें वापिस लाने के रूप में है। इसमें २४ पद्य हैं। प्रमादीगीत एक उपदेशात्मकगीत है जिसमें आलस्य त्याग कर आत्महित करने के लिये कहा गया है। इनके अतिरिक्त इनके कुछ गीत भी मिलते हैं।

१६. चंपाराम भांवसा

ये खण्डेलवाल जैन ज ति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम हीरालाल था जो माधोपुर (जयपुर) के रहने वाले थे। चंपाराम हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। शास्त्रों की स्वाध्याय करना ही इनका प्रमुख कार्य था इसी ज्ञान वृद्धि के कारण इन्होंने भद्रबाहुचरित्र एवं धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार की हिन्दी भाषा टीका क्रमशः संवत् १८४४ तथा १८६८ में समाप्त की थी। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचनाएँ साधारण हैं।

१७. छीहल

१६ वीं शताब्दी में होनेवाले जैन कवियों में छीहल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये राजस्थानी कवि थे किन्तु राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसका अभी तक कोई उल्लेख नहीं मिला। हिन्दी भाषा के आप अच्छे विद्वान् थे। इनकी अभी तक ३ रचनायें तथा ३ पद उपलब्ध हुये हैं। रचनाओं के नाम बावनी, पंचसहेली गीत, पंथीगीत हैं। सभी रचनायें हिन्दी की उत्तम रचनाओं में से है जो काव्यत्व से भरपूर हैं। कवि की वर्णन करने की शैली उत्तम है। बावनी में आपने कितने ही विषयों का अच्छा वर्णन किया है। पंचसहेली को इन्होंने संवत् १५७५ में समाप्त किया था।

१८. पं जगन्नाथ

पं० जगन्नाथ १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा संस्कृत भाषा के पहुंचे हुए विद्वान् थे। ये खन्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा इनके पिता का नाम पोमराज था। इनकी ६ रचनायें श्वेताम्बरपराजय, चतुर्विंशतिसंधानस्वोपज्ञटीका, सुखनिधान, नेमिनरेन्द्रस्तोत्र,

तथा सुखेणचरित्र तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी एक और कृति "कर्मस्वरूप-वर्णन" अभी बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में मिली है। इस रचना में कर्मों के स्वरूप की विवेचना की गयी है। कवि ने इसे संवत् १७०७ (सन् १६५०) में समाप्त किया था। 'कर्मस्वरूप' के उल्लासों के अन्त में जो विशेषण लगाये गये हैं उनसे पता चलता है कि पंडित जी न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे तथा उन्होंने कितने ही शास्त्रार्थों में अपने विरोधियों को हराया था। कवि का दूसरा नाम वादिराज भी था।

१६. जिनदत्त

पं० जिनदत्त भट्टारक शुभचन्द्र के समकालीन विद्वान् थे तथा उनके घनिष्ट शिष्यों में से थे। भट्टारक शुभचन्द्र ने अम्बिकाकल्प की जो रचना की थी उसमें मुख्य रूप से जिनदत्त का ही आग्रह था। ये स्वयं भी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा संस्कृत भाषा में भी अपना प्रवेश रखते थे। अभी हिन्दी में इनकी २ रचनायें उपलब्ध हुई है जिनके नाम धर्मतरुगीत तथा जिनदत्तविलास है। जिनदत्तविलास में में कवि द्वारा बनाये हुये पदों एवं स्फुट रचनाओं का संग्रह है तथा धर्मतरुगीत एक छोटा सा गीत है।

२०. ब्रह्म जिनदास

ये भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। संस्कृत, प्राकृत, एवं गुजराती भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा में भी इनकी तीव्र गति थी। कवि की अब तक संस्कृत एवं गुजराती का कितनी ही रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं इनमें आदिनाथ पुराण, धनपालरास, यशोधररास, आदि प्रमुख हैं। इनकी सभी रचनाओं की संख्या २० से भी अधिक है। अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में इनका एक छोटा सा आदिनाथ स्तवन हिन्दी में लिखा हुआ मिला है जो बहुत ही सुन्दर एवं भाव पूर्ण है तथा ग्रंथ सूची में पूरा दिया हुआ है।

२१. ब्रह्म ज्ञानसागर

ये भट्टारक श्रीभूषण के शिष्य थे। संस्कृत के साथ साथ ये हिन्दी के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में २६ से भी अधिक कथायें लिखी है जो पद्यात्मक हैं। भाषा की दृष्टि से ये सभी अच्छी हैं। भट्टारक श्रीभूषण ने पाण्डवपुराण (संस्कृत) को संवत् १६५७ में समाप्त किया था। क्योंकि ब्रह्म ज्ञानसागर भी इन्हीं भट्टारक जी के शिष्य थे अतः कवि के १८ वीं शताब्दी के होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। इन्होंने कथाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी होंगी लेकिन अभी तक वे उपलब्ध नही हुई हैं।

२२. ठक्कुरसी

१६ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में ठक्कुरसी का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखकर स्वाध्याय प्रेमियों का दिल बहलाया करते

थे। इनके पिता का नाम चेल्ह था जो स्वयं भी कवि थे। कवि द्वारा रचित कृपणचरित्र तथा पंचेन्द्रिय बेलि तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी हैं लेकिन नेमिराजमतिबेलि पार्श्वशकुनसत्तावीसी और चिन्तामणि-जयमाल तथा सीमंधरस्तवन और उपलब्ध हुए हैं जो हिन्दी की अच्छी रचनायें है।

२३. थानसिंह

थानसिंह सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा ठोलिया इनका गोत्र था। सुबुद्धि प्रकाश की ग्रन्थ प्रशास्ति में इन्होंने आमेर, सांगानेर तथा जयपुर नगर का वर्णन लिखा है। जब इनके माता पिता नगर में अशान्ति के कारण करौली चले गये थे तब भी ये सांगानेर छोडकर नहीं जा सके और इन्होंने वहीं रहते हुये रचनायें लिखी थी। कवि की २ रचनायें प्राप्त होती हैं-रत्नकरंडश्रावकाचार भाषा तथा सुबुद्धि प्रकाश। प्रथम रचना को इन्होंने सं. १८२१ में तथा दूसरी को सं. १८४७ में समाप्त किया था। सुबुद्धि प्रकाश का दूसरा नाम थानविलास भी है इसमें कवि की छोटी २ रचनाओं का संग्रह है। दोनों ही रचनाओं की भाषा एवं वर्णन शैली साधारणतः अच्छी है। इनकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है।

२४. मुनि देवचन्द्र

मुनि देवचन्द्र युगप्रधान जिनचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने आगमसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १७७६ में मारोठ गांव में समाप्त की थी। आगमसार ज्ञानामृत एवं धर्मामृत का सागर है तथा तात्त्विक चर्चाओं से भरपूर है। रचना हिन्दी गद्य में है जिस पर मारवाडी मिश्रित जयपुरी भाषा का प्रभाव है।

२५. देवाब्रह्म

देवाब्रह्म हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनके सैकडों पद मिलते हैं जो विभिन्न राग रागनियों में लिखे हुये हैं। सासबहू का झगडा आदि जो अन्य रचनाये है वे भी अधिकांशतः पद रुप में ही लिखी हुई है। इन्होंने हिन्दी साहित्य की ठोस सेवा की थी। कवि संभवतः जयपुर के ही थे तथा अनुमानतः १८ वीं शताब्दी के थे।

२६. बाबा दुलीचन्द

जयपुर के २० वीं शताब्दी के साहित्य सेवियों में बाबा दुलीचन्द का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। ये मूलतः जयपुर निवासी नही थे किन्तु पूना (सितारा) से आकर यहां रहने लगे थे। इनके पिता का नाम मानकचन्दजी था। आते समय अपने साथ सैकडों हस्तलिखित ग्रन्थ भी साथ लाये थे, जो आजकल जयपुर के बडे मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत हैं तथा वह संग्रहालय भी बाबा दुलीचन्द भण्डार के नाम से प्रसिद्ध है। इस भण्डार में ८०६-९०० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। जो सभी बाबाजी द्वारा संग्रहीत है।

बाबाजी बडे साहित्यिक थे। दिन रात साहित्य सेवा में व्यतीत करते थे। ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना, नवीन ग्रन्थों का निर्माण तथा पुराने ग्रन्थों को व्यवस्थित रुप से रखना ही आपके प्रतिदिन के कार्य थे। बडे मन्दिर के भण्डार में तथा स्वयं बाबाजी के भण्डार में इनके हाथ से लिखी हुई कितनी ही प्रतियां मिलती है। इन्होंने १५ से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। जिनमें उपदेशरत्नमाला भाषा, जैनागारप्रक्रिया, ज्ञानप्रकाशविलास, जैनयात्रादर्पण, धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने भारत के सभी तर्थों की यात्रा की थी और उसीके अनुभव के आधार पर इन्होंने जैनयात्रादर्पण लिखा था। मन्दिरनिर्माण विधि नामक रचना से पता चलता है कि ये शिल्पशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने भारत के कितने ही स्थानों के शास्त्र भण्डारों को भी देखा था और उसीके आधार पर संस्कृत और हिन्दी भाषा के ग्रन्थों के ग्रन्थकार विवरण लिखा था जिसमें किस विद्वान् ने कितने ग्रन्थ लिखे थे तथा वे किस किस भण्डार में मिलते हैं दिया हुआ है। अपने ढंग की यह अनूठी पुस्तक है। इनकी मृत्यु ता० ४ अगस्त सन् १६२८ में आगरे में हुई थी।

२६. नन्द

ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। गोयल इनका गोत्र था। पिता का नाम भैरू तथा माता का नाम चंदा था। ये गोसना गांव के निवासी थे जो संभवतः आगरा के समीप ही था। कवि की अभी तक एक रचना यशोधर चरित्र चौपई ही उपलब्ध हुई है जो संवत् १६७० में समाप्त हुई थी। इसमें ५६८ पद्य हैं। रचना साधरणतः अच्छी है। तथा अभी तक अप्रकाशित है।

२७. नागरीदास

संभवतः ये नागरीदास वे ही हैं जो कृष्णगढ नरेश महाराज सांवतसिंह जी के पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १७५६ में हुआ था। इनका कविता काल सं० १७८० से १८१६ तक माना जाता है। इनकी छोटी बडी सब रचना मिलाकर ७३ रचनायें प्रकाश में आ चुकी हैं। वैनविलास एवं गुप्तरसप्रकाश नामक अप्राप्य रचनाओं में से वैनविलास जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई हैं। इसमें ३० पद्य है जिनमें कुंडलिया दोहे आदि हैं।

२८. नाथूलाल दोशी

नाथूलाल दोशी दुलीचन्द दोशी के पौत्र एवं शिवचन्द के पुत्र थे। इनके पं० सदासुखजी काशलीवाल धर्म गुरू थे तथा दीवान अमरचन्द परम सहायक एवं कृपावान थे। दोशी जी विद्वान् थे तथा ग्रंथ चर्चा में अधिक रस लिया करते थे। इन्होंने हरचन्द गंगवाल की प्रेरणा से संवत् १६१८ में सुकुमालचरित्र की भाषा समाप्त की थी। रचना हिन्दी गद्य में में है जिस पर ढूंढारी भाषा का प्रभाव है।

२९. नाथूराम

लमेचू जाति में उत्पन्न होने वाले नाथूराम हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। ये संभवतः १९ वीं शताब्दी के थे। इनके पिता का नाम दीपचंद था। इन्होंने जम्बूस्वामीचरित का हिन्दी गद्यानुवाद लिखा है। रचना साधारणतः अच्छी है।

३०. निरमलदास

श्रावक निरमलदास ने पंचाख्यान नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह पंचतन्त्र का हिन्दी पद्यानुवाद है। संभवतः यह रचना १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी थी क्योंकि इसकी एक प्रति संवत् १७५४ में लिखी हुई जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना सरल हिन्दी में है तथा साधारण पाठकों के लिये अच्छी है।

३१. पद्मनाभ

पद्मनाभ १५-१६ वीं शताब्दी के कवि थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे इसीलिये संघपति डूंगर ने इनसे बावनी लिखने का अनुरोध किया था और उसी अनुरोध से इन्होंने संवत् १५४३ में बावनी की रचना की थी। इसका दूसरा नाम डूंगर की बावनी भी है। बावनी में ५४ सवैय्या हैं। भाषा राजस्थानी है। इसकी एक प्रति अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है लेकिन लिखावट विकृत होने से सुपाठ्य नहीं है। बावनी अभी तक अप्रकाशित है।

३२. पन्नालाल चौधरी

जयपुर में होने वाले १९-२० वीं शताब्दी के साहित्यकारों में पन्नालाल चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। ये संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। महाराजा रामसिंह के मन्त्री जीवनसिंह के ये गृह मन्त्री थे। इनके गुरु सदासुखजी काशलीवाल थे जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे। यही कारण है कि साहित्य सेवा इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य हो गया था। इन्होंने अपने जीवन में ३० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। इनमें से योगसार भाषा, सद्भाषितावली भाषा, पाण्डवपुराण भाषा, जम्बूस्वामी चरित्र भाषा, उत्तरपुराण भाषा, भविष्यदत्तचरित्र भाषा उल्लेखनीय है। सद्भाषितावलि भाषा आपका सर्व प्रथम ग्रन्थ है जिसे चौधरीजी ने संवत् १९१० में समाप्त किया था। ग्रंथ निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने बहुत से ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी की थी जो आज भी जयपुर के बहुत से भण्डारों में उपलब्ध होती हैं।

३३. पुण्यकीर्त्ति

ये खरतरगच्छ के आचार्य एवं युगप्रधान जिनचंद्रसूरि के शिष्य थे। तथा ये सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। इन्होंने पुण्यसार कथा को संवत् १७६६ में समाप्त किया था। रचना साधारणतः अच्छी है।

३४. बनारसीदास

कविवर बनारसीदास का स्थान जैन हिन्दी साहित्य में सर्वोपरि है। इनके द्वारा रचे हुये समयसार नाटक, बनारसीविलास, अर्द्ध कथानक एवं नाममाला तो पहिले ही प्रसिद्ध हैं। अभी इनकी एक और रचना 'मांझा' जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली है। रचना आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है। इसमें १३ पद्य है।

३५. बंशीधर

इन्होंने संवत् १७६५ में 'दस्तूरमालिका' नामक हिन्दी ग्रंथ रचना लिखी थी। दस्तूरमालिका गणित शास्त्र से सम्बन्धित रचना है जिसमें वस्तुओं के खरीदने की रस्म रिवाज एवं उनके गुरू दिये हुये हैं। रचना खडी बोली में है तथा अपने ढंग की अकेली ही रचना है। इसमें १४३ पद्य है। कवि संभवतः वे ही बंशीधर है जो अहमदाबाद के रहने वाले थे तथा जिन्होंने संवत १७८२ में उदयपुर के महाराणा जगतसिंह के नाम पर अलंकार रत्नाकर ग्रंथ बनाया था[1]।

३६ मनराम

१८ वीं शताब्दी के जैन हिन्दी विद्वानों में मनराम एक अच्छे विद्वान् हो गये हैं। यद्यपि रचनाओं के आधार पर इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है फिर भी इनकी वर्णन शैली से ज्ञात होता है कि मनराम का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अब तक अक्षरमाला, धर्मसहेली, मनरामविलास, बत्तीसी, गुणाक्षरमाला आदि इनकी मुख्य रचनायें हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये सभी रचनायें उत्तम हैं।

३७. मन्नासाह

मन्नासाह हिन्दी के अच्छी कवि थे। इनकी लिखी हुई मान बावनी एवं लघु बावनी ये दो रचनायें अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली हैं। रचना के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है कि मन्नासाह हिन्दी के अच्छे कवि थे। मान बावनी हिन्दी की उच्च रचना है जिसमें सुभाषित रचना की तरह कितने ही विषयों पर थोडे थोड़े पद्य लिखे हैं। मन्ना साह संभवतः १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे।

३८. मल्ल कवि

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के रचयिता मल्लकवि १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इन्होंने कृष्णमिश्र द्वारा रचित संस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय का हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद संवत् १६०१ में किया था। रचना

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास—पृष्ठ २८)

सुललित भाषा में लिखी हुई है। तथा उत्तम संवादों ये भरपूर है। नाटक में काम, क्रोध मोह आदि की पराजय करवा कर विवेक आदि गुणों की विजय करवायी गयी है।

३९. मेघराज

मुनि मेघराज द्वारा लिखित 'संयमप्रवहण गीत' एक सुन्दर रचना है। मुनिजी ने इसे संवत् १६६१ में समाप्त की थी। इसमें मुख्यतः 'राजचंदसूरि' के साधु जीवन पर प्रकाश डाला गाया है किन्तु राजचन्दसूरि के पूर्व आचार्यों—सोमरत्नसूरि, पासचन्दसूरि, तथा समरचन्दसूरि के भी माता पिता का नामोल्लेख, आचार्य बनने का समय एवं अन्य प्रकार से उनका वर्णन किया गया है। रचना वास्तव में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन शैली काफी अच्छी है तथा कहीं कहीं अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

४०. रघुनाथ

इनकी अब तक ५ रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। रघुनाथ हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा जिनकी छन्द शास्त्र, रस एवं अलंकार प्रयोग में अच्छी गति थी। इनका गणभेद छन्द शास्त्र की रचना है। नित्यविहार शृंगार रस पर आश्रित है जिसमें राधा कृष्ण का वर्णन है। प्रसंगसार एवं ज्ञानसार सुभाषित, उपदेशात्मक एव भक्तिरसात्मक हैं। ज्ञानसार को इन्होंने संवत् १७४३ में समाप्त किया था इससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी में पैदा हुये थे। कवि राजस्थानी विद्वान् थे लेकिन राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसके सम्बन्ध में परिचय देने में इनकी रचनायें मौन हैं। इनकी सभी रचनायें शुद्ध हिन्दी में लिखी हुई हैं। ये जैनेतर विद्वान् थे।

४१. रूपचन्द

कविवर रूपचन्द १७ वीं शताब्दी के साहित्यिकों में उल्लेखनीय कवि हैं। ये आध्यात्मिक रस के कवि थे इसीलिये इनकी अधिकांश रचनायें आध्यात्मिक रस पर ही आधारित हैं। इनकी वर्णन शैली सजीव एवं आकर्षक है। पंच मंगल, परमार्थदोहाशतक, परमार्थगीत, गीतपरमार्थी, नेमिनाथरासो आदि कितनी ही रचनायें तो इनकी पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं तथा प्रकाश में आ चुकी हैं किन्तु अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में अध्यात्म सवैय्या नामक एक रचना और प्राप्त हुई है। रचना आध्यात्मिक रस से ओतप्रोत है तथा बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी हुई है। भाषा की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। इन रचनाओं के अतिरिक्त कवि के कितने पद भी मिलते हैं वे भी सभी अच्छे हैं।

४२. लच्छीराम

लच्छीराम सवत् १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। इनका एक "करुणाभरणनाटक" अभी उलब्ध हुआ है। नाटक में ६ अंक है जिनमें राधा अवस्था वर्णन, ब्रजवासी अवस्था वर्णन सत्यभामा

ईर्षा वर्णन, बलदाऊ मिलाप वर्णन आदि दिये हुये हैं। नाटक की भाषा साधारणतः अच्छी है। नाटककार जैनेतर विद्वान थे।

४३. भट्टारक शुभचन्द्र

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में गुरु सकलकीर्त्ति के समान इन्होंने भी संस्कृत भाषा में कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी जिनकी संख्या ४० से भी अधिक है। षट्भाषाचक्रवर्त्ति, त्रिविधविद्याधर आदि उपाधियों से भी आप विभूषित थे।

संस्कृत भाषा के ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कुछ रचनायें लिखी थीं उनमें से २ रचनायें तो अभी प्रकाश में आयी हैं। इनमें से एक चतुर्विंशतिस्तुति तथा दूसरा तत्त्वसारदोहा है। तत्त्वसार दोहा में तत्त्ववर्णन है। इसकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। इसमें ९१ पद्य हैं।

४४. सहजकीर्त्ति

सहजकीर्ति सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये १७ वीं शताब्दी के कवि थे। इनकी एक रचना प्राति छत्तीसी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में ९७ वें गुटके में संग्रहीत है। यह संवत् १६८८ में समाप्त हुई थी। रचना में ३६ पद्य हैं जिसमें प्रातःकाल सबसे पहले भगवान का स्मरण करने के लिये कहा गया है। रचना साधारण है।

४५. सुखदेव

हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित रचनायें बहुत कम हैं। अभी कुछ समय पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर में सुखदेव द्वारा निर्मित वणिकप्रिया की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध हुई है। वणिकप्रिया का मुख्य विषय व्यापार से सम्बन्धित है।

सुखदेव गोलापूरब जाति के थे। उनके पिता का नाम बिहारीदास था। रचना में ३२१ पद्य हैं जिनमें दोहा और चौपई प्रमुख हैं। कवि ने इसे संवत् १७१७ में लिखी थी। रचना की भाषा साधारणतः अच्छी है।

४६. सधारु कवि

अब तक उपलब्ध जैन हिन्दी साहित्य में १४ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में कवि सधारु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी यद्यपि एक ही रचना उपलब्ध हुई है लेकिन वही इनकी काव्य शक्ति को प्रकट करने में पर्याप्त है। ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे जो अग्रोह नगर के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। इनके पिता का नाम शाह महाराज एवं माता का नाम गुणवती था। कवि ने इस रचना को एरछ नगर में समाप्त की थी जो कानपुर[1] झांसी रेल्वे लाइन पर है।

---

१. जैन सन्देश भाग २१ संख्या १२

कवि की रचना का नाम प्रद्युम्न चरित है जो संवत् १४११ में समाप्त हुई थी। इसमें ६८२ पद्य हैं किन्तु कामा उज्जैन आदि स्थानों में प्राप्त प्रति में ६८२ से अधिक पद्य हैं तथा जो भाव भाषा, अलंकार आदि सभी दृष्टियों से उत्तम है। कविने प्रद्युम्न का चरित्र बड़े ही सुन्दर ढंग से अंकित किया है। रचना अभी तक अप्रकाशित है तथा शीघ्र ही प्रकाश में आने वालीहै।

४७. सुमतिकीर्त्ति

सुमतिकीर्ति भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य थे तथा उनके साथ रह कर साहित्य रचना किया करते थे। कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका ज्ञानभूषण तथा सुमतिकीर्ति दोनों ने मिल कर बनायी थी। भट्टारक ज्ञानभूषण ने भी जिस तरह कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी उसी प्रकार इन्होंने भी कितने ही रचनायें की हैं। त्रिलोकसार चौपई को इन्होंने संवत् १६२७ में समाप्त किया था। इसमें तीनलोकों पर चर्चा की गयी है। इस रचना के अतिरिक्त इनकी कुछ स्तुतियां अथवा पद भी मिलते हैं।

४८. स्वरूपचन्द बिलाला

पं० स्वरुपचन्द जी जयपुर निवासी थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा बिलाला इनका गोत्र था। पठन पाठन एवं स्वाध्याय ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। बिलाला जी ने कितनी ही पूजाओं की रचना की थी जो आज भी बडे चाव से नित्य मन्दिरों में पढी जाती हैं। पूजाओं के अतिरिक्त इन्होंने मदनपराजय की भाषा टीका भी लिखी थी जो संवत् १६१८ में समाप्त हुई थी। इनकी रचनाओं के नाम मदनपराजय भाषा, चौसठऋद्धिपूजा, जिनसहस्त्रनाम पूजा तथा निर्वाणक्षेत्र पूजा आदि हैं।

४९. हरिकृष्ण पांडे

ये १८ वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने अपने को विनयसागर का शिष्य लिखा है। जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में इनके द्वारा रचित चतुर्दशी-कथा प्राप्त हुई है जो संवत् १७६१ की रचना है। कथा में ३५ पद्य हैं। भाषा एवं दृष्टि से रचना साधारण है।

५०. हर्षकीर्त्ति

हर्षकीर्त्ति हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखी हैं जो सभी उत्तम हैं। भाव, भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से कवि की रचनायें प्रथम श्रेणी की हैं। चतुर्गति बेलि को इन्होंने संवत् १६८३ में समाप्त किया था जिससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी के थे तथा कविवर बनारसीदासजी के समकालीन थे। चतुर्गति बेलि के अतिरिक्त नेमिनाथ-

राजुल गीत, नेमीश्वरगीत, मोरड़ा, कर्महिंडोलना पञ्चमगतिबेलि आदि अन्य रचनायें भी मिलती हैं। सभी रचनायें आध्यात्मिक है। कवि द्वारा लिखे हुये कितने ही पद भी हैं। जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं।

५१. हीरा कवि

ये बूंदी (राजस्थान) के रहने वाले थे। इन्होंने संवत् १८४८ में 'नेमिनाथ व्याहलो' नामक रचना को समाप्त किया था। व्याहलों में नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। रचना साधारणतः अच्छी है तथा इस पर हाडौती भाषा का प्रभाव झलकता है।

५२. पांडे हेमराज

प्राचीन हिन्दी गद्य लेखकों में हेमराज का नाम उल्लेखनीय है। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी था तथा ये पांडे रूपचंद के शिष्य थे। इन्होंने प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का हिन्दी गद्य में अनुवाद करके हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण योग दिया था। इनकी अब तक १२ रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं जिनमें नयचक्रभाषा, प्रवचनसारभाषा, कर्मकाण्डभाषा, पञ्चास्तिकायभाषा, परमात्मप्रकाश भाषा आदि प्रमुख हैं। प्रवचनसार को इन्होंने १७०९ में तथा नयचक्रभाषा को १७२४ में समाप्त किया था। अभी तीन रचनायें और मिली हैं जिनके नाम दोहाशतक, जखडी तथा गीत हैं। रचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि का हिन्दी गद्य एवं पद्य दोनों में ही एकसा अधिकार था। भाव एवं भाषा की दृष्टि से इनकी सभी रचनायें अच्छी है। दोहा शतक जखडी एवं हिन्दी पद अभी तक अप्रकाशित हैं।

उक्त विद्वानों में से २७, ३५, ४०, ४२ तथा ४५ संख्या वाले विद्वान् जैनेतर विद्वान् हैं। इनके अतिरिक्त ५, ६, २४, ३०, ३३ एवं ३६ संख्या वाले श्वेताम्बर जैन एवं शेष सभी दिगम्बर जैन विद्वान् हैं। इनमें से बहुत से विद्वानों का परिचय तो अन्यत्र भी मिलता है इसलिये उनका अधिक परिचय नहीं दिया गया। किन्तु अजयराज, अमरपाल, उदैराम, केशरीसिंह, गोपालदास, चंपाराम भांवसा ब्रह्मज्ञानसागर, थानसिंह, बाबा दुलीचन्द, नन्द, नाथूलाल दोशी, पद्मनाभ, पन्नालाल चौधरी, मनराम, रघुनाथ आदि कुछ ऐसे विद्वान् हैं जिनका परिचय हमें अन्य किसी पुस्तक में देखने को नहीं मिला। इन कवियों का परिचय भी अधिक न मिलने के कारण उसे हम विस्तृत रूप से नहीं दे सके।

ग्रन्थ सूची के अन्त में ४ परिशिष्ट हैं। इनमें से ग्रन्थ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्ति के सम्बन्ध में तो हम ऊपर कह चुके हैं। ग्रंथानुक्रमणिका में ग्रन्थ सूची में आये हुये अकारादि क्रम से सभी ग्रन्थों के नाम दे दिये गये हैं। इससे सूची में कौनसा ग्रन्थ किस पृष्ठ पर है यह ढूंढने में सुविधा रहेगी। इस परिशिष्ट के अनुसार ग्रन्थ सूची में १७८५ ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार परिशिष्ट को भी हमने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषाओं में विभक्त कर दिया है जिससे ग्रन्थ सूची में किसी एक विद्वान् के एक भाषा के कितने ग्रन्थों का उल्लेख आया है सरलता से जाना जा

सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में संस्कृत भाषा के १७३, प्राकृत के १४, अपभ्रंश के १६ तथा हिन्दी के २६२ विद्वानों के ग्रन्थों का परिचय मिलता है तथा इससे भाषा सम्बन्धी इतिहास लेखन में अधिक सहायता मिल सकती है।

ग्रन्थ सूची को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथा यही प्रयास रहा है कि ग्रन्थ एवं ग्रन्थ कर्त्ता आदि के नामों में कोई अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे आगे प्रकाशित होने वाले संस्करणों में उसका परि-मार्जन किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण—

सर्व प्रथम हम क्षेत्र कमेटी के सदस्यों एवं विशेषतः मन्त्री महोदय को धन्यवाद देते हैं जो प्राचीन साहित्य के उद्धार जैसे पवित्र कार्य को क्षेत्र की ओर से करवा रहे हैं तथा भविष्य में इस कार्य में और भी अधिक व्यय किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के प्रमुख जैन साहित्य सेवी श्री अगरचन्दजी नाहटा एवं वीर सेवा मन्दिर देहली के प्रमुख विद्वान् पं० परमानन्दजी शास्त्री के हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने सूची के अधिकांश भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है तथा समय समय पर अपनी शुभ सम्मतियों से सूचित करते रहते हैं। श्रद्धेय गुरु-वर्य्य पं० चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ के प्रति भी हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जो हमें इस पुनीत कार्य में समय समय पर प्रेरणा देते रहते हैं और जिनकी प्रेरणा मात्र से ही जयपुर में साहित्य प्रकाशन का थोडा बहुत कार्य हो रहा है। बधीचन्दजी के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू सरदारमलजी आबूजी वाले तथा ठोलियों के मन्दिर के प्रबन्धक बाबू नरेन्द्र मोहनजी डंडिया तथा पं० सनत्कुमारजी बिलाला को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने अपने यहाँ के शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची बनाने की पूरी सुविधा प्रदान की है। अन्त में हमारे नवीन सहयोगी बाबू सुगनचन्दजी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस ग्रन्थ सूची के कार्य में हमारा पूरा हाथ बटाया है।

दि० २५–७–५७

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द जैन

श्री महावीराय नमः

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी (जयपुर) के

ग्रन्थ

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

अन्तगडदशाओ वृत्ति (अन्तकृद्दशासूत्रवृत्ति)—अभयदेवसूरि पत्र संख्या-७ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचनाकाल × । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन नं० २६० ।

विशेष—अन्तकृत्दशसूत्र श्वे० जैन आगम का ८ वां अंग है।

२. आश्रव त्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११¾×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचनाकाल × । लेखनकाल-सं० १६०४, द्वितीय भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७४।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३. इकवीस ठाणा चर्चा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चर्चा । रचनाकाल × । लेखनकाल संवत् १८१३, फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५४ ।

विशेष—पं० किशनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४. इक्कीस गिणती का स्वरूप—पत्र संख्या-१३ । साइज-८½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचनाकाल × । लेखनकाल-सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—संख्यात, असंख्यात और अनन्त इनके २१ भेदों का वर्णन किया गया है।

५. एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ—लछमणदास । पत्र संख्या-७१ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चर्चा । रचनाकाल सं० १८८४ माघ सुदी ५ । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष-प्रारम्भ—अथ लिछमणदास कृत पाठ लिख्यते । अथ एक सौ गुणंतर जीवां की संख्या पाठ लिख्यते ।

दोहा—वृषभ आदि चौबीस कौ नमौ नाम उरधार ।
कछु इक संख्या कहत हू उत्तम नर की सार ॥१॥
प्रथमहि जिन चौबीस के कहौं नाम सुखदाय ।
कोटि जनम के पाप ते क्षयक एक मैं जाय ॥२॥

छंद—प्रथम वृषम जिन देव, दूजौ अजित प्रमानौ ।
तीजौ संभव नाथ अभिनंदनं चउ आनौ ॥३॥

अन्तिम—इनका कथन वसेषतै पूरव नगरी आदि ।
ग्रंथ माहि तें जानयौ जथा जोग अनवाद ॥६६॥
पाठ बदन कै कारणै कियौ नाहि मैं मित ।
नाम मात्र अनुराग वसि धारि कियौ हरि चित ॥७०॥

छन्द सुन्दरी—जैनमत के ग्रंथ लखाय कै । कहत हौं ये पाठ बनाय कै ।
नाम ए चित मैं जु धरै नरा । होय मिथ्या जाल सवै परा ॥७१॥
भूल चूक जु होय सुधारयौ । हाँसि पंडित नाहि न कारयौ ।
करि छिमा मो गुण गहि लीजियो । राम कह किरप तुम कीजियौ ॥७२॥

दोहा—ठारासै चौरासिया वार सनीश्चर वार, पोस कृष्ण तिथ पंचमी कियो पाठ सुम चार ॥७३॥

"इति एक सौ चुरणंतर जीव पाठ संपूरण"॥१॥

निम्न पाठ और हैं:—

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१) तीस चौबीसी पाठ	६ से २४ तक	२२७	
(२) गणधर मुख्य पाठ	२४ से २५	१२	
(३) दसकरण पाठ	२५ से ३४	१२४	दस बंध भेद वर्णन रामचन्द्र कृत
(४) अध्यचन्द्र पचीसी	३४ से ३६	२६	
(५) आगति जागति पाठ	३६ से ४१	७५	सं० १८८४ मंगसिर वदी ११
(६) षट कारिक पाठ	४१ से ४२	१२	
(७) शिष्य दिक्षा बीसी पाठ	४२ से ४३	२७	
(८) सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	४३ से ४४	१४	
(९) जीवमोक्ष बत्तीसी पाठ	४४ से ४६	३३	

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
(१०) मोह उत्कृष्टथित पचीसी	४६ से ४८	२६	
(११) प्रथम शुक्ल ध्यान पचीसी	४८ से ५०	२६	
(१२) अंतर चोवनो	५० से ५१	८	
(१३) बंधबोल	५१	५	
(१४) इकवीस गिणती को पाठ	५१ से ६०	६३	
(१५) सम्यक चतुरदसी	६० से ६१	१४	
(१६) इक अक्षर आदि बत्तीसी	६१ से ६३	३३	
(१७) बावन छंद रूपदीप	६३ से ७१	५५	१८८४ माघ सुदी ५ मंगलवार

६. कर्मप्रकृति—आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-११। साइज-११×४½ इञ्च भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १६।

विशेष—मूल मात्र हैं तथा गाथाओं की संख्या १६२ हैं।

७. प्रति नं० २—पत्र संख्या-११। साइज-१०×५ इञ्च। लेखनकाल सं०–१८५६ श्रावण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १७।

विशेष—चंपाराम ने प्रतिलिपि की थी। इस प्रति में १६४ गाथायें हैं।

८. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१६। साइज-१२×४½ इञ्च। लेखनकाल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० १८।

विशेष—गाथाओं की संख्या-१६१ है।

९. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-१३। साइज-११×४½ इञ्च। लेखनकाल सं० १६०६ असाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० १९। इसमें १६१ गाथायें हैं।

विशेष—संस्कृत में कहीं २ टिप्पण दिया हुआ है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १६०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा तिथौ सोमवासरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये आचार्य भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्यणी आ० मुक्तिश्री तत् शिष्या आ० कीर्तिश्री पठनार्थ। कल्याणमस्तु। अमरसरमध्ये राज्यश्री सूजाजी।

१०. प्रति नं० ५—पत्र सख्या-४४। साइज-५½×४½ इंच। लेखनकाल सं०–१८११ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ५३।

विशेष—हरचन्द ने प्रतिलिपि की थी। ग्रंथ गुटका साइज में है। १६१ गाथायें हैं।

११. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-२१। साइज-१०½×४½ इञ्च। लेखनकाल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २२।

विशेष—प्रति अशुद्ध है। संस्कृत टीका सहित है। मूल गाथायें नहीं हैं। कर्म प्रकृति का सत्वस्थान भंग सहित गुणस्थान का वर्णन है।

जिनदेवं प्रणम्याहं मुनिचन्द्रं जगत्प्रभुं।
सत्कर्मप्रकृतिस्थानं संवृणोमि यथागमं ॥१॥

णमिऊण वड्ढमाणं कणयणिंद देवरायपरिपुज्जं।
पयडीणसत्तठाणं ओघे मगे समं वोछे ॥१॥

देवराजपरिपूज्यं कनकनिभं वर्द्धमानभगवद् अर्हद्भट्टारकं नत्वा कर्मप्रकृतीनां सत्वस्थानं भंगसहितं गुणस्थानेषु वक्ष्यामीति संबंधः।

१२. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३४। साइज ११-×५ इञ्च। लेखनकाल-१६७६ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० २१। प्रति सटीक है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

विशेष—इति प्रायः श्री गोमट्टसारमूलात् टीकाश्च निष्काष्य क्रमेण एकीकृत्य लिखितां श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक विरचित-कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६७६ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ संग्रामपुरवास्तव्ये महाराजाधिराजराजश्रीभावसिंह-राज्ये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवातत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीचन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री श्री श्री श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिजी। तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौसा गोत्रे सा० गंगा तद्भार्या गौरादे तयोः पुत्र सा० बेल्हा तद् भार्या बेलसिरि तयोः पुत्र पंच। प्रथम सा० ताल्हु तद् भार्या ल्होडी तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० सा० बाजू तद् भार्ये द्वे० प्र० बालहंदे, द्वि० प्रतापदे तत्पुत्री द्वौ प्र० पुत्र सा० सावल तद् भार्या सहलालदे तयोः पुत्र चि० साहीमल, द्वि० पुत्र सा० साकर। साह ताल्हु द्वि पुत्र सा० घडू तस्य भार्या गालदे। एतेषां मध्ये साह बाजू तद भार्या बालहंदे इदं शास्त्रं रत्नत्रयव्रत-उद्यापनार्थं भट्टारक श्री श्री श्री देवेन्द्र कीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री रामकीर्तिये प्रदत्तं।

१३. कर्मप्रकृति विधान—बनारसीदास। पत्र संख्या-११। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल-सं० १७००। लेखककाल-१७६०। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६२।

विशेष—यह रचना बनारसीविलास में संगृहीत रचनाओं में से है।

१४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-५१। साइज-६×६½ इञ्च। लेखनकाल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११७।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधान गुटके में है जिसमें निम्न पाठ और हैं—श्रावकों के १७ नियम, सिंदूर प्रकरण-(बनारसीदास) और अनित्य पंचाशिका-(त्रिभुवनचन्द)।

१५. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१४। साइज-१३½×५ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६८।

१६. कर्मप्रकृतियों का ब्यौरा—(कर्मप्रकृति चर्चा) ……………… । पत्र संख्या-१७। साइज-१०⅞×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३१।

विशेष—ग्रंथ बही खाते की साइज में है।

१७. ~~कर्मस्वरूपवर्णन~~—अभिनव वादिराज (पं० जगन्नाथ)। पत्र संख्या—५०। साइज-१०¾×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-सं० १७०७ माघ बुदी १३। लेखन काल-सं० १७०७। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६८४।

विशेष—१० से २३ तक के पत्र नहीं हैं। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— कर्म्मव्यूहविनिर्मुक्ता, मुक्तवाभत्वा विशुद्धितः।
भव्यकर्मस्वरूपाख्यो वादिराजेन तन्यते ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इति निरवद्यविद्यामडनमडित पडितमंडलीमंडित भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिजीकाख्यशिष्यैः कविगमकिवादिवाग्मित्व गुणगणभूषणै. कणादाक्षपादप्रभाकरभट्टशिवसुगतचार्वाकसांख्यप्रमुखप्रवादिगणोपन्यस्तदूषणदूषणैस्त्रैविद्यविद्याविपैः पंडित जगन्नाथैरपराख्ययाभिनववादिराजैर्विरचिते कर्म्मस्वरूपग्रंथे स्थित्यनुभागप्रदेशनिरूपणं नाम द्वितीय उल्लास,

वर्षे तत्त्वनभो श्व भूपरिमिते (१७०७) मासे मधौ सुन्दरे,
तत्पक्षे च सितेतरेहनि तथा नाम्ना द्वितीयाह्वये।

श्रीसर्वज्ञपदांबुजानति—गलद् ज्ञानावृतिप्राभवा
त्त्रैविद्येश्वरतांगता व्यरचयन् श्रीवादिराजा इमं ॥ १ ॥

तावत्केवलिमिश्रमः कविमनैर्ज्ञाः कृती प्राघवः।
तावज्जैनमतं चकास्ति विमलं तावन्नधर्मोत्सवः।

तावत्पोद्यमावनामवसूतां स्वर्गापवर्गौकयो
यावज्जीपरमागमो विजयते गोमट्टसाराभिधः ॥ २ ॥

१८. काल और अन्तर का स्वरूप—…………………… । पत्र संख्या-१२। साइज-११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७१।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

अथ काल अर अन्तर का स्वरूप लिखिए है ॥ क ॥ तिनि विषै आठ अंतर मार्गणा है तिनका स्वरूप

संख्या विधान निरूपणैं कै अर्थि गाथा तीन करि कहै है। नाना जीवनि की अपेक्षा विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणास्थान नै छोडि अन्य कोई गुणस्थान वा मार्गणास्थान नै प्राप्त होइ। बहुरि उस ही विवक्षित गुणस्थान वा मार्गणास्थान को यावत्काल प्राप्त न हो इति सत्काल का नाम अंतर है।

अन्तिम—विवक्षित मार्गणा के भेद का काल विषै विवक्षित गुणस्थान का अंतराल जेते कालि पाईए ताका वर्णन है। मार्गणा के भेद का पलटनां भएं। अथवा मार्गणा के भेद का सद्भाव होतै विवक्षित गुणस्थान का अंतराल भया था ताकी बहुरि प्राप्ति भएं विस अंतराल का अभाव हो है। ऐसे प्रसंग पाइ काल का अर अंतर कथन कीया है सो जानना ॥ इति संपूर्ण ॥

. पोथी ज्ञान बाई की।

१६. क्षपणासार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र संख्या-६६। साइज-१४×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७६।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र कृत क्षपणासार की यह संस्कृत टीका है। मूल रचना प्राकृत भाषा में है।

२०. गुणस्थान चर्चा—। पत्र संख्या-५२। साइज-१२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६२।

विशेष—चौदह गुणस्थानों पर विस्तृत चार्ट (संदृष्टि) हैं।

२१ प्रति नं० २—पत्र संख्या-३१। साइज-१२×७½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६३।

२२. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-५१। साइज-१०½×६ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६४।

२३. गोमट्टसार—आ० नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-७२६। साइज-१४×६½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६८६।

विशेष—७२६ से आगे पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२४. प्रति नं० २—पत्र सं०-१६१ से ८४८। साइज-१२½×६ इञ्च। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७८५।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-६५। साइज-११×५ इञ्च। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १८७।

विशेष—जीवकाण्ड मात्र है गाथाओं पर संस्कृत में पर्यायवाची शब्द है।

२६. प्रति नं० ४—पत्र संख्या १७२ । साइज–१३×८ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१२ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । आगे के पत्र नहीं है ।

२७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या–४० । साइज–१०×५½ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

२८. प्रति नं० ६—पत्र संख्या–११ । साइज–११×५¾ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

२९. प्रति नं० ७—पत्र संख्या–२४८ से ५३१ । साइज–२०×७½ इञ्च । × । लेखन काल–सं० १७९९ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

विशेष—२४६ से २५३, ३७१ से ४४०, ४८८ से ५२८ तक पत्र नहीं हैं ।

प्रति नेण सागर ने प्रतिलिपि की थी । सं० १७९९ में महाराजा जयसिंह के शासन काल में सवाई जयपुर में जोधराज पाटोदी द्वारा उस निमित्त (बनवाये हुए) ऋषभदेव चैत्यालय में गुलाबचन्द गोदीका ने प्रतिलिपि करवा कर इस ग्रंथ को भेंट किया था । केशववर्णि की कर्णाटक वृत्ति के आधार पर संस्कृत टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत्सरे नव-नारद-मुनिंदुमिते १७९९ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ सवाईजयपुरनाम्नि नगरे महाराजाधिराजसवाईजयसिंहराज्यप्रवर्तमाने पाटोदी गोत्रीय साह जोधराज कारित श्री ऋषभदेव चैत्यालय । श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकजित् श्री जगत्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे प्रभावद्रूपावक्षिम प्रतिमाधारक भट्टारकजित् श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा । तत्पट्टधारक कुमतिनिवारक केतुप्रमोदनिवारक भवभय-भंजक भट्टारकाधिराजजित् श्री महेन्द्रकीर्ति देवाम्नाये खंडेलवाल वंशोत्पन्न भौंसा गोत्रीयमध्ये गोदीकेति नाम्ना प्रसिद्धा श्रेष्ठीजित श्री लूणकरणाख्यास्तत्पुत्र श्री भगवद्धर्म प्रकटनकरणपर साह श्री रूपचन्द जी कस्तत्पुत्र: राद्धांतवितरणोवमितानादिमिथ्यात्वनिकरेण चिरंजीवजित श्री गुलाब चन्द्रेण इदं गोमट्टसार शास्त्र लिखाप्य भट्टारक जित् श्री महेन्द्र कीर्तिये प्रदत्तं ॥

३०. गोमट्टसार भाषा—पं० टोडरमलजी (लब्धिसार क्षपणासार सहित) पत्र संख्या–१०५३ । साइज–१०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १८१८ माघ सुदी ५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१२ ।

विशेष—कई प्रतियों का सम्मिश्रण है । बहुत से पत्र स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ के लिखे प्रतीत होते हैं । ग्रंथ का विस्तार ६०,००० श्लोक प्रमाण है ।

३१. प्रति नं० २—पत्र संख्या–११०४ । साइज–१५×७इञ्च । लेखन काल–सं० १८६१ पौष सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१६ ।

विशेष—संदृष्टि के अलग पत्र हैं। ११८, १३३ तथा २०२ के पत्र नहीं हैं।

३२. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१०३१ । साइज-१२½×६½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१७ ।

३३. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-३११ । साइज-१३½×८ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८११ ।

विशेष—केवल कर्मकाण्ड भाषा है।

३४. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-२२ । साइज-१४×६½इञ्च । लेखन काल-× अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

विशेष—जीवकाण्ड की भाषा मात्र है।

३५. **गोमट्टसार कर्मकाण्ड टीका—सुमति कीर्ति** । पत्र संख्या-४५ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २० ।

३६. **गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—पं० हेमराज** । पत्र संख्या-३४ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—पं० सेवा ने सरोजपुर में प्रतिलिपि की थी। ग्रंथ का प्रारम्भ और अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—पणमिय सिरसा णेमिं गुण रयण विहूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणनिलयं पयडि समुक्कित्तणं वोच्छं ॥ १ ॥

अर्थ—अहं नेमिचंद्राचार्य: प्रकृती समुत्कीर्त्तनं वक्ष्ये । अहं हूं जु हौ नेमिचंद्र ऐसे नाम आचार्य सो प्रकृतिसमुत्कीर्त्तनं प्रकृति हुंकार है समुत्कीर्त्तनं कथन जिस विषै ऐसा जु ग्रंथ कर्मकांड नामा तिसहि वक्ष्ये कहूंगा । किंकृत्वा कहा करि सिरसा नेमिं प्रणम्य सिरकरि श्री नेमिनाथ को नमस्कार करिकै। कैसे है नेमिनाथ गुणरत्न विभूषणं-अनंत ज्ञानादिक जु गुण तेई हुवे रत्न तेई है विभूषण आभरण जिनके । बहुरि कैसे हैं महावीरं महासुभट हैं कर्म के नासकरण कौं। बहुरि कैसे है सम्यक्त्व रत्न निलयं । सम्यक्त रूप जु है रत्न तिसके निलय स्थानक है ।

अन्तिम—अब जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक आदिक किया विषै प्रवर्त्तै, तब जैसी कुछ उत्कृष्ट मध्यम जघन्य शुभाशुभ किया होई, तिस माफिक कर्म हैं का बंध करै स्थिति अनुभाग की विशेषता करि । तिस तै समय समय बंध जु करै हुतौ स्थित अनुभाग की हीनता करि । अब जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त किया करि करै सुस्थित अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जाणना । इयं भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुद्धयानुसारेण । इति कर्म कांड भाषा टीका सम्पूर्ण । इति संवत्सरे अस्मिन् विक्रमादित्यराजैसप्तदशसत सतषटोत्तर १७०६ अत्र सरोजपुरे संज्ञिषे पुस्तक लिख्यतं पंडित सेवा स्वपठनार्थं ॥

३७. प्रति नं० २—पत्र संख्या-७६ । साइज-११×५½ इञ्च । लेखन काल-सं० १८२५ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि हुई थी।

३८. चर्चाशतक—द्यानतराय। पत्र संख्या–५१। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६२४ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८३।

विशेष–यह प्रति बधीचन्द साहाभिका के शिष्य हरजीमल पानीपत वाले की हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३६. प्रति नं० २—पत्र संख्या–४७। १५½×११½ इंच। लेखन काल–सं० १६३८ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८४।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है–हिन्दी टब्बा टीका सहित है। बीच २ में नक्शे आदि भी दिये हुए हैं।

४०. प्रति नं० ३—पत्र संख्या–६१। साईज–१२×५½ इंच। लेखन काल–स० १६०६ माघ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०८।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर ३ पंक्तियां हैं।

४१. चर्चासमाधान—भूधरदास जी पत्र संख्या–७६। साइज–१०½×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय—चर्चा। रचना काल–×। लेखन काल सं० १८८४। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६१।

४२. प्रति नं० २—पत्र संख्या–११३। साइज–१०½× ५ इञ्च। लेखन काल–स०१८८३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६२।

४३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या–६३। साइज–११×५½ इंच। लेखन काल–सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन–३६३।

४४. चर्चासंग्रह—पत्र संख्या–२७२। साइज–१२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चर्चा। रचना-काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३५६।

विशेष—गोमट्टसार त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रन्थों के आधार पर धार्मिक चर्चाओं को यहाँ संग्रह किया गया है। चर्चाओं के नाम निम्न प्रकार हैं चर्चा वर्णन, कर्मप्रकृति वर्णन, तीर्थंकर वर्णन, मुनि वर्णन, नरक वर्णन, अध्यलोकवर्णन, अन्तरकालवर्णन समोसरनवर्णन श्रुतिज्ञानवर्णन। नरकनिगोदवर्णन। मोक्षसुखवर्णन, अन्तरसमाधिवर्णन, कुदेववर्णन आदि।

४५. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र। पत्र संख्या–५६ से १२७। साइज—१२×६ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३२०।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है।

४६. प्रति सं० २—पत्र संख्या–१२३। साइज–११½×४½ इञ्च। लेखन काल–सं० १७७१। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीकाकार आनन्द राम है।

४७. चौबीसठाणा चर्चा भाषा—पत्र संख्या-५२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८५ माह बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५६ ।

विशेष—भाषाटीका का नाम बाल बोध-चर्चा दिया हुआ है ।

४८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३० । साइज-६×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १८२३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—खुशालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४९. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-३२ । साइज-१०× ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६१ ।

५०. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-६ । साइज-६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५४६ ।

५१ चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-२८ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४५ ।

विशेष—हिंडोली में प्रतिलिपि हुई थी ।

५२ चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२७ ।

५३. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या-४३ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

५४. जीवसमास वर्णन—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—गोमट्टसार जीवकांड में से गाथाओं का संग्रह है ।

५५. प्रति नं २—पत्र संख्या-८५ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ ।

विशेष—गाथाओं पर संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है ।

५६. ज्ञानचर्चा—पत्र संख्या-४६ । साइज-१½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३५७ ।

विशेष—गोमट्टसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार आदि ग्रंथों के अनुसार भिन्न २ चर्चाओं का संग्रह है ।

५७. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५८. तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामि। पत्र संख्या–२३। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८७३। पूर्ण। वेष्टन नं० ५१४।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र तथा द्रव्य संग्रह की गाथायें दी हुई हैं।

५९. प्रति नं० २—पत्र संख्या–२३। साइज–१०½×५ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५२४।
विशेष—पत्र लाल रंग के हैं तथा चारों ओर बेलें हैं।

६०. प्रति नं० ३—पत्र सं०–१५। साइज–११×५½ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५३१।

६१. प्रति नं० ४—पत्र संख्या–७। साइज–१०½×७ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६८।

६२. प्रति नं० ५—पत्र संख्या–१४। साइज–११½×५½ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६६।

६३. प्रति नं० ६—पत्र संख्या–७। साइज–१३½×६ इञ्च। लेखन काल–१६२३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०६।

६४. प्रति नं० ७—पत्र संख्या–३–१६। साइज–१०×४½ इञ्च। लेखन काल–× अपूर्ण। वेष्टन नं० ६६६।

विशेष—एक पत्र में ४ पंक्तियाँ हैं।

६५. प्रति नं० ८—पत्र संख्या–७। साइज–१०×४ इन्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४१।
विशेष—प्रति प्राचीन है।

६६. प्रति नं० ९—पत्र संख्या–७२। साइज–७×५½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४८।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र तथा पूजाओं का भी संग्रह है।

६७. प्रति नं० १०—पत्र संख्या–२०। साइज–११½×५½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४२।

विशेष—तीन चौबीसी नाम तथा भक्तामर स्तोत्र भी है।

६८. प्रति नं० ११—पत्र संख्या–४६। साइज–१०½×७½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५३।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

६९. प्रति नं० १२—पत्र संख्या–४७। साइज–१०½×७½ इंच। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५१।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

७०. प्रति नं० १३—पत्र संख्या-५२ । साइज-१०¼×७½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५० ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१. प्रति नं० १४—पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

७२. प्रति नं० १५—पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०४ ।

७३. प्रति नं० १६—पत्र संख्या-१३ । साइज-६×४½ इञ्च । लेखन काल-सं० १८१२श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०५ ।

७४. प्रति नं० १७—पत्र संख्या-१० । साइज-६×४½इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

७५. प्रति नं० १८—पत्र संख्या-६ । साइज-११½×६½ इञ्च × । लेखन काल-× । वेष्टन नं० ३०७ ।

विशेष—प्रत्येक पत्र के चारों ओर सुन्दर बेलें हैं ।

७६. प्रति नं० १६—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । नं० ४८७ । वेष्टन नं० ४ ।

विशेष—सूत्रों पर संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है । अक्षर मोटे हैं । एक पत्र में तीन पंक्तियाँ हैं ।

७७. प्रति नं० २०—पत्र संख्या-६३ । साइज-१२×६½ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है प्रति प्राचीन है ।

७८. प्रति नं० २१—पत्र संख्या-८१ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-सं० १६४६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—यह प्रति संस्कृत टीका सहित है जिसमें प्रभाचन्द्र कृत लिखा हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । कहीं कहीं हिन्दी में भी टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे शाके १५१४ कार्तिक सुदी १५ गुरुवासरे मालपुरा वास्तव्ये महाराजाधिराज श्री कंवर भाधोसिंह जी राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेव विरचिता । यह ग्रन्थ भीमराज वैद्य ने मनोहर लोका से पढ़ने के लिये मोल लिया था ।

७६. तत्त्वार्थ सूत्र वृत्ति—पत्र संख्या-२८ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५४७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—टीका में मूल सूत्र दिये हुये नहीं हैं । टीका संक्षिप्त है ।

प्रशस्ति—संवत् १५६७ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडलाचार्य रत्नकीर्ति शिष्येण ब्र० रत्नेन लिखापितं ।

८० तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—योगदेव । पत्र संख्या–१११ । साइज–१०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६३८ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—भट्टारक प्रभाचन्द्र देव की आम्नाय के अजमेरा गोत्रवाले साह सांतू व उनकी भार्या सुहागदे ने यह ग्रन्थ स० १६१८ में लिखवा कर षोडषकारण व्रतोद्यापन में मंडलाचार्य चन्द्रकीर्ति को भेंट किया था ।

८१. तत्त्वार्थसूत्र—पत्र संख्या–१२३ । साइज–१२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना-काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा दोनों भाषाओं की टीकायें सरल हैं ।

८२. तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका—कनककीर्ति—पत्र संख्या–२७१ । साइज–६×५¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३६ । वेष्टन नं० ८१४ ।

विशेष—नेण सागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १७५ से २७१ तक बाद में लिखे हुये हैं अथवा दूसरी प्रति के हैं ।

प्रारम्भ–मोक्ष मार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म्मभूभृतां । ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां वंदे तद्गुण लब्धये ॥ १ ॥ टीका–अहं उमास्वामी मुनीश्वर मूल ग्रंथ कारक । श्री सर्वज्ञ वीतराग वंदे कहतां श्री सर्वज्ञ वीतराग नै नमस्कार करू छू । किसा इक छै श्री वीतराग सर्वज्ञ देव, मोक्ष (ष) मार्गस्य नेतारं कहतां मोक्षमार्ग का प्रकासका करवा वाला छै । और किसा इक छै सर्वज्ञ देव कर्म्म भूभृतां भेत्तारं कहतां ज्ञानावरणादिक आठ कर्म त्यह रूपि पर्वत त्याह का भेदिवा वाला छै ।

अन्तिम—कै इक जीव धारया रिधि करि सिध छै । कै इक जीव धारया बिना सिध छै । कै इक जीव घोर तप करि सिध छै । कै इक जीव अघोर तप करि सिध छै । कै इक जीव उत्तम सिध छै । कै इक मध्य सिध छै । कै इक जीव अघो सिध छै । इह भांति करि घणा ही भेदा सौं सिध हुवा छै । सो सिधांत सु समझि लीज्यौ । इति तत्त्वार्थाधि गमे मोक्ष शास्त्रे दसमीयो पोसतक लिखत नेण सागर का चौमनराम दोसी सवाई जैपुर में लिख्यौ संवत १८४६ में पुरी कियो ।

८३ प्रति नं० २—पत्र संख्या–१२२ । साइज ८×४ इंच । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२३ ।

विशेष—श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की हिन्दी टीका है ।

८४. प्रति नं० ३—पत्रसंख्या–२१६ । साइज–११×७ इंच । लेखन काल–सं० १८४० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१५ ।

विशेष—चैन सागर ने सांभर में लिपि की थी । प्रारम्भ के पत्र नहीं है यद्यपि संख्या १ से ही प्रारम्भ है ।

८५ प्रति नं ४—पत्र संख्या–११२ । साइज–११×६¾ इंच । लेखन काल–सं० १७३८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष—दूसरे अध्याय से है। वेष्टन नं० ७४७ के समान है।

८६ प्रति नं० ५—पत्र संख्या-८२। साइज-११½×४½ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७४७। वेष्टन नं० ८३४ के समान है।

८७. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-१३१। साइज-८½×४½ इंच। लेखन काल-वैशाख सुदी ५ सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२३।

विशेष—पापडदा में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी। लिखितं ऋषि जयीराजेण। लिखापितं श्री संघेन नगर पापडदा मध्ये। दूसरे अध्याय से लेकर १० वें अध्याय तक की टीका है। यह टीका उतनी विस्तृत नहीं है जितनी प्रथम अध्याय की है।

८८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा। पत्र संख्या-४४०। साइज-१०×७ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल- सं०१८६५ चैत सुदी ५। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७३२।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपी की थी।

८६. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-३३६। साइज-११×७ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १०। लेखन काल-सं० १६३६ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२१।

विशेष—सदासुख जी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह वृहद् टीका है। टीका का नाम 'अर्थ प्रकाशिका' है। ग्रन्थ की रचना सं० १६१२ में प्रारम्भ की गई थी।

६०. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-१२३। साइज-८×५ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-सं० १६१० फाल्गुण बुदी १०। लेखन काल-सं० १६१६ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५२।

विशेष—सदासुखजी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र की लघु भाषा वृत्ति है।

६१. प्रति नं २—पत्र संख्या-१२७। साइज-११×५ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५३।

६२. तत्त्वार्थ सूत्र टीका भाषा—पत्र संख्या-१ से १००। साइज-१५×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७८०।

विशेष—१०० से आगेकेपत्र नहीं है। प्रारम्भिक पद्य निम्न प्रकार हैं—

श्रीवृषभादि जिनेश वर, अंत नाम शुभ वीर।
मनवचकायविशुद्ध करि, वंदों परम शरीर ॥ १ ॥

करम बराबर भेदि जिन, भरम बराबर पाय ।
भरम बराबर कर नमूं, सुगुरु परापर पाय ॥ २ ॥

६३. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र संख्या-११ । साइज-१०३/४×७३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०३ ।

६४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र संख्या-७७ से १७८ । साइज-६×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८३५ ।

६५. तत्त्वार्थबोध भाषा—बुधजन । पत्र संख्या-७७ । साइज-१०३/४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-१८७६ कार्तिक सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं०७३३ ।

विशेष—२०२६ पद्य हैं । प्रति नवीन एवं शुद्ध है रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अन्तिमपाठ — सुबस बसै जयपुर तहाँ, नृप जयसिंह महाराज ।
बुधजन कीनौ ग्रंथ तह निज परहित के काज ॥ २०२७ ॥

संवत् ठारासै विषै अधिक गुण्यासी वेस ।
कातिक सुदि ससि पचमी पूरन ग्रन्थ असेस ॥ २०२८ ॥

मंगल श्री अरहत सिद्ध मंगल दायक सदा ।
मगल साध महत, मंगल जिनवर धर्मवर ॥ २०२६ ॥

६६. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-१२० । साइज-८×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०३ ।

विशेष—तत्त्वार्थ सूत्र की यह टीका मुनि श्री धर्मचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र द्वारा विरचित है । मवसूदाबाद में भट्टारक श्री दीपकीर्ति के प्रशिष्य एवं लालसागर के शिष्य रामजी ने प्रतिलिपि की थी । १०६ पत्र के आगे नेमिराजुल गृहमाला तथा राजुल पच्चीसी, शारदा स्तोत्र (भ० शुभचन्द्र) सरस्वती स्तोत्र मंत्र सहित स्तोत्र और दिया हुआ है ।

६७. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र संख्या-३ से ११७ । साइज-११×७१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६१ ।

६८. प्रति नं० २—पत्र संख्या- १ से ५३ । साइज-११×६३/४ इंच । लेखन काल-× । अपूर्ण वेष्टन नं० ६४७ ।

६६. तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या-५३२ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६५ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—ग्रन्थ श्लोक संख्या २००० प्रमाण है।

१००. तत्त्वार्थसार—पत्र संख्या-४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल। पूर्ण। वेष्टन नं० ५११।

१०१. त्रिभंगी संग्रह—पत्र संख्या-४७। साइज-१०×५३/४ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७२२ श्रावण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० १३।

विशेष—साह नरहर दास के पुत्र साह गंगाराम ने यह प्रति लिखवायी थी।

ग्रन्थ में निम्न त्रिभंगियों का संग्रह है—

बंध त्रिभंगी, उदयउदीरणा त्रिभंगी (नेमिचन्द्र), सत्ता त्रिभंगी, भावत्रिभंगी तथा विशेष सत्ता त्रिभंगी।

१०२ त्रिभंगीसार—श्रुतमुनि। पत्र संख्या-३६। साइज-११×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०३।

१०३ द्रव्यसंग्रह—आ०नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-१९। साइज-१०१/२×७ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३३ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

१०४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१३। साइज-१२×५१/२ इंच। लेखन काल-सं० १७३८ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

१०५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३६। साइज-१२×५इंच। लेखन काल-सं०१७८६ सावन सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ७७।

विशेष—पर्वतधर्मार्थीकृत बालबोधिनी टीका सहित है। मालसोट में भट्ट रतनजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०६. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-२। साइज-८३/४×६३/४ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८।

१०७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-३। साइज-११×५३/४इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७९।

विशेष—पद्मनन्दि के शिष्य ब्रह्मरूप ने प्रतिलिपि की।

१०८. प्रति नं० ६ —पत्र संख्या-६। साइज-१०×५१/२ इंच। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०।

विशेष—इसी प्रकार की ७ प्रतियां और हैं। वेष्टन नं० ८१ से ८७ तक हैं।

१०६. प्रति नं० १४—पत्र संख्या–६ । साइज–१२×४½ इंच । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८ ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

११०. प्रति नं० १५—पत्र संख्या–११ । साइज–१०½×४¾ इंच । लेखन काल–सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

विशेष—माधोपुर मे पं० नगराज ने प्रतिलिपि की ।

१११. प्रति नं० १६—पत्र संख्या–६ । साइज–११×५ इन्च । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—शरदि पशुपतीसणाद्दु गवस्वब्जांकिते पुण्य समय मासे ग्रर्ज्जु नेतरपक्षे तिथौ त्रयोदश्यां भोम वासरे सवाईजयनगरे कामपालगंजे वृषभचैत्यालय पंडितोत्तम विद्वद्वरजिच्छ्री रामकृष्णजित्कतच्छिष्य विद्वद्वरेण सकलगुण निधान जिच्छ्री नगराजे जित्तच्छिष्य बाल कृष्णेन स्वपठनार्थं लिखितं ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

११२. प्रति न० १७—पत्र संख्या–६२ । साइज–१०½×५ इंच । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ६१

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुऐ है।

११३. प्रति नं० १८—पत्र संख्या–७ । साइज–८½×४½ इंच । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६ ।

११४ प्रति नं० १६—पत्र संख्या–७ । साइज–१२×५½ इंच । लेखन काल–सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन ५७ ।

विशेष—जीवराज छाबड़ा ने अपने पढने को प्रतिलिपि कराई ।

११५. प्रति नं० २०—पत्र संख्या–७ । साइज–१२×५½ इंच । लेखन काल-सं० १६०१ । पूर्ण वेष्टन नं० ५८ ।

११६. द्रव्यसंग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव । पत्र संख्या–१७० । साइज–१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत विषय-सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६ ।

११७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या–२६ से ५६ । साइज–१०×४½ इंच । भाषा-गुजराती । विषय-सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७५८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४२ ।

विशेष—बसुआ में प्रति लिखी गई थी । अमरपाल ने लिखवायी थी ।

११८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३५ । साइज-११½×५ इंच । लेखन काल-सं० १७५३ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४३ ।

विशेष—संग्रामपुर नगर में प्रतिलिपि हुई ।

११९. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३१ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४४ ।

विशेष—प्रतियाँ वर्षा में भीगी हुई हैं ।

१२०. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-४८ । साइज-१२×५½ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४५ ।

१२१. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्दजी । पत्र संख्या-३७ । साइज-१०½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

१२२. प्रति नं २—पत्र संख्या-४६ । साइज-१०½×७ इञ्च । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३० ।

१२३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-४८ । साइज-१०½×६ इंच । लेखन काल-सं० १८६८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४१ ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने लवाण में प्रतिलिपि की । हंसराज ने प्रतिलिपि कराकर बधीचन्द के मन्दिर में स्थापित की । पहले तथा अन्तिम पत्र के चारों ओर लाइनें स्वर्ण की रंगीन श्याही में है, अन्य पत्रों के चारों ओर बेलें तथा बूँटे अच्छे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

१२४ द्रव्यसंग्रह भाषा—वंशीधर । पत्र संख्या-३० । साइज-१०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५७ ।

विशेष—प्रारंभ-जीवमजीवं दव्वं इत्यादि गाथा की निम्न हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—अहं कहिये मैं जु हो सिद्धांतचक्रवर्ति श्री नेमिचद्र नामा आचार्य सो तं कहिये आदिनाथ महाराज है ताहि सिरसा कहिये मस्तक करि सव्वदा कहिये सर्वकाल विषें वंदे कहिये नमस्कार करू हूँ... ।

अंतिम—

टीका—भो मुणिणाहा कहिये हे मुन्यों के नाथ हो जुयं कहिये तुम जु हो ते इणं दव्वं संगहे कहिये इहु द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ है ताहि सोधयंतु कहिये सौध्यो है मुनिनाथ हो तुम कैसाक हो...... ।

१२५. द्रव्यसंग्रह भाषा—पत्र संख्या–८६ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४१ ।

विशेष—पहिले द्रव्य संग्रह की गाथायें दी हुई हैं और उसके पश्चात् गाथा के प्रत्येक पद का अर्थ दिया हुआ है।

१२६. द्रव्य का ब्योरा—पत्र संख्या–१८ । साइज–४×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धांत । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १००० ।

१२७ पंचास्तिकाय—आ० कुन्दकुन्द । पत्र संख्या–३३ । साइज–१०½×५ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—मूल मात्र है।

१२८. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–४३ । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७२ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

१२६. प्रति नं० २—पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । लेखन काल–सं० १८२५ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—सवलसिंह की पुत्री बाई रूपा ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी।

१३०. पंचास्तिकाय प्रदीप—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या– २२ । साइज–१३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द कृत पञ्चास्तिकाय की टीका है। अन्तिम पाठ इस प्रकार है—

इति प्रभाचन्द्र विरचिते पंचास्तिक प्रदीपे मूलपदार्थ प्ररूपणाधिकार समाप्तः ॥

१३१. पंचास्तिकाय भाषा—पं० हेमराज । पत्र संख्या–१०४ । साइज–११×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७२१ आषाढ बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—आमेर में शाह रिषभदास ने प्रतिलिपि कराई थी। प्रति प्राचीन है। हेमराज ने पञ्चास्तिकाय का हिन्दी गद्य में अर्थ लिखकर जैन सिद्धान्त के अपूर्व ग्रन्थ का पठन पाठन का अत्यधिक प्रचार किया था। हेमराज ने रूपचन्द्र के प्रसाद से ग्रंथ रचना की थी।

१३२. पंचास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र संख्या–६१ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १८६२ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०५ ।

विशेष—संघी अमरचन्द दीवान की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की गयी थी। ग्रन्थ में ५८२ पद्य हैं। रचना का आदि अन्त निम्न प्रकार है—

मंगलाचरण—

> वंदू जिन जित क्रम अति इष्ट, वाक्य विशद त्रिभुवन हित मिष्ट ।
> अंतर हित धारक गुन वृन्द, ताके पद वदत सत इंद ॥

अन्तिम पाठ—

> पराकरत कुन्दकुन्द बखानी, ताका रहिस अमृतचन्द्र जानि ।
> टीका रची सहस कृत बानी, हेमराज वचनिका आनी ॥ ५७७ ॥
> करैं सम्यक्त्व मिथ्यात्व हरै, भव सागर लील तै तरै ।
> महिमा मुख तै कही न जाय, बुधजन बंदै मन वच काय ॥५७८ ॥
> सांगही अमर चन्द दीवान, मोकू कही दयाकर आन ।
> मुन्नालाल फुनि नेमिचन्द सहसकिरत न्यायक गुन वृन्द ॥
> शब्द अर्थ धन यो में लह्यो, भाषा करन तबै उमगह्यो ॥५८०॥
> भक्ति प्रेरित रचना आनी, लिखो पढो बाचो भवि ज्ञानी ।
> जो कहु यामैं अशुध निहारो, मूलग्रंथ लखि ताहि सुधारो ॥
> रामसिंह नृप जयपुर बसै सुदि आसोज गुरु दिन दशै ।
> उगणी सै में घटि है आठ ता दिवस मैं रचयो पाठ ॥५८२॥

१३३. **भाव संग्रह—देवसेन** । पत्र संख्या-१ से ३४ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२१ फाल्गुण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

विशेष – अथ श्री संवत् १६२१ वर्षे फाल्गुण बुदी ७ भौमवासरे । अथ श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्करग जिनायें अग्रोतकान्वये गोइल गोत्रे पंचमीव्रत उद्धरण वीर साह छागरु तस्य भार्या देल्हाही तस्य पुत्र सा० धुजोखा तस्य भार्या वाल्हाही फतेहाबाद वास्तव्यं । तयो पुत्रा षट् प्रथम पुत्र............।

१३४. **प्रति न० २**—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-स० १६०६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष—शेरपुर निवासी पाटनी गोत्र वाले साह मलु ने यह शास्त्र लिखा था ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०६ मार्गसरी १० शुक्ले रेवती नक्षत्रे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा: तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा: तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्र देवा: तत्पट्टे भ०

श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्शिष्य बहुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवाः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये शेरपुर वास्तव्ये पाटणी गोत्रे साह अखया तद्भार्या तेजी तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० संघी चापा द्वितीय संघी दूल्हा । संघी भाया तद्भार्या श्र्ंगारदे तयोःपुत्राश्च चत्वारः ।

प्रथम साह ऊधा द्वितीय साह दीरा तृतीय साह नेमा चतुर्थ साह मलू ।।साह ऊधा भार्या उधासिरि तत् पुत्र साह पर्वत तद्भार्या पोसिरी । साह दीवा भार्या देवलदे । साह नेमा भार्या लाडमदे तयोः पुत्र चि० लाला । साह मल्लू भार्या महमादे । साह दूलह भार्या बुधी तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम संघी नानू द्वितीय संघी ठक्कुरसी तृतीय संघी गुणदत्त । संघी नानू भार्या नायकदे तयो पुत्र चि० कौजू । संघी ठक्कुरदे भार्या पाटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम साह ईसर तद् भार्या अहंकारदे, द्वि० चि० सेवा । साह गुणदत्त भार्या गारवदे । तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० गेगराज द्वि० चि० सुमतिदास तृ० चि० धर्मदास एतेषां मध्ये साह मलू इदं शास्त्रं लिखाप्य पंचमीव्रतोद्योतनार्थं आचार्य श्री ललितकीर्ति आचार्य धनक राय दत्तं ।

१३५. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र संख्या-१ से १४ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५१० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टीका भी है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५१० वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले गुर्जरदेशे कल्पवल्ली शुभस्थाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नन्दीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्री यश कीर्तिः तत्पट्टे भट्टारक श्री उदयसेन, आचार्य श्री जिनसेन पठनार्थं ।

१३६. लब्धिसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४ ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । लेखक—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १५५१ वर्षे आषाढ सुदी १४ मंगलवासरे ज्येष्ठानक्षत्रे श्री मेदपाटे श्रीपुरनगरे श्री ब्रह्मचालुकवंशे श्रीराजाधिराज रायश्री सूर्यसेनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, श्री नंदिसंघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे श्री शुभचन्द देवाः पत्पट्टे श्री जिनचन्द्र देवाः तत् शिष्य मुनि रत्नकीर्तिः तत् शिष्य मुनि लक्ष्मीचन्द्रः खंडेलवालान्वये श्री साह गोत्रे साह काल्हा भार्या रानादे तत् पुत्र साह बीभा, साह माधव, साह लाला, साह डूंगा । बीभा भार्या विजयश्री द्वितीय भार्या पूना । विजय श्री भार्या पुत्र जिणदास भार्या जौणदे, तत् पुत्र साह गंगा, साह सांगा साह सहसा, साह चौडा । सहसा पुत्र पासा साम्प्रमिदं लब्धिसारमिधानं निजज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं मुनि लक्ष्मीचन्द्राय पठनार्थं लिखापितं । लिखितं गोगा ब्राह्मण गौड ज्ञातीय ।

जयंत्यन्वहमर्हंतः सिद्धाः सूर्यु पदेशकाः ।
साधवो भव्यलोकस्य शरणोत्तम मंगलं ॥
श्री ब्रम्हार्यतनूजातशांतिनाथोपरोधतः ।
वृत्तिर्मन्दप्रबोधाय लब्धिसारस्य कथ्यते ॥

१३७. **लब्धिसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव** । पत्र संख्या–६७ । साइज–१४×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७७ ।

विशेष—इस प्रति की सं० १५८३ वाली प्रति से प्रतिलिपी की गई थी ।

१३८. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–२४ । साइज–१४×६½ इञ्च । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७८

१३९. **लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल** । पत्र संख्या–१ से ४५ । साइज–१२½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

१४०. **षट् द्रव्य वर्णन**—पत्र सख्या–११ । साइज–१०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२५ ।

१४१. **सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद** । पत्र सख्या–१०२ । साइज–११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–स० १५२१ चैत सुदी ३ । पूर्ण वेष्टन न० ४० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण नहीं है । केवल सवत् मात्र है । प्रति शुद्ध है ।

१४२. **सिद्धान्तसारदीपक—भ० सकलकीर्ति** । पत्र संख्या–५ से ८१ । साइज १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक है ।

१४३. **प्रति न० २**—पत्र संख्या–१० से ५० । साइज–१०½×६½ इञ्च । लेखन काल– × । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

१४४. **प्रति नं० ३**—पत्र संख्या–३८ से २७५ । साइज–१०×४½ इंच । । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २०० ।

१४५. **सिद्धान्तसारदीपक भाषा—नथमल बिलाला** । पत्र संख्या–२४५ । साइज–१०½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–स० १८२४ । लेखन काल–सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

धर्म एवं आचार-शास्त्र

१४६. अनुभवप्रकाश — दीपचन्द । पत्र संख्या-२२ । साइज-१२½×८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७८१ पौष सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४५ ।

१४७ अरहन्त स्वरूप वर्णन—पत्र संख्या-३ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४४ ।

१४८. आचारसार—वीरनन्दि । पत्र संख्या-८२ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१६ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७७ ।

विशेष— प्रति उत्तम है, क्लिष्ट शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१४९. आचारसारवृत्ति—वसुनंदि । पत्र संख्या-३१० । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—मूलकर्त्ता आ० बट्टकेर स्वामी हैं । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है ।

१५०. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र संख्या-६० । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १६२७ श्रावण सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

विशेष—रचना का दूसरा नाम षटकर्मोपदेशरत्नमाला भी है । इस ग्रंथ की ४ प्रतियां और हैं वे सभी पूर्ण हैं ।

१५१. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-११ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५७ ।

विशेष—महात्मा सीताराम ने नोनदराम के पठनार्थ लिपि कराई थी ।

१५२. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा । पत्र संख्या-१० । साइज-११½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७७२ चैत्र सुदी १४ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—भाषाकार के मतानुसार उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला की रचना सर्व प्रथम प्राकृत भाषा मे धर्मदास गणि ने की थी । उसी ग्रंथ का संक्षिप्त सार लेकर भंडारी नेमिचन्द ने ग्रन्थ रचना की थी । भाषाकार ने भंडारी नेमिचन्द की रचना की ही हिन्दी की है ।

प्रारम्भ—शुद्ध देव अरहंत गुरू, धर्म्म पंच नवकार ।
बसै निरंतर जासु हिय, धन्यकती नर सार ॥१॥

पठइन गुणइन दानन देहि, तप आचार नहुं नाहि करेहि ।
जो हिय एक देव अरिहंत, ताप त्रय न आताव करंत ॥२॥

अन्तिम पाठ—

इम भंडारी नेमिचंद, रची कितीयक गाह ।
सुमगरक्त जे भवि पठत, जीनतु सिव सुख लाह ॥६१॥
यह उपदेश रतन माला सुभ, ग्रंथ रच्यौ श्रमदासगणी,
ता महिं केतक गाह अनोपम नेमिचन्द भंडार भणी ।
जिनवर धरम प्रभावन काजइ भाष रच्यौ अनुबुद्धि तणी ।
जाके पढत सुनत सब धारत आतम हुइ वर सिव रमणी ॥६२॥
संवत् सतरह सै सतरि अधिक दोय पय सेत ।
चैत मास चातुरदसी, पूरन भयौ सु एत ॥६३॥

१५३. **उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भागचन्द्र** । पत्र संख्या–६२ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १६१२ आषाढ बुदी २ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०७ ।

१५४. **उपासकदशा सूत्र विवरण—अभयदेव सूरि** । पत्र संख्या–१८ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७६ ।

विशेष—उपासक दशा सूत्र श्वे० सम्प्रदाय का सातवां अंग है जो दश अध्यायों मे विभक्त है । संस्कृत में यह विवरण अति संक्षिप्त है । विवरण का प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवर्द्धमानमानम्य व्याख्या काचिद विधीयते ।
उपासकदशादीनां प्रायो ग्रंथांतरेक्षिताः ॥१॥

१५५. **उपासकाचार दोहा—लक्ष्मीचन्द्र** । पत्र संख्या–२७ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश (प्राचीन हिन्दी) । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२१ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७८ ।

विशेष—दोहों की संख्या २२४ है ।

१५६. **कर्मचरित्र बाईसी—रामचन्द्र** । पत्र संख्या–५ । साइज–६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५७ ।

विशेष—३ पत्र से आगे दौलतरामजी के पद हैं ।

१५७. **क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह** । पत्र संख्या–११४ । साइज–१०½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी

पद्य । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७८४ भादवा सुदी १५ । लेखन काल-सं० १८४६ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३० ।

विशेष—भण्डार में ग्रन्थ की ११ प्रतियां और हैं जो सभी पूर्ण हैं ।

१५८. **गुणतीसो भावना**—पत्र संख्या-२ । साइज-११½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—हिन्दी गद्य में गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है । गाथाओं की संख्या २६ है ।

१५६. **गुरोपदेश श्रावकाचार—डालूराम** । पत्र संख्या-१३३ । साइज-१२½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८० ।

विशेष—पचेवर में ग्रंथ की प्रतिलिपि हुई थी ।

१६०. **चारित्रसार (भावनासार संग्रह) चामुण्डराय** । पत्र संख्या-११० । साइज-९½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

विशेष—प्रथम खड तक है तथा अंतिम प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१६१. **चारित्रसार पंजिका**—पत्र संख्या-८ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । चारित्रसार टिप्पण भी नाम दिया हुआ है । टिप्पण अति संक्षिप्त है ।

प्रारम्भिक मंगलाचरण निम्न प्रकार है—

नमोनंतसुखज्ञानदर्शवीर्याय जिनेशिने ।
संसारवारापारास्थिन्निमज्जज्जीवतारिणे ॥१॥
चारित्रसारे श्रुतसारं संग्रहे यन्मंदबुद्धे स्तमस्तावृत्तं पदं ।
अव्यक्तये व्यक्तपदप्रयोगतः प्रारभ्यते विद्वदभीष्टपंजिका ॥२॥

१६२. **चारित्रसार भाषा—मन्नालाल** । पत्र संख्या-२३५ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १८७१ । लेखन काल-सं० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५६ ।

आदि भाग (पद्य)— श्री जिनेन्द्र चन्द्राः । परम मंगलमादिशतु तराम् ।

दोहा:—परम धरम रथ नेमि सम, नेमिचन्द्र जिनराय ।
मंगल कर अघ हर विमल, नमो सुमन-वच-काय ॥१॥

भव अथाह सायर परे, जगत जंतु दुख पात ।

करि गहि काढत तिनहि यह, जैन धर्म विख्यात ॥२॥

करत परम पद त्रिदश सुख, काढत सुख विस्तार ।

नमों ताहि चित हरष धरि, करुणामृत रस धार ॥३॥

मध्यभाग (गद्य):—(पत्र सं० ६४) मदिरा को पीवै तथा और हू मादिक वस्तु भक्षण करैं तब प्रमाद के बधने तैं विवेक का नाश होय । ताके नाश होतैं हित अहित का विचार होता नाहीं । ऐसैं धर्म कार्य तथा कर्म इन दोउन हुतैं भ्रष्ट होहि तातैं इस मद्यवत तथा मादिक वस्तु का सर्वथा प्रकार त्याग ही करना जोग्य है । ऐसा जानना ।

ग्रंथोत्पत्ति वर्णन–प्रशस्तिः—

सर्वाकाश अनन्त प्रमान । ताके बीच ठीक पहचान ॥

लोकाकाश असंख्य प्रदेश, ऊरिध मध्य अधो भूमेश ॥१॥

मध्यलोक में जंबू दीप । सो है सब द्वीपनि अवनीप ॥

ता मधि मेरु सुदर्शन जान । मानूं भूमि दंड है मान ॥२॥

ता दक्षिण दिश भरत सु नाम । लेत्र प्रकट सो है सुरधाम ॥

ताके मध्य ढूंढाहड देश । बहु शोभा जुत लसैं अशेष ॥३॥

तहां सवाई जयपुर नाम । नगर लसत रचना अभिराम ॥

बहु जिन मंदिर सहित मनोग्य । मानूं सुर गण बसनें जोग्य ॥४॥

जगत सिंह राजा तसु जान । कंपत अरिगन करैं प्रनाम ॥

तेजवंत जसवंत विशाल । रीझत गुन गन करत निहाल ॥५॥

जहां बसैं बहु जैनी लोग । सेवत धर्म वमै दुख रोग ॥

तिन मधि सांगा वंश विशाल । जोगिदास सुत मन्नालाल ॥६॥

बालपने ते संगति पाय । विद्याभ्यास कियो मन लाय ॥

जैन ग्रंथ देखे कुछ सार । जयचंद नंदलाल उपकार ॥७॥

हस्तिनागपुर तीर्थ महान । तहि बंदन आयो सुख धाम ॥

इन्द्रप्रस्थ पुर शोभा होइ । देखैं भयो अधिक मन मोद ॥८॥

तहां राज अँगरेज करंत । हुकम कंपनी छत्र फिरंत ॥

बादस्याह अकबर सिर सेत । सेवक अवनि द्रव्य बहु देत ॥९॥

हरसुख राय खजाना वंत । तिनके सोहै धरम धरंत ॥

अगरवाल गोत्रीं गुण नाम । सुगनचन्द्र तसु पुत्र सुजान ॥१०॥

मंदिर तिनि नै रच्यो महंत । जिनवर तनो धूजा लहकंत ॥

बहु विधि रचना रची तहु माहि । शोभा बरनत पार न पाहि ॥११॥

ताके दर्शन कर सुख राशि । प्रापत भई रंक निधि मासि ॥
कारन एक भयो तिहि ठाम । रहने को भाषू तंहु नाम ॥१२॥

मंत्री जगतसिंह को नाम । अमरचन्द्र नामा गुणधाम ॥
रहै बहुत सजन सुखदाय । धर्म राग शोभित अधिकाय ॥१३॥

मोतैं अधिक प्रीति मन धरै । तिनं अरकायो मैं हित खरैं ॥
ता कारण विरता तिहि पाय । सुगनचंद्र के कहै सुभाय ॥१४॥

चारित्रसार ग्रंथ की भाष । वचन रूप यह करो सुसाख ॥
ठाकुरदास और इन्दराज । इनि भाइन के बुद्धि समाज ॥१५॥

मंदबुद्धितें अर्थ विशेष । तहि प्रतिभास्यो होय अशेष ॥
सुधी ताहि नीकै ठानियो । पक्षिपात मत ना मानियो ॥१६॥

अनेकांत यह जैन सिधंत । नय समुद्र वर कहि विलसंत ॥
गुरुवच पोत पाय भवि जीव । लहो पार सुख करत सदीव ॥१७॥

जयवंती यह होउ दिनेश । चन्द नखत उडु बजावत शेष ॥
पढो पढावो भव्य संसार ।·बढो धर्म जिनवर सुखकार ॥१८॥

संवत एक सात अठ एक । माघ मास सित पंचमि नेक ॥
मंगल दिन यह पूरण करी । नांदो विरधो गुण गण भरी ॥१९॥

दोहा:—शुभ वितक सु लेखका दयाचंद यह जानि ।
लिख्यो ग्रंथ तिनि नैं एहै बाचो पढो सुहसानि ॥

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है लेकिन अपूर्ण है।

१६३. चिद्विलास–दीपचन्द—पत्र संख्या–५० ।;साइज–१२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल– सं० १७७९ फाल्गुण सुदी ५ । लेखन काल–सं० १७८४ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२१ ।

१६४. चौरासी बोल—हेमराज । पत्र संख्या–१४ । साइज–११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

१६५. चौबीस दंडक—पत्र संख्या–२८ । साइज–७×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल सं० १८५४ श्रावण सुदी ६ । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ५४७ ।

विशेष—१४ वें पत्र के आगे बारह भावना तथा बाईस परीषह का वर्णन है । दंडक में ११८ पद्य हैं ।

१६६. **चौबीस दंडक—दौलतराम** । पत्र संख्या-१ । साइज-७×२१$\frac{1}{4}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

१६७. **जिनगुण पच्चीसी**—पत्र संख्या-२२ । साइज-११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०५ ।

१६८. **जीवों की संख्या वर्णन**—पत्र संख्या-८ । साइज-७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३६ ।

१६९. **ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७२८ माह सुदी ८ । लेखन काल-सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०६ ।

१७०. **ज्ञान मार्गणा**—पत्र संख्या-६ । साइज-१०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

विशेष—मार्गणाओं का वर्णन संक्षेप में दिया हुआ है ।

१७१. **ज्ञानानन्द श्रावकाचार—रायमल्ल** । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४९ ।

१७२. **ढाल गण-सूरत** । पत्र संख्या-९ । साइज-१०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०९ ।

१७३. **त्रेपनक्रियाविधि—पं० दौलतराम** । पत्र संख्या-१०४ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७९५, भादवा सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७७ ।

विशेष—कवि ने यह रचना उदयपुर में समाप्त की थी ।

१७४. **दशलक्षणधर्म वर्णन**—पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७९ ।

विशेष—दश धर्मों का हिन्दी गद्य में संक्षिप्त वर्णन है ।

१७५. **दर्शनपचीसी—भारतराम** । पत्रसंख्या-११ । साईज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०३ ।

विशेष—फुटकर सवैया भी हैं । एक प्रति और है जिसका वेष्टन नं० ५०६ है ।

१७६. **देहव्यथाकथन**—पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ९३: ।

विशेष—देह को किस २ प्रकार से व्यथा है इसका वर्णन किया हुआ है

१७७. **धर्म परीक्षा—आचार्य अमितगति** । पत्र संख्या–८८ । साइज–११½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १०७७ । लेखन काल–सं० १७६२ पौष शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८७ ।

विशेष—वृन्दावती गढ (वृन्दावन) में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । सं० १७६२ मिति पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया दिवसे वार शुक्रवार लिखितं गढ वृन्दावती मध्ये श्री राव बुधसिंह राज्ये नेमिनाथचैत्यालये भट्टारक श्री जगतकीर्ति आचार्य श्री शुभचन्द्र न शिष्य नानकरामेन शुभं भवंत् ।

ग्रंथ की एक प्रति और है जो सं० १७२१ में लिखित है । वेष्टन नं० १८८ है ।

१७८. **धर्म परीक्षा—मनोहरदास सोनी** । पत्र संख्या–१२४ । साइज–१०½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६६ ।

विशेष—हिन्डौन में प्रतिलिपि हुई थी ।
इसी ग्रंथ की पाँच प्रतियाँ और हैं जो सभी पूर्ण हैं तथा उत्तम हैं ।

१७९. **धर्मविलास—द्यानतराय** । पत्र संख्या–२१६ । साइज–१०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२३ ।

विशेष—द्यानतरायजी की रचनाओं का संग्रह है ।

१८० **धर्मरसायन—पद्मनन्दि** । पत्र संख्या–१९ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है जो संवत् १८५४ में लिखी हुई है । वेष्टन नं० २८ है ।

१८१. **धर्मसार चौपई—पं० शिरोमणिदास** । पत्र संख्या–२६ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १७३२ बैसाख सुदी ३ । लेखन काल–१८३६ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । इसमें हिन्दी के ७६२ छन्द हैं । रचना काल निम्न पंक्तियों से जाना जा सकता है ।

संवत् १७३२ बैसाख मास उज्जवल पुनि दीत ।
तृतीया अक्षय शनी संजित अभिजय की मंगल सुक्ख देत ॥

१८२. **धर्मपरीक्षा भाषा—बा. दुलीचन्द** । पत्र संख्या– २७२ । साइज–११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८६८ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८६ ।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है । मूल कर्ता आचार्य अमित गति हैं ।

१८३. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—चंपाराम। पत्र संख्या–१६०। साइज–१२×५½ इन्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–आचार। रचना काल–सं० १८६८ भादवा सुदी ५। लेखन काल–सं० १८६० भादवा सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६०।

विशेष—दीपचन्द के पौत्र तथा हीरालाल के पुत्र चम्पाराम ने सवाई माधोपुर में ग्रन्थ रचना की थी। विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

१८४. धर्मसंग्रह श्रावकाचार—पं० मेधावी। पत्र संख्या–४६। साइज–११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत विषय–आचार। रचना काल–सं० १५४१। लेखन काल–सं० १८३२। पूर्ण। वेष्टन नं० १८६।

विशेष—सवाई जयपुर में मोपतिराम ने प्रतिलिपि की थी।

१८५. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्र० नेमिदत्त। पत्र संख्या–३०। साइज–१०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६३३ कार्तिक बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० १८२।

विशेष—चंपावती दुर्ग के आदिनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री भगवंतदासजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी।

१८६. प्रति नं० २—पत्र संख्या–१७। साइज–११×५½ इंच। लेखन काल–सं० १६०६ माह सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १८३।

विशेष—टोडा दुर्ग (टोडारायसिंह) में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

१८७. नरक दुःख वर्णन—पत्र संख्या–३–६। साइज–१२×६ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६१८।

१८८. नरक दुःख वर्णन—पत्र संख्या–३। साइज–११½×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०४७।

१८९. नरक दुःख वर्णन—पत्र संख्या–६२। साइज–६×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८१६ पौष बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१६।

विशेष—भाषा ढूंढारी है तथा उर्दू के शब्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। नरकों के वर्णन के आगे अन्य वर्णन जैसे स्वर्ग, मार्गणायें तथा काल अन्तर आदि का वर्णन भी दिया हुआ है।

१९०. पद्मनन्दिपंचविंशति—पद्मनन्दि। पत्र संख्या–१२। साइज–१०½×५ इंच। भाषा प्राकृत–संस्कृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण वेष्टन नं० ३।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१६१. प्रति नं० २—पत्र संख्या-६६ । साइज-१०½×४ इंच । लेखन काल-सं० १५३२ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११ ।

विशेष—सं० १५३२ फागुण सुदी प्रतिपदा सोमवासरे उत्तरानक्षत्रे शुभनामयोगे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सिंह कीर्ति देवा तत् शिष्य प्रभाचन्द्र पठनाय दत्तं पुण्यार्थं इक्ष्वाकु वंशे अश्वपतिना दत्तं शुभं भवतु ।

१६२. पद्मनंदिपच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिंदूका । पत्र संख्या-२६८ । साइज-१०½×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १६१५ । लेखन काल-सं० १६३५ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६७

१६३. परीषह विवरण—पत्र संख्या-३ । साइज-१३×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५५ ।

१६४. प्रतिक्रमण—पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।

१६५. प्रबोधसार—महा पं० यशःकीर्त्ति । पत्र संख्या-२८ । साइज-८×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५२५ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७६ ।

विशेष—रचना में ४७८ पद्य हैं । प्रशस्ति अपूर्ण है जो निम्न प्रकार है—

संवत् १५२५ वर्षे मार्गसुदी १५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत् शिष्य म० श्री हेमकीर्ति देवाः तस्योपदेशात् जैसवालान्वये इक्ष्वाकु वंशे सा०..............................

१६६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—बुलाकीदास । पत्र संख्या-१४३ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८४ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६४ ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७. प्रायश्चित्तसमुच्चय—नंदिगुरु । पत्र संख्या-१०० । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६६ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

१६८. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६२ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

१६९. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१०८ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-सं० १६३२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत्सरेस्मिन विक्रमादित्य १६२२ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ शुक्रवासरे मालवदेशे चन्देरीगढ़दुर्गे पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये तदाम्नाये महावादवादीश्वर मंडलाचार्य श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे भ० आचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति देव । तत्पट्टे भ० श्री सहसकीर्त्तिदेव । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री पद्मनंदि देव । तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिः । तत्पट्टे भ० श्री ललितकीर्ति लिखितं पंडित रत्न पठनार्थ इदं उपासकाचार ग्रन्थ लिखितं ।

२००. प्रति नं० ४३ – पत्र संख्या-१२२ । साइज-११×४½ इंच । लेखन काल-सं० १६४८ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

विशेष—सहारनपुर नगर बादशाह श्री अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

इस ग्रंथ की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं जिनमें २ प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२०१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार— सकलकीर्ति । पत्र संख्या-९२ । साइज-११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८५ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है प्रथम पत्र नवीन है ।

२०२. प्रति नं० २—पत्र संख्या-७२ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

२०३. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३८ । साइज-१४×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—इसका दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य कोश भी है । प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीका का नाम त्रिपाठी है । संस्कृत पद्यों पर टीका लिखी हुई है ।

२०४. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—पंडित टोडरमलजी । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८२७ । लेखन काल-सं० १९३८ माघ सुदी १ । पूर्ण वेष्टन नं० ३११ ।

विशेष—ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२०५. ब्रह्मविलास—भगवतीदास । पत्र संख्या-१११ । साइज १०½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-१७५५ । लेखन काल-१८८३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

विशेष—भैय्या भगवतीदास की रचनाओं का संग्रह है । विलास की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२०६. बाईस परीषह वर्णन—पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×६½ इंच । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—ग्रंथ गुटका साइज है ।

२०७. **भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल** । पत्र संख्या-५३४ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १६०८ भादवा सुदी २ । लेखन काल-सं० १६०८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

२०८. **मालामहोत्सव—विनोदीलाल** । पत्र संख्या-३ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६८ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५६ ।

२०९. **मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-६१ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८ ।

विशेष—ग्रंथ में बारह अधिकार हैं । सालिगराम गोधा ने स्वपठनार्थ जयपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२१०. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या-१३७ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १५८१ पौष सुदी २ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५८१ वर्षे पोषमासे द्वितीयायां तिथौ सोमवासरे अद्येह बीजापुर वास्तव्ये मेदपाट ज्ञातीय ज्योति श्री बलिराज सुत लीलाधर केन पुस्तिका लिखितं । श्री मूलसंघे ब्रह्म श्री राजपाल तत् शिष्य ब्र० कर्मश्री पठनार्थं ।

२११. **मूलाचार भाषा टीका—ऋषभदास** । पत्र संख्या-२२० । साइज-१५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८२ ।

विशेष—वट्टकेर स्वामी की मूल पर आधारित वसुनंदि की आचार वृत्ति नाम की टीका के अनुसार भाषा हुई है ।

प्रारम्भ—वंदौ श्री जिन सिद्धपद आचारिज उवझाय ।
साधु धर्म जिन भारती, जिन गृह चैत्य सहाय ॥१॥
वट्टकेर स्वामी प्रणमि, नमि वसुनंदि सूरि ।
मूलाचार विचार के भाखौ लखि गुण भूरि ॥२॥

अन्तिम पाठ—वसुनंदि सिद्धान्त चक्रवर्त्ति करि रची टीका है सो चिरकाल पर्यन्त पृथ्वी विषै तिष्ठहु । कैसी है टीका सर्व अर्थनि की है सिद्धि जातैं । बहुरि कैसी है समस्त गुणनि की निधि । बहुरि ग्रहण करि है नीति जानैं ऐसो जो आचारज कहिये मुनिनि का आचरण ताके सूक्ष्म भावनि की है अनुवृत्ति कहिये प्रवृत्ति जातैं । बहुरि विख्यात है अठारह दोष रहित प्रवृत्ति जाकी ऐसा जो जिनपति कहिये जिनेश्वर देव ताके निर्दोष वचनि करि प्रसिद्ध । बहुरि पाप रूप मैल को दूर करण हारी । बहुरि सुन्दर ।

२१२. **मोक्ष पैडी—बनारसीदास** । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६४ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२१३. मोक्षमार्ग प्रकाश—पं० टोडरमल। पत्र संख्या-१६०। साइज-१३½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (ढूंढारी)। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २।

विशेष—प्रति संशोधित की हुई है।

२१४. प्रति नं० २—पत्र संख्या- २२७। साइज-१०×५½ इञ्च। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७११।

विशेष—यह प्रति स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की २ प्रति और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण हैं।

२१५. मोक्षसुख वर्णन—पत्र संख्या-१३। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ८७०।

२१६. यत्याचार—वसुनंदि। पत्र संख्या-६७ से २०७। साइज-१५×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६५ चैत्र सुदी १। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६८१।

विशेष—अमरचन्द दीवान के पठनार्थ ग्रंथ की प्रतिलिपि की गयी थी।

२१७. रत्नकरंड श्रावकाचार—आ० समंतभद्र। पत्र संख्या-१०। साइज-८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०० भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी। श्रावकाचार की ३ प्रतियां और हैं।

२१८. रत्नकरंडश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र। पत्र संख्या-५२। साइज-१२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७४०।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र फिर से लिखवाये हुये हैं। टीका की एक प्रति और है।

२१९. रत्नकरण्डश्रावकाचार—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या-४७६। साइज-१२½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-सं० १९२० चैत्र बुदी १४। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७७६।

विशेष—प्रति उत्तम है। ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं। दोनों ही अपूर्ण हैं।

२२०. व्रतोद्योतन श्रावकाचार—अभ्रदेव। पत्र संख्या-१७। साइज-१२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३५ आषाढ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६४।

२२१. बृहद् प्रतिक्रमण—पत्र संख्या-२७। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७४२ श्रावण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० १४७।

विशेष—मुनिभुवनभूषण ने बाली में प्रतिलिपि की थी।

२२२. श्रद्धान निर्णय—पत्र संख्या-२८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८४ ।

विशेष—ज्ञानाबाई ओसवाल कोठ्यारी के पठनार्थ तेरह पंथियों के मंदिर में प्रतिलिपि की गई । धार्मिक चर्चाओं का संग्रह है । ग्रंथ की एक प्रति और है ।

२२३. श्रावकक्रियावर्णन—पत्र संख्या-१६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५० ।

२२४. श्रावक-दिनकृत्य वर्णन—पत्र संख्या-३-८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३२ ।

विशेष—प्रति दिन करने योग्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ।

२२५. श्रावकधर्म वचनिका—पत्र संख्या-१ । साइज-७½×३१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८४ ।

विशेष—स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा में से श्रावक धर्म का वर्णन है ।

२२६. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (छाया युक्त)—पत्र संख्या-२ से ३६ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८२ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

२२७. श्रावकाचार—स्वामी पूज्यपाद । पत्र संख्या-५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२८. श्रावकाचार—वसुनन्दि । पत्र संख्या-३५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३० । चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—ग्रंथ की प्रतिलिपि मोजमाबाद (जयपुर) में हुई थी । ग्रंथ की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२२९. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२३०. श्रावकाचार—पत्र संख्या-१७ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७५ ।

विशेष— ग्रंथ पर निम्न शब्द लिखे हुये हैं जो शायद बाद के हैं—ये श्रावकाचार उमास्वामि का बनाया हुआ नहीं है कोई जैन धर्म का द्रोही का बनाया हुआ है । झूठा होणा साबत है ।

२३१. श्रावकाचार – पत्र सख्या-११ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

२३२. श्रावकाचार—अमितगति । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन न० १८१ ।

२३३. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७० ।

२३४ षोडशकारण भावना वर्णन—पत्र संख्या-८० । साइज-११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३७८ ।

विशेष—दशलक्षण धर्म का भी वर्णन है ।

२३५. सम्मेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या-७८ । साइज-८×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १७८५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०७ ।

२३६. सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखसागर । पत्र संख्या-१६५ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७८ ।

विशेष—लोहाचार्य विरचित 'तीर्थ महात्म्य' में से सम्मेदाचल महात्म्य की भाषा है । महात्म्य की एक प्रति और है जो अपूर्ण है ।

२३७. सम्यक्त्व पच्चीसी—भगवतीदास । पत्र संख्या-३ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६५ ।

२३८. सम्यग्प्रकाश—डालूराम पत्र संख्या-५ । साइज-११×८ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८७१ चैत्र सुदी १५ । लेखन काल-सं० ···· वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४४ ।

२३९. संबोधपंचासिका—रइधू । पत्र संख्या-३ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—गाथाओं की संख्या ४६ है । अन्तिम गाथा निम्न प्रकार है—

सावय मासम्मिकया, गाहा संवेय विइंय सुयह ।
कहियं समुच्चयत्थं, पइक्खिज्जंतं च सुहमोई ॥४६॥

२४०. संबोधपंचासिका—द्यानतराय । पत्र संख्या–४ । साइज–८×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

२४१. संबोध सत्तरी सार………… । पत्र संख्या–५ । साइज–१०½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचनाकाल–× । लेखन काल–सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६४ ।

विशेष—पत्र ४–५ में सम्यक्त्व कथा वर्णित है । भाषा पुरानी हिन्दी है ।

सत्तरी में ७० पद्य हैं । अन्तिम पद निम्न प्रकार है—
जे नराः ध्यानमार्गं च स्थिरचित्तोऽर्थमाहकाः ।
क्षीयते अष्टकर्माणि सारसंबोधसत्तरी ॥७०॥

२४२. सागारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र संख्या–५१ । साइज–११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–सं० १२९६ पौष सुदी ७ । लेखन काल–सं० १६२५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८० ।

२४३. सामायिक महात्म्य— पत्र संख्या–५ । साइज–७½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६५ ।

२४४. सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र संख्या–१६ । साइज–१०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५४५ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—संघी श्री छाजू अग्रवाल ने ग्रंथ लिखवाया था । तथा श्री भैरोंबक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

सारसमुच्चय का दूसरा नाम ग्रंथसार समुच्चय भी है । इसमें ३३० श्लोक हैं ।

प्रारम्भ—

देवदेवं जिनं नत्वा भवोद्भवविनाशनं ।
वक्ष्येहं देशनां कांचित् [illegible] ॥१॥
संसारे पर्यटन् जंतुर्बहुयोनि–समाकुलो ।
शरीरं मानसं दुःखं प्राप्नोतीति दारुणं ॥२॥

अन्तिम पाठ—

अयं तु कुलभद्रेण भवविच्छित्ति–कारणं ।
दृब्धो बालस्वभावेन ग्रंथः सारसमुच्चयः ॥३२६॥
ये भक्त्या भावयिष्यन्ति, भवकारणनाशनं ।

अचिरेणैवकालेन, सुखं प्राप्स्यन्ति शाश्वतं ॥३२७॥

सारसमुच्चयमेतेच पठंति समाहिताः ।

ते स्वल्पेनैव कालेन पदं यास्यंर्त्यिनामयं ॥३२६॥

नमः परमसध्यान विघ्ननाशनहेतवे ।

महाकल्याणसंपत्ति कारिणोरिष्टिनेमये ॥३३०॥

इति सारसमुच्चयाख्यो ग्रंथः समाप्तः ।

२४५. **सारसमुच्चय—दौलतराम** । पत्र संख्या–१८ । साइज–६½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८२ ।

विशेष—सारसमुच्चय के अतिरिक्त पूजाओं का संग्रह है । सार समुच्चय में १०४ पद्य हैं । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सार समुच्चै यह कह्यो गुर आज्ञा परवांन ।

आनंद सुत दौलति नैं भजि करि श्री भगवान ॥१०४॥

२४६. **सुगुरु शतक—जिनदास गोधा** । पत्र संख्या–७ । साइज–६×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचनाकाल–सं० १८०० । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०२ ।

विशेष—१०१ पद्य हैं ।

विषय–अध्यात्म एवं योग शास्त्र

२४७. **अध्यात्मकमल मार्तण्ड—राजमल्ल** । पत्र संख्या–१२ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६३१ फाल्गुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—सं० १६८२ में मंदकीर्ति ने अर्गलपुर (आगरा) में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ ४ अध्यायों में पूर्ण होता है ।

२४८. **अध्यात्म बारहखडी—दौलतराम** । पत्र संख्या–१७ । साइज–६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७६८ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८७ ।

२४६. **अष्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र संख्या-६ से ५७ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२५०. **अष्टपाहुड भाषा—जयचन्द्र छाबड़ा** । पत्र संख्या ८१ से १२३ । साइज-११×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १८६७ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८१० ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

५१. **आत्मसंबोधन काव्य—रइधू** । पत्र संख्या-२८ । साइज-११×४½ इच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६११ द्वितीय श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४ ।

विशेष—अलवर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२५२. **आत्मानुशासन—आचार्य गुणभद्र** । पत्र संख्या-२३ । साइज-१०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७७० भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष—साह ईसर अजमेरा ने बून्दी नगर में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं ।

२५३. **आत्मानुशासन टीका—टीकाकार पं० प्रभाचन्द्र** । पत्र संख्या-७१ । साइज-१०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १५८१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३ ।

विशेष—पत्र ३८ तक फिर से प्रतिलिपि की हुई है, नवीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार हैः—

सं० १५८१ वर्षे चैत्र बुदी ६ गुरुवासरे घटपालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष साह काधिल तद्भार्या काबलदे तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम साह गूजर, द्वितीय सा० राधै जिनचरणकमलचंचरीकान् दान पूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रवरस्य चिन्तान् सम्यक्त्व प्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्त धर्मरंजितचैतसान कुटुम्ब साधारकान रत्नत्रयालंकृत दिव्य देहान् अहाराभयशास्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो साह बच्छराज तद्भार्या पतिव्रता पद्मा तस्याः पुत्र परम श्रावक साह पचाइणु तद्भार्या प्रतापदे तत्पुत्र साह दूलह एतेषां मध्ये सा० बच्छराज इदं शास्त्रं लिखायितं सत्पात्राय मुनि श्री माघनन्दिने दत्तं कर्मक्षयार्थं । गौरवंश सेठ श्री खेऊ तस्य पुत्र पदारथ लिखितं ।

२५४. **आत्मानुशासन भाषा—पं० टोडरमल** । पत्र संख्या-५६ । साइज १०×७ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१०

विशेष—प्रति स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इस प्रति के अतिरिक्त ८ प्रतियां और हैं ।

उनमें से तीन प्रतियां अपूर्ण हैं।

२५५. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र संख्या–६४। साइज–११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। रचना काल–सं० १७७७। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६१।

२५६. आराधनासार—देवसेन। पत्र संख्या–१६। साइज–१०½×४¾ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण दी हुई है। दो प्रतियां और हैं।

२५७. चार ध्यान का वर्णन .... । पत्र संख्या–२३। साइज–६×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–योग। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण वेष्टन नं० ५३७।

२५८. चौरासी आसन भेद .... । पत्र संख्या–११। साइज–८×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–योग। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन नं० १३६।

विशेष—पं० लूणकरण के शिष्य पं० खीवसी ने प्रतिलिपि की।

२५९. ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र। पत्र संख्या–१२८। साइज–१०½×५। भाषा–संस्कृत। विषय–योग शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८११। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०।

विशेष—पं० श्री कृष्णदास ने प्रतिलिपि कराई थी। ग्रंथ की २ प्रतियां और हैं।

२६०. ज्ञानार्णव भाषा—जयचन्द्र छाबडा। पत्र संख्या–३६६। साइज–१०½×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–योग। रचना काल–सं० १८६६। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४००।

२६१. ज्ञानार्णव भाषा .... । पत्र संख्या–१६। साइज–१२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–योग। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५१६।

विशेष—प्राणायाम प्रकरण का ही वर्णन है।

२६२. द्वादशानुप्रेक्षा .... । पत्र संख्या–४४। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२८।

विशेष—प्राकृत भाषा में गाथा दी हुई है और फिर उन पर हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा हुआ है।

२६३. द्वादशानुप्रेक्षा .... । पत्र संख्या–१ से ५। साइज–१२×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१६।

२६४. द्वादशानुप्रेक्षा .... । पत्र संख्या–६। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५१।

२६५. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्र देव। पत्र संख्या-२४१। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६५।

विशेष—ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका तथा दौलतरामकृत भाषा टीका सहित है।

योगीन्द्रदेव कृत श्लोक संख्या-३४३, ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका श्लोक संख्या ४५००, तथा दौलतराम कृत भाषा श्लोक संख्या ६८६० प्रमाण है। दो प्रतियों का मिश्रण है। अंतिम पत्रों वाली प्रति में कई जगह अक्षर काटे गये है।

२६६. प्रति नं० २—पत्र संख्या-२४०। साइज-११×५ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६६

२६७ प्रति नं० ३—पत्र संख्या-२१९। साइज-१०½×५ इञ्च। लेखन काल-सं० १८६२। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६७।

२६७ प्रति नं० ४—पत्र संख्या-१७६। साइज-११½×५½ इंच। भाषा-अपभ्रंश। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०३।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। टीका उत्तम है। टीकाकार का नामोल्लेख नहीं मिलता है। इन प्रतियों के अतिरिक्त ग्रंथ की ४ प्रतियां और हैं।

२६८. परमात्मपुराण-दीपचन्द। पत्र संख्या-१ से ३६। साइज-१०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ७६८।

विशेष- ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—अथ परमातम पुराण लिख्यते।

दोहा—परम अखंडित ज्ञानमय गुण अनंत के धाम।
अविनाशी आनंद अग लखत लहै निज ठाम ॥१॥

गद्य—अचल अतुल अनंत महिम मंडित अखंडित त्रैलोक्य शिखर परि विराजित अनोपम अबाधित शिव दीप है। तामें आतम प्रदेश असंख्य देस है। सो एक एक देस अनंत गुण पुरुषन करि व्यापत है। जिन गुण पुरुषन के गुण परणति नारी है। तिस शिवदीप को परमातम राजा है ताके चेतना परिणति राणी है। दरसण ज्ञान चरित्र ए तीन मंत्री हैं। सम्यक्त्व फोजदार है। सब देसका परणाम कोटवाल है। गुण सत्ता मन्दिर गुण पुरुषन के है। परमातम राजा का परमातम सत्ता महल बण्या तहां चेतना परणति कामिनी सो केलि करते अतेंद्रिय अबाधित आनंद उपजै है।

अन्त में (पृष्ठ ३६)—"परमातम राजा एक है परणति शक्ति भाविकाल में प्रगट ओर ओर होने की है परिवर्तन वन काल में व्यक्त रूप परणति एक है सो ही वस राजा को रमावै है। जो परणति वर्तमान की कौ राजा भोगवे है सो परणति समय मात्र आत्मीक अनंत सुख दे करि विलय जाय है। परमातमा में लीन होय है।

२६६. **प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र संख्या–८ से ४४ । साइज–१६×७½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

२७०. **प्रवचनसार भाषा—हेमराज** । पत्र संख्या–३५ । साइज–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष—पद्य संख्या ४३८ है ।

२७१. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–११० । साइज–१२×८ इञ्च । रचना काल–सं० १७०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १७११ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२७ ।

विशेष—श्री नन्दलाल अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

सं० १७११ वर्षे आश्विनि मासे शुक्ल पक्षे गुरुवासरे श्री अकबराबाद मध्ये पातशाह श्री शाहे जहान विजय राज्ये श्वेताम्बर कासीदासेन अग्रवाल ज्ञातीय साह श्री नन्दलाल पठनार्थं । सं० १७६१ शाह छाजूराम बज के पठनार्थं खरीदी थी ।

ग्रंथ की ४ प्रतिया और हैं ।

२७२. **प्रवचनसार भाषा—वृन्दावन** । पत्र संख्या–१५३ । साइज–१३×७½ इन्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १६०५ वैसाख सुदी ३ । लेखन काल–सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

विशेष—हीरालाल गंगवाल ने लश्कर नगर में प्रतिलिपि कराई थी ।

२७३. **मृत्युमहोत्सव भाषा—दुलीचन्द** । पत्र संख्या–१५ । साइज–१२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३८ ।

२७४. **योगसार—योगीन्द्र देव** । पत्र संख्या– १३ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–योग । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६२१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६ ।

२७५. **प्रति नं० २**—पत्र संख्या–१० । साइज–१०½×७½ इञ्च । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । गाथा सं० १०८ । ४ प्रतियां और हैं ।

२७६. **योगसार भाषा—बुधजन** । पत्र संख्या–८ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १८६५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८२ ।

२७७. **योगीरासा—पाण्डे जिनदास** । पत्र संख्या–३ । साइज–१३½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२४ ।

२७८. वैराग्य पच्चीसी—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या-४ । साइज-७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १७५० । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५६ ।

२७६. वैराग्य शतक.......... । पत्र संख्या-११ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८११ वैसाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४४ ।

विशेष—जयपुर में नाथूराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । १०३ गाथायें हैं ।

प्रारम्भिक गाथा निम्न प्रकार है:—

संसारंमि असारे नत्थि सुहं वाहि वेयणापउरे ।

जाणंतो इह जीवो णकुणइ जिणदेसियं धम्मं ॥१॥

२८०. षट्पाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-६२ । साइज-६¾×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—साह काशीदास आगरे वाले ने स्वपठनार्थ धर्मपुरा में प्रतिलिपि की । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं । एक पत्र में ४-४ पंक्तियां हैं ।

८१. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३४ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं ।

२८२. समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-४५ । साइज-११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

विशेष—संस्कृत में कहीं २ संकेत दिये हुए हैं । ग्रंथ की दो प्रतियां और हैं ।

२८३. समयसार टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६४ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—संवत्सरे वसुनागमुनींदुमिते १७८८ भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी तिथौ ईसरदा नगरे राज्ये श्री अजितसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये अंबावत्या: भट्टारकजित श्रीसुरेन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीजित् श्रीजगतकीर्ति तत्पट्टस्थ: स्वगांभीर्यक्षमागुणनिर्जितसागरेत्यादि पदार्थ स्वपंकातारिता-गमांबोधे भ० शिरोमणि भट्टारक जित श्री १०८ श्रीमद् देवेन्द्रकीर्तिस्तैनेयं समयसारटीका स्वशिष्य मनोहर कल्याणार्थं पठनाय

तत्वबोधिनी सुगम निबबुद्धया पूर्वं टीकामवलोक्य विहिता । बुद्धिमाद्यः बोधनीया प्रमादात् वा अल्पबुद्धया पत्रहीनाधिकं भव भवेत् तत् शोधनीयं पाचनेयं कृता यथा किं बहुक्थनेन वाचकानां पाठकानां मंगलावली समवो भवेत् श्री जिनप्रभप्रसते ।

२८४. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१२७ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—संघ ही दीवान श्योजीराम ने अपने पुत्र कुंवर अमरचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी । श्योजीराम दीवान के मन्दिर जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

२८५. प्रति नं० ३—पत्र सख्या-११ । साइज-१३×७ इंच । लेखन काल-सं० १८६६ आसोज सुदी ४ पूर्ण । वेष्टन नं० ४५ ।

विशेष—संघही दीवान अमरचन्द पठनार्थ पिरागदास महुआ के ने प्रतिलिपि की ।

२८६. प्रति नं० ४—पत्र सख्या-१०० । साइज-१२×५½ इंच । लेखन काल-शाक सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

विशेष - सं० ख ख वसुइन्दुमिते वर्षे शाके माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीयायां गुरुवारे अनेकवनवापीकूप-तडाग जिनचैत्यालयादि विराजमाने बहुविख्याते सकलनगरग्राम मटं वादीनां शेखरीभूते पाति साह श्री मुहम्मदशाह तत् सेवक महाराजाधिराज महाराजा श्रीईश्वरसिंहराज्य प्रवर्तमाने सवाईजैपुरनामनगरे तत्र श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये सोनी गोत्रे साह श्री प्रागदास जी कारापिते । श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वति गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकजित श्री १०८ श्री महेन्द्रकीर्तिजी तस्य शासनधारी ब्रह्म श्री अमरचन्द्रस्तत् शिष्य पं० श्री जयमल्लस्तत् शिष्य पं० मनोहरदास तत् शिष्य पं० श्री श्रीश्रमलस्तत् शिष्य पं० श्री हीरानन्दस्तत् शिष्य गुणगरिष्ट बुद्धिवरिष्ट सकलतर्क मीमांसा अष्टसहस्री प्रमुखादीगुणानां व्याख्याने निपुण पंडितोत्म पंडित जितश्रीचोखचन्द्रजीकस्य शिष्य सुखरामेण स्वरायेन स्वपठनार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयर्थं लिपिकृता ।

२८७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-३६ । साइज-१०×४½ इंच । लेखन काल-सं० १७२१ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—सा० जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८८. **समयसार नाटक—बनारसीदास** । पत्र संख्या-१०८ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १६६३ । लेखन काल-सं० १८५७ श्रावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६

२८९. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१६४ । साइज-८½×५½ इंच । लेखन काल-सं० १७०० कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५६ ।

विशेष—श्रीमातुलाल पठनार्थं लिखितं । आमेर में प्रतिलिपि हुई । १४२ पत्र के आगे बनारसीदास कृत अन्य पाठ हैं । (गुटका)

२६०. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-७६ । साइज-११½×४½ इंच । लेखन काल-सं० १७०१ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६७ ।

विशेष—संवत् १७०१ वर्षे श्रावणसितचतुर्दशीतिथौ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री चंद्रकीर्तिजी भ० श्री नरेन्द्रकीर्तिजी तदाम्नाये सेव्या गोत्रे साह महेस भार्या धर्मा तया इदं समयसार नाम नाटकं लिख्य आचार्य श्री सकलकीर्तिये प्रदत्तं ।

विशेष—समयसार नाटक की भण्डार में १६ प्रतियां और हैं ।

२६१. समयसार भाषा—राजमल्ल । पत्र संख्या-२१६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४३ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६४ ।

विशेष—इति श्री समयसार टीका राजमल्लि भाषा समाप्तेयं ।

२६२ प्रति नं० २—पत्र संख्या-२७५ । साइज-११×४ इञ्च । लेखन काल-सं० १७५८ अषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६६ ।

२६३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१०२ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१३ ।

विशेष—नैणसागर ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पुट्ठे पर बहुत सुन्दर बेल बूटे हैं ।

२६४. समयसार भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र संख्या-३२० । साइज-१०½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १८६४ । लेखन काल-सं० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२० ।

२६५. समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या-१२० । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-गुजराती । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७९३ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं । ग्रंथ की लिपि देवनागरी है ।

२६६. समाधितन्त्र भाषा ………………। पत्र संख्या-१७१ । साइज-११×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४९ ।

विशेष—चाकसू में लिपि हुई थी ।

२९७. समाधितंत्र भाषा………………। पत्र संख्या-२० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३६ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६६ ।

२९८. समाधिमरण………………। पत्र संख्या-२८ । साइज-८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३४ ।

२६६. समाधिमरण .... । पत्र संख्या-११ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८७ ।

३००. समाधिमरण भाषा ...... । पत्र संख्या-२० । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३४ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८८ ।

३०१. समाधिमरण भाषा.............। पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७५ ।

३०२. समाधिशतक—आ० समन्तभद्र । पत्र संख्या-१३ । साइज-१२½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६ ।

विशेष—हिन्दी में पद्यों पर अर्थ दिया हुआ है ।

३०३. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्त्तिकेय । पत्र संख्या-२८७ । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—प्रति भ० शुभचन्द्रकृत टीका सहित है । टीका संस्कृत में है । ग्रंथ की ३ प्रतियां और हैं ।

३०४. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या-१५० । साइज-११×५ इञ्च । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १८८३ श्रावण बुदी ३ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

३०५. प्रति नं० २—पत्र संख्या-११६ । साइज-१०×७½ इञ्च । लेखन काल-सं० १८६३ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०४ ।

विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

३०६. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या-२६७ । साइज-११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १६२७ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष—जयपुर में बालीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७. तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट । पत्र संख्या-५ । साइज-११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५१ ।

विशेष—सांगानेर में पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ की एक प्रति और है।

३०८. देवागमस्तोत्र—समंतभद्र। पत्र संख्या-११। साइज-१६½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २८७।

विशेष—एक प्रति और है।

३०९. देवागमस्तोत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा। पत्र संख्या-८४। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-सं० १८६६ चैत्र बुदी १४। लेखन काल-सं० १९८४ पौष बुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६१।

३१०. नयचक्र भाषा—हेमराज। पत्र संख्या-१७। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-सं० १७२६। लेखन काल-सं० १८६३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८३।

३११. न्यायदीपिका—यति धर्म भूषण। पत्र संख्या-३७। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है। .

३१ . न्यायदीपिका भाषा—पन्नालाल। पत्र संख्या-१०३। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-न्याय शास्त्र। रचनाकाल-सं० १९३५ मंगसिर सुदी ६। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३९८।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है:—

अन्तिम पाठ—

आर्य क्षेत्र मधि ढूंढाहडु में जयपुर अद्भुत नगर महा।
ताके अधिपति नीति सुपथ अति रामसिंह नृप नाम कहा॥
मंत्री पद में रावबहादुर जीवनसिंह सुनाम लहा।
ताको गृह प्रति संघी भावह पन्नालाल सु धर्म चहा॥
श्रावक धर्म्मी उत्तम कर्म्मा, है मर्मी जिन वचनन के।
नाम सदासुख नाशित सब दुख दोष मिटावन के॥
तास निकट जिन श्रुत निति प्रति सुनत सुनत मन समता पाय।
न्याय शास्त्र की रहिस ग्रहण हित न्यायदीपिका हमें पढाय॥
तास वचनिका विशद करन कौं आनंद हृदय पढायो है।
करी वीनती त्रिभुवन गुरु तैं अर्थ समस्त लखायो है॥
फतेलाल जित पंडित वर अति धर्म प्रीति को धारक है।
शब्दागम तैं तथा न्याय तै अर्थ समर्थन कारक है॥

तिनके निकट विशद फुनि कीनौ, अर्थ विकल्प निवारन कौ ।
करी बचनिका स्व पर हित कौ पढौ भव्य भ्रम टारन कौ ॥
विक्रम नृप के उगणीसै पर तीस पांच सत चीना है ।
मंगसिर शुक्ला नवमी शशि दिन ग्रन्थ सम्पूरन कीना है ॥

चौपई—श्री जिन सिद्ध सूरि उवझाय सर्व साधु हे मंगलदाय ।
तिनके चरण कमल उरलाय, नमन करै निति शीश नवाय ॥

३१३. **परीक्षामुख—आचार्य माणिक्यनंदि** । पत्र संख्या–७ । साइज–१०×३$\frac{3}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

३१४. **परीक्षामुख भाषा—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र संख्या–११७ । साइज–१०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-दर्शन । रचना काल-सं० १८६७ श्रावण सुदी २ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

३१५. **प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य** । पत्र संख्या ४५ । साइज–११×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—माणिक्यनन्दि कृत परीक्षामुख की टीका है ।

३१६. **मितिभाषिणीटीका—शिवादित्य** । पत्र संख्या–१७ । साइज–१०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

प्रारम्भ का दूसरा पद्य:—

विश्वेशादीन् नमस्कृत्य माधवाख्य सरस्वती ।
शिवादित्यकृतेष्टीकां करोति मितभाषिणि ॥२॥

३१७. **सप्तपदार्थी—श्रीभावविद्येश्वर** । पत्र संख्या–८ । साइज १०$\frac{1}{2}$×४ । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । रचना काल–× । लेखन काल-सं० १६८३ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४३ ।

विशेष—पं० हर्ष ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

अंतिम—यमनियमस्वाध्यायधारणासमाधियोगी मखानयनपाशुपताचार्य श्री भावविद्येश्वरविरचिता वाग्विधा विलासविचित्रवाचत्वस्वार्थावराथचमत्कारन्याश्वयंमया परापरन्यायवैशेषिकमहाशास्त्रसमुद्रखशीलेन विरचिता सप्तपदार्थी समाप्ता ॥

३१८. **स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण** । पत्र संख्या–३४ । साइज–१३×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४० ।

३१६. स्याद्वादमंजरी—मल्लिषेण । पत्र संख्या-४६ । साइज-१०×४½ । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । टीका काल-शक सं० १२१४ । लेखन काल-सं० १७६७ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई । मल्लिषेण उदयप्रभसूरि के शिष्य थे ।

विषय-पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

३२०. अकृत्रिम चैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-६४ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९३० । लेखन काल-सं० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७८ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

३२१. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या-३६ । साइज-८½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८६ ।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य पं० जिनदास ने रचना की थी ।

३२२. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा........। पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२½×८½ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

३२३. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५६ । लेखन काल-सं० १९८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—ग्रंथ का मूल्य पंद्रह रुपया साढे पांच आना लिखा हुआ है ।

३२४. अढाईद्वीपपूजा.......... । पत्र संख्या-३१६ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४२ । फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२७ ।

विशेष—ग्रंथ के पुट्टे पर १२ तीर्थंकरों के चिन्हों के चित्र है । चित्र सुन्दर है ।

३२५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-१०६ । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

३२६. अंकुरारोपणविधि—इन्द्रनन्दि । पत्र संख्या-६१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८१ ।

३२७. अभिषेकपाठ............... । पत्र संख्या-३१ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८८ ।

३२८. अष्टाह्निकापूजा............. । पत्र संख्या-२५ । साइज १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

३२६. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२३ से ३० । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३० ।

विशेष—१—२२ तक के पत्र नहीं हैं ।

३३०. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा............... । पत्र संख्या-१८ । साइज-११×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

३३१. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४८ ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी में दर्शन पाठ है ।

३३२. आदिनाथपूजा—पत्र संख्या-७ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३३ ।

३३३. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—रूचिकगिरि उत्तर दिगचैत्यालय की पूजा तक पाठ है ।

३३४. कमलचन्द्रायणव्रतपूजा..................। पत्र संख्या-३ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५६ ।

३३५. कर्मदहनपूजा..........। पत्र संख्या-१५ । साइज-६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

३३६. कर्मदहनपूजा..............। पत्र संख्या-२० । साइज-८¾×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०७ ।

३३७. कर्मदहनपूजा..............। पत्र संख्या-५२ । साइज-१३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

३३८. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२७ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

विशेष— इस पूजा की ५ प्रतियां और हैं ।

३३६. कर्मदहनपूजा............ । पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५० ।

३४०. कर्मदहनव्रतपूजा............ । पत्र संख्या-११ । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—पूजा मन्त्र सहित है । एक प्रति और है ।

३४१. कर्मदहनव्रतमंत्र............ । पत्र संख्या-१० । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

३४२. गणधरवलयपूजा – सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२४ ।

३४३. गिरनारक्षेत्रपूजा............ । पत्र संख्या-४६ । साइज-१०½×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—प्रतिलिपि कराने में तीन रुपये साढे पांच आने लगे थे ऐसा लिखा हुआ है ।

३४४. चतुर्विंशतिजिनपूजा............ । पत्र संख्या-११३ । साइज-११×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४० ।

३४५. चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा—जयकीर्ति । पत्र संख्या-५३ । साइज-१०×५½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६८४ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४१ ।

विशेष—सं० १६८४ वर्षे चैत सुदी ७ सोमे वहली नगरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषण, भ० श्री जयकीर्ति, आचार्य श्री नरेन्द्रकीर्ति, उपाध्याय श्री नेमकीर्ति, ब्र० श्री कृष्णदास, पूरकमल ब्रह्म श्री हरिजी ब्र० वर्द्धमान, ब्र० वीरजी, पं० रहीदास लिखितं

३४६. चतुर्विंशतिजिनपूजा—वृन्दावन । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

३४७. चतुर्विंशतिजिनपूजा—सेवाराम । पत्र संख्या-६३ । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल-सं० १८५४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है। २ प्रतियां और हैं।

३४८. चतुर्विंशतिजिनपूजा—रामचन्द्र। पत्र संख्या–६६। साइज–११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२०।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं।

३४९. चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा…………। पत्र संख्या–४५। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३८।

३५०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा…………। पत्र संख्या-४। साइज–१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २७७।

३५१ चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा– भानुकीर्त्ति। पत्र संख्या–२११। साइज–७½×६½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६३०। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३२।

विशेष—वृहद् पूजा है। ग्रन्थकार तथा लेखक दोनों की प्रशस्ति हैं।

भ० भानुकीर्ति ने साधु तिहुणपाल के निमित्त पूजा की रचना की थी। साधु तिहुणपाल ने ही इस पूजा की प्रतिलिपि करवायी थी।

३५२. चारित्रशुद्धिविधान—भ० शुभचन्द्र। पत्र संख्या–६४। साइज ११½×५। भाषा–संस्कृत। विषय–विधि विधान। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६२।

विशेष—'१२३४ व्रतों का विधान' यह भी इस रचना का नाम है।

३५३. प्रति नं० २। पत्र संख्या–२ से ३५। साइज १०½×४½ इंच। लेखन काल–सं० १५८४ कार्तिक बुदी ८। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५१०।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। जाप्य दिये हुए हैं।

प्रशस्ति—संवत् १५८४ वर्षे कार्तिक बुदी अष्टमी वृहस्पतिवारे लिखितं पं० गोपाल कर्मक्षयार्थ पात्री (छत्री) खुल्लिकावाई सोना पद्मा इदं दत्तं श्री पार्श्वनाथचैत्यालये दुवलायापत्तने।

३५४. चौबीसतीर्थंकरजयमाल—पत्र संख्या–८। साइज–१३×५। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १९५७ वैसाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ११४६।

३५५. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरुपचन्द। पत्र संख्या–३३। साइज–१२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–सं० १९१० श्रावण सुदी ७। लेखन काल–सं १९६६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१२।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

३५६ जलगालनक्रिया—ब्रह्म गुलाल। पत्र सख्या-५। साइज-८×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८१६ बैसाख सुदी। पूर्ण। वेष्टन नं० १००६।

विशेष—रूडमल मोंसा ने नारनोल में प्रतिलिपि की थी।

३५७ जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण। पत्र सख्या-६३। साइज-११×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२६।

३५८ जिनसहस्रनामपूजा भाषा—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्र सख्या-८७। साइज-११×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १९१६। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८१।

३५९ जिनसहिता—पत्र सख्या-७। साइज-१०½×४¾ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधि विधान। रचना काल ×। लेखन काल-सं० १५६० सावण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० २६५।

विशेष—सवत् १५६० वर्षे श्रावण सुदी ५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति मुनि श्री हेमचन्द तदाम्नाये खडेलवाला वशे सेठी गोत्रे सा० ताहू भार्या पदी तत्पुत्र साह जील्हा भार्या सुहागिणि इदं शास्त्र सत्पात्राय दत्त। इति जिन सहितायां विमानहोम शातिहोम गृहहोम विधि समाप्तमिति।

नवीन गृह प्रवेश आदि के अवसर पर होम विधि आदि दी हुई है।

३६० तीनलोक पूजा—टेकचन्द। पत्र सख्या-४०४। साइज-१२×११½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९२८ सावन सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६८।

विशेष—ग्रथ का मूल्य ७०) लिखा है।

३६१ तीसचौबीसीपूजा भाषा—वृन्दावन। पत्र सख्या-८५। साइज-१२½×८½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १८७६ माघ सुदी ५। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४११।

३६२ तीसचौबीसीपूजा भाषा। पत्र सख्या-५। साइज-१०×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय पूजा। रचना काल-सं० ११०८। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१०।

विशेष—लघु पूजा है।

३६३ तेरहद्वीपपूजा। पत्र सख्या-४२। साइज-११½×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१७।

३६४ दशलक्षणजयमाल—रइधू। पत्र सख्या-८। साइज-११½×५ इन्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७।

विशेष—संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है। तीन प्रतियां और हैं।

३६५. दशलक्षणजयमाल—भाव शर्मा। पत्र संख्या-६। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४५।

विशेष—एक प्रति और है।

३६६. दशलक्षणजयमाल……। पत्र संख्या-२। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८१।

३६७. दशलक्षणपूजा—सुमतिसागर। पत्र संख्या-११। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७१६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४७।

३६८. दशलक्षणपूजा……। पत्र संख्या-१४। साइज-११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३०।

विशेष—पूजा में केवल जल चढाने का मंत्र प्रत्येक स्थान पर दिया है। अन्त में ब्रह्मचर्य धर्म वर्णन की जयमाल में आचार्यों का नाम भी दिया गया है।

३६९. दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा……। पत्र संख्या-३७। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९२६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४८।

३७०. द्वादशांगपूजा……। पत्र संख्या-६। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११४३।

३७१. देवगुरूपूजा……। पत्र संख्या-३। साइज-१३×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११४७।

३७२. देवपूजा……। पत्र संख्या-७। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८४।

३७३. देवपूजा……। पत्र संख्या-२ से १४। साइज-११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५२।

३७४. देवपूजा……। पत्र संख्या-८। साइज-१२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३१।

३७५. देवपूजा……। पत्र संख्या-५। साइज-९½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८२।

३७६. देवपूजा ....। पत्र संख्या–७ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८३ ।

३७७. देवपूजा ....। पत्र संख्या–५ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८४ ।

३७८. धर्मचक्रपूजा—यशोनंदि । पत्र संख्या–२३ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२६ ।

विशेष —पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३७६. नन्दीश्वरपूजा ....। पत्र संख्या–३ । साइज–११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४२ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत भाषा में है ।

३८०. नन्दीश्वर उद्यापन पूजा ....। पत्र संख्या–६ । साइज ११½×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३४ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष—पत्रों के चारों ओर सुन्दर बेलें हैं ।

३८१. नन्दीश्वरजयमाल टीका ....। पत्र संख्या–१५ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८४१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६ ।

विशेष —श्री अमीचन्द ने जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

३८२. नन्दीश्वरविधान ....। पत्र संख्या–२३ । साइज–१०×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचनाकाल–× । लेखन काल- सं० १६०६ अषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०४ ।

विशेष—विजैलाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि कर बधीचन्दजी के मन्दिर चढाई थी ।

३८३. नन्दीश्वरव्रतविधान .... । पत्र संख्या–५० । साइज–११½×१२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०० ।

विशेष—पूजा का नाम पञ्चमेरू पूजा भी है ।

३८४. नवग्रहनिवारणजिनपूजा ....। पत्र संख्या–७ । साइज–७½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६७ ।

३८५. नांदीमंगलविधान ....। पत्र संख्या–२ । साइज–११×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

३८६. नित्यपूजासंग्रह ......। पत्र संख्या-११८ । साइज-११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इन्न । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६९१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है ।

३८७. नित्यपूजा ......। पत्र संख्या-४१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०६ ।

३८८. नित्यपूजा ......। पत्र संख्या-३७ । साइज-१०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०७ ।

विशेष—प्रतिदिन की आने वाली पूजाओ का संग्रह है ।

३८९. नित्यपूजा ......। पत्र संख्या-२१ । साइज-१३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३५ ।

३९०. नित्यपूजापाठ ...... । पत्र संख्या-३० । साइज-६$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७० ।

३९१ नित्यपूजासंग्रह ...... । पत्र संख्या-३१ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

३९२. निर्वाणपूजा ...... । पत्र संख्या-२ । साइज-९×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२८ ।

३९३. निर्वाणक्षेत्रपूजा ......। पत्र संख्या-२२ । साइज-१०$\frac{3}{4}$×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४५ ।

३९४. निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरूपचन्द । पत्र संख्या-३३ । साइज-१२$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९१६ कार्तिक बुदि १३ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३९५. पद्मावतीपूजा ......। पत्र संख्या-८ । साइज-१०×३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१० ।

३९६. पंचकल्याणकपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या-५३ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६४२ फागुण सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

३९७. पंचकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४२ ।

३९८. पंचकल्याणकपूजा—पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९३८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

३९९. पंचकुमारपूजा—जवाहरलाल । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४००. पंचपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र संख्या ११४ । साइज-९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

४०१. पंचपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र संख्या-३५ । साइज-१०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८६० । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—महात्मा सदासुखजी ने माधोराजपुरा में प्रतिलिपि की थी । पूजा की ६ प्रतियां और हैं ।

४०२. पंचमंगलपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२१ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४०३. पंचमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-४३ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १९१० । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७७ ।

४०४. पंचमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र संख्या-४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—द्यानतराय कृत अष्टाह्निका पूजा भी है ।

४०५. प्रतिष्ठासार संग्रह—वसुनंदि । पत्र संख्या-१३५ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ग्रन्थ का प्रारम्भिक भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ —विद्यानुवादसन्सूत्राद्वाग्देवीकल्पतस्तथा ।

चन्द्रप्रज्ञप्तिसंज्ञाच्च सूर्यप्रज्ञप्तिग्रंथतः ॥४॥

तथा महापुराणार्था छ्रावकाध्ययनश्रुतान् ।

सारं संगृह्य वक्ष्येहं प्रतिष्ठासार संग्रहे ॥५॥

हूं वसुनंदि नामा आचार्य हूं सो प्रतिष्ठासार संग्रह नामा जो ग्रंथ ताहि कहूंगो—कहा करिकै सिद्ध अरिहंत

रोस जो वर्द्धमान पर्यन्त जिन प्रवचन करता शारम गुरु करता सर्व साधु यातैं नमस्कार करि के कैसे जहैं वे सिद्ध, सिद्ध भयो है आत्म स्वरूप जिनकैं............।

४०६. पल्यविधानपूजा—रत्ननंदि । पत्र संख्या-९ । साइज-११×६½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

४०७. पार्श्वनाथ पूजा............ । पत्र संख्या-३ । साइज-११×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४१ ।

४०८. पुष्पांजलिव्रतोद्यापन........... । पत्र संख्या-११ । साइज-६×६½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४२ ।

विशेष—वृहत् पूजा है ।

४०९. पूजनक्रियावर्णन—बाबा दुलीचन्द । पत्र संख्या-३० । साइज-१२×७½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१८ ।

४१०. पूजासंग्रह.............. । पत्र संख्या-१०० । साइज-७½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१६ ।

विशेष—चतुर्विंशति तथा अन्य नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । पूजा संग्रह की तीन प्रतियां और है ।

४११. पूजासंग्रह.............. । पत्र संख्या-३८ । साइज-१२×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०२ ।

विशेष—इसमें देव पूजा तथा सरस्वती पूजा है ।

४१२. पूजासंग्रह.............. । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×८ इन्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१४ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, दशलक्षण, रत्नत्रय, सौलहकारण, पंचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजाऐं है । पूजा संग्रह की ४ प्रतियां और है ।

४१३. पूजासंग्रह.............. । पत्र संख्या-२७१ । साइज-९×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ३७ पूजाऐं तथा निम्न पाठ है—

(१) तत्वार्थ सूत्र (२) स्वंयभू स्तोत्र (३) सहस्त्रनामस्तोत्र ।

४१४. पूजा संग्रह .... । पत्र संख्या-३३ । साइज-१३X६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—इसमें पल्यविधान, सोलहकारण, कंजिका व्रतोद्यापन आदि पूजायें हैं ।

४१५. पूजासंग्रह ....। पत्र संख्या-२६ । साइज-११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३७ ।

सुखसंपत्तिपूजा, जिनगुणसंपत्तिपूजा, लघुमुक्तावलीपूजा का संग्रह है ।

४१६. ॐ क्षामरपूजा—उद्यापन—श्री भूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७८ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

४१७. रत्नत्रयजयमाल ....। पत्र संख्या-२ । साइज-१२X५½ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८७ ।

४१८. रत्नत्रयजयमाल ....। पत्र संख्या-३ । साइज-६X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४१९. रत्नत्रयपूजा ....। पत्र संख्या-१० । साइज-११X६½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

४२०. रत्नत्रयपूजा ....। पत्र संख्या-५ । साइज-१०¾X४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०४३ ।

४२१. रत्नत्रयपूजा भाषा—द्यानतराय । पत्र संख्या-१२ । साइज-११X५½ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

४२२. रत्नत्रयपूजा भाषा ....। पत्र संख्या-३६ । साइज-११X७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९३७ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१४ ।

४२३. रत्नत्रयपूजा भाषा—पत्र संख्या-३ से ५४ । साइज १०X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९१७ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं । एक प्रति और है किंतु वह भी अपूर्ण है ।

४२४. रोहिणीव्रतोद्यापन—कृष्णसेन तथा केशवसेन । पत्र संख्या-११ । साइज-१०½X४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

४२५. **लब्धिविधानद्यापनपूजा**............। पत्र संख्या–७ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३४ ।

४२६. **वृहत्शांतिकविधान**............। पत्र संख्या–१३ । साइज–१०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-विधान । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४० ।

विशेष—पुन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४२७. **विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा**............। पत्र संख्या–७ । साइज–१०½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४२८. **विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा—जौंहरीलाल** । पत्र संख्या–४६ । साइज–१४½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १६४६ श्रावण सुदी १४ । लेखन काल–सं० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

४२९. **विमलनाथपूजा**............। पत्र संख्या–१ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

४३०. **विमलनाथपूजा**............। पत्र संख्या–११ । साइज–१०½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

४३१. **शांतिचक्रपूजा**............। पत्र संख्या–३ । साइज- १३×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८५ ।

४३२. **शास्त्रपूजा—द्यानतराय** । पत्र संख्या–३ । साइज–१३×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

४३३. **श्रुतोद्यापनपूजा**............। पत्र संख्या–८ । साइज–१०½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है ।

४३४. **षोडशकारणमंडलपूजा—आचार्य केसवसेन** । पत्र संख्या–५० । साइज–११×५ इञ्च । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३३ ।

४३५. **षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—ब्र० ज्ञानसागर** । पत्र संख्या–३२ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४३६. **षोडशकारणजयमाल**............। पत्र संख्या–१०८ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष—रत्नत्रयजयमाल (नयमल) तथा दशलक्षणजयमाल भी हैं ।

४३७. षोडशकारणजयमाल—रइधू । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७६ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने इसी मन्दिर में प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर संस्कृत में उत्था दिया हुआ है । -एक प्रति और है ।

४३८. षोडशकारणजयमाल……… । पत्र संख्या-७ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३४ ।

विशेष—रत्नत्रय तथा दशलक्षण जयमाल भी है ।

४३९. षोडशकारणजयमाल……… । पत्र संख्या-२० । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४४०. षोडशकारणपूजा………। पत्र संख्या-११ । साइज-११×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

४४१. षोडशकारणपूजा……… । पत्र संख्या-२ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—प्रति एक और है ।

४४२. सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-७ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७१ ।

४४३. सम्मेदशिखरपूजा………। पत्र संख्या-३१ । साइज-८½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४२ ।

४४४. सरस्वतीपूजा………। पत्र संख्या-१० । साइज-५×१० इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२३ ।

विशेष—अन्य पूजाएँ भी हैं ।

४४५. सरस्वतीपूजा भाषा—पन्नालाल । पत्र संख्या-९ । साइज-१४×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६२१ ज्येष्ठ सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

४४६. सहस्रगुणपूजा – भ० धर्मकीर्ति । पत्र संख्या-७१ । साइज-११½X५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६५ वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४८ ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७. सहस्रनामगुणितपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-१०४ । साइज-८X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७१० कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

४४८. सिद्धचक्रपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-६ । साइज-१२X५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९. सुगन्धदशमीपूजा ········ । पत्र संख्या-८ । साइज-१२X६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६ ।

४५०. सोलहकारणपूजा – टेकचन्द । पत्र संख्या-७० । साइज-१२X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६३५ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५८ ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४५१. सोलहकारणपूजा··············। पत्र संख्या-१३ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३५ ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय, दशलक्षण, पंचमेरु तथा अढाई द्वीप की पूजा भी है ।

४५२. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-५ । साइज-६X६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है ।

४५३. सोलहकारण भावना··············। पत्र संख्या-१४ । साइज-११X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२७ ।

४५४. सोलहकारण जयमाल··············। पत्र संख्या-२ । साइज-८X७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४५५. **सोलहकारण विशेष पूजा** ....। पत्र संख्या–१२ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३५ ।

४५६. **सौख्यव्रतोद्यापन—अक्षयराम** । पत्र संख्या–१४ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७४ ।

विशेष—जयपुर में श्योजीलालजी दीवान ने प्रतिलिपि कराई ।

विषय–पुराण साहित्य

४५७. **आदिपुराण—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या–३४६ । साइज–१२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—तीन तरह की प्रतियों का मिश्रण है । आचार्य पद्मकीर्ति के शिष्य छाजू ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४५८. **आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति** । पत्र संख्या–२०६ । साइज–११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३२ ।

विशेष—श्री मोतीराम लुहाड़िया ने प्रतिलिपि कराई थी । १ से १११ तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । एक प्रति और है ।

४५९. **प्रति नं० २** । पत्र संख्या–२४२ । साइज–१२×६ इञ्च । लेखन काल–सं० १६७६ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५३ ।

विशेष—चंपावती (चाकसू) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०. **आदिपुराण भाषा—दौलतराम** । पत्र संख्या–६०६ । साइज–१२×७ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । रचना काल–सं० १८२४ । लेखन काल–सं० १८५५ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५१ ।

विशेष—४ प्रतियां और हैं लेकिन वे अपूर्ण हैं ।

४६१. **प्रति नं० २** । पत्र संख्या–२०१ से १३१० । साइज–१०½×७ इञ्च । लेखन काल–सं० १८२४ आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१३ ।

विशेष—प्रति स्वयं ग्रन्थकार के हाथ की लिखी हुई प्रतीत होती है, जगह जगह संशोधन हो रहा है ।

४६२. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र संख्या–३२४। साइज–१२×७½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचनाकाल–×। लेखन काल·×। पूर्ण। वेष्टन नं० २४८।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

४६३. उत्तरपुराण—खुशालचन्द। पत्र संख्या–५४४। साइज–१२½×६½इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १७९९। लेखन काल–सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४२।

विशेष—दूसरी २ प्रतियां और हैं और वे दोनों ही पूर्ण हैं।

४६४ नेमिनाथपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त। पत्र संख्या–१७४। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६४४ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२८।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। ३ प्रतियां और हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम हरिवंश पुराण भी है।

४६५. पद्मपुराण भाषा—खुशालचन्द। पत्र संख्या–३४४। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १७८३। लेखन काल–सं० १८५२। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६३।

विशेष—एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है।

४६६. पद्मपुराण भाषा—पं० दौलतराम। पत्र संख्या–२ से ४१७। साइज–१५×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। रचना काल–सं० १८२३। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६४०।

विशेष—२ प्रतियां और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण हैं।

४६७. पाण्डवपुराण—बुलाकीदास। पत्र संख्या–२०२। साइज–११×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १७५४। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४४।

विशेष—एक प्रति और लेकिन वह अपूर्ण है।

४६८. पाण्डवपुराण—भ० शुभचन्द्र। पत्र संख्या–२६५। साइज–११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–सं० १६०८। लेखन काल–सं० १७६७ वैशाख सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ११८।

विशेष—हंसराज खंडेलवाल की स्त्री लाडी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाकर पं० गोरधनदास को भेंट की थी।

४६९. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति। पत्र संख्या २११। साइज–१२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८२३ चैत सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० २५६।

४७०. भरतराज दिग्विजय वर्णन भाषा—पत्र संख्या–५६। साइज–१२×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७३८ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८०।

विशेष—जिनसेनाचार्य प्रणीत आदि पुराण के २६ वें पर्व का हिन्दी गद्य है । गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है ।

हे देव तुम्हारा विहार कै समय जाणु' कर्म रूप बैरी को तर्जना कहतां वर करतो संतो ऐसो महा उद्धत सबद करि दिसां का मुख पूरया है । जानै ऐसो परगट नगारा को टंकार सबद भगवान के विहार समय पग पग के विषै हो रहै । (पत्र संख्या ३३)

४७१. वर्द्धमानपुराण भाषा—पं० केशरीसिंह । पत्र संख्या-२०३ । साइज-११½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । लेखन काल-सं० १८७४ चैत बदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७८ ।

विशेष—७५ से ९४ तक पत्र नहीं हैं । ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—जिनेशं विश्वनाथाय अनंतगुणसिंधवे ।

धर्मचक्रभृते मूर्द्धा श्रीमहावीरस्वामिने नमः ॥१॥

श्री वर्द्धमान स्वामी कूं हमारो नमस्कार हो । कैसेक हैं वर्द्धमान स्वामी गणधरादिक के ईस हैं, अर संसार के नाथ हैं अर अनन्त गुणन के समुद्र है, अर धर्म चक्र के धारक हैं ।

गद्य का उदाहरण—

अहो या लोक विषै ते पुरुष धन्य हैं ज्यां पुरुष न का ध्यान विषै तिष्ठताचित्त उपसर्ग के सैकंडेन करिहू किंचित् मात्र ही विक्रिया कूं नहीं प्राप्ति होय है ॥७॥ तहां पीछे वह रूद्र जिनराज कूं अवलोकति जाणि करि लज्जायमान भयावका आप ही या प्रकार जिनराज की स्तुति करिबे कूं उद्यमी होता भया ।

अन्तिम प्रशस्ति—

नगर सवाई जयपुर जानि ताकी महिमा अधिक प्रवानि ।
जगतसिंह जहं राज करेह गोत कुछाहा सुन्दर देह ॥६॥
देस देस के आवे जहां, भांति भांति की वस्ती तहां ।
जहां सरावग बसै अनेक कैईक कै घट मांही विवेक ॥७॥
तिन में गोत छाबड़ा मांहि, बालचंद दीवान कहांहि ।
ताके पुत्र पांच गुणवान, तिन में दोय विख्यात महान् ॥८॥
जयचंद रायचंद है नाम स्वामी धर्मवती कीने काम ।
राजकाज में परम प्रवीन, सधर्म ध्यान में बुद्धि सुचीन ॥९॥
संघ चलाय प्रतिष्ठा करी, सब जग में कीर्ति बिस्तरी ।
और अधिक उत्सव करि कहा रायचंद संगही पद लहा ॥१०॥
..त दीवान जयचंद के पांच, सबकी धरम करम में सांच ।

तब रूचि उपजी यह मन माँहि, वीर चरित की भाषा नाँहि ॥१२॥
जो याकी अब भाषा होय, तौ यामै समुझै सहु कोय ।
यह विचार लखिकै बुधिवान, पंडित केशरीसिंह महान ॥१३॥
तिन प्रति यह प्रार्थना करी, याकी करौ वचनिका खरी ।
तब तिन अर्थ कियो विस्तार, ग्रंथ संस्कृत के अनुसारी ॥१४॥
यह खरडो कीनी तब तिनै, ताकी महिमा को कवि मनै ।
पुनि व्याकरण बोध बुधिवान, बखतपाल साहबडा जान ॥१५॥
तानै याको सोधन कीन, मूलग्रंथ अधुसारि सुवीन ।
बुधि अनुसारि बचनिका भयी, ताकू गुरजन हसियो नहीं ॥१६॥

× × × × ×

दोहा—संवत अष्टादश सतक, और तहचारि जानि ।
सुकल पक्ष फागुण भली, पुण्य नक्षत्र महान ॥२१॥
सुकवार शुभ द्वादसी, पूरण भयौ पुराण ।
वाचै सुनै जु भव्यजन, पावै गुण अमलान ॥२२॥

इति श्री भट्टारक सकलकीर्ति विरचिते "श्री वर्द्धमान पुराण संस्कृत ग्रंथ की देस भाषा मय की वचनिका पंडित केशरीसिंह कृत संपूर्ण" । मिती चैत बुदी १४ शनिवार सं० १८७४ का मैं ग्रंथ लिख्यौ ।

४७२. **वर्द्धमानपुराणसूचनिका**............। पत्र संख्या–१० । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

४७३. **वर्द्धमानपुराण भाषा**............। पत्र संख्या–७ । साइज–११×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

४७४. **शान्तिनाथपुराण—अशग** । पत्र संख्या–८८ । साइज–१०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८३४ असाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

४७५. **शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या–१६१ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

विशेष—ग्रन्थ संख्या श्लोक प्रमाण ४३७५ है । एक प्रति और है ।

४७६. **हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या–३५५ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

विशेष—प्रति नवीन है । २ प्रतियां और हैं ।

भ. मल्लिभूषण के दो शिष्य थे। ब्र. महेन्द्रदत्त और नेमिदत्त /

४७७. हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम । पत्र संख्या-५३० । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं०१८२६ । लेखन काल-सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी । दो प्रतियां और हैं ।

४७८. हरिवंशपुराण—खुशालचन्द । पत्र संख्या-१६१ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १८३१ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४५ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

विषय—काव्य एवं चरित्र

४७६. उत्तरपुराण—महाकवि पुष्पदंत । पत्र संख्या-३२४ से ८३८ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५७ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—३२४ से पूर्व आदि पुराण है ।

प्रशस्ति—सं० १५५७ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ गुरुदिने अद्यो श्री घनौघेन्द्रगे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति देवाः तत्पट्टे भ० श्री विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवाः तस्य शिष्य ब्र० महेन्द्रदत्त, नेमिदत्त तैः भट्टारक श्री मल्लिभूषणाय महापुराण पुस्तकं प्रदत्तं ।

४८०. कलावतीचरित्र—भुवनकीर्त्ति । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

४८१. गौतमस्वामीचरित्र—आचार्य धर्मचन्द्र । पत्र संख्या-३२ । साइज-११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६२२ । लेखन काल-सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

४८२. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या-१२३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३१ ।

विशेष—१२३ से आगे के पत्र नहीं हैं। प्रति नवीन है। ग्रन्थ की पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति मंडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टे गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य कवि दामोदर विरचिते श्री चन्द्रप्रभचरित्रे चन्द्रप्रभकेवलज्ञानोत्पत्ति वर्णनो नाम द्वाविंशतितमः सर्गः।

४८३. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनंदि। पत्र संख्या-११२। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २३०।

विशेष—फतेहलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी। काव्य की १ प्रति और है।

४८४. चेतनकर्मचरित्र—भैया भगवतीदास। पत्र संख्या-१५। साइज-१०×५½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियां और हैं।

४८५. जम्बूस्वामीचरित्र—महाकवि वीर। पत्र संख्या-११८। साइज-१२×४¾ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-काव्य। रचना काल-सं० १०७६ माह सुदी १०। लेखन काल-सं० १६०१ असाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २२६।

विशेष—ग्रन्थकार एवं लेखक प्रशस्ति दोनों पूर्ण हैं। राजाधिराज श्री रामचन्द्रजी के शासनकाल में टोडागढ़ में आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की गई थी।

खंडेलवाल वंशोत्पन्न साह गोत्र वाले सा० हेमा भार्या हमीर दे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य धर्मचन्द्र को प्रदान की थी। लेखक प्रशस्ति निम्न है।

संवत् १६०१ वर्षे आषाढ सुदी १३ भौमवासरे टोडागढवास्तव्ये राजाधिराजरावश्रीरामचन्द्रविजयराज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडल श्री धर्मचन्द्रदेवाः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे जिनपूजापुरन्दरान गुणश्रेयोनृपतिः साह महसा तद भार्या सुहागदे तत्पुत्र साह मेघचन्द्र द्वि० कौजू। साह मेघचन्द्र भार्या मायाकदे द्वितीय नवलादे। तत्पुत्र साह हेमा द्वि० साह हीरा तृतीय साह छाजू। साह हेमा भार्या हमीर दे तत्पुत्र चि० मीखा। साह हीरा भार्या हीरादे। साह कौजू भार्या कौतुकदे तत्पुत्र साह पदारथ द्वि० खीवा। सा० पदारथ भार्या पारमदे तत्पुत्र सा० धनपाल। साह खीवा भार्या खिवसिरी तत्पुत्र डूंगरसी एतेषा मध्ये सा० हेमा भार्या हमीर दे एतत् जम्बूस्वामीचरित्रं लिखाप्य रोहिणीव्रत उद्योतनार्थं मंडलाचार्यो श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्तं।

४८६. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास। पत्र संख्या-३१। साइज-११½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २२७।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

४८७. जम्बूस्वामीचरित्र - पांडे जिनदास। पत्र संख्या-३० । साइज-१०½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६४२ भादवा सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८० ।

विशेष—अकबर के शासनकाल में रचना की गई थी। दो तरह की लिपि है।

४८८. जिनदत्तचरित्र — गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-४८ । साइज-१०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२० ।

विशेष—पं० नगराज ने प्रतिलिपि की थी। २ प्रतियां और हैं।

४८९. जिणयत्तचरित्त (जिनदत्तचरित्र)—पं० लाखू। पत्र संख्या-२८० । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १२७५ । लेखन काल-सं० १६०६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२१ ।

विशेष—सं० १६०६ मंगसिर सुदी ५ आदित्यवार को रणथंभौर महादुर्ग में शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में सलेमशाह आलम के शासन के अन्तर्गत खिदिरखांन के राज्य में पाटनी गोत्र वाले साह श्री दूलहा ने प्रतिलिपि करवाकर आचार्य ललित कीर्ति को भेंट की थी।

४९०. णायकुमारचरिए (नागकुमारचरित्र)—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र संख्या-६६ । साइज-८½×४½इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५१७ बैसाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१२ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५१७ वर्षे बैसाख सुदी ५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टालंकार भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा। शिवणी बाई मानी निमित्ते नागकुमार पंचमी कथा लिखाप्य कर्मक्षय निमित्ते प्रदत्तं ।

४९१ प्रति नं० २ । पत्र संख्या-६० । साइज-१०½×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १५२८ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३४ ।

प्रशस्ति—संवत् १५२८ वर्षे श्रावण सुदि १ बुधे श्रवणनक्षत्रे सुमनानामयोगे श्री नयनवाह पत्तने सुरत्राण अलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य जैनन्दि आत्म कर्म क्षयार्थं निमित्ते इदं णायकुमार पंचमी लिखापितं । खंडेलवाल वंशोत्पन्न पहाड्या गोत्र वाले अरजन भार्या केलूहै ने प्रतिलिपि कराई।

४९२. द्विसंधानकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता-धनंजय, टीकाकार नेमिचन्द्र। पत्र संख्या-१६६ । साइज- १४×६½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

अंतिम पुष्पिका—इति निरवद्यविद्यामंडनमंडितपंडितमंडलीमंडितस्य षटतर्कचक्रवर्तिनः श्रीमत्विनयचन्द्र-पंडितस्य गुरोरंतेवासिनो देवनंदिनाम्नः शिष्येण सकलकलोद्भवचारुचातुरीचंद्रिकाचकोरेण नेमिचन्द्रेण विरचितायांद्विसंधान कविर्धनंजयस्य राघव पांडवीयापरानामकाव्यस्य पदकौमुदीनां दधानायां टीकायां श्रीरामव्यावर्णं नाम अष्टादश सर्गः।

टीका का नाम पदकौमुदी है।

४६३. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या-४६ । साइज-११½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३७ ।

प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक बुदी ७ रविवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक जशकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्तिदेवा तत् शिष्य "ब्र०" श्रीपाल स्वयं पठनार्थं गृहीतं। लिखितं चन्देरीगढदुर्गे वास्तव्य अकबर पातिसाहि राज्ये प्रवर्तते।

४६४. धन्यकुमार चारित्र—ब्र०नेमिदत्त । पत्र संख्या-३० । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय- चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हैं।

४६५. धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द । पत्र संख्या-५० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१९ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं।

४६६. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या-११० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११ ।

४६७. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या—३४ । साइज-११½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १४११ भादवा बुदी ५ । लेखन काल-सं० १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१२ ।

विशेष—प्रद्युम्न चारित्र की रचना किसी अग्रवाल बन्धुने की थी। रचना की भाषा एवं शैली अच्छी है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद विणु मति कवितु न होइ, सरु आखरु यावि बूझई कोइ।
सील धार पणमई सरसुती, तिन्हि कहुँ बुधि होइ कत हुती ॥१॥
सबु को सारद सारद करइ, तिस कउ अंतु न कोऊ लहई।
जिणवर मुखह ऊपि गाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥२॥
अठदल कमल सरोवर वासु, कासमीर पुरल (हु) निकासु।
हंस चढीकर लेखणि देइ, कवि सधार सरसई पणवेई ॥३॥

सेत वस्त्र पदमवतीय, करहं अलावणि बाजहि वीय।
आगम जाणि देहु बहुमती पुणु दुइ जे पणवई सरस्वती ॥४॥
पदमावती दंड कर लेइ, जालामुखी चकेसरी देइ।
अंबमाइ रोहिणी जो सारु, सासण देवी नवइ सधारु ॥५॥
जिणसासण जो विघन हरेइ, हाथ लकुटि लै ऊभो होइ।
भवियहु दुरिउ हरइ असरालु- अगिवाणीउं पणउ खित्रपाल ॥६॥
चउवीसउ स्वामी दुख हरण, चउवीस के जर मरण।
जिण चउवीस नउ धरि मोउ, करउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥
रिषभु अजितु संभउ तहि भयउ, अभिनंदनु चउत्थउ वर्षयंउ।
समति पदमु प्रभु अवरु सुपासु, चंदप्पउ आठमउ निकासु ॥८॥
सुविधु नवउ सीतलु दस भयउ, अरु श्रेयंसु ग्यारह जयउ।
वासुपूजु अरु विमल अनतु, धमु संति सोलहउं पहू पहूंत ॥९॥
कुंथु सतारह अरु सु अत्थार, मल्लिनाथ एगुणासी बार।
मुणिसुव्रत नमिनेमि बावीस, पासु वीर महुदेहि असीस ॥१०॥
सरस कथा रसु उपजई घणाउ, निसुणहु चरित पजूलह तणउ।
संवतु चौदहसै हुइ गये, ऊपर अधिक ग्यारह भये।
भादव दिन पंचइ सो सारू, स्वाति नखत्र सनीश्चर वारु ॥१२॥

मध्यभाग—प्रद्युम्न रुकमणी के यहां आपहुचे हैं किन्तु यह प्रकट न हो पाया कि रुकमणी का पुत्र आगया। पुत्र आगमन के पूर्व कहे हुए सारे संकेत मिल गये हैं किंतु माता पुत्र को देखने के लिये अधीर हो रही है —

षण षण रूपिणि चढइ अवास, षण षण सो जोवइ चौपास।
मोस्यो नारद कह्यउ निरूत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३८४॥
जे मुनि वयण कहे प्रमाण, ते सबई पूरे सहिंनाण।
च्यारि आवते दीठे फले, अरु आचल दीठे पीयरे ॥३८५॥
सूकी वापी भरी सुनीर अपय जुगल भरि आये षीर।
तउ रूपिणि मन विमउ भयउ, एते ब्रह्मचारि तहां गयउ ॥३८६॥
नमस्कार तब रूपिणि करइ, धरम विरधि खूढा उचरइ।
करै आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिंघासणु बैसण देहु ॥३८७॥
समाधान पूछई समुभइ, बह भूखउ २ बिललाई।
सखी बुलाइ जणाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥३८८॥

जीवण करण उठी तंखिणी, सुहरी मयण श्रमी यंमीणी।
नाडु न चुरइ चूल्हि धुंधाइ, आइ सूखउ २ चिखलाइ ॥३८६॥

अंतिम—महसामी कउ कीयउ वखाणु, तुम पजुन पायउ निरवाणु।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपाति ॥६७५॥
सधणु जणणी गुणवइ उर धरिउ सा महाराज घरह अवतरिउ।
एरछ नगर वसते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराण ॥६७६॥
सावय लोय वसहि पुर माहि, दह लक्षण ते धर्म्म कराह।
दस रिस मानइ दुतीया भेउ भावहिं चितहं श्रीगेसरु देउ ॥६७७॥
एहु चरितु जो बांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ।
हलु वइ धर्म्म खपइ सो देव, मुकति वरंगण मागइ एम्व ॥६७८॥
जो फुणिसुणइ मनह धरि भाउ, असुम कर्म ते दूरिहि जाइ।
जो र वखाणइ माणुसु कवणु, ताहि कहु तू सइ देव परदमणु ॥६७६॥
अरु लिखि जो रि रिवियावइ साधु, सो सुर होइ महा गुणरखु।
जो र पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण मलउ ॥६८०॥
यहु चरितु पुंन भडारू, जो नर पढइ सु नर महसारु।
र्ताहि परदमणु तुही फल देइ, संपति पुत्र अवरु जसु होइ ॥६८१॥
हउ बुधि हीणु न जाणौ केम्बु, अक्षर मातह मुणउ न भेउ।
पडित जणह नमूं कर जोडि हीया अधिक जणा लावहु खोडि ॥६८२॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

४६८. पार्श्वपुराण—भूधरदास। पत्र संख्या–१०४। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–काव्य। रचना काल–सं० १७८६। लेखन काल–सं० १८६३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६४७।

विशेष— १६ प्रतियां और हैं।

४६६. प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र संख्या–२५। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २१०।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति अपूर्ण है।

५००. बाहुबलिदेव चरिए (बाहुबलि देव चरित्र)—पं० धनपाल। पत्र संख्या–२६७। साइज–११½×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। रचना काल–सं० १४५४ बैसाख सुदी १३। लेखन काल–सं० १६०२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० २५२।

विशेष—ग्रंथकार व लेखक प्रशस्ति पूर्ण है। लेखक प्रशस्ति का अन्तिम भाग इस प्रकार है—

....एतेषां मध्ये ढूंढाहड देशे कछुवाहा राज्यप्रवर्तमाने अमरसर नगरेतिनामस्थितो धनधान्य चैत्यचैत्यालयादि शोभालंकृत तत्रैव राज्य पदाश्रितो राजश्री सूजा उधरणयो राज्ये वसन संघही लाला तेनेदं बाहुबलि चरित्रं लिखाप्य ज्ञानपात्र आचार्य धर्मायदत्तं।

५०१. भद्रबाहुचरित्र—आचार्य रत्ननंदि। पत्र संख्या-४३। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७२०। पूर्ण। वेष्टन नं० २५०।

विशेष-एक प्रति और है।

५०२. भद्रबाहुचरित्रभाषा—किशनसिंह। पत्र संख्या-२०२। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७८०। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०८।

विशेष—पत्र ५५ के बाद निम्न पाठों का संग्रह है जो सभी किशनसिंह द्वारा रचित हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता	रचना संवत्
एकावली व्रत कथा	किशनसिंह	×
श्रावक मुनि गुण वर्णन गीत	"	×
चौबीस दंडक	"	१७६४
चतुर्विंशति स्तुति	"	×
णमोकार रास	"	१७६०
जिनभक्ति गीत	"	×
चेतन गीत	"	×
गुरुभक्ति गीत	"	×
निर्वाण कांड भाषा	"	१७८३ संग्रामपुर में रचना की
चेतन लौरी	"	×
नागश्री कथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)	"	१७७३
लब्धि विधान कथा	"	१७८२ आगरे में रचना की गयी थी

५०३. भविसयत्तपंचमीकहा—धनपाल। पत्र संख्या-१३१। साइज-११×४½ इन्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २१७।

श्लोक संख्या ३३००।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियां और हैं। दो प्राचीन प्रतियां हैं।

५०४. भविसयत्तचरिय—(भविष्यदत्तचरित्र) श्रीधर। पत्र संख्या-१४४। साइज-११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६६१ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० २१४।

विशेष—राजमहल नगर में प्रतिलिपि हुई थी। ग्रंथ श्लोक संख्या १५०७ प्रमाण है।

५०५. प्रति नं० २—पत्र संख्या-८१। साइज-११×५ इन्च। लेखन काल-सं० १६४६ चैत्र सुदी ११ पूर्ण। वेष्टन नं० २१५।

प्रशस्ति—संवत् १६४६ वर्षे चैत्र सुदी ११ मंगलवार अंबावती नगरे नेमिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा, तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री धर्मचन्द्रदेवा, तत्पट्टे भट्टारक ललितकीर्तिदेवा: समस्त गोठि अंबावती··· ···············खंडेलवालान्वये भांवसा गोत्रे इदं शास्त्र घटापितं।

५०६. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-७७। साइज-११×५ इन्च। लेखन काल-सं० १६०६। पूर्ण। वेष्टन नं० २१६।

विशेष—कहीं २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए है।

प्रशस्ति—संवत् १६०६ वर्षे वैसाख मासे कृष्ण पक्षे द्वादशी तिथौ बुद्ध-वासरे अनुराधा नक्षत्रे श्री मूलसंघे गढ़ रणस्तंभ शाखागरे सेरपुर नाम्नि पातिशाह मल्लेम्ण साहि राज्य प्रवर्तमाने श्री शान्तिनाथ जिण चैत्यालये श्री लसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवा, तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्र देवा, तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्र देवा तत् शिष्य भ० श्री धर्मचन्द देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पाटोदी गोत्रे सा० वेला तद्भार्या सारौ·······························एतेषां मध्ये सा० वोहिथ भार्या लाली इदं शास्त्रं लिखाप्य मं० श्री धर्मचन्द्राय घटापितं कल्याण व्रतोद्यापनार्थ।

५०७. भोजचरित्र—पाठक राजवल्लभ। पत्र संख्या-३८। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०७। पूर्ण। वेष्टन नं० २३५।

विशेष—ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मसूरि संताने स्वाध्वी पट्टे श्री महीतिलक सूरि शिष्य पाठक राजवल्लभ कृते भोज चरित्रे समाप्तं। सं० १६०७ वर्षे फागुण मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां तिथौ शुक्रवासरे अलवरगढ़ मध्ये लिखितं।

५०८ महीपालचरित्र—मुनिचारित्र भूषण। पत्र संख्या-५४। साइज-१०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचनाकाल-×। लेखन काल· ×। पूर्ण। वेष्टन नं० २११।

विशेष—श्लोक संख्या-६६५ प्रमाण ग्रन्थ है।

५०९. यशस्तिलकचम्पू—सोमदेव। पत्र संख्या-५६। साइज-१२½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६६३।

विशेष—८ पेज तक टीका दे रखी है।

५१०. यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति। पत्र संख्या-१७। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २४२।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं हैं।

५११. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति। पत्र संख्या-६५। साइज-१४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६५६ माघ सुदी ५। लेखन काल-सं० १६६४ वैशाख बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० २४१

विशेष—महाराजा मानसिंहजी के शासन काल में मौजमाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

५१२. यशोधरचरित्र—वासवसेन। पत्र संख्या-२-३१। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७५६ भादवा सुदी १। अपूर्ण। वेष्टन नं० २४०।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पं० पेमराज ने प्रतिलिपि की थी।

५१३. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र संख्या-३४। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २३६।

विशेष—चार प्रतियां और हैं।

५१४. यशोधरचरित्र—परिहानन्द। पत्र संख्या-३४। साइज-११×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १६७०। लेखन काल-सं० १८३६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१८।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—सुमर देव अरहंत महंत, गुण अति अगम लहै को अंतु।
जाकै माया मोह न मान, लोकालोक प्रकासक ज्ञान॥
जाकै राग न मोह न खेद, छितिपति रंक न जाके भेद।
राखे हरष न विरचै चक्कु, सुमरत नाम हरै अघ चक्कु॥
अलख अगोचर अन्तुक अंतु, मंगलधारि मुकति को कन्तु।
गुण वारिधि मो रसना एक, अलप बुद्धि अर तुच्छ विवेक॥
द्वै कर जोडि नऊ सरस्वती, बदें बुद्धि उपजै शुभ मती।
जिन बानी मानी जिन आनि, तिनको बचन चल्यो परवान॥
विबुध विहंगम नव बन वारि, कवि कुल केलि सरोवर भार।
भव सागर तू तारन नाव, कुनय कुरंग सिंघनी भाव॥
जे नर सुन्दर ते नर बली, जिनका पुहमि कथा बहु चली।

जिनकौ तैं सारद वर दीयौ, सुखसुरितासु अमल जल पीयौ ॥
सुमरि सुमरि गुण ज्ञान गंभीर, बढ़ै सुमति अघ घटहिं सरीर ।
जिनमुद्रा जे धारण धीर, भव आताप बुझावन नीर ॥
तिनके चरण चित्त महि धरै, थिर अनुसार कवित उच्चरै ।
गुरु गणधर सुमरो मन माहि, विघन हरन करि करि तूं छांह ॥८॥
नगर आगरो बसै सुवासु, जिहपुर नाना भोग विलास ।
बसीह साहु बहु धनी असंखि, वनजहि वनज सागर हिनखि ॥
गुणी लोग छत्तीसौं कुरी, मथुरा मंडल उत्तम पुरी ।
और बहुत को करै बखांउ, एक जीभ को नाहीं दाउ ।
नृपति नूरदीसाह सुजान, अरि तम तेज हर नमो भान ॥

मध्य भाग—सुनिरी माइ कहौं हो एह, जो नर पावै उत्तम देह ।
सत पंडित सज्जन सुखदाइ, सब हित करहि न कोपै राइ ॥
जो बोलै सो होइ प्रमान, जह बैठे तह पावै मान ।
वैर भाव मन धरै न कोइ, जो देखै ताकौ सुख होइ ॥७४॥
यह सब जानि दया को अंग, उत्तम कुल अरु रूप अनंग ।
दीरघ आव परै ता तनी, सेवहि चरन कमल बहु गुनी ॥७५॥

अन्तिम भाग—संवत् सोलह सै अधिक सत्तरि सावण मास ।
सुकल सोम दिन सप्तमी कही कथा मृदु भास ॥
अग्रवाल वर वंस गोसना गांव को ।
गोयल गोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठांव को ॥
माता चंदा नाम, पिता भैरू भन्यौ ।
परिहानंद कही मनमोद अंग न गुन नां गन्यौ ॥५६८॥

इति श्री यशोधर चौपई समाप्ता ।

सवत् १८३१ का मैं घटतौ पाना पुरौ कियौ पुस्तक पहेली लिख्यो छै । पुस्तक त्रुटि मैं आयौ सो यौ निछरावलि देर यौ गाजो का धाणा का पंचा बाचै पछै त्याह भव्य जीवानै पुन्य होयसी ।

५१५. **यशोधरचरित्र—खुशालचन्द** । पत्र संख्या-४१ । साइज-११¾×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७८१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१४ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

५१६. यशोधरचरित्र टिप्पण...........। पत्र संख्या-२६ । साइज-११×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है, पत्र गल गये हैं । चतुर्थ संधि तक है ।

५१७. यशोधर चौपई—अजयराज । पत्र संख्या १२ से ५१ । साइज-६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७६२ कार्तिक बुदी २ । लेखन काल-सं० १८०० चैत बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—चूहडमल पाटनी बस्सी वाले ने आमेर में प्रतिलिपि कराई थी ।

५१८. वड्ढमाणकहा (वर्द्धमान कथा)—नरसेन । पत्र संख्या-२७ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २११ ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८४ वर्षे चैत्र सुदी १४ शनिवारे पूर्वानक्षत्रे श्री चंपावतीकोटे राणा श्री श्री श्री संग्रामस्य राज्ये, राइ श्री रामचन्द्र राज्ये, श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्र देवा, प्रभाचन्द्रदेवा ॥ श्री खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्र साह लोल्हा भार्या धनपद तस्य पुत्र साह प्योराज भार्या रतना तस्य पुत्र शान्तु तस्य भार्या सांतिश्री तस्य पुत्र स्यौन् द्वितीय साह चापा भार्या सोना तस्य साह होला तस्य भार्या ....।

५१९. वड्ढमाणकव्व (वर्द्धमानकाव्य)—पं० जयमित्रहल । पत्र संख्या-२ से ५६ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५० वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५० वर्षे वैशाख सुदी ३ रोहिणी शुभनाम योगे श्री गैयोली पत्तने राजाधिराजः अरिमानमर्दनराजश्री चापादेव राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति देव............।

५२०. वर्द्धमानचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१२४ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

५२१. वरांगचरित्र—वर्द्धमान भट्टारक देव । पत्र संख्या-६० । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३१ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४७ ।

विशेष—सांगानेर में महाराजाधिराज भगवतसिंहजी के शासनकाल में खंडेलवालवंशोत्पन्न भौंसा गोत्र वाले साह

नागग आदि ने प्रतिलिपि कराई थी।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

५२२. **विदग्धमुखमंडन—धर्मदास** । पत्र संख्या–२२ । साइज–१०३/४×४१/२ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२५ चैत्र सुदी ३ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

विशेष—नगराज ने प्रतिलिपि की थी।

५२३. **षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकीर्ति** । पत्र संख्या–८६ । साइज–१०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५८ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है—

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५१ वर्षे चैत्र बुदी १३ शनिवासरे शतभिखानक्षत्रे राजाधिराज श्रीमाणविजयराज्ये मीलोड़ा ग्रामे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० सिंघकीर्ति देवास्तत् शिष्य ब्रह्मचारी रामचन्द्राय हूंबड जातीय श्रेष्ठी हारा भार्या हंजा सुत श्रे तश्रेष्ठी देवात भ्रातृ श्रेष्ठी नाना भार्या डूबी द्वतीय भार्या रूपी तयोः सुत श्रे तश्रेष्ठी लाला भार्या बानू तत् भ्रातृ श्रेष्ठी वेला भार्या वीली षटकर्मोपदेश शास्त्र लिखाय प्रदत्तं ।

५२४. **शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि** । पत्र संख्या–१४ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १६१८ । लेखन काल–सं० १७६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७५ ।

५२५. **श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र सख्या–५५ । साइज–१२×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १५८५ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १८६१ सावन बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२५

विशेष—मालवा देश में पूर्णाशा नगर में आदिनाथजी के मन्दिर में ग्रंथ रचना हुई थी।

लाजूलालजी साह के पिता शिवजीलालजी साह ने ज्ञानावरणीक्षयार्थ श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति और है।

५२६. **श्रीपालचरित्र—कवि दामोदर** । पत्र संख्या–५७ । साइज–११×४१/२ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०६ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२४ ।

५२७. **श्रीपालचरित्र—दौलतराम** । पत्र संख्या–४६ । साइज–८१/२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२० ।

विशेष—आराधना कथा कोष में से कथा ली गई है।

५२८. श्रेणिकचरित्र—भ० विजयकीर्ति । पत्र संख्या–२५० । साइज–१०½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १८२० । लेखन काल–सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१५ ।

५२६. श्रेणिकचरित्र—जयमित्रहल । पत्र संख्या–६० । साइज–१०½×५½ इच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

५३०. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र संख्या–१३६ । साइज–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—५ प्रतियां और हैं ।

५३१. श्रीपालचरित्र………… । पत्र संख्या–३५ । साइज–१३×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५१ आषाढ़ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२७ ।

विशेष—ग्रन्थ के मूलकर्त्ता भ० सकलकीर्ति थे । २ प्रतियां और है ।

५३२. सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या–१६१ । साइज–६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १७१३ । लेखन काल–सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२३ ।

विशेष—चंपावती (चाकसू) में प्रतिलिपि हुई थी । सीता चरित्र की भण्डार में ५ प्रतियां और हैं ।

५३३. सिद्धचक्रकथा—नरसेनदेव । पत्र संख्या–३८ । साइज–१०×४½ इच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ रवौ नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावदीन राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा: तत्पट्टे जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मुनि अनंतकृति लंबकंचुकान्वये जदवंसे काकलिमरच्छगोत्रे साह सीधे भार्या दीपा तस्य पुत्र साह साम्हरि भार्या जलंवरूप नाराइण लघु भ्राता कान्ह एतेषु मध्ये नाराइण पठनार्थ लिखापितं ।

५३४. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या–३८ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३२ ।

५३५. सुदर्शनचरित्र—विद्यानंदि । पत्र संख्या–५० । साइज–११×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३३ ।

विशेष—टोंक निवासी गंगवाल गोत्र वाले सा० राजा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५३६. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र संख्या–१ से ४०६ । साइज–१३×५ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५८२ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३ ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है। पुराण की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इय रिट्ठणेमिचरिय धवलइयासिय सयंभुएवउच्चरए तिहुयणसयंभुइए समाणियं कन्हकित्ति हरिवंसं ॥ गुरुपव्ववासमयं सुयणाणाणुक्कमं जहाजायासयेमिक्कदुद्दहमाहियं संधिओ परिसम्मतिओ ॥६॥ संधि ११२ ॥ इति हरिवंस पुराण समाप्त ॥६॥ ग्रन्थ संख्या सहस्र १८००० पूर्वोक्त ॥ ६ ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुण सुदी १३ त्रयोदशीदिवसे शुक्रवासरे श्रवणनक्षत्रे शुभजोगे चंपावतीगढ़नगरे महाराज श्री रामचन्द्रराज्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे जिनपूजापुरंदरान बहुशास्त्रपरिमलित सुन्दरो, जिनचरणारविंद षट्पदनीतिशास्त्रपरिगत, विशदजिनशासन-समुद्धरणधीर, पंचाणुव्रतपालनैकधीर, सम्यक्त्वालंकृतशरीराभेदाभेदरत्नत्रयराधकात्रिपंचासक्रियाप्रतिपालक शंकाष्टदोषरहितं संवेगाद्यगुणयुक्ति दुस्थितजनविश्राम, परम श्रावक साह काधिल, भार्या कावलदे त्रयाः पुत्राः। द्वितीय पुत्र जिनचरणकमलचंचरीकान्, दानपूजाश्रयान् इव समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रशस्तचित्तान् सम्यक्त्वगुणप्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मानरंजितचेतसान् कुटुंबभारधुरंधरान् रत्नत्रयालंकृतदिव्यदेहान् आहारभैषजशास्त्रदानमंदाकिनीयः पूरितचित्तान् श्रावकाचारप्रतिपालननिरतान् सा राघौ साधी (साध्वी) भार्या रैनदे तस्य चतुर्थ पुत्रः द्वितिय पुत्रः जिणबिंबचैत्यविहारउद्धरणधीरान् चतुर्विधसंघमनोरथपूर्णान, चिन्तामणि गुण.............. संपूर्णान् बहुलक्षणलक्षितदिव्यदेहान् स्वजनानंदकारी देवशास्त्रगुरुया (णा) भक्तिवंतान् त्रिकालसामायिकपूत प्रतिपालकान् परमाराधकपुरन्दर, निजकुलगगनद्योतनदिवाकर व्रतनियमसंजमरत्नत्रयरत्नाकर कृष्णावलिप्रस्तरन्तमूलखंडन चतुर्विध-मुखमंडन, निजकुलकमलविकासनैकमार्त्तण्डान्, मार्गस्थकल्पवृक्षान् सरस्वतिकंठाभरणान् त्रेपनक्रियाप्रतिपालकान् एतान् गुणसंयुक्तान् परम श्रावक विनयवंत साधु सा० हाथु भार्या श्रीमती इव साध्वी हरिषदे तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र जिणशासन-उद्धरणधीर राजप्रागभारवितरणप्रवीण सा० पासा भार्या द्वौ प्रथम लाडी द्वितीय बाली तस्य पुत्र चिरंजीव बालबवल सा० हरराज। सा० हाथु द्वितीय पुत्र देवगुरुशास्त्रशासनविनयवंत सा० आशा भार्या हंकारदे। सा० राघौ-तृतीय पुत्र सा० दासा भार्या सिंदूरी तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र सा० भविसी भार्यामावलदे द्वितीय पुत्र सा० नानू सा० कादू। सा० दासा तस्य द्वितीय पुत्र सा० धर्मसी भार्या दारादे। सा० राघौ चतुर्थ पुत्र सा० घाटं तस्य भार्या राणी .... घाटं पुत्र द्वौ, सा० हेमराज.................मुनिमाघनंदाय दत्तं।

५३७. **होलिकाचरित्र—छीतर ठोलिया**। पत्र संख्या—५। साइज—१०×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। रचना काल—सं० १६६० फागुण सुदी १५। लेखन काल—सं० १८७४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७२।

५३८. **होलीरेणुकाचरित्र—जिनदास**। पत्र संख्या—३१। साइज—११¾×५¾ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। रचना काल—×। लेखन काल—सं० १७५६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०८।

विशेष—पांडे जसा ने स्वयं प्रतिलिपि की थी।

———

विषय-कथा एवं रासा साहित्य

५३६. अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचन्द्र। पत्र संख्या-१०। साइज-१०½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २७५।

विशेष—कथा की रचना जालक की प्रेरणा से हुई थी। कथा की तीन प्रतियां और हैं।

५४०. आदित्यवारकथा—भाऊ कवि। पत्र संख्या-१७। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचनाकाल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६६।

५४१. आदित्यवारकथा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र संख्या-४१। साइज-५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-सं० १७४४। लेखन काल-सं० १८४६। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६६।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी। पत्र २० से सूरत की बारहखड़ी दी हुई है।

५४२. कवलचन्द्रायणव्रतकथा ....। पत्र संख्या-६। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-× लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६७।

५४३. कर्मविपाकरास—ब्र० जिनदास। पत्र संख्या-१७। साइज-१०¾×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा साहित्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७७६ कार्तिक बुदी ११, पूर्ण। वेष्टन नं० ३६६।

विशेष - भाषा में गुजराती का बाहुल्य है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७७६ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे एकादशी गुरुवासरे श्री रत्नाकर तटे श्री खंभातबंदरे गौसाई कान्हड़-गिरेण लिखितेमिदं पुस्तकं ब्र० सुमतिसागर पठनार्थं।

५४४. गौतमपृच्छा ....। पत्र संख्या-३५। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४८।

विशेष—

प्रारम्भ— वीरजिनं प्रणम्यादौ बालानां सुखबोधकां।
श्रीमद् गौतमपृच्छायाः क्रियते वृत्तिमद्युता ॥१॥
नमि ऊण तित्थनाहं जाणंतो तहय गोयमो भयवं।
अबुहाण बोहणत्थं धम्माधम्मफलं पुच्छे ॥२॥
नत्वा तीर्थनाथं जानन् तथा गौतमः भगव।
अबोधान् बोधनार्थं धर्म्माधर्म्मफलं प्रपृच्छे ॥३॥

अन्तिम पाठ—पाठक पद संयुक्तै कृता चेयं कथानिका ।

श्रीमद् गौतमपृच्छा सुखमासुखबोधका ॥

लिखतं चेला हमीर विजयः ।

इति गोतमपृच्छा संपूर्णः ।

५४५. चन्दनषष्ठिव्रतकथा—विजयकीर्ति । पत्र संख्या-६ । साइज-११३/४×६१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०१ ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि कराई थी ।

५४६. चन्द्रहंसकथा—टीकम । पत्र संख्या-४४ । साइज-१११/२×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७०८ । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७६ ।

विशेष—रचना के पद्यों की संख्या ४५० है । रचना का प्रारम्भ और अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—ओंकार अपार गुण, सब ही अक्षर आदि ।
सिद्ध होय ताको जप्यां, आखिर एह अनादि ।
जिन वाणी मुख उचरे, श्रों सबद सरुप ।
पंडित होय मति वीसरो, आखिर एह अनूप ॥२॥

अन्तिम पाठ—सांभरि स्यौ दश कोसा गांव, पूर्व दिशा कालख है ठाम ॥४४०॥
ता माहै व्यापारी रहै, धर्म्म कर्म्म सो नीति की कहै ।
देव जिनालय है तिहां भलो, श्रावग तिहां कथा सांभलो ॥४४१॥
विधि सौ पूजा करै जिन तनी, मन में प्रीति सु राखै घणी ।
झगडू तहांतणो हुजदार, बंस लुहाड्या में सिरदार ॥४४२॥
मोज राज साहिब को नांव, देई बडाई सौप्यों गांव ।
सब सौ प्रति चलावै साह, दोष न करै कदै मन माहि ॥४४३॥
पुत्र दोइ ताकै घरि भला सुजाणि, पिता हुकम करै परवान ।
कालु और नराईनदास, ईहगातणीय जोव आस ॥४४४॥
भाई बंधु कुटंब परिवार, विधि सौ करै सबन की सार ।
साहमी तणौ विनौ अति करै, सति वचन मुख उचरै ॥४४५॥
जितो भलाई है तिहि माहि, एक जीभ बरणन नही आई ।
सब ही कौ दिल लीया हाथि, जिमै बैठि आपनै साथि ॥ ४४६
ऐसी जुगति खैचियो भार, जाणें ताकौ सब संसार ।
संवत आठ सतरासै अर्ब, करता चौपई हुवो हर्ष ॥ ४४७ ॥

पंडित होइ हंसो मति कोई, बुरा भला आखरू जो होइ ।
जेठमास अर पाखि अंधियार, जाणै दोईज अरवार ॥ ४४६ ॥
टीकम तणी बीनती एहु, लघु दीरघु संवारै जु लेह ।
सुणत कथा होई जे पास, हो तिन कै चरनण को दास ॥
मनधर कथा एह जो कहै, चन्द्र हंस जोमि सुख लहै ॥
रोग बिजोग न व्यापै कोई, मनधर कथा सुनै जै सोई ॥ ४५० ॥

॥ इति चन्द्रहंस कथा संपूर्ण ॥

संवत् १८१२ वर्षे शाके १६७७ आषाढकृष्णा तिथौ ६ बुधवासरे लिपि कृतं ॥ जोसी स्योजीराम ॥ लिखापितं धर्ममूरति धरमात्मा साह जी श्री डालूराम॥

५४७. चित्रसेनपद्मावतीकथा—पाठक राजवल्लभ । पत्र संख्या-१६ । साइज-६३/४×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७४ ।

५४८. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-६८ । साइज-८×६१/२ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८४ ।

विशेष — एक प्रति और है ।

५४९. दानकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५१/२ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४८ ।

विशेष—मूल्य १॥।) लिखा हुआ है ।

५५०. नागश्रीकथा (रात्रिभोजनत्यागकथा)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र संख्या-२८ । साइज-११×४१/२ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६७८ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८

विशेष—बाई तेजश्री बैजवाड में प्रतिलिपि कराई । पहला पत्र बाद का लिखा हुआ है । एक प्रति और है ।

५५१. नागश्रीकथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)—किशनसिंह । पत्र संख्या-२० । साइज-११×५१/२ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७७३ सावन सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

विशेष—३ प्रतियां और हैं ।

५५२. नागकुमारचरित्र—नथमल बिलाला । पत्र संख्या-१०३ । साइज-११३/४×५३/४ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८३७ माघ सुदी ५ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

५५३. **निशिभोजनत्यागकथा—भारामल्ल** । पत्र संख्या-१० । साइज-८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२७ श्रावण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

५५४. **नेमिव्याहलो—हीरा** । पत्र संख्या-११ । साइज-१३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८४८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५० ।

विशेष—इसमें नेमिनाथ के विवाह की घटना का विस्तृत वर्णन है-परिचय निम्न प्रकार है—

साल अठारासै परमाण, ता पर अडतालीस वखाण । पोष कृष्णा पांचै तिथि आणि, वारब्रहस्पति मन में आण ॥८०॥

बूंदी को छै महासुथान, तो मैं नेम जिनालय जान । तो मध्ये पंडित वर माग, रहै कवीश्वर उपमा गाय ॥८१॥

ताको नाउ जिनदा की ुास, महां विचक्षण रहत उदास । सखि हीरो छै ताको नाम, तो करया नेम गुण गान॥८२॥

इति श्री नेमि व्याहलो संपूर्ण । लिखतं-चम्पाराम । छन्द संख्या ८२ है ।

पत्र ५ से आगे वीनती सझ्झाय, रतन साहकृत, ज्ञानचौपडसझ्झाय, माणकचन्द कृत, भूलेट के ऋषभ देव का पद-तथा पेमराज कृत राजुल पच्चीसी-और हैं ।

५५५. **नेमिनाथ के दश भव** ...... । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७५ ।

५५६. **पुण्याश्रवकथाकोष—दौलतराम** । पत्र संख्या-२६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं०१७७७ भादवा बुदी ५ । लेखन काल-सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१३ ।

विशेष—श्लोक संख्या ८००० है । ग्रंथ महात्मा हरदेव लेखक से लिया था । ४ प्रतियां और हैं ।

५५७. **पुरन्दर चौपई - ब्र० मालदेव** । पत्र संख्या-१४ । साइज-६½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१८ ।

विशेष—

अन्तिम पद्य—सील वडां सवि धर्म मैं व्रत पालो रे ।

अनुक्रम कोठ प्रधान । सी०

रतनागरी कछु पाईये । चिंता रतन समान । सी० ॥ ७३ ॥

माल देव सूरी गुण नीलो । ब्र० । वड गछ कमल दिणंद ॥ सी० ॥

तासु सीस इम कहइ । ब्र० । मालदेव आणंद ॥ सी० ॥७४॥

अगयां सील तो जे कह्यो । ब्र० अनुमोदीजै तेय । सी०

जो विरुद्ध किंपी कह्यो ब्र० । मीछा दुक्कड तेय । सी० ॥७५॥

५५८. राजाचन्द की चौपई ....| पत्र संख्या-५१ | साइज-५×१० इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-कथा | रचना काल-× | लेखन काल-सं० १८१२ श्रावण सुदी १२ | पूर्ण | वेष्टन नं० १६८ |

विशेष—प्रारम्भ के पत्र नहीं हैं | पत्र ३५ से फुटकर पद्य हैं |

५५९. राजुलपच्चीसी ....| पत्र संख्या-७ | साइज-६×५ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-कथा रचना काल-× | लेखन काल-× | अपूर्ण | वेष्टन नं० ५३६ |

विशेष — ७ से आगे पत्र नहीं है |

५६०. व्रतकथाकोशभाषा—खुशालचन्द | पत्र संख्या-६७ | साइज-१२½×६ इञ्च | भाषा-हिन्दी (पद्य) | विषय-कथा | रचना काल-सं० १७८३ | लेखन काल-× | अपूर्ण | वेष्टन नं० ५६२ |

विशेष—निम्न कथायें है |

(१) जेष्ठजिनवरव्रतकथा (२) आदित्यवारव्रतकथा (३) सप्तपरमस्थानव्रतकथा (४) मुकुट सप्तमीव्रतकथा (५) अक्षयनिधिव्रतकथा (६) षोडशकारणव्रतकथा (७) मेघमालाव्रतकथा (८) चन्दनषष्ठीव्रतकथा (९) लब्धि-विधानव्रतकथा (१०) पुरन्दरकथा (११) दशलक्षणव्रतकथा (१२) पुष्पांजलिव्रतकथा (१३) आकाशपंचमीव्रतकथा (१४) मुक्तावलीव्रतकथा (१५) निर्दोषसप्तमीव्रतकथा (१६) सुगंधदशमीव्रतकथा |

५६१. रोहिणी कथा ....| पत्र संख्या-६ | साइज-५½×५ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-कथा | रचना काल-× | लेखन काल-× | पूर्ण | वेष्टन नं० १०५१ |

५६२. वैताल पच्चीसी ....| पत्र संख्या-६-६२ | साइज-७×६ इञ्च | भाषा-हिन्दी (गद्य) | विषय-कथा | रचना काल-× | लेखन काल-× | अपूर्ण | वेष्टन नं० ६७५ |

विशेष—अवस्था जीर्ण है | आदि तथा अन्तिम पाठ नहीं है | छठी कथा का प्रारम्भ निम्न प्रकार है |

अथ छठी बारता लिखंत || तब राजा वीर विक्रमादीत फेरि जाये सीस्यौ के रूख आये चढयौ अर अतग ने उतारि करि ले चल्यौ || तब राह मैं अतग बेताल बोल्यो || हे राजा रात्रि को समौ राह दुरि || पैंडो कटे न्ही || कथा बारता कहयास्यो राह कटै सो हूं येक कथा कहूँ छूं || तु सुणि ||

५६३. शनिश्चरदेव की कथा ....| पत्र संख्या-१३ | साइज-६¾×५½ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-कथा | रचना काल-× | लेखन काल-सं० १८५२ माघ सुदी २ | अपूर्ण | वेष्टन नं० १०३६ |

विशेष—सेवाराम के पठनार्थ नन्दलाल ने प्रतिलिपि करवाई थी |

५६४. शीलकथा—भारामल्ल | पत्र संख्या-३३ | साइज-७×६ इञ्च | भाषा-हिन्दी (पद्य) | विषय-कथा | रचना काल-× | लेखन काल-१६८५ | पूर्ण | वेष्टन नं० ६०० |

विशेष—सं० १८८१ की प्रति की नकल है। कापी साइज है। दो प्रति और हैं।

५६५. शीलतरंगिनीकथा-अखैराम लुहाडिया। पत्र संख्या-८२। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२५ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०१।

विशेष—आरतराम गंगवाल ने प्रति लिपि की थी।

५६६. सप्तपरमस्थान विधान कथा—श्रुतसागर। पत्र संख्या-६। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३० वैशाख बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८।

विशेष—पं० गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की। संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी हैं। एक प्रति और है।

५६७. सप्तव्यसन कथा—आ० सोमकीर्ति। पत्र संख्या-७६। साइज-१०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-सं०१५२६ माघ सुदी १। लेखन काल-सं० १७८१। पूर्ण। वेष्टन नं०१६७।

५६८. सम्यक्त्वकौमुदी—मुनिधर्मकीर्ति। पत्र संख्या-१२ से ६२। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचनाकाल-×। लेखन काल-सं० १६०३ श्रावण सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन नं० १३६।

विशेष—किशनदास अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी। शंकरदास ने प्रतिलिपि की थी।

५६९. सम्यक्त्वकौमुदी कथा भाषा ...... । पत्र संख्या-४०। साइज-६½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५८३।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है।

५७०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा—जोधराज गोदीका। पत्र संख्या-५६। साइज-१०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-सं० १७२४ फाल्गुन बुदी १३। लेखन काल-सं० १८३० कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८२।

विशेष—हरीसिंह टोंग्या ने चन्द्रावतों के रामपुरा में प्रति लिपि की। एक प्रति और है।

५७१. सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा ...... । पत्र संख्या-६। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २८०।

५७२. सुगन्धदशमीव्रत कथा—नयनानंद। पत्र संख्या-८। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५२४ भादवा बुदी ६ आदितवार। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८१।

विशेष—इति सुगंधदशमी दुजिय संधि समाप्ता।

५७३. सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल। पत्र संख्या-११। साइज-१२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२१ ।

५७४. हनुमंत कथा—ब्र० रायमल्ल । पत्र संख्या-७१ । साइज-११×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०६ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

विषय-व्याकरण शास्त्र

५७५. जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि । पत्र संख्या-४६५ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २०८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रारम्भ के ३० पत्र जीर्ण हैं । एक प्रति और है वह भी अपूर्ण है ।

५७६. प्रक्रियारूपावली—पं० रामरत्न शर्मा । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय- व्याकरण । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५ ।

५७७. महीभट्टी—भट्टी । पत्र संख्या-२ से २८ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०० ।

५७८. शब्दरूपावली ………। पत्र संख्या-५६ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

५७९. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र संख्या-४१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

विषय—कोश एवं छन्द शास्त्र

५८०. **अमरकोश—अमरसिंह** । पत्र संख्या–२५ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–कोष । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३४ ।

५८१. **एकाक्षर नाममाला—सुधाकलश** । पत्र संख्या–४८ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोष । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

५८२. **छन्दरत्नावली—हरिराम** । पत्र संख्या–२६ साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–छन्द शास्त्र । रचना काल–सं० १७०८ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६११ ।

विशेष—कुल २११ पद्य हैं—

अंतिम—ग्रंथ छंद रत्नावली सारय याको नाम ।

भूखन मरती तैं भयो कहै दाश हरिराम ॥२११॥

इति श्री छंद रत्नावली संपूर्ण ।

रागनभनिधीचंद कर सो समत सुमजानि ।

फागुण बुदी त्रयोदशी मांझलिखी सो जानि ॥

५८३. **छन्दशतक—कवि वृन्दावन** । पत्र संख्या–३१ । साइज–६½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–छन्द शास्त्र । रचना काल–सं० १८९८ माघ बुदी २ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०३ ।

५८४. **नाममाला—धनंजय** । पत्र संख्या–१६ । साइज–१०×४ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोष । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३७ ।

विशेष—जीवसिंह के शिष्य खुशालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५८५. **रूपदीपपिंगल—जैकृष्ण** । पत्र संख्या–१० । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–छन्दशास्त्र । रचना काल–सं० १७७६ भादवा सुदी २ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७३ ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद माता तुम बडी बुधि देहि दर हाल ।

पिंगल की छाया लियै बरनू बावन चाल ॥१॥

गुरु गणेश के चरण गहि हियै धारके विष्णु ।

कुंवर भवानीदास का सुगत करै जै किष्ण ॥२॥

रूप दीप परगट करूं भाषा बुद्धि समान ।
बालक कूं सुख होत है उपजें अक्षर ज्ञान ॥३॥
प्राकृत की बानी कठिन भाषा सुगम प्रतिक्ष ।
कृपाराम की कृपा सूं कंठ करै सब शिष्य ॥४॥
पिंगल सागर सम कह्यो छंदा भेद अपार ।
लघु दीरघ गण अगण का बरनूं सुद्धि विचार ॥५॥

अंतिम — दोहा—गुण चतुराई बुधि लहै भला कहै सब कोइ ।
रूप दीप हिरदै धरै सो अक्षर कवि होय ॥

सोरठा—निज पुहकरण न्यात तिस में गोत कटारिया ।
सुनि प्राकृत सों बात तैसे ही भाषा करी ॥

दोहा—बावन बरनी चाल सब, जैसी उपजी बुद्धि ।
मूल भेद जाको कह्यो, करो कबीश्वर सुद्ध ॥
संवत सत्रहसै बरसे और छहत्तर पाय ।
भादों सुदी दुतिया गुरू भयो ग्रंथ सुखदाय ॥५६॥

॥ इति रूपदीप पिंगल समाप्त ॥

५८६. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या-५ । साइज-६×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०१ ।

विषय-नाटक

५८७. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचना काल-सं० १६४८ माघ सुदी ८ । लेखन काल-सं० १६८८ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६५ ।

विशेष — मधूक नगर में ग्रंथ रचना हुई। जोशी राधो ने मौजमाबाद में प्रति लिपि की।

५८८. ज्ञान सूर्योदय नाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र संख्या–४८ । साइज–१०½×७½ इंच ।। भाषा–हिन्दी । विषय–नाटक । रचना काल–सं० १६१७ । लेखन काल–सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०२ ।

५८६. प्रबोधचन्द्रोदय—मल्ल कवि । पत्र संख्या–२५ । साइज–८×६ । भाषा–हिन्दी । विषय–नाटक रचना काल–सं० १६०१ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—इस नाटक में ६ अंक हैं तथा मोह विवेक युद्ध कराया गया है। अन्त में विवेक की जीत है। बनारसीदास जी के मोह विवेक युद्ध के समान है। रचना का आदि अन्त भाग इस प्रकार है—

प्रारंभिक पाठ—अभिनंदन परमारथ कीयो, अरु द्वै गलित ज्ञान रस पीयो।
नाटिक नागर चित मैं बस्यौं, ताहि देख तन मन हुलस्यौ ॥१॥
कृष्ण भट्ट करता है जहां, गंगा सागर भेटे तहां।
अनुभै को घरु जानें सोइ, ता सम नांहि विवेकी कोई ॥२॥
तिन प्रबोधचन्द्रोदय कीयो, जानौ दीपक हाथ ले दीयो।
कर्थ सूर छुपावै स्वाद, कायर औंर करै प्रतिवाद ॥३॥
इन्द्री उदर परायन होइ, कबहू पै नहीं रीझी सोइ।
पंच तत्व अवगति मन धारयो, तिहि भाषा नाटिक विस्तारयो ॥४॥

काम उवाच—जो रति तू बूझति है मोहि, ब्यौरो समै सुनाऊं तोहि।
वै विमात भैया है मेरे, ते सब सुजन लागै तेरे ॥
पिता एक माता द्वै गाऊँ, यह न्योरो आगे समझाऊं।
ज्यों राघो अरु लंकपति राऊ, यों हम उन भयो जुध को चाऊ ॥

विवेक— श्री विवेक सैन्याह कराई, महाबली मनि कही न जाई।
न्याय शास्त्र वेगि बुलाया, तासौं कहीवसीठ पठायौ ॥
तब वह गयो मोह के पासा, बोलन लागै वचन उदासा।
मथुरादासनि रति जो कीजै, मांगै ते विरला सो जीजै।
राइ विवेक कही समझाई, ए व्यौहार तुम छोडो भाई।
तीरथ नदी देहुरे जेते, महापुरुष के हिरदे ते ते ॥
या र तुम न सतावौ काही, पश्चिम खुरासान को जाही।
न्याय विचार कही यो बाता, अतिसै क्रोध न अंग समाता ॥

अंतिम पाठ—

पुरुष उवाच-तब आकास भयो जैकारा, और सभै मिटि गयौ विकारा।

पुरुष प्रकट परमेश्वर आहि, तिसौं विवेक जानियौ ताहि ॥

अब प्रभु भयो मोखि तन भरिया, चन्द्र प्रबोध उदै तब करीया।

सुमति विवेकव सरधा सांति, काम देव कारन कौ कांति ॥

इनकी कृपा प्रसन्न मन सुवो, जोहो आदि सोइ फिरि हुवो।

विष्णु भक्ति तेरे पर सारा, कृत कृत भयो मिल्यो अनुवारा ॥

अब तिह संग रहेगो एही, हौं भयो ब्रह्म बिसरीयो देही।

विष्णु भत्ति तूं पहुँची आइ, कीयो अनंद जु सदा सहाइ ॥

अरु चिरकाल के मनोरथ पूजे, गयो शत्रु साल है दूजे।

जो निरवत्ति वासना होइ, तातैं प्यारा औरन कोइ ॥

अद्वैत राज अनैम पदलयो, अचितैं चितवत अचित भयो।

जा सिर ऊपर सनक सनंदा, अरु वसिष्ठ बेदै ताहि वंदा।

कृष्ण भट्ट सोइ रस गाया, मथुरादास सार सोई वाता ॥

वंदे गुरु गोविंदृं के पाइ, मति उनमान कथा सो गाइ।

इति श्री मल्लकवि विरचिते प्रबोधचन्द्रोदय नाटके षष्टमां अंक समाप्त।

५६०. मदनपराजय भाषा—स्वरुपचन्द बिलाला। पत्र संख्या-६३। साइज-११×७½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। रचना काल-सं० १९१८ मंगसिर सुदी ७। लेखन काल-सं० १९१८। अषाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७१।

विशेष—संवत शत उगणीस अरु अधिक अठारा मांहि।

मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी दीतवार सुखदाहि ॥

तादिन यह पूरण करयो देश वचनिका मांहि।

सकल संघ मंगल करो ऋद्धि वृद्धि सुख दाय ॥

इति मदनपराजय ग्रंथ की वचनिका संपूर्ण। सं० १९१८ का मिती असाढ सुदी ७ शुक्रवार संपूर्ण।
लेखन काल संभवतः सही नहीं है।

५६१. मदनपराजय नाटक—जिनदेव। पत्र संख्या-४१। साइज-१२¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७८१। माह सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० २५।

विशेष—बसवा नगर में आचार्य ज्ञानकीर्ति तथा पं० त्रिलोकचन्द्र ने मिलकर प्रतिलिपि की।

५६२. मोहविवेक युद्ध—बनारसीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७२ ।

विषय-लोक विज्ञान

५६३. अकृत्रिम चैत्यालयों का रचना ……… । पत्र संख्या-१० । साइज-११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

५६४. त्रिलोकसार बंध चौपई—सुमतिकीर्त्ति । पत्र संख्या-१० । साइज-१०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०७ ।

विशेष—

अंतिम – अतीत अनागत वर्तमान, सिद्ध अनंता गुणना धाम ।
भावे भगति समरू सदा, सुमति कीरति कहति अघतरु कदा ॥३०॥
मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचंद मुनीदश सपाटि बीरजचंद ।
मुनिन्द ज्ञानभूषण तस पाटि चंग प्रभाचन्द बंदो मलरंगि ॥३१॥
सुमति कीरति सूरि वर कहिसार त्रैलोक्य सार धर्म ध्यान विचार ।
जे भणि गणि ते सुखिया थाय एयशा रूपधरी मुगति जाय ॥३४॥

५६५. त्रिलोक दर्पण कथा—खड्गसेन । पत्र संख्या-२१८ । साइज-८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १७१३ । लेखन काल-सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७४ ।

विशेष – यह प्रति संवत् १७३१ की प्रति से लिपि की गई है ।

५६६. त्रिलोकसार—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१०$\frac{1}{2}$×५ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

विशेष— टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्याचार्य है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।
एक प्रति और है ।

५६७. **त्रिलोकसार भाषा**.........। पत्र संख्या-२ से १०। साइज-१२½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६३५।

५६८. **त्रिलोकसार भाषा—उत्तमचन्द**। पत्र संख्या-२२५। साइज-१४½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-सं० १८४१ ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८१।

विशेष—दीवान श्योजीरामजी की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी थी जैसा कि ग्रन्थ कर्त्ता ने लिखा है—

अंतिम दोहा—संवत् अष्टादश सत इकतालीस अधिकानि।
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी रविवारे परमानि॥
त्रिलोकसार भाषा लिख्यो उत्तिमचन्द विचारि।
भूल्यो होऊं तो कछु लीज्यो सुकवि सुधारि॥
दीवाण श्योजीराम यह कियो हृदय में ज्ञान।
पुस्तग लिखाय श्रवणा सुणूं राखो निस दिन ध्यान॥

॥ इति ॥

गद्य—प्रथम पत्र—"तहा कहिए है।" मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरण के निमित्त तैं हीन होय मति श्रुत पर्याय रूप भया है तहा मति ज्ञान करि शास्त्र के अक्षरनि का जानना भया। बहुरि श्रुतज्ञान करि अक्षर अर्थ के वाच्य वाचक सम्बन्ध हैं। ताका स्मरणतैं तिनके अर्थ का जानना भया। बहुरि मोह के उदयतैं मेरे उपाधिक भाव रागादिक पाइये है ....।

५६९ **त्रैलोक्यदर्पण**.........। पत्र संख्या-२६। साइज-११¾×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६७८।

विशेष—बीच २ में चित्रों के लिए जगह छोड़ी हुई है।

६००. **त्रैलोक्यदीपक—वामदेव**। पत्र संख्या-८६। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८१२ माघ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १००।

विशेष—पं० खुशालचन्द्र ने लालसोट में प्रतिलिपि की।

६०१. **प्रति नं० २**। पत्र संख्या-६५। साइज-११×५½ इंच। लेखन काल-सं० १५१६ असाढ़ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१।

विशेष—पत्र सं० ७७ तक नवीन पत्र है इससे आगे प्राचीन पत्र हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५१६ वर्षे आषाढ़ सुदी ५ भौमवासरे झुंझुणूं शुभ स्थाने शाकंभूपति प्रजाप्रतिपालक समसखानविजयराज्ये॥ श्रीमूलान्वये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० पद्मनंदि देवा स्तत्पट्टे भ० श्री शुभ-

चन्द्र देवास्तत् पट्टालंकार षटतर्कचूडामणि भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मुनि सहस्रकीर्तिः तत्शिष्य ब० तिहुणा खंडेलवालान्वये श्रेष्टि गोत्रे सं मोरना भार्या माहुस्तत्पुत्र सं० मारथौरेत्र संघवी पदमानंद भ्राता कल्हाप्य: सं० पदमा भार्या पद्म श्रीः पुत्राः त्रयोः हेमा, गूजर, महिराज। रूल्हा भार्या जाजी पुत्र थोराज पूतपाल एतै पंचमी उद्यापन निमित्तं इदं त्रैलोक्यदी:कं नाम्ना कर्मक्षय निमित्त सद्गुरवे प्रदत्तं ।

विषय—सुभाषित एवं नीति शास्त्र

६०२. उपदेशशतक—बनारसीदास । पत्र संख्या–२५ । साइज–८×४½ । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–सं०–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५५३ ।

६०३. गुलालपच्चीसी—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या–४। साइज–१०×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७४ ।

६०४. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या–२७ । साइज–९×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–सं० १७८१ । पौष बुदी १३ लेखन काल–सं० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५११ ।

विशेष—उत्तमचन्द्र भुशारफ की भार्या ने चढाया ।

६०५. नन्दबत्तीसी—मुनि विमलकीर्ति । पत्र संख्या–११ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । (पद्य) । विषय–नीति शास्त्र । रचना काल–सं० १७०९ । लेखन काल– सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष—३२ श्लोक तथा १०१ पद्य हैं ।

६०६ नीतिशतक - चाणक्य । पत्र संख्या–२१ । साइज–६×६ । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३० ।

६०७. बुधजन सतसई – बुधजन । पत्र संख्या–५१ । साइज–८½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४३ ।

६०८. भावनावर्णन .... | पत्र संख्या–३ | साइज–१३×६ | भाषा–हिन्दी (पद्य) | विषय–सुभाषित | रचना काल–× | लेखन काल–× | पूर्ण | वेष्टन नं० ११३१ |

विशेष—हेमराज ने प्रतिलिपि की थी

६०९. रेखता—बखीराम | पत्र संख्या–६ | साइज–६×३½ इन्च | भाषा–हिन्दी | विषय-सुभाषित | रचना काल × | लेखन काल–× | पूर्ण | वेष्टन नं० ११४२ |

विशेष—स्फुट रचनाएँ हैं |

६१०. सद्भाषितावली भाषा ... . | पत्र संख्या–३० | साइज–१२½×४½ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय–सुभाषित | रचना काल–× | लेखन काल–× | पूर्ण | वेष्टन नं०७०६ |

विशेष—लेखक की मूल प्रति ही है, प्रांत संशोधित है | पद्य संख्या ५०५ है | ग्रंथ के मूल कर्ता भ० सकलकीर्ति हैं |

६११. सुबुद्धिप्रकाश—थानसिंह | पत्र संख्या–१४६ | साइज–१०½×६½ इञ्च | भाषा–हिन्दी (पद्य) विषय–सुभाषित रचना काल–सं०१८४७ फागुण बुदी ६ | लेखन काल–× | पूर्ण | वेष्टन नं० ८३० |

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ केवल ज्ञानानंद मय परम पूज्य अरहत |
समोसरण लक्ष्मी सहित राजै नमूं महंत ||१||
अष्ट कर्म अरि निष्ट कर अष्ट महागुण पाय |
सिष्टि इष्ट अष्ट धरा लही सिद्ध पद जाय ||२||
पंचसार आचार मुखि गुण छत्तीस निवास |
सिक्षा दिक्षा देत हैं आचारज शिव वास ||३||

अन्तिम पाठ—श्रीमति सांति सुनाथ जी सांति करौ निति आप |
विघन हरौ मंगल करौ तुम त्रिभुवन के बाप ||६०३
सांति सुमुद्रा रावरी सांति चित्त करि तोहि |
पूजौ वंदौ भाव सौ खेम कुसल करि मोहि ||६०४||
देस प्रजा भूपति सकल ईत भीत करि दूर |
सुख संपति धन धाम अत किया भाव रस पूर ||६०५||
फागुन वदि षष्टी सुगुर ठारासत सैताल |
पूरण ग्रंथ सुसांत रवि विषै कियौ गुनमाल ||६०६||
पढिसी सुनिसी बांचसी करसी चरचा सार |
मन वंछित फल पायसी तिनकौ करौ जुहार ||६०७||

इति श्री सबुद्धि प्रकास भाषा बध जिनसेवक थानसिंह विरचित संपूर्ण ।

कवि अवस्था वर्णन—भरत क्षेत्र में देस ढूंढारि । तामैं बन उपवागि रसाल ॥
नदी बावडी कूप तडाग । ताकौ देखत उपजै राग ॥
कुकुट उडि बैठे जिहि ठाम । यो समबरती तामैं गाम ॥
धन कन गोधन पूरत लोग । तपसी चौमासे दे ओग ॥
ता मधि अंबावति पुरसार । चौगिरदां परवत अधिकार ॥
बस्ती तल उपरि सांघनी । ज्यौ दाडिम बीजन तैं बनी ॥
ताकौ जैसिंघ नामां भूप । सूरज वंस विषै वहु अनूप ।
न्यायवंत वुधिवंत विसाल । परजापालक दीन दयाल ॥
दाता सूर तेज जिम भान । ससि अहला दीज्यौं जसरबानि ॥
हय गय रथ सिवकादि अपार । अत मंत्री प्रोहित परिवार ॥
हदि सौ विमौ कुबेर भंडार । बंदु समूह तियां वहुवार ॥
पंडत कवि भाटादि विसेख । षट दरसन सबही कौ भेष ॥
अपनै अपनै धर्म सुचलै । कोऊ काहू पै नहीं मिलै ॥४१॥
पथि सिव धर्मी भूपति जान । मंत्री जैनी मुखि अधिकाहि ॥
जैनी सिव के धाम उतंग । सिखर धुजा जुत कलस सुचंग ॥
राग दोष आपस मैं नाहि । सबकै प्रीति भाव अधिकाहि ॥
सब ही भूपन मैं सिरदार । छत्रपती चलि इन अनुसार ॥
दुतिय पुरी सांगावति जानि । दक्षिण दिसि षट कोस प्रमांन ॥
पुरी तले सरिता मनुहार । नाम सुरसती सुध जलधार ॥४४।
नगर लोक धनवान अपार । विविध भांति करि है व्योहार ॥
ऊचे सिखर कलस धुज जहां । पच जैन मन्दिर हैं तहां ॥
धर्म दया सज्जन गुन लीन । जैनी वहौत बसै परवीन ॥
वंस खण्डेलवाल मम गोत । ठोल्या बहु परिवारां गोत ॥
न्यारौ वास हमारौ सही । हेमराज दादौ मम कही ॥
पुनि अनुसारि सकल घर मध्य । सामग्री बांधै सब रिद्धि ॥

दोहा—बडौ मलूक सुचंद सुत, दूजौ मोहन राम ।
लूणकर्ण तीजौ कह्यौ चौथौ साहिब राम ॥
सबकै सुत पुत्री घना मोहन राम सुतात ।
मेरौ जन्म संगावति मांहिं भयौ अवदात ॥

अबावति सांगावति नगर बीच जै भूप ।
आप बसायौ चाहि करि जैपुर नाम अनूप ॥
सूत बंध सबही किये हाट सुघट बाजार ।
मिंदर कोटि सुकांगरे दरवाजे अधिकार ॥
सतखंमी जु बनाइयो, अपनै रहनै काज ।
चित्र महल रचना करी, बाग ताल महाराज ॥
साहूकार बुलाइया लेख भेज बहु देस ।
हासिल बांध्यौ न्याय जुत लोम अधिक नहिं लेस ॥
सुखी भये सबही जहां अधिक चल्यौ व्यौपार ।
सांगावती आंबावती उजरी तब निरधार ॥५४॥
आय बसे जैपुर विषै कीन्हे घर अरु हाटि ।
निज पुनि के अनुसार तैं सुखित भयौ सब ठाठ ॥५५॥
षोडश संवत्सर भयो सब ही कौ सुख भ्रात ।
जैसिंह लोकांतर गयौ पिछली सुनि अब बात ॥
सब ईसुर मुख भूपती ईसर सिद्ध सु नाम ।
अति उदार प्राक्रम बडौ सब ही कौ आराम ॥
न्यायवंत सबही सुखी डड मूल कछु नाहिं ।
काहू कौ दीन्है नहीं जुगलाचार न रहाय ॥
काल दोष तै नीच जन संमराखि वछवारि ।
तीन वर्ण के ऊंच जन तिनकौ मानधराय ॥
आप हठी काहू तनी मानी नाहीं बात ।
पिछले मंत्र थकी जिके कियौ भूप को घात ॥

अडिल्ल — दखियी लियो बुलाय गांव बाहिर रहे ।
मिल के जाहि दिवान दाम देने कहे ॥
लघु भ्राता माधव कूं वेगि मिलाय कै ।
लेख भेजियौ राज करौ तुम आय कै ॥
माधव आगे सिव धरमी मुखियौ भयो ।
जैन्यासौं करि द्रोह वच मैं लै लियौ ॥
देव धर्म गुरु श्रुत की विनय विगारियौ ।
कीयौ नांहि विचारि पाप विस्तारियौ ॥

दोहा— भूप भरत समझ्यो नहीं मंत्री के वसि होय ।
डंड सहर में नाखियौ दुखी भये सब लोय ॥
विविध भांति धन घटि गयौ पायौ बहुत कलेस ।
दुखी होय पुर कौ तजो तब ताकौ पर देस ॥

सोरठा— भरतपुर में आय कछू काल बैठे रहे ।
पुनि जयपुर में जाय विणज गयि रहवो करै ॥
माधव कै दरबार विणज कियौ सुख सौ रहे ।
आगै सुनि चित धारि माधो की जो वारता ॥६५॥

अडिल्ल— दुखी रोग धन हीन होय परगति गयौ ।
जासु पुत्र पृथ्वी हरि राजा पद भयौ ॥
हंग्या करि लघु आप वृतांत जु लैगयौ ।
अनुजराज परतापसिंघ पीछै भयौ ॥
सिवमत जिनमत देवधन विप्र अतिथि जो कोय ।
महण कियौ वसि लौभ तैं पाप पुण्य नहिं जोय ॥
ईं अन्याय के जोग तौ दुखी लोग हम जोय ।
हूं उदास पुर छाँडियौ मुख इंछ्या उर होय ॥

सोरठा— जादौ वंस विसाल नगर करोरी को पती ।
नाम भूप गोपाल, विणज हमारी थो सदा ॥
पीछै तुरछमपाल बैठ्यौ वास रहां कर्‌यो ।
राख्यौ मान विसाल, हाट सुघट उद्यम कियौ ।
मानिकपाल नरेस तुरसमपाल सुपद लयौ ।
मंद कषाय महेस, राग दोस मध्य रत है ॥
जाकै शत्रु न कोय, सबसौ मिलि राज जु करै ।
रैत खुसी कछु जोय, थिरता पातैं इम करी ॥
पिता रह्यौ इहि थान, हम जैपुर में ही रहे ।
लघु भ्राता सुत जानि, तिन व्योपार कियो घनौ ॥
नैन सुख है नाम, नानिग राम जु तनुज है ।
बहु स्यानौ अभिराम, राजदुवार में प्रगट है ॥
मध्यांतर मैं तात, गयौ जु टीकौ करण कौ ।

आये तब तैं भ्रात, इहां रहे थिरता करी ॥७५॥
देवल साधरमी जहां पूजा धर्मंक थान ।
पारायन ग्रांन सुपांन को, थिति संगति विद्वान ॥
ऐसी अंक्षया रूप जो कीजे सुबुधि प्रकास ।
भाषामय अर बहु रहसि रहैसि यामैं भासि ॥७७॥
नैना को लघु भ्रात, नाम गुलाब सु जासु को ।
भ्रात सुनि के हरषात, सुबुधि दैन को भ्रुत रच्यौ ॥

६१२. सुभाषित ...... । पत्र संख्या-६ । साइज-९×५ इन्च । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११५८ ।

६१३. सुभाषितरत्नावलि—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १५८० वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६० ।

बीच २ में नये पत्र भी लगे हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

विशेष—संवत् १५८० वर्षे वैसाख सुदी ६ गुरौ श्री टोडानग्रमध्ये राजाधिराजमुकुटमणिसूर्यसेनराज्ये श्री सोलंकी वंशे ...... श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकुलीवालगोत्रे साह नेमदास तस्य भार्या सिंगारदे तत्पुत्र पासा तस्य भार्या ...... द्वितिय पुत्र साह जैला तस्य भार्या गौरादे तत्पुत्र गिरराज । इदं शास्त्र लिखापितं बाई माता कर्म क्षयनिमित्तं ।

विशेष—सात प्रतियां और हैं । सभी प्रतियां प्राचीन हैं ।

६१४. सुभाषितार्णव ...... । पत्र संख्या-१ से ४८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । संस्कृत में संकेत भी दिये हुए हैं । पत्र २३ वां बाद का लिखा हुआ है ।

६१५ सुभाषितावलि भाषा ...... । पत्र संख्या-७८ । साइज-६¾×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२४ ।

विशेष—६७६ पद्यों की भाषा है अन्तिम पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सरबज्ञ नमूं चितलाय, गुरू सुगुरू निरग्रंथ सुभाय ।
जिन वाणी ध्याऊं विस्तार, सदां सहाई भवि गण तार ॥१॥

ग्रन्थ सुभाषित जिन वरणयौ, ताकौ अरथ कछु इक लगौ ।
निज पर हित कारणि गुण खानि, भाखूं भाषा सुणहु सुजान ॥
सीख एक सदगुरु की सार, सुणि धारौ निज चित्तमझारि ।
मनुषि जनम सुख कारण पाय, एसी क्रिया करहु मन लाय ॥३॥

६१६. सूक्तिमुक्तावली सोमप्रभसूरि । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०८ ।

विशेष - ८ प्रतियां और हैं ।

६१७ सूक्ति संग्रह...... .. .. । पत्र संख्या-२० । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १८५ ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थों में से सूक्तियों का संग्रह है ।

६१८. हितोपदेशबत्तीसी—बालचन्द । पत्र संख्या-३ । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६३ ।

विषय-स्तोत्र

६१९. अकलंक स्तोत्र...... ....। पत्र संख्या-५ । साइज-८¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५६ ।

६२० अकलंकाष्टक भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । लेखन काल-सं० १९३५ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०५ ।

६२१. आराधना स्तवन—वाचक विनय सूरि । पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १७२९ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जग मइ इथि जगि ।
तप गच्छपति श्री विजयप्रभसूरि सूरि तेजइ झगमगइ ॥२॥
श्री हीर विजय सूरी सीस वाचक श्री कीर्त्तिविजय सुर गुरु समो ।
तस सीस वाचक विनय विग्यइ, थरयो जिन चोवीस मो ॥३॥
सइ सत्तर संवत् उगणसीयइ रही राते रवउ मास ए ।
विजय दसमी विजय कारयां कीउ' गुण अभ्यासए ॥४॥
नरभव अराधना सिद्धि साधन सुकृत लीला विलासए ।
निर्जरा हेत इठवन रचिउ नामइ पुण्य प्रकासए ॥५॥

६२२. आलोचना पाठ .... । पत्र संख्या-१ से १२ । साइज-१०½×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । एक एक प्रति और है ।

६२३. इष्टछत्तीसी ...... । पत्र संख्या-८ । साइज-६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५३ ।

६२४. इष्टछत्तीसी—बुधजन । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२३ ।

६२५. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतम गणधर । पत्र संख्या-७ । साइज-८×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६२६. एक सौ आठ (१०८) नामों की गुणमाला—द्यानत । पत्र संख्या-३ । साइज-८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५८ ।

६२७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित है । ५ प्रतियां और हैं ।

६२८. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । अन्त में शान्तिनाथ स्तोत्र भी है । ७ प्रतियां और हैं ।

६२६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—बनारसीदास। पत्र संख्या ११ से २६। साइज–८×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८८० ज्येष्ठ सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६८०।

विशेष—नानूलाल बज ने प्रतिलिपि की १६ से २६ तक पत्र नहीं हैं। २७ से २८ तक सोलह कारण पूजा जयमाल है।

६३०. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—अखयराज। पत्र सख्या–७ से २६। साइज ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११०५।

६३१. चौवीस महाराज को विनती—रामचन्द्र। पत्र सख्या–७। साइज–१०½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४०५।

६३२. ज्वालामालिनी स्तोत्र ....। पत्र संख्या–८। साइज–८×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल ×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५७।

६३३. जिन दर्शन ......। पत्र संख्या–३। साइज–६½×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ५२७।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

६३४. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभ। पत्र संख्या–३। साइज–८×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६२५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५६।

६३५. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य। पत्र सख्या–१२। साइज–११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन न० ४७६।

विशेष – लक्ष्मीस्तोत्र भी दिया हुआ है। दो प्रतियां और हैं।

६३६. जिनसहस्रनाम—पं० आशाधर। पत्र संख्या–८। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८४६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८६।

विशेष—एक प्रति और है।

६३७. जिनसहस्रनाम टीका—प० आशाधर (मूल कर्त्ता) टीकाकार श्रुतसागर सूरि। पत्र संख्या–१२१। साइज–१२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८०४ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० १२।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं शुद्ध है।

६३८. जिनसहस्रनाम भाषा—बनारसीदास। पत्र संख्या-७। साइज-११×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-सं० १६६०। लेखन काल-सं० १६७४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५६०।

६३९. जिन स्तुति ·········। पत्र संख्या-५। साइज-११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० ११२७। पूर्ण। वेष्टन नं० ८८५।

६४० दर्शन दशक—चैनसुख। पत्र संख्या-२। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५१२।

विशेष—एक प्रति और है।

६४१. दर्शन पाठ · ·· · ·। पत्र संख्या-४। साइज-११×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५७७।

विशेष—दर्शन विधि भी दी है।

६४२. निर्वाणकाण्ड गाथा ···। पत्र संख्या-१२। साइज-४×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०।

विशेष—गुटका साइज है। तीन प्रतियां और हैं।

६४३. निर्वाणकाण्ड भाषा—भैया भगवतीदास। पत्र संख्या-२। साइज-८ ×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२८। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४६।

६४४. पद व भजन संग्रह ·· ···। पत्र संख्या-७६। साइज-१२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१२।

विशेष—जैन कवियों के पदों का संग्रह है।

६४५. पद व भजन संग्रह ·· · ·। पत्र संख्या-२०६। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१९।

विशेष—निम्न रागिनियों के भजन हैं—

	राग भैरु,	भैरवी,	रामकली,	ललित,	सारंग,	विलावल,	टोडी,
पत्र —	१-६	११-२२	२३-४०	४१-४६	५०-७१	७२-१०५	१०६-११४
	पूरवी,	मल्हार,	ईमन,	सोरठ,	आसावरी,		
	११५-११८	११६-१३१	१३१-१५०	१५६-२०४	२०६		

इनके अतिरिक्त नेमिराजुलवर्णन भी दिया हुआ है।

६४६. पद संग्रह……… ……। पत्र संख्या–४। साइज–८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पद (स्तवन)। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८४४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०५४।

६४७. पद संग्रह……………। पत्र संख्या–४७। साइज–७×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७६८। पूर्ण। वेष्टन नं० ९१३।

६४८. पद संग्रह…………। पत्र संख्या–१ से ६। साइज–१०½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ९३३।

६४९. पद संग्रह……………। पत्र संख्या–१ (लंबा पत्र)। साइज–१५½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९८२।

विशेष—किशनदास तथा द्यानतराय के पद है।

६५०. पद संग्रह—ब्रह्मदयाल। पत्र संख्या–८। साइज–४¾×६¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९९१।

६५१. पद संग्रह……………। पत्र संख्या–१। साइज–१४×२७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९९७।

विशेष—लंबा पत्र है।

६५२. पद संग्रह…………। पत्र संख्या–१७। साइज–९¾×६¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ९९८।

६५३. पद संग्रह……………। पत्र संख्या–३५। साइज–५×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११९७।

६५४ पद संग्रह…… ……। पत्र संख्या–१४। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११९४।

६५५. पद्मावती अष्टक वृत्ति……………। पत्र संख्या–१६। साइज–१२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८९३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत टीका सहित है।

६५६. पद्मावतीस्तोत्र……………। पत्र संख्या–६। साइज–८¾×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९५४।

६५७. पद्मावतीस्तोत्र ……… । पत्र संख्या–४ । साइज–१०½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६७ ।

६५८. पंचमंगल—रूपचन्द । पत्र संख्या–२ से १२ । साइज–६½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६५९. पार्श्वनाथ स्तोत्र ……… । पत्र संख्या–१० । साइज–८×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५४ ।

६६०. पार्श्व लघु पाठ ……… । पत्र संख्या–३ । साइज–१०×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५८ ।

६६१. बडा दर्शन ……… । पत्र संख्या–६ । साइज–११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०७ ।

विशेष—पत्र ३ से आगे रूपचन्द कृत पंच मंगल पाठ है ।

६६२ विनती संग्रह ……… । पत्र संख्या–५ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३५ ।

६६३. विनती—किशनसिंह । पत्र संख्या–१ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१५ ।

६६४. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या–१२ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—१० प्रतियां और हैं ।

६६५. भक्तामरस्तोत्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या–१० । साइज–१०½×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२५ ।

६६६. भक्तामर स्तोत्र सटीक—मानतुंगाचार्य टीकाकार । पत्र संख्या–४ । साइज–११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचनाकाल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय टीका है, ४४ पद्य हैं तथा टीका हिन्दी में हैं ।

एक प्रति और है जिसमें मंत्र आदि भी दिये हुए हैं

६६७. भक्तामर स्तोत्र टीका ………………। पत्र संख्या-१२ । साइज-८½×६¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६४६ ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

६६८. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र संख्या-४५ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १६६७ असाढ़ सुदी ५ । लेखन काल-सं० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—आचार्य भुवनकीर्ति के लिए शाहपुर में लालचन्द ने यह पुस्तक प्रदान की ।

६६९. भूपालचतुर्विंशति—भूपाल कवि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—१ प्रति और है ।

६७०. मंगलाष्टक ………… । पत्र संख्या-२ । साइज-१३×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४५ ।

६७१. लघु सामायिक पाठ ………… । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४४ ।

६७२. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मनंदि । पत्र संख्या-२ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२१ ।

६७३. विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं, जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

६७४. विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति । पत्र संख्या-५ । साइज-८×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४४ ।

६७५. वृहद्शान्ति स्तोत्र ………… । पत्र संख्या-१४ । साइज-१०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०१ ।

विशेष—प्रारम्भ में भयहार स्तोत्र, अजित शान्ति स्तोत्र, व भक्तामर स्तोत्र हैं ।

६७६. वीरतपसज्झाय ………… । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५८ ।

भाषा गुजराती है । ६५ पद्य है

प्रारम्भ में ३४ पद्य में कुमति निघटिन श्रीमंधर जिनस्तवन है ।

६७७. शान्तिस्तवनस्तोत्र······ ·· । पत्र संख्या-३ । साइज-८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५३ ।

६७८. सरस्वतीस्तोत्र—विरंचि । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२६ ।

विशेष—सारस्वत स्तोत्र नाम दिया हुआ है । ब्रह्मांड पुराण के उत्तर खंड का पाठ है ।

६७९. स्तोत्र पाठ संग्रह··········। पत्र संख्या-४० । साइज-११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

(१) निर्वाण काण्ड	—
(२) तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति
(३) भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य
(४) लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव
(५) जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य
(६) मृत्यु महोत्सव	—
(७) द्रव्य संग्रह गाथा	नेमिचन्द्राचा
(८) विषापहार स्तोत्र	धनंजय

६८०. स्तोत्र संग्रह··········। पत्र संख्या-२१ से ६५ । साइज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । लेखन काल-सं० १९२६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२४ ।

६ स्तोत्रों का संग्रह है ।

६८१. स्तोत्र········ ···। पत्र संख्या-८ । साइज-१२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७२ ।

विशेष—अक्षर मोटे हैं तथा प्रति प्राचीन है ।

६८२. स्वयंभूस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र संख्या-४ । साइज-११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—विसर्जन पाठ भी है । दो प्रतियां और हैं ।

६८३. **समंतभद्रस्तुति (वृहद् स्वयंभू स्तोत्र)—समतभद्र** । पत्र संख्या-१४ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

६८४ **साधु वंदना** ....। पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४ इञ्च भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७३ ।

६८५. **सामायिक पाठ** .... । पत्र संख्या-२६ । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४ ।

विशेष—गुटका साइज है तथा निम्न संग्रह और है:

निरंजन स्तोत्र—पत्र संख्या ३

सामायिक—पत्र संख्या

चौबीस तीर्थंकर स्तुति—पत्र संख्या-२४ से २५

निर्वाण काण्ड गाथा—पत्र संख्या-२५ से २६

६८६. **सामायिक पाठ** ....। पत्र संख्या-६१ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-पौष बदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४८ ।

विशेष—जोशी श्रीपति ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. **सामायिक पाठ भाषा-त्रिलोकेन्द्रकीर्ति** । पत्र संख्या-६४ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १८३२ बैशाख बुदी १४ । लेखन काल-सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२० ।

प्रारम्भ—श्री जिन बंदौं भाव धरि जा प्रसाद शिव बोध ।
जिन वाणी अरु जैन गुरु बंदौं मान निरोध ॥
सामायिक टीका करी प्रभाचन्द मुनिराज ।
संस्कृत वाणी जो निपुण ताहि के वो काज ॥२॥
जो व्याकरण बिना लहै सामायिक को अर्थ ।
सो भाषा टीका करूं अल्पमती जन अर्थ ॥३॥

अन्तिम—अठरासै और बत्तीस संवत् जाणो बिसवा बीस ।
मास भलौ बैसाख बखाण किसन पक्ष चोदसि तिथि जाण ॥
शुक्रवार शुभ बेला योग पुर अजमेर बसै भवि लोग ।
मूल संघ नंद्याम्नाय बलात्कार गण है सुखदाय ॥
गच्छ सारदा अन्वयसार कुन्दकुन्द मुनिराज विचार ।

श्री भट्टारक कीर्ति निधान विजयकीर्ति नामैं गुण खान ॥
तिन इह भाषा टीका करी प्रभाचन्द टीका अनुसरी ।

दोहा—संस्कृत शब्द नहीं लिख्यौ सब थानक इण माहि ।
किहां किहां लिखियो कठिन घणी बधाई नाहि ॥
यूं भावारथ सूचिनी इह टीका को नाम ।
जाणों बांचो उर धरो ज्यूं सीझै शिव काम ॥
प्रभाचन्द की मति कहां किहां हमारी बुद्धि ।
रवि की कान्ति किहां किहां अर दीपक की शुद्धि ॥
पै हम मति माफिक करी इण में अर्थ विरुद्ध ।
जो प्रमाद वसि होय सो सुमति कीजिये शुद्ध ॥

सोरठा—भाषा टीका एह कीई जिनेसर भक्ति बसि ।
जो चाहो शिव गेह इण को पाठ करो सदा ॥६॥

इति श्रीमद्भट्टारक श्री तिलोकेन्द्रकीर्ति विरचिता सामायिक टीका भावार्थसूचिनी नाम्नी सिद्धमगमत् ।

गद्य का उदाहरण—भलो है पार्श्व कहतां सामधि जैह को असो हे सुपार्श्वनाथ भगवन् आप जय जय कहतां बार बार जयवंता रहो । आपनै म्हारो बारबार नमस्कार होवो । (पत्र ३८)

६८८. **सामायिक वचनिका—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र संख्या–५० । साइज–१२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६८६. **सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनन्दि** । पत्र संख्या–३ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं जिसमें एक हिन्दी टीका सहित है ।

विषय-संग्रह

६६०. गुटका नं० १। पत्र संख्या-१५५। साइज-१०×७ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१८।

मुख्यतया निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	—
आराधनासार	देवसेन	"	—
तत्त्वसार	देवसेन	"	—
समाधि शतक	पूज्यपाद	संस्कृत	—
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द	प्राकृत	—
श्रावकाचार दोहा	लक्ष्मीचन्द	"	—

६६१. गुटका नं० २। पत्र संख्या-१२६। साइज-८½×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८१५ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१६।

विशेष—पूजा पाठ तथा सिंदूरप्रकरण आदि का संग्रह है। करौली में पाठ संग्रह किये गये थे। श्री राजाराम के पुत्र मौजीराम लुहाडिया ने प्रति लिखवाई थी।

६६२. गुटका नं० ३। पत्र संख्या-६८। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६०।

विशेष - धार्मिक चर्चाओं का संग्रह है।

६६३. गुटका नं० ४। पत्र संख्या-११६। साइज-८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३७३।

विशेष—अष्टकर्म-प्रकृति वर्णन तथा तीनलोक वर्णन है।

६६४. गुटका नं० ५। पत्र संख्या-१६९। साइज-१०½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३३।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पार्श्व पुराण	भूधरदास	हिन्दी	पत्र १—७२
चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	"	७३—१२६
देवसिद्धपूजा एवं	—	हिन्दी	१२६—१८१
अन्य पाठ संग्रह	—	"	

६६५. गुटका नं० ६। पत्र संख्या—१५२। साइज—७×६¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी—संस्कृत। रचना काल—×। लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३७।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चाणक्य नीति शास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	×
वृन्दविनोद सतसई	वृन्द	हिन्दी	७१० पद्य हैं।
बिहारी सतसई	बिहारी	हिन्दी	७०६ पद्य हैं।
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	४४४ पद्य हैं।

६६६. गुटका नं० ७। पत्र संख्या—१५२। साइज—१½×६½ इंच। भाषा—हिन्दी—संस्कृत। लेखन काल—सं० १७६५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४७।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

भक्तामर आदि पञ्च स्तोत्र	—	संस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	"
सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
भविष्यदत्त चौपई	"	"

६६७. गुटका नं० ८। पत्र संख्या—१८७। साइज—८½×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी—संस्कृत। लेखन काल—सं० १७२७ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४८।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

प्रवचनसार भाषा	हेमराज	हिन्दी	
पद	रूपचन्द	"	
परमार्थ दोहा शतक	"	"	लेखन काल १७२१
पञ्च मंगल	"	"	

भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	
चिन्तामणि मान बावनी	मनोहर कवि	"	२० पद्य है। अपूर्ण
कलियुग चरित	—	"	१० पद्य है।

६९८. गुटका नं० ९। पत्र संख्या-१३८। साइज-९×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८१२ पूर्ण। वेष्टन नं० ४४९।

विशेष—सामायिक पाठ हिन्दी टीका सहित तथा अन्य पाठों का संग्रह है।

६९९. गुटका नं० १०। पत्र संख्या-४४। साइज-६×४ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८८५ अषाढ सुदी ८। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४५०।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

७००. गुटका नं० ११। पत्र संख्या-१६४। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी-प्राकृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४५१।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
कर्मकाण्ड गाथा	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
द्रव्यसंग्रह गाथा	"	"	—
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
नाम माला	—	"	—
चौरासी बोल	हेमराज	हिन्दी	—
निर्वाण काण्ड	—	प्राकृत	—
स्वयंभू स्तोत्र	समंतभद्र	संस्कृत	—
परमानंद स्तोत्र	—	"	—
दर्शन पाठ	—	"	—
कलयाष्टक	—	"	—
पार्श्वस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	—
पार्श्वस्तोत्र	—	"	—
चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	" संस्कृत	—

स्तुति	—	हिन्दी

पदसंग्रह—हरचन्द, दीपचन्द, टेकचन्द, हर्षचन्द, धर्मदास, भूधरदास और बनारसीदास आदि कवियों के हैं।

७०१. गुटका नं० १२। पत्र संख्या-७२। साइज-१०×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४८६।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

७०२. गुटका नं० १३। पत्र संख्या-६४। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८४२। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८८।

विशेष—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	
कुदेव स्वरूप वर्णन	—	"	
मोक्षपैडी	बनारसीदास	"	

७०३. गुटका नं० १४। पत्र संख्या-४१। साइज-७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ५८६।

विशेष—पूजा संग्रह, कल्याणमन्दिर स्तोत्र समयसार नाटक भाषा-(बनारसीदास) आदि पाठों का संग्रह है।

७०४. गुटका नं० १५। पत्र संख्या-२६२। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७५१। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३५।

सूची	कर्त्ता का नाम	पत्र	भाषा	विशेष
श्रीपालरास	ब्रह्मरायमल्ल	१-२१	हिन्दी	रचनाकाल १६३० आषाढ सुदी १३
प्रद्युम्नरास	"	२१-४४	"	१६२८ भादवा सुदी २
नेमीश्वररास	"	४४-५१	"	१६१५ श्रावण सुदी १३
सुदर्शनरास	"	५१-७६	"	१६२६ वैशाख सुदी ७
शीलरास	विजयदेव सूरि	७६-८८	"	—
अठारह नाता का वर्णन	लोहट	८८-६२	"	—
धर्मरास	—	६२-११४	"	—
रविवार की कथा	भाऊ कवि	१०४-११३	"	—
अध्यात्म दोहा	रूपचन्द	११३-११७	"	१०३ दोहे हैं।

सीताचरित्र	कविबालक	११७–२३७	"	—
पुरन्दर चौपई	मालदेव सूरि	२३७–२५६	"	लेखनकाल १७५६
योगसार	योगचन्द	२५७–२६२	"	—

७०५. **गुटका नं० १६** । पत्र संख्या–३७६ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

जिनसहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	संस्कृत	पत्र १–१५६
समवशरण पूजा	लालचन्द		
	विनोदीलाल	हिन्दी	१५७–३७६
			रचना काल–१८३४

७०६. **गुटका नं० १७** । पत्र संख्या–२० से ४१० । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३६ ।

मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है —

रचना का नाम	कर्ता का नाम	भ.षा	विशेष
पंथीगीत	छीहल	हिन्दी	
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
बनारसी विलास के कुछ अंश	बनारसीदास	हिन्दी	
सीताचरित्र	कवि बालक	"	रचना काल १७१३
पद संग्रह	—	"	विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है
मांगी तु गीतीर्थ वर्णन	परिखाराम	"	
दोहा शतक	हेमराज	"	अध्यात्म, र० का० सं० १७२५ कार्तिक सुदी ५, १०१ पद्य हैं।
दोह शतक	रूपचन्द	"	अध्यात्म १०१ पद्य हैं।
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"	
भक्तामर स्तोत्र टीका	अखयराज श्रीमाल	"	स्तोत्र अंतिम पद्य हेमराज कृत है।
संबोध पंचासिका	त्रिभुवनचन्द	"	
अणुव्रत की जखडी	—	"	
अकृत्रिम चैत्यालय की जयमाल	—	"	
पद—चेतन यों घर नाहीं तेरो	मनराम	"	

पद—जिय तैं नर भवि यों ही खोयो	मनराम	हिन्दी	
रोगापहार स्तोत्र	"	"	
पद—सुख घडी कब आवली नहीं हो	हर्षकीर्ति	"	१२ अंतरे हैं।
संसार मझार—			

७८७. गुटका नं० १८। पत्र संख्या–१६४। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३७।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	"	—
कर्म बत्तीसी	अचलकीर्ति	"	र० का० १७७७ पावा नगर में रचना की गयी थी।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	"	—
मेघ कुमार गीत	पूनो	"	—
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"	—
बनारसी विलास के पद एवं पाठ	"	"	—
जम्बूस्वामी पूजा	पांडे जिनराय	"	लें० का० १७४६ पौष सुदी १०

विशेष—जबलपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

विशेष—१२० पत्र से आगे की लिपि पढने मे नही आता।

७८८. गुटका नं० १९। पत्र संख्या–२२। साइज–५×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०४।

विशेष—जीवों की संख्या का वर्णन है।

७८९ गुटका नं० २०। पत्र संख्या–१२५। साइज-६½×१० इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७८८। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६९१
बनारसी विलास	"	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	"	"	—

७१०. गुटका नं० २१। पत्र संख्या–२४१। साइज ५×६ इन्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–सं० १८१७ माघ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५८।

निम्न पाठों का संग्रह है।

चौदह मार्गणा चर्चा	—	हिन्दी	विशेष
स्वर्ग नर्क और मोक्ष का वर्णन	—	"	
अन्तर काल का वर्णन	—	"	
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	

७११. गुटका नं० २२। पत्र संख्या–३१। साइज–६½×७ इंच। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६५।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

७१२. गुटका नं० २३। पत्र संख्या–१२। साइज–८×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६४।

विशेष—सम्मेद शिखर पूजा एवं रामचन्द्र कृत समुच्चय चौबीसी पूजा संग्रह है।

७१३. गुटका नं० २४। पत्र संख्या–२४। साइज–६½×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६७०।

विशेष—

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
दशलक्षण जयमाल	—	हिन्दी
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	"
संबोध पंचासिका	द्यानत	"
पंचमंगल	रूपचन्द	"
पद	परमानन्द	"
योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश

७१४. गुटका नं० २५। पत्र संख्या–२५३। साइज–६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत। विषय–संग्रह। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७१।

विशेष—गुटके में लगभग ३३ से अधिक पाठों का संग्रह है जिनमें मुख्य निम्न पाठ है—

नाम ग्रंथ	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर जयमाल	भट्टारी नेमचंद	अपभ्रंश	पत्र १५
गीत	बूचा	हिन्दी	पत्र ४
नेमीश्वर गीत	बील्हव	हिन्दी	पत्र २०
शांतिनाथ स्तोत्र	गुणभद्र	संस्कृत	सरल संस्कृत में है। गुणभद्र की जगह गुणमद्र भी नाम मिलता है। स्तोत्र सुन्दर है।
जिनवरस्वामी वीनती	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी	
मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	पं० योगदेव	अपभ्रंश	
हंसा भावना	ब्रह्म अजित	हिन्दी	पत्र १२० तक कुल ३७ पद्य हैं
मेघ कुमार गीत	पूनो	हिन्दी	पत्र २१४
जोगीरासा	जिणदास	"	"
ग्यारह प्रतिमावर्णन	नि कनकामर	"	२१६
पद—रेमन काहे को भूलि रह्यो विषया वन माही	छीहल	"	२१६ ४ पद्य हैं
नेमिराजमति बेलि	ठक्कुरसी	"	२२४
जिए लाडू गीत	ब्रह्मरायमल्ल	"	२२४
पचेन्द्रिय बेल	ठक्कुरसी	"	२२७
साह मनोरथमाला	साह अचल	"	२३३
विज्जुच्चर अणुपेहा	—	अपभ्रंश	२४०
भरतेश्वर वैराग्य	—	"	२४१
रोष (क्रोध) वर्णन	गोपम	"	२४२
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
✓ पट्टावलि भद्रबाहु से पद्मनंदि तक	—	संस्कृत	—

७१५. गुटका नं० २६। पत्र संख्या–२७६। साइज–४५ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७१४। पूर्ण। वेष्टन नं० ९७२।

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पंचमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	रचना काल–सं० १६८३। लेखन काल सं० १७१४। मथुपुरा में चूहड़मल ने प्रतिलिपि की थी। अंत में इसका नाम चहुँगतिवेलि भी दिया है।

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६९३ । ले० का. सं० १७६८ ।
कृष्ण रूकमणी बेलि	पृथ्वीराज राठौड	हिन्दी	रचना काल सं० १६३४ । ले० काल सं० १७५४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

३ नुसखे	—	हिन्दी

(१) शिलाजीत शुद्ध करने की विधि।

(२) फोडे फुंसियों की औषध।

(३) घोड़ा के 'जहबाद' रोग की औषध।

सिंदूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी रचना काल सं० १६९१ । लेखन सं० १७७२ ।

विशेष—राजसिंह ने मथुपुरा में प्रतिलिपि की थी।

७१६. गुटका नं० ७७। पत्र संख्या—२८४। साइज—११×६ इञ्च भाषा—हिन्दी प्राकृत। पूर्ण। वेष्टन सं० १७३।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	११५ गाथा हैं।
संबोधपंचासिका	,,	,,	५० ,,
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३४५ ,,
योगसार	,,	,,	१०८ पद्य हैं।
सुप्पय दोहा	—	प्राकृत	७९ ,,
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीचन्द	,,	४७ ,,
जयमाल संग्रह	—	,,	—
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	—
बनारसीविलास	,,	,,	ले० का० सं० १७०३ मंगसिर बुदी ६
त्रिलोकसार चौपाई	सुमतिकीर्ति	,,	रचनाकाल सं० १६२७

प्रारम्भ—सुमतिनाथ पंचमो जिनराय। सरसति सदगुर सेवडपाय॥

त्रिलोकसार चौपाइ कहु। तेहि विचार सुणी तम्हें सहु॥१॥

अलोकाकास माहि छै लोक। अधोमध्य उर्द्ध छै थोक॥

छ द्रव्ये भयो लोकाकास। अलोक माहि केवल आकास॥२॥

घन घनोदधि तनु आधार । वातें वेध्यै त्रिविधि प्रकार ॥
आल वेढ्यौ तर वर जेम । लोकाकास कहैं छं जेम ॥२॥

अन्तिम—श्री मूलसंघ गुरु लक्ष्मीचन्द । तास पाटि वीरचन्द मुणिंद ॥
ज्ञानभूषण तसु पाटि चंग । प्रभाचंद वादी मनरंग ॥५७॥
सुमतिकीर्ति सरोवर कहिसार । त्रिलोकसार धर्म ध्यान विचार ॥
जे भणै गुणै ते सुखिय थाय । रयण भूषण धरि मुगति जाई ॥५८॥
वीर वदन विनिर्गत वाक । सुणता पाविं संसारा नाक ॥
भावक जन भाव ज्यौ जोय । सुमतिकीर्ति सुख सागर होय ॥५६॥
सिहपुरी वंसी शृंगार । दान सील तप भावन अपार ॥
साहता माइ सिंघाधपसार । कुअरजी कुबेर अर दातार ॥६०॥
संवत सोलनि सत्तावीस । माघ शुक्ल नै बारसि दिस ॥
कांदादी रचिये ए सार । भवि भगत भावो भासार ॥६१॥

इति श्री त्रिलोकसार धर्मध्यान विचार चउपई बद्ध रासा समाप्ता ।

मान बावनी	मनोहर	हिन्दी	५३ पद्य हैं ।
लघु बावनी	”	”	”
जोगी रासो	जिणदास	”	४० पद्य हैं ।
द्वादशानुप्रेक्षा	—	”	—
निर्वाण कांड गाथा	—	प्राकृत	—
द्वादशानुप्रेक्षा	श्रीभू	हिन्दी	—
चेतन गीत	जिणदास	”	५ पद्य हैं ।
उदर गीत	छीहल	”	४ पद्य हैं ।
पंथी गीत	”	”	६ पद्य हैं ।
पंचेन्द्रिय वेलि	ठकुरसी	”	रचना काल सं० १५८५ कार्तिक सुदी १३
थिरचर अखडी	जिणदास	”	
गुण गाथा गीत	ब्रह्म वर्द्धमान	”	१७ पद्य
अखडी	रूपचन्द	”	—
परमार्थ गीत	”	”	—
अखडी	दरिगह	”	—
दोहा शतक	रूपचन्द	”	१०१ पद्य हैं ।

सुदर्शन जयमाल	—	प्राकृत	—
दशरथ जयमाल	—	"	—
मेघकुमार गीत	पूनो	हिन्दी	२१ पद्य
पंच कल्याणक पाठ	रूपचन्द	"	—
द्वादशानुप्रेक्षा	—	"	—

७१७. गुटका नं० २८। पत्र संख्या-२६०। साइज-६½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८२३ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७४।

विशेष—पूजाओं तथा पदों का वृहद संग्रह है। बनारसीदास कृत मांझा भी है जो अज्ञात रचना है।

७१८. गुटका नं० २६। पत्र संख्या-२७। साइज ६½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८४१। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६७६।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	जगजीवन	हिन्दी
नेमिनाथ का व्याहला	नाथू	"
निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	"
पद	मनराम	"
साधुओं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	भगवतीदास	रचना काल सं० १७५०

विशेष संतोष राम अजमेरा सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

७१६. गुटका नं० ३०। पत्र संख्या-२५१। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६७७।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	
बनारसी विलास	"	"	
पंचमंगल	रूपचंद	"	
योगी रासो	जिणदास	"	

७२०. गुटका नं० ३१। पत्र संख्या-७५। साइज-१०½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८६।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	पत्र संख्या
वाणिक प्रिया	कवि सुखदेव	१–१७ रचना काल सं० १७६० लेखन काल सं० १६५५

विशेष — इसमें ३२१ पद्य हैं। व्यापार सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है।

स्नेहसागर लीला	बक्षी हंसराज	१८ से ७०

विशेष—वणिक प्रिया का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ — सिध श्री गनेसाय नमः श्री सरस्वते न्मः जानुकी वलमाइ न्मः अथा लिखते वनक प्रिया ॥

चौपई—गुर गंने [स] कहै सुखदेव, श्री सरसुती बतायो भेव।
वनिक प्रिया वनिक वाचयौ, दिया उजियार हाथ कै दयौ ॥१॥

दोहा—गोला पूरव पच विसे वारि विहारीदास।
तिनके सुत सुखदेव कहि, वनिक प्रिया प्रकास ॥२॥
वनिकनि को वनिक पिया, मडसारि कौ हेत ॥
आदि अंत श्रोता सुनो, मतो मंत्र सौ देत ॥३॥
माह मास कातक करे, संवतु सौधे साठ।
मते याह के जो चले कबहू न आवै घाट ॥२॥

चौपई—फागुन देव दलजु आइयौ सकल वस्तु सुरपति चाइयौ ॥
चार मास इहिरे है आइ पुन पताल सूता हो जाइ ॥४॥

मध्य भाग—अथा जेठ वस्तु लीवे को विचार।

दोहा—तीन लोक दसऊ दिसा, सुरनर एक विचार।
जेठै वस्तु बिकात है पावस की दरकार ॥१४०॥
घटै घटी सो घटि गई, वस्तु बैच षतकार।
बिकी कौ दिन बाहरौ कीजे बाच बिचार ॥१४१॥
जेठी बिकी जेठ की सब जेठन मिल माख।
सकल वस्तु पानी भई जौ पानी लौ राख ॥१४२॥

चौपई—ग्रीष्म ऋतु बरसै लछिमी बैच वस्तु न आवै कमी।
यहि मत जौ न मान है कोइ, बीचै सारै ब्याज गये सोइ ॥१४३॥
जेठै वस्तु न धरिये धाइ, अपनै होइ तौ बेचो जाइ।
साहु सम्हारै रहियौ वाकी, जलके बरसै दुलभ गहकी ॥१४४॥

अंतिम भाग—

दोहा—देखी सुनी सो मैं कही, मंत्री जो मति मान ।
जानी जाति औ न सब को आगैं की जान ॥३१७॥

चौपई – मतौ हथियाव हाथ लै जोर, साहु सुभकरन करत कछु मोर ।
मारगहान हर मन मानियो, दिल कुसाद हरष न वानियौ ॥३१८॥
कवि सोधे संवत्सर साठ, इह मत चलै परै नहि घाट ।
इहि मति अन्नु पेट भर खाई, एही चीरन को पहराई ॥३१९॥

दोहा—बनक प्रिया मैं सुभ असुभ सबही गयो बताइ ।
जिहि जैसी नीकी लगै तैसी की जो जाइ ॥३२०॥
सत्रह सै सत्रह बरस संवत्सर के नाम ।
कवि करता सुखदेव कह लेखक मायाराम ॥३२१॥

इति वनिक प्रिया संपूर्ण समाप्ता ।

भादौ सुदी १२ शुक्रवासरे सं० १८५५ मुकाम छिरारी लिखतं लाला उदैतसिंघ राजभान छिरारी वारे जो बाचै ताको राम राम ।

दोहा—लिखी अथा प्रत देखकैं कहि उदेत प्रधान ।
जो बाचै श्रवननि सुनै ताको मोर प्रनाम ॥

७२१. गुटका नं० ३२ । पत्र संख्या–११८ । साइज–६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८७ ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
लघु सहस्रनाम	—	संस्कृत	पूर्ण
योगीरासो	जिणदास	हिन्दी	,,
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	,,
,, भाषा	—	हिन्दी	अपूर्ण
वैराग्य गीत	देवीदास नन्दन गणि	,,	पूर्ण
पद संग्रह	जिणदास	,,	,, जेठ बदी १३ सं० १६७१ में लाहौर में रचना तथा लिपि हुई ।
ग्रन्थ संग्रह	आ० नेमिचन्द्र	प्राकृत	,, लेखन काल सं० १६६६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	प्राचीन हिन्दी	

धर्मतरुगीत	जिणदत्त	हिन्दी	पूर्ण
(मव तव सींचै हो मालिया ....)			
पद	रूपचन्द	हिन्दी	,,
(जिय पर सौं कत प्रीति करीरे)			
पद संग्रह			
आदिनाथजी की आरती	बालचन्द	हिन्दी	,,
		लेखन काल १७१६	
नेमिनाथ मंगल	—	हिन्दी	,,
बीस तीर्थंकरों की जयमाल	—	,,	,,

विशेष—"पद संग्रह जिणदत्त" का नाम "जिणदत्त विलास" भी दिया है।

७२२. **गुटका नं० ३३** । पत्र संख्या–४१ । साइज–३×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
जिनदर्शन	—	संस्कृत
संबोध पंचासिका	द्यानतराय	हिन्दी
पंच मगल ✓	रूपचन्द	,,

७२३. **गुटका नं० ३४** । पत्र संख्या–७ । साइज–४×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विशेष—नित्य पूजा का संग्रह है ।

७२४. **गुटका नं० ३५** । पत्र संख्या–२१ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७२५. **गुटका नं० ३६** । पत्र संख्या–४१ । साइज–४×४ इंच । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

संबोध पंचासिका	गोतम स्वामी	प्राकृत	संस्कृत टीका सहित है ।
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	,,

७२६. गुटका नं० ३७ । पत्र संख्या–१८८ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १००१ ।

विशेष—केवल पूजाओं का संग्रह है ।

७२७. गुटका नं० ३८ । पत्र संख्या–४४० । साइज–७½×६¼ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १००२ ।

ग्रन्थ–नाम	कर्त्ता का नाम	भाषा	र० का० सं०	ले० का०	विशेष
यशोधर चरित्र भाषा	खुशालचन्द	हिन्दी	१७८१	सं० १८२३	

विशेष—छीतरमल सेठी ने प्रतिलिपि की ।

चौबीस तीर्थंकरों के नांव गांव वर्णन		हिन्दी	—	सं० १८२३	

विशेष—नरहेडा में प्रतिलिपि हुई ।

षट् द्रव्य चर्चा	—	हिन्दी	—	सं० १८२३	

विशेष—छीतरमल सेठी ने नरहेडा में प्रतिलिपि की ।

तीन लोक के चैत्यालयों का वर्णन	—	हिन्दी	—	—	
निश्चय व्यवहार दर्शन	—	"	—	सं० १८२३	

विशेष—छीतरमल सेठी वासी लूणूटका ने लाडखान्यों के रामगढ में खेतसी काला की पुस्तक से उतारी ।

कवित्त पृथ्वीराज चौहाणका	—	हिन्दी	—	—	

महाराज प्रथीराज लेख परधान पठायो ।
लेख कागि लाखीक कडम चवाण सवायो ॥
दाहिमैक बासि लाख असु मालिन लीना ।
देखि स्यंघ गाडरी कौट का आरम्भ कीना ॥
ग्यारा सै पंदरोत्तरै गढ नागौर अजीत गिर ।
सुभ लगन तीज बैसाख सुदि नींव देय थाप्यो नगर ॥
ऐसी अष्ट उपासना खान पान पैरान ।
ऐसा ही मिलिबो सही तो मिलिन को प्रमाण ॥

विषापहार भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी	रचना काल १७१५		नारनौल में रचना हुई ।
भक्तामर भाषा	—	"			
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	"		सं० १८२३	

विशेष—जीतमल सेठी ने लिखा।

पद्मप्रभकेवली (मवजद केवली)	—	हिन्दी	—
पुण्याश्रवकथाकोश	किशनसिंह	"	रचनाकाल सं० १७७३
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	जोधराज गोदीका	"	—

७२८. गुटका नं० ३६। पत्र संख्या–५१। साइज–६×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००३।

विशेष—पत्र २६ तक रूपचन्द के पदों का संग्रह है इसके आगे जगतराम तथा रूपचन्द दोनों के पद हैं। करीब २०० पद एवं भजनों का संग्रह है।

७२९ गुटका नं० ४०। पत्र संख्या–१६। साइज–६×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १००४।

विशेष—मृगीसंवाद वर्णन है। २५७ पद्य संख्या है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि पाठ—सकल देव सारद नमौ प्रणमी गौतम पाय।
कथा करूं रलियामणी सदगुरु तणौ पसाय ॥१॥
जंबू द्वीप सुहामणौ, महिमा मेर उतंग।
जहिये दखिण दिसि भलौ, भरत क्षेत्र सुचंग ॥२॥

अन्तिम पाठ—एणि समै आयौ केवली, वंद्या चहुंण अचल मुनि भली।
तीनि प्रदक्षणा दीधी सार, धरम उपदेस सुणयौ हिय धार ॥२५६॥

दोहा—दोइ भेद धरमा तणा मुनी श्रावक करि हेत।
मन वच काया पालता, दोइ लोक सुख देत ॥२५७॥

इति श्री मृगीसंवाद चौपइ कथा संपूर्ण। लिखितं. सेवाराम रात्रीवाला स्योंधूका। पोथी पंडित रायचन्दजी लिख पं० चोखचन्दजो वासी टौंक का की तू देउरा स्योंधूका मध्ये। मिती जेठ सुदी २ सोमवार संवत् १८२३ का।

७३०. गुटका नं० ४१। पत्र संख्या–२३४। साइज–६×५। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००५।

विशेष—मुख्य २ पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है।

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
नवतत्व वर्णन	—	प्राकृत	हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

पद संग्रह	—	हिन्दी	२ जैन कवियों के पद है।
ज्ञान सूखडी	शोभचन्द्र	,,	रचनाकाल सं० १७६७
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	—
क्षमा बत्तीसी	समयसुन्दर	हिन्दी	—
शत्रुंजयोद्धार	पं० मानुमेव का शिष्य नयसुन्दर	,,	सं० १७७० वैशाख सुदी ६

७३१. गुटका नं० ४२। पत्र संख्या-१०। साइज ६×१½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००७।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	द्यानतराय	हिन्दी
पद	रूपचन्द	,,
पद	रामदास	,,
जखडी	रूपचन्द	,,
भक्तामरस्तोत्र भाषा	गंगाराम पांड्या	,,

विशेष—इसमें संस्कृत की ४८ वीं काव्य का ४७ वें पद्य में निम्न प्रकार अनुवाद है।

हे जिन तुम्हारे गुण कथन पहुप माल,
　　भक्ति प्रतीति भावधरि कै बनाई है।
प्रेम की सुरुचि नाना वरन सुमन धरि,
　　गुणगण उत्तम अनेक सुखदाई है॥
जेई भव्य जन कंठ धारि है उछाह करि,
　　पुलकित अंग ह्वै कैं आनंद सो गाई है॥
तेई मानतुंग करि मुकति वधू सो हेत,
　　गमन सरित राम सोमा सुख आई है॥

हुक्का निषेध	भूधरमल्ल	हिन्दी
विनती (प्रभु पाइ लागू करूं सेव थारी)	जगतराम	गुजराती, लिपि हिन्दी।
विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी रचना काल सं० १७१५ नारनौल
पद—मैं पायो दुख अपार बसि।संसार में— द्यानतराय		हिन्दी

पद	दीपचन्द	हिन्दी
पद	हरीसिंह	,,
पद—डोरी थे लगावो जी प्रभुजी के नांव सू	नाथू	,,
अक्षरमाला	मनराम	,,
दश क्षेत्रों की चौबीसी के नाम	—	,,
१५ प्रकार के पात्र वर्णन	—	,,
पद	किशोरदास	,,

७३२. गुटका नं० ४३। पत्र संख्या-४२०। साइज-८½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७८२। पूर्ण। वेष्टन नं० १००८।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा		विशेष
श्रेणिक चरित्र की कथा	—	हिन्दी गद्य		अपूर्ण
श्रीपंकर चौपई	नेमिचन्द	हिन्दी पद्य	लेखनकाल सं० १७८२	पूर्ण

विशेष—तुलसीराम चांदवाड ने पांडे रूपचन्द की पुस्तक से सं० १७८२ सावन सुदी १५ में पलवल में प्रतिलिपि की। पोथी बिजैराम मौंसा की।

नेमीश्वररास (हरिवंश पुराण) नेमिचन्द्र ,, र. का. सं. १७६६ ले. का. सं. १७८२

विशेष—सं० १७७६ की प्रति से बिजैराम मौंसा ने प्रतिलिपि की थी। १३०८ पद्य हैं। ग्रंथ प्रशस्ति विस्तृत है।

चन्दराजा की चौपई — र का. सं० १६०३ फागुण सुदी २ ले. का. सं० १७८२

विशेष—आमानपुरी (गिरनार के पश्चिम दिशा में) के राजा चन्द की कथा है। बिजैराम मौंसा ने मथुरा में प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम चंदन मलियागिरि कथा भी है। कथा बड़ी है।

—चंद राजा की चौपई का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दोहा—सिधि बुधि दातार तुव गौरी नंद कुमार। चंद कथा आरम्भ किय सुमति देहि अपार ॥१॥
ब्रह्म सुता सरस्वती तुव हंस चढी अति रूढ। तुव पसाय वाणी विमल होय भया मति मूढ ॥२॥

चौपई—प्रथम समरीहु सरजन हार, वो जिन थंभ रच्यौ गढ गौरनारि।
मेरु समौ दीसै सिरधार, तिहु लोक तिहि कौ बीसतार ॥३॥

सुमरौ संकर दोय कर जोडि, सुमरौ सुर तेतीसौ कोडि ।
सदगुर कैहु लागौ पाय, सुलो अखिर दौ सुखभाव ॥४॥
सोलासैर तीडोतरै जाणि, चंद कथा ज्यौ चढै परमाणी ।
मै म्हारी मति साख कहु, अखिर मात्र पदा सो लहु ॥५॥

दोहा—फागुण मास वसंत रिति, दुतिया सुद गुरु रीति ।
　　चंद कथा आरम्भ कीयौ धूरी बुधि तुरंत ॥६॥
　　आभानपुरी अथि खिसि पश्चिम दिसा गिरनारी ।
　　वेह संजोग असौ रच्यौ चंद परमला नारी ॥७॥

अन्तिम—करम रेखा अचपला जोगि । तीजी ग्रोर परमला भोग ।
　　　याकै सत्य सारथा सब काज, विलसै चंद आपणौ राज ॥
　　　　　　　　॥ इति श्री राजा चंद चौपई संपूर्ण ॥

बीस विरहमान तथा तीस चौबीसी के नाम	—	हिन्दी	पूर्ण
तीन लोक कथन	—	„	पत्र सं० २३२ से २६५ तक
वेलि के विषै कथन (चतु गति की वेलि)	हर्षकीर्ति	„	पूर्ण
कर्म हिंडोलणा	—	„	—

विशेष—इस गुटके की प्रतिलिपि महाराम चाटसू वाले की पुस्तक से जैपुर में सं० १७६४ में हुई थी ।

सम्यक्त्व के आठ अंगो का कथा सहित वर्णन		„ गद्य	—
चेतनशिक्षा गीत	—	„ पद्य	—
पद—उठ तेरो मुख देखूं नाभि जिनंदा	टोडर	„	—

७३३. गुटका नं० ४४ । पत्र संख्या–२५ । साइज–४×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १००६ ।

विशेष—नरक दोहा एवं पद संग्रह है ।

७३४. गुटका नं० ४५ । पत्र संख्या–२५ । साइज–४३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१० ।

विशेष—विनती संग्रह है।

७३५. गुटका नं० ४६ । पत्र संख्या–२५ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०११ ।

विशेष—शिखर विलास, निर्वाणकांड एवं आदिनाथ पूजा है ।

७३६. गुटका नं० ४७ । पत्र संख्या–३८ । साइज–८½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखनकाल–सं० १८८१ पूर्ण । वेष्टन नं० १०१२ (क) ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

७३७. गुटका नं० ४८ । पत्र संख्या–११६ । साइज–७×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत–प्राकृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन १०१३ (ख) ।

विशेष—पूजाओं, यशोधरचरित्र रास (सोमदत्तसूरि) तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

७३८. गुटका नं० ४९ । पत्र संख्या–१६७ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । लेखन काल–सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ (ग) ।

विशेष मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

७३९. गुटका नं० ५० । पत्र संख्या–२०७ । साइज–५¾×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१४ ।

विशेष—कल्याण मन्दिर स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर कृत लिखा है। स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है। अजयराज पाटणी कृत पत्र १२१ पर एक रचना संवत् १७९३ की है जो पाक शास्त्र सम्बन्धी है । रचना का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारंभ—श्री जिनजी को कहूं रसोई । ताको सुणत बहुत सुख होइ ॥
तुम सुणो मत मेरे यमना । खेलो बहुविधि करके जगना ॥
देव अनेक बहोत खिलावै । माता देखि बहुत सुख पावै ॥१॥

मध्यमें—भिमक चणा किया भात भणी । हलद मिरच दे घृत में तणा ॥
ऐसी रोटी अधिक वणाई । जीमो त्रिभुवन पति राई ॥२४॥

अंतिम—अजैराज इह कियो बखाण । भूल चूक मति हसौ सुजाण ॥
संवत सतरासै त्रेयाणै । जेठ मास पूरण हुणै ॥५३॥

जिनजी की रसोई में सब प्रकार के व्यंजनों एवं भोजनों के नाम गिनाये हैं। भगवान की बाल लीला का अच्छा वर्णन किया है। भोजन के बाद वन विहार आदि का वर्णन भी है।

रसोई वर्णन दो जगह दिया हुआ है। एक में ३६ पद्य हैं वह अपूर्ण है। दूसरे में ४३ पद्य हैं तथा पूर्ण है।

पद–सेवग पर महर करो जिनराइ	अजयराज	१२ अंतरे हैं। पत्र १०५-११३
मेघ कुमार गीत	पूनो	३१ पद्य हैं।
शांतिनाथ जयमाल	अजयराज	६ पद हैं।
पद–प्रभु हस्तनागपुर जनम जाय		
,, श्री जिनपूजा सुहावणी	,,	१४ पद हैं।
,, मन मनरकट चनेक आतम जंपवादे।	,,	१५ पद्य हैं।
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	,,	२० पद हैं।
अहो शिवगामी खेलें हो मुनिजन रचि शुभ संजम फाग सुहावणों	,,	७ पद
बाल्य वर्णन	,,	५ पद
श्री सिरिश्रांस सकल गुण धाम	,,	८ पद
नंदीश्वर पूजा	,,	६ पद
आदिनाथ पूजा	,,	— पूर्ण
चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	,,	
पार्श्वनाथजी का सालेहा	,,	रचना सं० १७९३ ज्येष्ठ सुदी १५
पंचमेरु पूजा	,,	
महावीर, नेमीश्वर आदि सभी	,,	—
तीर्थंकरों के पद		—
सिद्ध स्तुति	,,	—
बीसतीर्थंकरों की जयमाल	,,	—
वंदना	,,	—

७४०. गुटका नं० ५१। पत्र संख्या–२१६। साइज–६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल– सं० १८२३ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१७।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
आयुर्वेद के नुसखे	—	हिन्दी (पद्य)	—
८४ शिक्षा की बातें	—	,,	—
पंचम गति की बेलि	हर्षकिर्ति	,, (पद्य)	रचना काल सं० १६८३

चेतन शिक्षा गीत	किशनसिंह	हिन्दी	—
णमोकार सिद्ध	अजयराज	"	—
पद	ऋषभनाथ	"	—
(मोहि त्यारो जी सरणै तुम आइयो)			
बधावा	—	"	—
(जहां जन्मे हो स्वामी नामकुमार)			
राजुल पच्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	"	—
पद	विश्व भूषण	"	—
(जिण जपि जिण जपि जीयडा)			
विनती	पूनो	हिन्दी	—
सहेलीगीत	सुंदर	"	—
विनती	कनककीर्त्ति	"	—
मंगल	विनोदीलाल	"	—
ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	"	कुल ११८ पद्य हैं।
पंच परमेष्ठि गुण	—	हिन्दी गद्य	—
सूतक भेद	—	"	—
जोगी रासा	जिणदास	" पद्य	४१ पद्य हैं।
धर्मरासा	—	"	—
सुदर्शन शील रासो	ब्र० रायमल्ल	"	—
जम्बूस्वामी चौपई	जिणदास	"	—

विशेष—जिणदास का पूर्ण परिचय दिया हुआ है। जयचंद साह ने लिपि की थी।

श्रीपाल रासो	ब्र० राइमल्ल	"	

विशेष—जयचंद साह ने चाकसू में सं० १८३२ में प्रतिलिपि की।

विषापहार भाषा	अचलकीर्त्ति	हिन्दी	—

७४१. गुटका नं० ५२। पत्र संख्या-१८८। साइज-६×६ इच। भाषा-प्राकृत अपभ्रंश। लेखन काल-सं० १५७०। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१८।

ग्रन्थ-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	पं० योगदेव	अपभ्रंश	१५८५ मै० सुदी ११
योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	

उपासकाचार	पूज्यपाद	संस्कृत	
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
षट्पाहुड सटीक	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	
आराधनासार	देवसेन	"	टीका सहित है।
समयसार गाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	"	"
ज्ञानसार गाथा	—	"	

७५३. गुटका नं० ५३ । पत्र संख्या–११३ । साइज–६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२० ।

विशेष—प्रथम संस्कृत में पंच स्तोत्र आदि हैं फिर उनकी भाषा की गई है।

७५४. गुटका नं० ५४ । पत्र संख्या–३२ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२२ ।

विशेष—देवब्रह्म कृत विनती संग्रह है।

७५५. गुटका नं० ५५ । पत्र संख्या–१८ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२१ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

७५६. गुटका नं० ५६ । पत्र संख्या–५३ । साइज–६$\frac{1}{2}$×६ इंच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२३ ।

विशेष—चारों गति दुःख वर्णन, राहुल पच्चीसी, जोगी रासो, अठारह नाता का चोढाल्या के अतिरिक्त वृन्द, दीपचन्द, विश्वभूषण, पूनो, रामदास, भवानीराम, भूधरदास के पद भी हैं।

७५७. गुटका नं० ५७ । पत्र संख्या–११० । साइज–७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखनकाल–सं० १७६० ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२५ ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य बालूराम ने प्रतिलिपि की थी।

विषय–सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	रचना सं० १६२८
नेमिकुमार रासो	"	"	" १६१५
श्रीपाल रासो	"	"	" १६३३
हनुमंत कथा	"	"	" १६१६

७४८. गुटका नं० ५८ । पत्र संख्या-५८ । साइज-६३/४×४३/४ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम ।	भाषा ।
तीर्थमाला स्तोत्र	—	संस्कृत
जैन गायत्री	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	प्राचीन हिन्दी
पद	अजयराम	हिन्दी
कक्का बत्तीसी	"	"
पद संग्रह	"	"
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"
परमानन्द स्तोत्र	—	संस्कृत

७४६. गुटका नं० ५६ । पत्र संख्या-५७ । साइज-५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२७ ।

विषय-सूची ।	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
वैराग्य पच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी	—
चेतन कर्म चरित्र	"	"	रचनाकाल सं० १७३६
वज्रदन्त चक्रवर्ति की भावना	—	"	
स्फुट पद	—	"	—

७५०. गुटका नं० ६० । पत्र संख्या २८० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृ काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२८ ।

विशेष—मुख्यतः पूजाओं का संग्रह है ।

७५१. गुटका नं० ६१ । पत्र संख्या-२१६ । साइज-६×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विशेष—मुख्यतः पूजा संग्रह है । कुछ जगतराम कृत पद संग्रह भी है ।

७५२. गुटका नं० ६२ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह भाषा एवं निर्वाणकाण्ड भाषा आदि हैं ।

७५३. गुटका नं० ६३ । पत्र संख्या-३० । साइज-४×४½ इंच । भाषा हिन्दी । लेखन काल-सं० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३१ ।

विशेष -शनिश्चर देव की कथा है ।

७५४. गुटका नं० ६४ । पत्र संख्या-५७ । साइज-६×३½ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३२ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चरचाशतक	धानतराय	हिन्दी	
ढाल गण	—	„ ६२ पद्य	
स्तुति	धानतराय	„	

७५५. गुटका नं० ६५ । पत्र संख्या-२१२ । साइज-६×४½ इन्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३३ ।

विशेष—षड्भक्ति पाठ, आराधनासार, जिनसहस्रनाम स्तवन आशाधर कृत, तथा अन्य स्तोत्र संग्रह है ।

७५६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-७४ । साइज-५½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८८० आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३४ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा		विशेष
जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	रचना काल सं० १७८१	—
धर्मविलास	धानतराय	„	—	—

७५७. गुटका नं० ६७ । पत्र संख्या-१११ । साइज-५½×४½ इच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३५ ।

विशेष— स्तोत्र संग्रह है ।

७५८. गुटका नं० ६८ । पत्र संख्या-४१ से १४३ । साइज-७½×२¾ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८१२ मंगसिर सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०३७ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
बिहारी सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण
नागदमन कथा	—	„	पूर्ण

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

आरम्भ— वलतो सारद वरणउ, सारद पूरो पसाय ।
पवाडो पन्नग तणौ आदुपति कीधौं जाय ॥
प्रभु आयाये पाळीया देत बडा चादन्त ।
केइ पालया पौढीया केई पय पान करंत ॥

अन्तिम— सुणौ सुणौ समवाद नद नंदन अहि नारी ।
समझा पार संभार हुवो द्रोपत अनहारी ॥

अनंत अनंत के सह अह बधाई रमीयो स्वरत राधा रमण दहू' कर मुज काली दवणा ।
त्रिभुवन सुगण महि रख तन गमण तास आवो गमण ॥

७५६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या–४२ । साइज–६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३८ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र है ।

७६०. गुटका नं० ७० । पत्र संख्या–६४ । साइज–७½×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३६ ।

विशेष—कर्म प्रकृति गाथा–नेमिचन्द्राचार्य कृत एवं द्रव्य संग्रह तथा स्तोत्र संग्रह है ।

७६१. गुटका नं० ७१ । पत्र संख्या–७१ । साइज–५¾×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल- सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४० ।

विशेष—पद संग्रह, भक्तामर स्तोत्र भाषा चौपई बंध ऋद्धि मंत्र मूलमंत्र गुण संयुक्त षट् विधान सहित है ।

७६२. गुटका नं० ७२ । पत्र संख्या–२०१ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है अवस्था जीर्ण है ।

७६३. गुटका नं० ७३ । पत्र संख्या–६३ । साइज–६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७७ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है । कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७६४. गुटका नं० ७४ । पत्र संख्या–१० । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७८ ।

विशेष—पूजा तथा पद संग्रह है ।

७६५. गुटका नं० ७५ । पत्र संख्या–३५ । साइज–६½×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

७६६. गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या–६२ । साइज–६½×४ इन्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८१ ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चतुर्विंशति जिन स्तुति	पद्मनंदि	संस्कृत	
बहत्तरि जिनेन्द्र जयमाल	—	"	
स्वयंभू स्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	
द्रव्य संग्रह	—	प्राकृत हिन्दी	
तपोद्योतन अधिकार सत्तावनी	—	संस्कृत	

७६७. गुटका नं० ७७ । पत्र संख्या–६० । साइज–५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है ।

७६८. गुटका नं० ७८ । पत्र संख्या–६४ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । विषय लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८४ ।

फुटकर कवित्त	—	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	कवि पृथ्वीराज	"	संगीत संबंधी कवित्त है ।
कवित्त	गिरधर	"	—
कवित्त सुगास (कमी) और सुरती के	—	"	६ कवित्त है ।
सर्वसुखजी के पुत्र अभयचन्दजी की पुत्री–की जन्म पत्री (चांदबाई)	—	"	जन्म सं० १६१०
चिट्ठी चांदबाई की सर्वसुखजी आदि को		"	सं० १६१६
दसोत्तरा (पहेलियां)	—	"	२५ पहेलियां उत्तर सहित है ।
पहेलियां	—	"	" "
दोहे	वृन्द	"	अपूर्ण
कुंडलियां (गणित प्रश्नोत्तर)	—	"	पूर्ण

फुटकर दोहे तथा कुंडलियां	गिरधरदास	हिन्दी	अपूर्ण
चित	खेमदास	”	
का कथन	—	”	अपूर्ण
अष्ट टाला	द्यानतराय	”	लेखनकाल सं० १६१६ बंदो के पठनार्थ ने लिखा गया था।
मध्यमलोक चैत्यालय बयान	—	”	—
बधाई	बालक-अमीचन्द	”	पूर्ण
अखडी	भूधरदास	”	”
उपदेश जखडी	रामकृष्ण	”	”

७६६. गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या-७५ । साइज-१०×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८५ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, कर्म प्रकृति वर्णन, तथा तीर्थंकरों के कल्याणकों के दिनों का वर्णन है। कल्याणक वर्णन अपभ्रंश में है। रचनाकार मनसुख है।

७७०. गुटका नं० ८० । पत्र संख्या-३१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८६ ।

विशेष—नवलराम, जगतराम, हरीसिंह, भूधरदास, द्यानतराय, मलजी, बखतराम, जोधा आदि के पदों का संग्रह है।

७७१. गुटका नं० ८१ । पत्र संख्या-६६ । साइज-६½×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८७ ।

विशेष—पदों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त परमार्थ जखडी तथा जोगी रासा भी है। भूधरदास, जगतराम, द्यानत, नवलराम, बुधजन आदि के पद हैं।

७७२. गुटका नं० ८२ । पत्र संख्या-६० । साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८८ ।

विशेष—जिन सहस्र नाम भाषा, प्रश्नोत्तर माला, कवित्त, एवं बनारसी विलास आदि हैं।

७७३ . गुटका नं० ८३ । पत्र संख्या-६० । साइज-६×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । वेष्टन नं० १०८६

विशेष—पदों व भजनों का संग्रह है।

७७४. गुटका नं० ८४ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६½×८इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—षट द्रव्य आदि की चर्चा, नरक दुःख वर्णन, द्वादशानुप्रेक्षा आदि हैं ।

७७५. गुटका नं० ८५ । पत्र संख्या-१४ से १४६ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं । बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं ।

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-१३१ । साइज-६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८९ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

७७७ गुटका नं० ८७ । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-X । . । वेष्टन नं० १०६३ ।

विशेष— ि क चर्चाओं का संग्रह है ।

७७८. गुटका नं० ८८ । पत्र संख्या-५८ । साइज-६×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
दीतवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१५७ पद्य
शनीश्चर देव की कथा	—	„ (गद्य)	ले० का० सं० १५६८ चैत सुदी २
तारातंबोल की वार्त्ता	—	„	—
पार्श्वनाथ स्तवन	—	„	—
विनती	—	„	—
नेमराजुल वर्णन पद	—	„	ले० का० सं० १८११

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-६६ । साइज-६×६ इन्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

विशेष—गुटके में पूजा संग्रह तथा स्वर्ग नरक का वर्णन दिया हुआ है ।

७८०. गुटका नं० ६० । पत्र संख्या-११० । साइज-५×३½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
भववद् केवली	—	हिन्दी	
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	
,, भाषा	हेमराज	हिन्दी	
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमदचन्द्र	संस्कृत	
अध्यात्म फाग	—	हिन्दी	
साधु वंदना	बनारसीदास	,,	
बारहभावना	—	,,	
संबोधपंचासिका	—	प्राकृत	
स्तोत्रसंग्रह	—	संस्कृत	

७८१. गुटका नं० ६१। पत्र संख्या-२०४। साइज-६×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७८६। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०६८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कंसलीला	—	हिन्दी	४६ पद्य हैं।
मोरध्वज लीला	—	,,	१५ पद्य हैं।
महादेव का व्याहलो	—	,,	लेखनकाल १७८७
भक्तमाल	—	,,	
सुदामा चरित	—	,,	,, १७८७
गंगायात्रा वर्णन	—	,,	
कछवाहा राजाओं की वंशावली	—	,,	
तारातंबोल की वार्ता	—	,,	
नासिकेतोपाख्यान	नंददास	,,	,, १७८६
महाभारत कथा	लालदास	,,	
देहली के राजाओं की वंशावलि	—	,,	,, १७८८
ईश्वरित	—	,,	

७८२. गुटका नं० ६२। पत्र संख्या-१११। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६८।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
अजितशान्ति स्तोत्र	उपाध्याय मेरुनंदन	हिन्दी	३२ पद्य
सीमंधरस्वामी स्तवन	उपाध्याय ऋगतिलाम	,,	१८ पद्य
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	संस्कृत	—
विघ्नहरस्तोत्र	—	प्राकृत	१४ गाथा
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	—
शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	,,	—
पार्श्वनाथ जिनस्तवन	—	,,	ले० का० सं० १७१९ पौष बदी २
जिनकुशल सूरि का सुन्दर चित्र है और चित्रकार जग जीवन है।			
थंमण पार्श्वनाथ स्तवन	कुशललाभ	हिन्दी	राजरंगगणि ने लिपि की थी। १८ पद्य
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	जिनरंग	,,	१.५ पद्य
राजुल का बारह मासा	पदमराज	,,	४ पद्य अपूर्ण
श्री जिनकुशल सूरि स्तुति	उपाध्याय जयसागर	,,	१५ पद्य पूर्ण
पार्श्वनाथ स्तवन	रंगवल्लभ	,,	६ पद्य
आदिनाथ स्तवन	विजय.तिलक	,,	२१ पद्य
श्री अजितशांति स्तोत्र	—	प्राकृत	३९ गाथा
भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	,,	२१ गाथा पूर्ण
सर्वाधिष्टायक स्तोत्र	—	,,	२६ गाथा
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	
नैणसी (नैनसिंहजी) के व्यापार का प्रमाण	—	,,	सं० १७२६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	कमल लाभ	,,	७ पद्य
,, लघुस्तोत्र	समयराज	,,	पूर्ण
संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	—	,,	
चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	भुवनकीर्त्ति	,,	
पार्श्वनाथ स्तोत्र	मनरंग	,,	
,,	जिनरंग	,,	
ऋषभदेव स्तवन	—	,,	रचनाकाल सं० १७००
[illegible] पार्श्वनाथ स्तवन	पदमराज	,,	लेखनकाल सं० १७२०

पार्श्वनाथ स्तवन	विजयकीर्ति	हिन्दी	पूर्ण
महावीरस्तवन	जिनवल्लभ	संस्कृत	पूर्ण ३० श्लोक
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	हिन्दी	
चतुर्विंशति जिनस्तोत्र	जिनरंगसूरि	"	
बीस विरहमान स्तुति	प्रेमराज	"	
पंचपरमेष्ठि मंत्र स्तवन	"	"	
सोलहसती स्तवन	"	"	
प्रबोध बावनी	जिनरंग	"	रचना सं० १७३१, ५४ पद्य हैं।
दानशील संवाद	समयसुन्दर	"	पूर्ण
प्रस्ताविक दोहा	जिनरंगसूरि	"	

इसका दूसरा नाम "दूहा बंध बहुत्तरी" भी है। ७२ दोहा हैं। लेखनकाल सं० १७४५। बापना नगषसी के पठनार्थ कृष्णगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी।

अभयराज बाफना के पुत्र की कुंडली — " सं० १७७२

७८३ **गुटका नं० ६३**। पत्र संख्या-८ से ५४ तक। साइज-४½×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०६६।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
जैन रासो	--	हिन्दी	लेखनकाल सं० १७६८ जेठ सुदी १५

विशेष – दौलतराम पाटनी ने कस्बा मनोहरपुर में लिखा था। प्रारम्भ के १८ पद्य नहीं हैं।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत २६ पद्य, इसे लघु स्वयम्भू स्तोत्र भी कहते हैं।	
तीर्थंकर बीनती	कल्याणकीर्ति	हिन्दी	रचनाकाल सं० १७२३ चैत बुदी ३
पद	विश्वभूषण	"	
पंच मंगल	रूपचन्द	"	अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के ७ पत्र तथा ६, १० और १२ वां पत्र नहीं हैं। ५४ से आगे पत्र खाली हैं।

७८४. **गुटका नं० ६४**। पत्र संख्या-२६। साइज-५×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११००।

विशेष—

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	पत्र सं० १ से १६
बाईस परीषह	—	"	१७–२६ अपूर्ण

७८५. गुटका नं० ६५ । पत्र संख्या-२२ । साइज-५×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११०१ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७८६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-१०४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रावकनी सज्झाय	जिनहर्ष	हिन्दी	—
अजितशांति स्तवन	—	"	—
पंचमी स्तुति	—	संस्कृत	—
चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	हिन्दी	—
गौडीपार्श्वस्तवन	—	हिन्दी	—
बारहखडी	—	—	अपूर्ण
वैराग्य शतक	भर्तृहरि	संस्कृत	लेखनकाल सं० १७७३

विशेष—संग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है, टीकाकार इन्द्रजीत है ।

अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्री सकलमौलिमंडनमनिग्रामधूकरनृपतिनंनुज श्रीमदिन्द्रजीतविरचितायां विवेकदीपकायां वैराग्यशतं समाप्तं ।

नाकौडा पार्श्वनाथ स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी	पूर्ण
पद (अंखियां आज पवित्र भई मेरी)	मनराम	हिन्दी	—

७८७. गुटका नं० ६७ । पत्र संख्या-१० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०३ ।

विशेष—पद, चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न (भावमद्र) जखडी, सोलह कारण भावना (कनककीर्ति) संग्रह है ।

७८८. गुटका नं० ६८ । पत्र संख्या-६४ । साइज-५½×४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०४ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

७८९. गुटका नं० ६९ । पत्र संख्या-६५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०५ ।

विशेष—नित्य पाठ पूजा आदि का संग्रह है।

७६०. गुटका नं० १०० । पत्र संख्या-१८ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०७ ।

विशेष—पद व स्तोत्रसंग्रह है ।

७६१. गुटका नं० १०१ । पत्र संख्या-२०० । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	
चतुर्विंशति स्तुति	शुभचन्द्र	"	
श्रीपाल स्तोत्र	—	"	
पद संग्रह	—	"	
त्रेसठ शलाका पुरुषों का वर्णन	ब्र० कामराज	"	कामराज का परिचय दिया हुआ है ।
श्रीपाल स्तुति	कनककीर्ति	"	
अजित जिननाथ की विनती (मांई प्यारो लागैजी)	चन्द्र	"	पूर्ण

७६२ गुटका नं० १०२ । पत्र संख्या-१७७ । साइज-८×५½ इन्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ११०६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रीपाल दर्शन	—	"	—
षटमाल वर्णन	श्रुतसागर	"	अपूर्ण

प्रारंभ—दोहा—प्रथम जिनेसुर वंद करि भगति भाव उर लाय ।

कहु वर्णन षटमाल कछु··· ··· ·······।

चौपाई—एक समै श्री वीर जिणंद, विपुलाचल आये सुख कंद ।

श्री जिनजी के अतिसै भाय, सब जीवन को बैर पलाय ।

बदरित बन ते फल फूलत भये, माली लखि इचरज लहये।
समोसरण कि महमा माल, ऐसे मन चितवै बनपाल।

अंतिम—ए षटमाल वरण महान, पुरिव बरन कियो गुणधाम।
तिन वाणि सुणि वरणन कियो, और व्याकरण नहि देखियो।
तैसे बर्ज कणि मोती विधियां सुतसिषलता पै गम किगो।
तैसे बुधि जन वाणि माल वरण कियो माषा गुण माल॥

दोहा—देस काठहड विराजि में रदनस्यंघ राजान।
ताकै पुत्र है मलो सूरिजमल गुणधाम॥
तेज पुंज रवि है मलो, न्याय नीति गुणवान।
ताको सुजस है जगत में, तपै दूसरो भान॥
तिनह नगर जु बसाइयो, नाम भरतपुर तास।
सा राजा सम्यकिटष्टि है मला, परवि च्यारि उपवास॥
जिन मंदिर तह बणत है, जिन महमा प्रकास।
इन्द्र पुरि अभिराम है सोमा सुरग निवास॥
ताहा नगर को चौधरि, विवहरि वेणदास।
तिनकै मंदर उपरो, श्री जिन मंदिर अवास॥
श्री जिन सेवग है मलो श्री जिनहि को दास।
बाह कै वार गोत्र है मलो, हम मया जिणदास॥
वाहि समिपे आय करि वर्षा कियो हर विलास।
बासि सांगानेर को जाति छु अग्रवाल॥
मुगिल गोत उदांत है संगही रामसंघ को बाल।
उतर दिसम वैराठ है नग्र मलो, काहलो करूं बखान॥
पांडव से पुनिवान नर विखो कादिगो आन।
ताहि नगर को वाणिकवर संगही पदारथ जानि॥
वाकै देसो खानि का ऐ दोव जिये आनि।
माहचन्द्र मटारग मलो सुरचंद्र कै पाट॥
कासटासंगा गच्छ में व्रत धन्या अठाट।
निज गुरु सु विनति करि, पाप हरण के काजि॥
स्वामी तुम उपदेस खोइ, तारै धर्म जिहाज।

तब गुरुमुख वाणि खिरी, सुणो बात गुणवान ॥
सिष वेत्र वंदन करी, पुरि वर्स .... ठान ।
तब गुरु के उपदेस तै चतुरविधि संग ठानि ॥
सजन भ्राता संग ले आये उजंत मिलान ।
जिन बाईस मों पूजि करि, भली भगति वर आनि ।
अष्ट द्रव्य ले निरमला हरे करम वसु जानि ।
चतुर संग निज आहार दे अंग प्रभावना सार ॥
सर्व संग की भगति सु भयो सु जै जै कार ।
सब भ्राता निज हेत करि, धरौ ज संगहि नाम ॥
तातै संगहि कहत सब नहि कियो पतेसटा धाम ॥
संवत अठारा से भला ऊपरि एकाइस जानि ।
जेठ सुकल पंचमि भली श्रुतसागर बखाणि ॥
सुवाति नषित्र है भलो अत हौ रविवार ।
फकिरचंद उपदेस तै रच्यो माल विस्तार ॥
हमारो मित्र है सही जाति जु पलिवाल ।
वह वसतु हैं हींडोण में अबै रहै भरतपुर रसाल ॥
तिनसु हम मेलो भयो शुभ उदै के काल ।
उनहि का संजोग तै करि भाषा षटमाल ॥

इति षटमाल वर्णन संपूर्ण............विलास अग्रवाल बांचै तीने उद्दार बंच्या।

७६३. गुटका नं० १०४ । पत्र संख्या–६४ । साइज–५×४¾ इंच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११११२ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७६४. गुटका नं० १०५ । पत्र संख्या–१३ से ५० । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११३ ।

७६५. गुटका नं० १०६ । पत्र संख्या–११६ । साइज–५×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १११५ ।

विशेष—पद संग्रह है ।

७६६. गुटका नं० १०७ । पत्र संख्या–४५ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८०१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११६ ।

७६७. गुटका नं० १०८। पत्र संख्या-१६०। साइज-६X४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-X। अपूर्ण। वेष्टन नं० १११८।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

श्रीपाल की स्तुति		हिन्दी	पूर्ण
राजुलपच्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	"	"
उपदेश पच्चीसी	बनारसीदास	"	"
कर्मघटावलि	कनककीर्ति	"	"
पद तथा आलोचना पाठ	—	"	"
पद	हरीसिंह	"	"
पंचमंगल	रूपचंद	"	अपूर्ण
विनती-वंदू श्री जिनराई	कनककीर्ति	"	" ले० का० १७८० आणंदा चांदवाड ने प्रतिलिपि की।
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	पूर्ण
मक्खड़ी	—	"	"
रविवार कथा	—	"	"

७६८. गुटका नं० १०६। पत्र संख्या-२४०। साइज-८X६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १११६।

विशेष—स्तोत्र तथा पदों का संग्रह है। अक्षर बहुत मोटे हैं। एक पत्र में तीन तथा चार पंक्तियां हैं।

७६६. गुटका नं० ११०। पत्र संख्या-७२। साइज-६X४ इन्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ११२०।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

सामायिक पाठ	—	संस्कृत
रजस्वला स्त्री के दोष	—	"
सूतक वर्णन	—	"
स्तोत्र संग्रह	—	"

८००. गुटका नं० १११। पत्र संख्या-१३। साइज-६X५ इन्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ११२२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

८०१. गुटका नं० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि हैं ।

८०२. गुटका नं० ११३ । पत्र संख्या-४ । साइज-१४×८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अनुप्रेक्षा-डालूराम कृत, देवाष्टक, पद-डालूराम, गुरू अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४×४ । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर संग्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४९ ।

विशेष—बीस तीर्थंकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व भजन	सहजकीर्ति	"	
पंचमी स्तवन	समयसुन्दर	"	
पोसा पडिकम्मण उठावना विधि	—	"	
चउबीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्ति	"	
बीस तीर्थंकर स्तुति	"	"	
नन्दीश्वर जयमाल	—	"	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजकीर्ति	"	
सीमंधर स्तवन	—	"	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	"	
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	—	"	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ष	"	

गुरु विनती	—	हिन्दि
सुबाहु रिषि संधि	माणिक सूरि	„
अंगोपांग फुरकन वर्णन	—	„
ब्रह्मचर्य नव बाडि वर्णन	पुण्यसागर	„
लघु स्नपन विधि	—	„
अष्टाहिका स्नपन विधि	—	„
मुनि माला	—	„
क्षेत्रपाल का गीत	—	„

८०६. गुटका नं० ११७ । पत्र संख्या–२० से ३१ । साइज–१०×४½ । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८४ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नूरकी शकुनावली	नूर	हिन्दी	अपूर्ण
आयुर्वेद के नुसखे	—	„	„
बावणोला का मंत्र तथा अभ्रक मारण विधि	—	„	„
नूरकी शकुनावली	नूर	„	

विशेष—मार्दछंद में लिखा है।

मातृका पाठ	—	„
मंत्र स्तोत्र	—	„
आयुर्वेद के नुसखे	—	„

८०७. गुटका नं० ११८ । पत्र संख्या–५३ से ८६ । साइज–६×५½ इन्च । भाषा–प्राकृत–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८५ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समाधि मरण	—	प्राकृत	५३ से ६२ पत्र तक
मोडा	हर्षकीर्ति	हिन्दी	६४ से ६७ पत्र तक

प्रारम्भ – राग सोरठी:—

म्हारो रै मन मोडा तू तो गिरनारया उडि जायरे ।
नेमिजी स्यौ यु ं कहिज्यो राजमती दुरूख ये लीसे ।।म्हारो०।।

अंतिम—मोक्ष गया जिण राजइ प्रभु गढ गिरनारि मझार रे।

राजल तौ सुरपति हुवो स्वामी हर्षकीर्ति सुकारो रै॥ म्हारो० ३०॥

॥ इति मोडो समाप्ता॥

भक्ति वर्णन	—	प्राकृत	६८ से ८४ तक
पद	—	हिन्दी	८६ पत्र पर

प्रारम्भ—जय अरहंत संत भगवंत देव तू त्रिभुवन भूप।

८०८. गुटका नं० ११६। पत्र संख्या-२०। साइज-८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२१६।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशे
पद	महमद	हिन्दी	—

प्रारम्भ—भूलो मन भमरा रे कांई भमै ··· ··· ·····।

अंतिम भाग—महमद कहै वसत वोराये ज्यौं क्यू आवै साथी।

लाहा आपण उगाहीलें लेखो साहिब हाथी॥

सवैया	बनारसीदास	हिन्दी
नववाडसज्झाय	जिनहर्ष	"

विशेष—अंतिम—रूप कूप देखि करि रे मांहि पडै किम अंध।

दुख मायो जाणौ नही हो कहै जिनहरष प्रबंध॥

सुगुण रे नारि रूप न जोइये रे॥ १०॥

इति नववाडसज्झाय संपूर्ण।

राजुल बारहमासा	—	हिन्दी	अपूर्ण।
पार्श्वनाथ स्तुति	भावकुशल	गुजराती	पूर्ण

अंतम—भवि भवि दीज्यो देव सेव इक ताहरी।

थिर सिर तुम्ह मी आण आस ए माहरी॥

पदम सुन्दर उवझाय पसाय गुण भयो।

भाव कुशल भरपूर सुख संपति थयो॥

इति पार्श्व जिन स्तुति॥

संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति   रामविजय   पूर्ण

लें० का० सं० १७६० चैत सुदी ५

अंतिम—सेव्यो श्री जिनराज। आपै अविचल राज॥

रामविजय भणीए। सु प्रसन तूँ धणीए॥

इति श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ जिन स्तुति। इमें लिखिता भाव कुशलेन। श्री केसरि वाचन कृते॥

नंद छत्तीसी   —   संस्कृत   अपूर्ण

शृंगार लें० का० सं० १७६३ पौष बदी २

विशेष—केवल १० से ३६ तक पद्य हैं। बाई केसर के पठनार्थ लिपि की गई थी।

नेमिनाथ बारहमासा   हिन्दी   (गु०) १४ पद्य हैं।

विशेष—गगमरा राजीमती लिधो संजम भार।

कहै जाण मेहर जसुमालीया मुगत मंझार॥१४॥

वियोग शृंगार का अच्छा वर्णन है।

बुधरास   हिन्दी   अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के पत्र गल गये हैं।

अंतिम—गाँठि गरथ मत सूंखो साथ ………।

भूखो मत चालै सियालै। जीमर मत चालै उन्हालै॥

बांभण होय अणन्हायो।

कापथ हो पर लेखो भूले। घृ तिलु किणा हीनै तोलै॥१२०॥

एह बुधसार तणोर विचार। आलन आनै इया ससार॥

मणे पालय रोषम युता। राज करो पलार संजुता॥२१०॥

॥ इति बुधरास संपूर्ण॥

तमाखू की जयमाल   आणंद मुनि।   हिन्दी   पूर्ण

विशेष—प्रारम्भः—प्रीतम सेती बीनवै प्रमदा गुण विशाल।

मोरा लाल मन मोहण एकै चितै तू संभाल॥ चतुर सुजाण॥

अंतिम—दया धरम जाणी करी सेवो सदगुरु साध मोरा लाल।

आणंद मुनि इम उच्चरै जग मांही जस वाध मोरा लाल॥

चतुर तमाखु परिहरौ।

॥ इति तमाखू जयमाल संपूर्ण॥

॥ लिखतं ऋषि हीरा॥

८०६. गुटका नं० १२० । पत्र संख्या–२२ । साइज–५½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल– । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१७ ।

विशेष—जीवों की संख्या का वर्णन दिया हुआ है ।

८१०. गुटका नं० १२१ । पत्र संख्या–५६ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१८ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	अजयराज	हिन्दी	
पद	वारी हो शिव का लोभी	,,	
नारी चरित्र	—	,,	
मनुष्य की उत्पत्ति	—	,,	
पद	दीपचंद	,,	
श्री जिनराजैं ज्ञान तणें अधिकार ॥			
विनती	अजयराज	,,	
श्री जिन रिखब महंत गाऊ ॥		,,	
उपदेश बत्तीसी	राज	,,	

८११. गुटका नं० १२२ । पत्र संख्या–३५ । साइज–४½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२१९ ।

विशेष—मतिसागर सेठ की कथा है । पद्य संख्या १८१ है । प्रारम्भ में मंत्र जंत्र भी दिये हुए

८१२. गुटका नं० १२३ । पत्र संख्या–८६ । साइज–८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२० ।

विशेष—गुणस्थान की चर्चा एवं नवल तथा भूधरदास के पद और खंडेलवाल गोत्रोत्पत्ति वर्णन है ।

८१३. गुटका नं० १२४ । पत्र संख्या–५० । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	
नेमिकुमार बारहमासा	—	,,	

नेमि राजमति जखडी	हेमराज	"	

जखडी का अंतिम—तीस दिन अब निरधारजी ।

हेम भयो जीन जानिये । ते पावै भव पार जी ॥

दिल्ली में प्रतिलिपि हुई थी ।

तिलोकचंद पटवारी गोधा चाकसू वाले ने सं० १७८२ में प्रतिलिपि की थी ।

फल पासा (फल चिंतामणि) तीर्थंकरों की जयमाल एवं पार्श्वनाथ की विनती आदि और हैं ।

८१४. गुटका नं० १२५ । पत्र संख्या–३२ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
जिनराज स्तुति	कनककीर्त्ति	हिन्दी (गुजराती)	ले० का० सं० १७५६ फागुण सुदी ६ सांगानेर में प्रतिलिपि हुई ।
चिन्तामणि स्तोत्र	—	"	—
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	"	र० का० सं० १७०४ आषाढ सुदी ५ । ले० का० सं० १७६०
नेमीश्वर लहरी	—	हिन्दी	—
पंचमेरु पूजा	विश्वभूषण	"	—
अष्ट विधि पूजा	सिद्धराज	"	—
आदित्यवार कथा (छोटी)	—	"	—
फुटकर कवित्त—	—	"	—
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	"	—
भक्तिमंगल	"	"	—
नित्यपूजा	—	हिन्दी	पूर्ण
जिनस्तुति	रूपचन्द	"	"
आदीश्वरजी का बधावा	कल्याणकीर्ति	"	"
सम्यक्त्वी का बधावा	—	"	अपूर्ण

८१५. गुटका नं० १२६ । पत्र संख्या–१२२ । साइज–६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १७०४ असाढ सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२४ ।

विशेष—पूजाओं के अतिरिक्त निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
सहेली संबोधन	—	"	
बड़ा कक्का	मनराम	"	
ज्ञानचिंतामणि	मनोहर	"	

८१६. गुटका नं० १२७ । पत्र संख्या—६२ । साइज—६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कर्म प्रकृति वर्णन भाषा	—	हिन्दी	—
चौबीस तीर्थंकर पूजा	अजयराज	"	ले० का० सं० १८१२ अषाढ सुदी २
ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	"	
पद	दीपचंद	"	
जोगीरासा	जिनदास	"	
जिनराज बिनती	—	"	१४ चरण हैं।

८१७. गुटका नं० १२८ । पत्र संख्या—१०२ । साइज—६×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२२८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	गुलाबराव	हिन्दी	ले० का० सं० १८२३ कार्तिक सुदी ५
विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की।			
संबोध पचासिका भाषा	बिहारीदास	"	र० का० १७५८ कार्तिक सुदी १२।
विशेष—बिहारीदास आगरे के रहने वाले थे।			
आदिनाथ का बधावा (बाजा बाजीया घणा जहां जनम्यां हो प्रभु रीखबकुमार)			
पंच मंगल	रूपचन्द	"	
पद (मस्तग आजि हो पवित्र मोहि भयो)		"	
आठ द्रव्य की भावना	जगराम	"	
जैन पच्चीसी	नवलराम	"	
पद संग्रह	जोधराज बनारसीदास आदि के पद हैं।		
चार मित्रों की कथा	अजयराज	"	र० का० १७२१ जेठ सुदी १३। ले० का० सं० १८११ असाढ सुदी ६।

वज्रनाभि चक्रवर्ति की वैराग्य भावना	भूधरदास	हिन्दी

८१८. गुटका नं० १२६। पत्र संख्या-१६ । साइज-४½×६¼ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

८१९. गुटका नं० १३०। पत्र संख्या-७३ से ११४ । साइज-४¾×३¾ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३२ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है। प्रारम्भ के ७१ पत्र तथा ७४, ७५ पत्र नहीं है।

८२०. गुटका नं० १३१। पत्र संख्या-१६ । साइज-६×३¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-सं० १६३६ भादवा सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है। जयपुर नगर स्थित चैत्यालयों की सूची दी हुई है।

८२१. गुटका नं० १३२ । पत्र संख्या-१५६ । साइज-६¾×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा, साधु वंदना, भक्तामर भाषा आदि पाठ हैं बीच में कही २ पत्र नहीं हैं।

८२२. गुटका नं० १३३ । पत्र संख्या-१७० । साइज-४½×२½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३८ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	—
चतुर्दशी कथा	हरिकृष्ण पाण्डे	"	—
पंच मंगल	रूपचन्द	"	—
नित्य पूजा पाठ	—	संस्कृत	—
जिन वाणी स्तुति	—	"	—

स्नपन पूजा, क्षेत्रपाल पूजा आदि नैमित्तिक पूजा-संग्रह भी है।

८२३. गुटका नं० १३४ । पत्र संख्या-१७० । साइज-६×३¾ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर विनती	—	हिन्दी	७ पद्य हैं।
पुण्य पाप जग मूल पच्चीसी	भगवतीदास	,,	२७ पद्य हैं।
४६ दोष रहित आहार वर्णन	—	,,	—
जिन धर्म पच्चीसी	भगवतीदास	,,	अपूर्ण
पद संग्रह	जगतराम	,,	—
पद	शोभाचन्द	,,	—
(भज श्री रिषभ जिनिंद कूं)			
पद	जिनदास	,,	—
(जैन धर्म नहीं कीनो नरदेही पाई)			
पद	जीवनराम	,,	—
(अश्वसेन राय कुल मंडन उग्र वंश अवतारी)			
सप्त व्यसन कवित्त	—	,,	—

जिनके प्रभु के नाम की भई हिये प्रतीति ।

विघ्नराय ते नर भजे नरक वास भयभीत ॥

सोलह स्वप्न (स्वप्न बत्तीसी)	भगवतीदास	,,	—

विशेष—अन्तिम—निज दौलत पावै भया हरै दोष दुख रास ॥
भरत चक्रवर्ती के १६ स्वप्नों का वर्णन है ।

पद	कृष्ण गुलाब	,,	—
(समरि जिनंद समरना है निदान)			
छहढाला	बुधजन	,,	ले० का० सं० १८१७ ।
शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी।			
नमद भौजाई का झगड़ा	आनंदवर्धन	,,	—
चतुर्विंशति स्तुति	विनोदीलाल	,,	—
पद संग्रह	बनारसीदास एवं भूधरदास	,,	—
बाईस परीषह	भूधरदास	,,	—
चरखा चउपई	अजयराज	,,	—
बारहखड़ी	—	,,	—

८२४. गुटका नं० १३५ । पत्र संख्या-७४ । साइज-६¾×४½ इन्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४० ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
दर्शन सार	देवसेन	प्राकृत	५२ गाथाऐं हैं ।
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	"	१२६ "
सामुद्रिक श्लोक	—	संस्कृत	—
सोलह कारण पावली	—	"	२० श्लोक हैं ।
सप्त ऋषि पूजा	—	"	—
राज पट्टावली	—	"	—

राजाओं के वंशों की पट्टावलि संवत् ८२६ से १६०२ तक की दी हुई है ।

सज्जन चित्त बल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	"	—
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	प्राकृत	—

विशेष—गुटके के अन्त के ४ पृष्ठ आधे फटे हुये हैं ।

८२५. गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या-१४० । साइज-७×६ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४१ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१२४ पद्य हैं ।
भावना बत्तीसी	अमितिगति	संस्कृत	—
अनादिनिधन स्तोत्र	—	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	—	"	—

१४८ प्रकृतियों का वर्णन है तथा ४ गुणस्थान तक सात मोहनीय की प्रकृतियों का व्यौरा भी है ।

त्रिभुवन विजयी स्तोत्र	—	संस्कृत	—
गुणस्थान जीव संख्या समूह वर्णन	—	हिन्दी	—

७ वें गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक एक समय में कितने जीव अधिक से अधिक व कम से कम हो सकते है इसका व्यौरा है ।

चौबीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	—
त्रेषठशलाका पुरुषों की नामावलि	—	"	—

परमानंद स्तोत्र	—	संस्कृत	—
नेमीश्वर के दश भवांतर	ब्रह्म० धर्मरुचि	हिन्दी	—

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है।
बूंदी गढ में मासज्ञ कीधी भणिसी जे नर नारी जी।
श्री संघ मंगल कारणि कीधी भणै धर्मरुचि ब्रह्मचारीजी॥

निर्वाण काण्ड गाथा	—	प्राकृत	--
लघु सहस्त्र नाम	—	संस्कृत	—
विषापहार स्तोत्र	धनजय	"	—
बडा कल्याण	—	हिन्दी	—

तीर्थंकरों के गर्भ जन्मादिक कल्याणों की तिथियां दी हैं।

पल्य विधान	—	"	—
गुरुभक्ति स्तोत्र	—	प्राकृत	—
णमोकार महिमा	—	हिन्दी	—
पल्य विधान कथा	—	संस्कृत	—

८२६. **गुटका नं० १२७** । पत्र संख्या–८४ । साइज–६३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–×। पूर्ण । वेष्टन नं० १२४२ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पंच मंगल	रूपचन्द	हिन्दी	—
तीन चौबीसी एवं बीस तीर्थंकरों की नामावलि	—	"	—
त्रिनती संग्रह	—	"	—
बारह भावना	भूधरदास	"	—
वज्रनाभि चक्रवर्त्ती की वैराग्य भावना	—	"	—

८२७. **गुटका नं० १२८** । पत्र संख्या–६ से ४१ । साइज–६×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी–संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४३ ।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पूजा संग्रह	—	संस्कृत	—

विशेष—देव पूजा बीस विरहमान सिद्ध पूजा आदि का संग्रह है।

समुच्चय चौबीस तीर्थंकर पूजा	अजयराज	हिन्दी	पूर्ण

पंचमेरु पूजा	—	हिन्दी	अपूर्ण
तीन चौबीसी तीर्थंकरों की नामावलि	—	"	पूर्ण
समुच्चय चौबीस तीर्थंकर जयमाल	—	"	—

८२८. गुटका नं० १३६। पत्र संख्या-२३ से ५०। साइज-६½×६। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२४४।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
पद्मावती पूजा	—	संस्कृत	अपूर्ण
चंद्रप्रभस्तुति	—	हिन्दी	पूर्ण
(चन्द्रप्रभु जिन ध्यायज्यौं । भवि हो चंद्रप्रभु जिन ध्यायज्यौ ॥ टेक			
पंच बधावा	—	"	—
आदिनाथ स्तुति	—	"	अपूर्ण
आरती विनती	—	"	ले० का० सं० १७७७ मंगसर सुदी ८
पद	—	"	ले० का० सं० १७७८ पौष बुदी १०
विनती	—	"	—
पूजा	—	"	—
दर्शनपाठ	—	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	—
सील गुरुजनों की	—	हिन्दी	—
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	ले० का० सं० १७६५ आसोज सुदी ८
देवपूजा	—	"	ले० का० सं० १७६६ श्रावण बुदी २

विशेष—गुलाबचन्द पाटनी की पोथी है। सांगानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

८२९. गुटका नं० १४०। पत्र संख्या-१० से १२०। साइज-५×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२४५।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
समयसार भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा	—	संस्कृत	—

सिद्धि प्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	—
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	—
विषापहार स्तोत्र	धनंजय	"	—
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	हिन्दी	—
जखडी	अनंतकीर्ति	"	रचना काल सं० १७५० भादवा सुदी १०
नेमीश्वर राजमति गीत	विनोदीलाल	"	—
मेघकुमार गीत	पूनो	"	—
मुनिवर स्तुति	—	"	—
ज्येष्ठजिनवर कथा	—	"	—

गुटके के प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं हैं।

८३०. गुटका नं० १४१। पत्र संख्या–१२। साइज–७×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

८३१. गुटका नं० १४२। पत्र संख्या–१५ से ४८। साइज–६×५ इन्च। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। लेखन काल–सं० १८११। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५४।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पार्श्वनाथ जयमाल	—	संस्कृत	—
कलिकुंड पूजा	—	"	—
चिंतामणिपूजा	—	"	—
शान्ति पाठ	—	"	—
सरस्वती पूजा	—	"	ले० का० सं० १८११ जेठ सुदी १
क्षेत्रपाल पूजा	—	"	—
महावीर विनती	—	हिन्दी	—

विशेष—चाँदनगांव के महावीर की विनती है। इसमें ११ अंतरे हैं। अन्य पाठ भी है।

८३२. गुटका नं० १४३। पत्र संख्या–१०। साइज–४$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–सं० १८१३। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५५।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

(१) निर्वाण काण्ड, भक्तामर भाषा, पंच मंगल, कल्याण मंदिर आदि स्तोत्र ।

(२) ४८ यंत्र विधि सहित दिए हुए हैं एवं उनके फल भी दिये हुए हैं । ये भक्तामर स्तोत्र के यंत्र नहीं हैं ।

(३) गज करणादि की औषधि, हितोपदेश भाषा, लाला तिलोकचंद की सं० १८१२ की जन्म कुंडली भी दी हुई है ।

(४) कवित्त—केई खंड खंड के निरदन कू जिति आयो ।

पलक में तोरि डारयो किलो जिन धारको ॥

म्हा मगरूर कोऊ सूझत न सूर ।

राहु केत सौ गरूर है बहीया बडे सारकौ ॥

मोर है हजार च्यारि असवार और ।

लगी नहीं बार जोग बिरच्यौ बजार को ॥

माधव प्रताप सेती जैपुर सवाई मांझ ।

मारि कढारयो भगज महाजना मलारकौ ॥

(५) नौ कोठे में बीस का यंत्र—
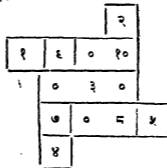
यंत्र का फल भी दिया हुआ है ।

८३३. गुटका नं० १४४ । पत्र संख्या–२२ । साइज–६×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३४. गुटका नं० १४५ । पत्र संख्या–७५ । साइज–९×४ इन्च । भाषा–हिन्दी– । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५७ ।

विशेष—बखतराम कृत आसावरी है पद्य संख्या ३६ है ।

८३५. गुटका नं० १४६ । पत्र संख्या–३ से २७ । साइज–६×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५८ ।

विशेष—पंच मंगल पाठ तथा चौबीस ठाणों का व्यौरा है।

८३६. गुटका नं० १४७। पत्र संख्या–१५ से ६१। साइज–६×४ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखनकाल–सं० १८३८ आषाढ़ बुदी ७। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२५६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है तथा सूरत की बारह खडी है जिसके ११३ पद्य हैं।

८३७. गुटका नं० १४८। पत्र संख्या–२७६। साइज–७½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ११। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६०।

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
हनुमंत कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
भविष्यदत्त कथा	—	"	ले० का० सं० १७२७ फाल्गुण सुदी ११
जैनरासो	—	"	—
साधु बंदना	बनारसीदास	"	—
चतुर्गति बेलि	हर्षकीर्ति	"	—
अठारह नाता का चौढाला	साह लोहट	"	—
स्फुट पाठ	—	"	—

८३८ गुटका नं० १४९। पत्र संख्या–२०। साइज–६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

८३९. गुटका नं० १५०। पत्र संख्या–११०। साइज–५½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६६।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

८४०. गुटका नं० १५१। पत्र संख्या–११४। साइज–६½×५½ इन्च। भाषा–हिन्दी। लेखनकाल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६७।

विशेष—पद व स्तोत्रों का संग्रह है।

८४१. गुटका नं० १५२। पत्र संख्या–१३०। साइज–६¾×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत–प्राकृत। लेखन काल–सं० १७६३। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं, जयमाल तथा भाऊ कवि कृत आदित्यवार कथा आदि का संग्रह है।

८४२. गुटका नं० १५३ । पत्र संख्या-२४ । साइज-६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७० ।

मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है:—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
बारह खडी	श्रीदतलाल	हिन्दी	—

प्रारम्भ—कका केवल कृष्ण भज, जब लग रहे शरीर ।
बहोर न ऐसा दाव है, आन पडेगी भीड ॥१॥

अन्तिम—हा हा इह भव हसत हो, हरजन है न कोइ ।
बेसे हँस खाली गये ए जुर रहे सुभ जोय ॥
जे जुर रहे सुभ जोय होय तीनु रे पुरक्कु ।
होनहार थी रहे सुरापन गऐ जु धरकु ॥
सुरग म्रत पाताल काल म्रह वाली ।
माइदतलाल वह साहिब खाली ॥

॥ बाराखडी संपूर्ण ॥

८४३. गुटका नं० १५४ । पत्र संख्या-१७ । साइज-६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७१ ।

विशेष—जगराम, नवल, सालिग भागचंद, आदि कवियों के पद हैं तथा बनारसीदास कृत कुछ कवित्त और सवैये भी हैं ।

८४४. गुटका नं० १५५ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६¾×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८०५ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२७२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सुगुरु शतक	जिनदास	हिन्दी	र० का० सं० १८५२ चैत बुदी ८
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	"	—
बारह भावना	भगवतीदास	"	—
निर्वाण काण्ड भाषा	"	"	र० का० सं० १७४३ आसोज सुदी १०
जैन शतक	भूधरदास	"	र० का० सं० १७८१ पौष बुदी १३

८४५ गुटका नं० १५६ । पत्र संख्या-४४ । साइज-७×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजादि का संग्रह एवं ६३ शलाका पुरुष तथा १६६ पुण्य जीवों का व्यौरा दिया हुआ है।

८४६. गुटका नं० १५७। पत्र संख्या–२३४। साइज–११$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी–संस्कृत। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७४।

रचना का नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समयसार वचनिका	—	हिन्दी	ले. का. सं० १६६७ चैत्र सुदी ७।

प्रशस्ति—सं० १६६७ चैत्र शुक्ल पद्दे तिथौ सप्तम्यां अंबावती मध्ये राजा जैसिंघ प्रतापे लिखाइतं सहि देवसी जी। लिखतं जोसी अखिराज प्रसिद्धा।

पद संग्रह	बनारसीदास, रूपचंद	"	—
धर्म धमाल	धर्मचंद	"	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
आत्म हिंडोलना	केशवदास	"	—
वणिजारो रास	रूपचंद	"	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	"	—
कर्म छत्तीसी	—	"	
ज्ञान बतीसी	बनारसीदास	हिन्दी	—
चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"	—
द्वादशानुप्रेक्षा	आलू	"	—
शुभाषितार्णव	—	संस्कृत	—

८४७. गुटका नं० १५८। पत्र संख्या–१२६। साइज–६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७५।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

पूजा स्तोत्र एवं पद संग्रह	—	हिन्दी	—
जिनगीत	अजयराज	"	—
शिवरमणी को विवाह	"	"	१७ पद्य हैं।

किशनसिंह, अजयराज, द्यानतराय, दीपचंद आदि कवियों के पदों का संग्रह है।

८४८. गुटका नं० १५६। पत्र संख्या–१५ से ६४। साइज–६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७६।

विशेष—चन्द्रायण व्रत कथा है। पद्य संख्या १ ८ से ६३७ तक है। कथा गद्य पद्य दोनों में ही है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है—

जदी सारा लोगा कही। आप तो जाणी प्रवीण छो। जठा बल ग्यान कुला सो तो काम को नहीं। अर पीहर सासर आदर नहीं अर जमारो अधीको बीसर होई। जीसु काइ कहबाम आव। अर वको तो तीर्थोंध लीखो छो। जीसु आपका मनम आवतो कवर नै बुलाह लीनावो॥

८४६. गुटका नं० १६०। पत्र संख्या–१३ से १४८। साइज–६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७६८ कार्तिक बुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७७।

निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय–सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति की पूजा	—	संस्कृत	पत्र १३ से १४
सिद्ध प्रिय स्तोत्र टीका	—	हिन्दी	१४ से ३२
योगसार	योगचंद्र	"	३३ से ४६
			ले० का० सं० १७३५ चैत्र सुदी ५। सांगानेर में लिखा गया।
अनित्य पंचासिका	त्रिभुवनचंद	"	पत्र ४७ से ५६, ५५ पद्य हैं।
अष्टकर्म प्रकृति वर्णन	—	"	६० से ६८
मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	"	६८ से ७२
पंचलब्धि	—	संस्कृत	७२ से ७३
धमाल	धर्मचंद	हिन्दी	७३ से ७४
जिन विनती	सुमतिकीर्त्ति	"	पत्र ७४ से ७८, २३ पद्य हैं।
गुणस्थान गीत	ब्रह्मवर्द्धन	"	७८ से ८१
समकित भावना	—	"	८१ से ८४
परमार्थ गीत	रूपचद	"	८४ से ८५
पंच बधावा	—	"	८५ से ८८
मेघकुमार गीत	पूनो	"	८८ से ८९
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	८९ से ९५
मनोरथ माला	—	"	९५ से ९६
पद	श्यामदास जिनदास आदि	"	९६ से १०१

मोह विवेक युद्ध	बनारसीदास	हिन्दी	१०१ से ११०
योगीरासो	जिनदास	"	१११ से ११३
जखडी	रूपचंद	"	११४ से १२४
पंचेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	१२४ से १२६
			र० का० सं० १५८५
पंचगति की बेलि	हर्षकीर्ति	"	१२६ से १३२
पंथीगीत	छीहल	"	१३२ से १३४
पद	रूपचंद	"	१३४ से १३६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	"	१३७ से १४४

८५०. गुटका नं० १६१। पत्र संख्या-१५०। साइज-८½×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सवैया	केशवदास	हिन्दी	अपूर्ण।
सोलह घडी जिन धर्म पूजा की	—	"	—
कन्हीराम गोधा ने लिपि की।			
पंच बधावा	पं० हरीबैंस	"	ले. का. १७७१
पार्श्वनाथ स्तुति	—	"	र. का. सं. १७०४ आषाढ सुदी ५।
पद	हर्षकीर्ति	"	१३ पद्य हैं।

प्रारम्भ—जिन जपु जिन जपु जीयडा सुवश में सारोजी।

अंतिम—सुभ परणाम का हेत स्यौ उपजै पुनि अनंतो जी।

हरष कीरती जीन नाम सुमरणी दीनी मति चुको जी।

जिन जपु जिन जपि जीवडो॥

आदिनाथ जी का पद	कुशालसिंह	हिन्दी	ले. का. सं. १७७१
नयाचंद गंगवाल ने रैभडी में लिपि की थी।			
नेमिजी की लहर	पं० डूंगो	"	—
सुगुरु सीख	मनोहर	"	—
साह हरीदास ने प्रतिलिपि की थी।			

राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	,,	ले. का. सं. १७६३
अठारह नाता का चौढाला	लोहट	,,	—
नेमिनाथ का बारहमासा	श्यामदास गोधा	,,	ले. सं. १७८६ आषाढ सुदी १४।

अंतिम—बाराजी मासो नेम को राजल सोलैहगी गाइ जी।

नेम जी मुकती पहुतष श्यामदास गोधा उरि लावो जादुराइतो।

इति बारहमासा संपूर्ण।

कक्का	—	हिन्दी	ले० का० सं० १७७४

यंत्र २० का ८ कोष्ठकों का:—

		१	
४	७	६	
	८	१०	२
	५		

बारह भावना	भगवतीदास	हिन्दी	ले० का० सं० १८५० मानमल ने प्रतिलिपि की थी।
कर्म प्रकृति	—	,,	—
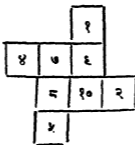
८५१. गुटका नं० १६२। पत्र संख्या-५१ से २१२। साइज-८×३½ इश्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७१।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
माली रासा	जिणदास	हिन्दी	पत्र ६३
नेमीश्वर राजमति गीत	—	,,	६५
नेमिनाथ राजुल गीत	हर्षकीर्ति	,,	६८

आरम्भ—म्हारो रै मन मोरडा गिरनारयाँ उडि कैसो रै।

अन्तिम—मोषि गयो जिण राजह गढ गिरनारि मझारे।
राजमति सुरपति हुई हरख कीरति सुख करारै।

नेमीश्वर गीत	हर्षकीर्ति	,,	६६
आचार रासा	—	,,	७०

वंदेतान जयमाल	—	संस्कृत	पत्र ७१
गीत	हेमराज	हिन्दी	७२

चौबीस तीर्थंकर स्तुति के २ पद्य हैं।

जीयडा गीत	—	,,	७४

विशेष—तु मेरो पीव साजना रे हुं तेरी वर नारि मेरा जीवडा।
तुम विन पिय एक ना रहो रे लाल तुझसे प्रेम पियार बे रा जीवडा।
काया कामिणी बीनउ रे लाल ॥१॥ ६ पद्य हैं।

पूजा संग्रह	—	संस्कृत हिन्दी	६८
श्री जिनस्तुति	ब्र० तेजपाल	,,	११६
श्रीजिन नमस्कार	यशोनंदि	,,	११७, ११ पद्य हैं।
धर्म सहेली	मनराम	,,	१६३, २० पद्य हैं।
मेघकुमार गीत	पूनो	,,	१६६, २१ पद्य हैं।
पद	कवि सुन्दर	,,	१६७, १० पद्य हैं।
जीवकी भावना	—	,,	१७२, ६ पद्य हैं।
ऋषभनाथ वेलि	—	,,	१७३
नेमि राजुल गीत	बुगरसी बैनाडा	,,	१७५
पंचेन्द्रिय वेलि	ठक्कुरसी	,,	१७१ र. का. सं. १५८५
कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	,,	१८१
नेमिगीत	—	,,	१८४
नेमिराजमती गीत	—	,,	१८६ १७ पद्य हैं।
दीतवार कथा	भाऊकवि	,,	—
बारह खडी	—	,,	—
सीता की धमाल	लक्ष्मीचंद	,,	२०२
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	२१२

स्फुट एवं अवशिष्ट साहित्य

८५२. **अइमंताकुमार रास—मुनि नारायण** । पत्र संख्या–८ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) गुजराती मिश्रित । विषय–कथा । रचना काल–सं० १६८३ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६१ ।

विशेष—१ तथा ५ वां पत्र नहीं है ।

अन्तिम—अरिहंत वाणी हृदय आणी पूरा इति निज आसए ।

श्री रत्नसीह गणि गछ नायक पाय प्रणमी तासए ।।३३।।

संवत सोल त्रिहासी आ वर्षि वुधि वदि पोस मासए ।

कल्प वल्ली माहि रंगिइ रच्यउ सुंदर रास ए ।।३४।।

वाचारिषि शिष्य समरचंद मुनी विमल गुण आवासए ।।३५।।

८५३. **अजीर्ण मंजरी**—पत्र संख्या–८ । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४१ ।

८५४. **अर्द्धकथानक—बनारसीदास** । पत्र संख्या–१ से ३० । साइज–६×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–आत्म चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६३ ।

विशेष—कवि ने स्वयं का आत्म चरित लिखा है ।

८५५. **अर्हन् सहस्रनाम**—पत्र संख्या–६ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२०३ ।

विशेष—चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र एवं मंत्र भी दिया हुआ है । पंडित श्री सिंघ सौभाग्य गणि ने प्रतिलिपि की थी ।

८५६. **आदिनाथ के पंच मंगल—अमरपाल** । पत्र संख्या–८ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७७२ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१० ।

विशेष—सं० १७७२ में जहानाबाद के जैसिंहपुरा में स्वयं अमरपाल गंगवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम छंद—अमरपाल को चित सदा आदि चरन ल्यो लाइ ।

भव भव मांझि उपासना रहो सदा ही आइ ।।

जिनवर स्तुति दीपचन्द की भी दी हुई है ।

८५७. **किशोर कल्पद्रुम --शिव कवि** । पत्र संख्या-१८४ । साइज-८३/४×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पाक शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१२ ।

विशेष—इति श्री महाराजि नृपति किशोरदास आज्ञा प्रमाणेन शिव कवि विरचितं ग्रंथ किशोर कल्पद्रुमे सिखरादि विधि वरनन नाम नवविंसत साखा समाप्ता । ६२० पद्य तक है । आगे के पत्र नहीं हैं ।

८५८. **कुवलयानंद कारिका**—पत्र संख्या-८ । साइज-१२×७ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रस अलंकार । रचना काल-× लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७१ ।

विशेष—एक प्रति और है । इसका दूसरा नाम चन्द्रालोक भी है ।

८५९. **ग्रन्थ सूची**—पत्र संख्या- । साइज-८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सूची । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११५२ ।

८६०. **चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न**—पत्र संख्या-३ । साइज-६३/४×४३/४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

विशेष—सम्राट् चन्द्रगुप्त को जो सोलह स्वप्न हुये थे उनका फल दिया हुआ है ।

८६१. **चौबीस ठाणा चौपई—साह लोहट** । पत्र संख्या-६२ । साइज-११३/४×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-सं० १७३६ मंगसिर सुदी ५ । लेखन काल-सं० १७६३ फाल्गुण सुदी १४ शाके १६२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२७ ।

विशेष—कपूरचन्द ने टोंक में प्रतिलिपि की थी । प्रशस्ति में लोहट का पूर्ण परिचय है ।

रचना चौपई छन्द में है जिनकी संख्या १३०० है । साह लोहट अच्छे कवि थे जो श्री धर्मा के पुत्र थे । पं० लक्ष्मीदास के आग्रह से इस ग्रंथ की रचना की गयी थी । भाषा सरल है ।

प्रारंभ—श्री जिन नेमि जिनंदचंद वंदिय आनंद मन ।
सिध सुध अकलंक ध्यंक्र सर मरि मयंक तन ॥
ए अष्टादश दोष रहत उन अभ्रत कोइय ।
ए गुण रत्न प्रकास सुजस जग उन मजोइय ॥
ए ज्ञान वहै यमृत सवै इवै साति वहै सीतघर ।
ए जीव स्वरूप दिखाय दे वहै लखावै लोक वर ॥

अंतिम—बुध सज्जन सब ते अरदास, लखि चौपई करोमत हासि ।
इनकी पारन कोऊलही, मैं मोरी मति साइ कही ॥१८५॥

लाख पचीस निन्याणव कोडि एक अब बुध लीज्यो जोडि ।
सो रचना लख ज्योत लाय । अंतरग कहे अरु बनाय ॥१८६॥

८६२. जखड़ो—पत्र संख्या-३ । साइज-११¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

८६३. जीतकल्पावचूरि—पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६२ ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण भी दिया हुआ है ।

८६४. दस्तूर मालिका-वंशीधर । पत्र संख्या ६ । साइज १०×७ । भाषा-हिन्दी । विषय-अर्थशास्त्र । रचना काल सं० १७६५ । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२८० ।

विशेष—इसमें व्यापार संबंधी दस्तूर दिये हुए हैं ।

प्रारंभ— जो भरत गनपति चातें मैं भरत जे लोइ ।
गुन वंदत इकदंत के सुर मुनि जन सब कोइ ॥ १ ॥
हीब अक चक धुज पग पर प्रय पाप प्रसाद ।
बंसीधर वरननि किगौ सुनत होय यहलाद ॥ २ ॥
जदि यदुनी लेखे घनै लेखे के करतार ।
भटकत बिनि दस्तूर है भटकत बारबार ॥ ३ ॥
सुध पंथ जो जनिरिगें पहुंचहि मजल उताल ।
रहिबीना बिसराइ है संकट वंकट जाल ॥ ४ ॥
पातसाहि आलम अमिल सालिम प्रबल प्रताप ।
आलम मे जाको सबै घर घर जापत जाप ॥ ५ ॥
छत्र साल भुवपाल को राजन राज विसाल ।
सकल हिन्दु उग जाल में मनौ इन्द्रदुत जाल ॥ ६ ॥
ताके अंता सोमिजे सकतसिंघ बलवान ।
उममहैना रव हके नंद दीह दलवान ॥ ७ ॥
सहर सकतपुर राज ही सब समाज सब ठौर ।
परम धरम सुकरन जहा सबै जगत सिर मौर ॥ ८ ॥
संवत सत्रासैका पैसठ परम पुनीत
करी बरननि यहि ग्रन्थ को कइ चलन करि मीत ॥ ९ ॥

अथ कपड़ा खरीद को दस्तूर —

जिते रुपैया मोल को गज प्रत जो पट लेह ।

गिरह एक आना तिते लेख लिखारी देह ॥ १० ॥

आना ऊपर हौय गज प्रति रुपिया अंक ।

तीन दाम अठ अंश बढ ग्रह प्रति लिखौ निसंक ॥ ११ ॥

इसमें कुल १४३ तक पद्य है । प्रति अपूर्ण है ।

८६५. **नख शिख वर्णन** — पत्र संख्या–६ से १६ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–शृंगार रस । रचना काल–× । लेखनकाल–सं० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ ।

विशेष—बखतराम साह ने लिखी थी ।

८६६. **नित्य पूजा पाठ संग्रह** । पत्र संख्या–१० । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०५ ।

८६७. **पत्रिका**—पत्र संख्या–१ ।साइज–× । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । विषय–प्रतिष्ठा का वर्णन । रचना काल–× । लेखनकाल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६१

विशेष—सं० १६२१ में जयपुर में होने वाले पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की निमंत्रण पत्रिका है ।

८६८. **पद संग्रह – जौंहरीलाल** । पत्र संख्या–२४ । साइज–१०½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पद । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१२ ।

विशेष—२४ पदों का संग्रह है ।

८६९. **पन्नाशाहजादा की बात**—पत्र संख्या–२० । साइज–६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६० आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५ ।

विशेष—श्राविका कुशला ने बाई केशर के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२० से आगे के पत्र पानी में भीगे हुए हैं । इनके अतिरिक्त मुख्य पाठ ये हैं—

पद	हरीसिंह	
सुमति कुमति का गीत	बिनोदीलाल	१८७२
जोगीरासा	जिणदास	—

८७०. **परमात्म प्रकाश—योगीन्द्रदेव** । पत्र संख्या–५ से १४ । साइज–११½×५ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५६७ चैत्र सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६६ ।

विशेष—ईंदर के दुर्ग में लेखक डूंगर ने प्रतिलिपि की।

अंत में यह भी लिखा है:—श्रीमूलसंघे श्री मत् हर्ष सुकीर्ति नं पुस्तक मिदं ॥ वसुपुरे ॥

८७१. पल्य विधान पूजा—रत्न नंदि । पत्र संख्या–६ । साइज–१०३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२११ ।

८७२. पाठ संग्रह—पत्र संख्या–६१ । साइज–१२×५ इंच । भाषा–संस्कृत–प्राकृत । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१७ ।

विशेष - आशाधर विरचित प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है।

८७३. पाठ संग्रह—पत्र संख्या–२० । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८० ।

विशेष—इष्ट छत्तीसी, एकीभाव, स्तोत्र भक्तामर स्तोत्र, निर्वाणकांड, परंज्योति, कल्याण मन्दिर और विषापहार स्तोत्र हैं।

८७४. पाठ संग्रह—भगवतीदास । पत्र संख्या–३ । साइज–१०×६१/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मूढाष्टक वर्णन—
सम्यक्त्व पच्चीसी—
वैराग्य पच्चीसी— र० का० सं० १७५० ।

८७५. पाठ संग्रह—पत्र संख्या–२५ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, सहस्र नाम;तथा तत्वार्थ सूत्र का संग्रह है।

८७६. पाठ संग्रह—पत्र संख्या–१० । साइज–८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । लेखन काल– । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६६ ।

विशेष—सास बहू का झगडा आदि पाठों का संग्रह है।

८७७. बनारसी विलास—बनारसीदास । पत्र संख्या–७ से ८७ । साइज–११३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–संग्रह । रचना काल–× । संग्रह काल–१७०१ । लेखन काल–सं० १७०८ माघ सुदी ६ । अपूर्ण वेष्टन नं० ७३६ ।

विशेष—सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ के २१ पत्र फिर लिखवाये गये हैं।

८७८. प्रति नं० २। पत्र संख्या-१३७। साइज-१०½×५ इन्च। लेखन काल-सं० १७०७ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६३।

विशेष—३ प्रतियां और हैं।

८७९. बुधजन विलास—बुधजन। पत्र संख्या-११६। साइज-१०½×७½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२२।

८८०. मजलसराय की चिट्ठी—पत्र संख्या-२१। साइज-६×४ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-यात्रा वर्णन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८४७ भादवा सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६४।

विशेष—मजलसराय पानीपत वाले की चिट्ठी है। चिट्ठी के अन्त में पदों का संग्रह भी है।

८८१. रागमाला—पत्र संख्या-९। साइज-९½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-संगीत शास्त्र रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९०६।

८८२. लघु क्षेत्र समास—पत्र संख्या-४६। साइज-९½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-×। लेखनकाल-×। पूर्ण। जीर्ण। वेष्टन नं० ११८८।

विशेष—मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा में है जो रत्नशेखर कृत है। यह इसकी टीका है।

८८३. लीलावती भाषा—पत्र संख्या-१ से २४। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३४।

८८४. वर्द्धमानचरित्र टिप्पण—प। संख्या-३८ से ५१। साइज-१०½×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १४८१ आसोज सुदी १०। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२६३।

विशेष—वर्द्धमानचरित्र संस्कृत टिप्पण। यह टिप्पण जयमित्रहल के वड्ढमाण कव्व (अपभ्रंश) का संस्कृत टिप्पण है। टिप्पण का अन्तिम भाग ही अवशिष्ट है।

८८५. व्यसनराजवर्णन—टेकचन्द। पत्र संख्या-१८। साइज-१२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-विविध। रचना काल-सं० १८२७। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८७४।

विशेष—सप्त व्यसनों का वर्णन है पद्य संख्या २५६ है।

८८६. श्रावक धर्म वर्णन—पत्र संख्या-१०। साइज-४½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विशेष-आचार शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२२३।

विशेष—गुटका साइज है।

८८७. सज्झाय—विजयभद्र । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आनंद विमल सूरि की सज्झाय भी दी हुई है ।

८८८. साधर्मी भाई रायमल्लजी की चिट्ठी—रायमल्ल । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रचना काल-सं० १८२१ माह बुदी ६ । लेखन काल-सं० १८२१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०८ ।

विशेष—रायमल्लजी के हाथ की चिट्ठी है ।

८८९. शालिभद्र सज्झाय—मुनि लावंन स्वामी । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७२६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७० ।

विशेष—रामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

८९० हरिवंश पुराण—महाकवि धवल । पत्र संख्या-२१६ से ३३६ । साइज-१२×४½ इन्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन नं० १२५० ।

जयपुर में ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक कलात्मक पुट्ठा जिस पर चौबीस तीर्थङ्करों के रंगीन चित्र दिये हुये हैं।

★ ★ ★
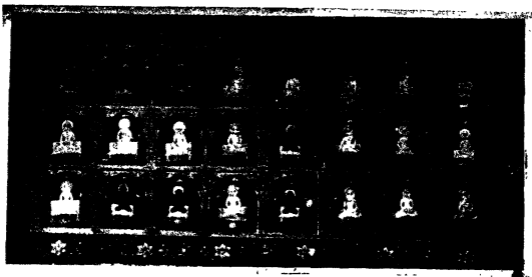
जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत यशोधर चरित्र के सचित्र प्रति का एक चित्र।

श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियों

के

ग्रन्थ

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१ आगमसार—मुनि देवचंद्र । पत्र संख्या-४६ । साइज-१०×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-सं० १७७६ । लेखन काल-सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०४ ।

प्रारम्भ—अथ भव्य जीव नै प्रतिबोधवा निमित्तै मोक्ष मार्गनी वचनिका कहै छै । तिहां प्रथम जीव अनादि काल नों मिथ्याती थों । काल लवधि पामी नै तीन करण करै छै प्रथम यथाप्रमति करण १ बीजौ अपूरव करण २ तीजौ अनिवृत्ति करण ३ तिहां यथा प्रवृत्ति कहै छै ।

अन्तिम—संवत् सतर छिहोतरै मन सुद्ध फागुण मास ।
मोटै कोट मरोट में वसतां सुख चौमास ॥५॥
सुविहत खतर गच्छ सुथिर खुगवर जिणचंद्र सूर ।
पुण्य प्रधान प्रधान गुण पाठक गुणेय भूर ॥६॥
तास सीस पाठक प्रवर जिन मत परमत जाण ।
भविक कमल प्रतिबोधवा राज सार गुर भाण ॥७॥
ज्ञान धरम पाठक प्रवर खम दम गुणे आगाह ।
राज हंस गुरु सकति सहज न करै सराह ॥८॥
तास सीस आगम रूची जैन धर्म को दास ।
देवचंद आनंद मय कीनौ ग्रन्थ प्रकाश ॥९॥
आगम सारोद्धार यह प्राकृत संस्कृत रूप ।
ग्रंथ कियो देवचंद मुनि ज्ञानामृत रस कूप ॥१०॥
धर्मामृत जिन धर्म रति भविजन समकित वंत ।
सुद्ध अमर पदउ सवण ग्रंथ कियौ गुण वंत ॥११॥
तत्व ज्ञान मय ग्रंथ यह जो रचै बालाबोध ।
निज पर सत्ता सब लखै श्रोता लहै सुबोध ॥१२॥

ता कारण देवचंद कीनो भाषा ग्रंथ ।
भणसी गुणसी जे भविक लहसी ते सिव पंथ ॥१३॥
कथक शुद्ध श्रोता रूचो मिल ज्यो ए संयोग ।
तत्व ज्ञान श्रद्धा सहित बल काया नीरोग ॥१४॥
परमागम सुं राचज्यो लहस्यो परमानंद ।
धर्म राग गुरु धर्म सुं धरि ज्यौं ए सुख वृन्द ॥१५॥
ग्रंथ कियौ मनरंग सुं सित पक्ष फागुण मास ।
भौमवार अरु तीज तिथि सफल फली मन आस ॥१६॥

इति श्री आगमसार ग्रंथ संपूर्ण । स० १७६६ वर्षे मार्गसीस बुदी १२ भृगुवासरे वेधमनगरमध्ये रावत देवीसिंह राज्ये लिपि कृतं भट्ट अखैराम पठनार्थ । बाई माणा श्री ।

२. **आश्रवत्रिभंगी**............। पत्र संख्या–११० । साइज–१२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ ।

विशेष—पत्र २० से ८५ तक सत्ता त्रिभंगी तथा इससे आगे भाव त्रिभंगी हैं । गुणस्थान तथा मार्गणा का वर्णन है ।

३. **कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या–२१ । साइज–११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल– । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

४. **कर्मप्रकृति वृत्ति—सुमतिकीर्त्ति** । पत्र संख्या–४६ । साइज–११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५५ वैसाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७८ ।

विशेष—जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय में पं० आनन्दराम के शिष्य श्री चंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५. **गुणस्थान चर्चा**—पत्र संख्या–११० । साइज–१२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१३ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से हैं ।

६. **गुणस्थान चर्चा**...........। पत्र संख्या–४४ । साइज–१२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१४ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से वर्णन है ।

७. **गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या–४२ । साइज–१०×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६५ ।

विशेष—संस्कृत हिन्दी टीका सहित है । केवल कर्म प्रकृति का वर्णन है ।

८. **गोमट्टसार जीवकाण्ड भाषा—पं० टोडरमल** । पत्र संख्या–१६६ । साइज–१३×८ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १८१८ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

९. **गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—हेमराज** । पत्र संख्या–१०१ । साइज–११×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७२० मंगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—दीना ने रामपुर में प्रतिलिपि की थी ।
एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है । इस प्रति के पुट्ठे पर सुन्दर चित्रकारी है ।

१०. **चरचा संग्रह**·········। पत्र संख्या–१५ । साइज–१०३/४×५३/४ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चर्चा (धर्म) । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

११. **चर्चाशतक—द्यानतरायजी** । पत्र संख्या–२८ । साइज–८×६ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चर्चा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २ प्रतियां और हैं ।

१२. **चर्चा समाधान–भूधरदासजी** । पत्र संख्या–१११ । साइज–१०३/४×५३/४ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–सं० १८०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १८१३ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—यति निहालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

१३. **चौबीस ठाणा चर्चा - नेमिचंद्राचार्य** । पत्र संख्या–३४ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७४१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० १८६ ।

विशेष—जहानाबाद मध्ये राजा के बाजार में पंडित माया राम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई । तीन प्रतियां और हैं । ये संस्कृत टब्बा टीका सहित हैं ।

१४. **चौबीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्र संख्या ८ । साइज–११३/४×५ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—पत्र संख्या ४ से आगे कलियुग की बीनती है भाषा–हिन्दी तथा ब्रह्मदेव कृत है

१५. ज्ञान क्रिया संवाद—पत्र संख्या-३ । साइज-१०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१७ ।

विशेष—श्लोक संख्या-१५ है । तृतीय पत्र पर धर्मचर्चा भी दी हुई है ।

१६ तत्त्वसार दोहा—भट्टारक शुभचंद्र । पत्र संख्या-५ । साइज-११×८½ इञ्च । भाषा-गुजराती लिपि देवनागरी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३६५ ।

प्रारम्भ—समय सार रस सांभलो, रे समरवि श्री समिसार ।
समय सार सुख सिद्धनी, सीभि सुक्ख विचारं ॥१॥
अप्पा अप्पि आपमु ं रे आपया हेतिं आप ।
आप निमित्त ं आपणो ध्यातु ं रहित सन्ताप ॥२॥
च्यार प्राण प्रीणित सदा रे निश्चय न्याय वियाण ।
सत्ता सुख वर वोधमि चेतना चुव प्राण ॥३॥
च्यार प्राण व्यवहार थी रे दश दीसि एह भेद ।
इ ंदिय बल उस्सास सु ं आयु तणा बहु छेद ॥४॥

अन्तिम—मणो मनीयण २ मक्तिभर भारि चेता चिद्रूप ।
चिंतता चित्ति चेतन चतुर भाव आवए ॥
सातु धात देहवेगलो अमल सकल सु विमल मावए ।
आत्म सरुप परुवण पटज्यौ पावन संत ।
ध्याजो ध्यानि ध्येयस्यु ध्याता थार महंत ॥६०॥
सात शिव कर २
ज्ञान निज भाव शुद्ध चिदानंद चींतती मूकी माया मोह गेह देहए ।
सिद्ध तणा सुखजि मल हरहि आत्मा भावि शुम ए हए ॥
श्री विजय कीर्ति गुरु मनि धरी ध्याउं शुद्ध चिद्रूप ।
भट्टारक श्री शुभचंद्र भणि था तु शुद्ध सरूप ॥६१॥

॥ इति तत्वसार दूहा ॥

१७. तत्वार्थरत्नप्रभाकर—भट्टारक प्रभाचंद्र देव । पत्र संख्या-१३६ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७७ ।

विशेष—यह तत्वार्थ सूत्र की टीका है । सरल संस्कृत में है । कहीं २ हिन्दी भी दृष्ट होती है । ६ अध्याय तक है ।

अध्याय ६ सूत्र-३४: हिंसानुरते-रौद्र ध्यानं कथयति तद्यथा प्रकार ४ भवन्ति । हिंसानंद कोर्थ । जीव घात कौ करइ । सूली चोक सती होय, संग्राम होय तजइ आनन्दु सुखु मानइ त हिंसानन्दु होइ । रौद्र ध्यान प्रथम पद नरक कारण इति ज्ञात्वा । हिंसानंद न कर्तव्य: .

इति तत्वार्थ रत्नप्रभाकर ग्रन्थे सर्वार्थसिद्धौ मुनि श्री धर्मचंद्र शिष्य प्रभाचन्द्र देव विरचिते ब्रह्म जैतु साधु हावदेव भावना पठणनिमित्ते संवरनिर्जरा पदार्थकथन मनुष्यत्वेन नवं सूत्र विचारप्रकरणं ।

बीचमें २ से ७ पत्र भी नही हैं ।

१८. तत्वार्थसार—अमृतचंद्र सूरि । पत्र संख्या-२५ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेख० काल-× । पूर्ण । वेष्टन २१४ ।

प्रति प्राचीन है ।

१६. तत्वार्थसूत्र—उमास्वाति । पत्र संख्या-१४८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-५० । साइज-८×५½ इञ्च । लेखन काल-सं० १८७६ चैत्र सुदी ६ पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—सूत्रों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । चार प्रतियां और हैं किंतु वे मूल मात्र हैं ।

२१. तत्वार्थसूत्र टीका (टब्बा)········। पत्र संख्या-२५ । साइज-१३×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १११२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—लाला रतनलाल ने करवा शमसाबाद में प्रतिलिपि की ।

२२. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-४६ । साइज-१२½×८ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ३६७ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३. तत्वार्थसूत्र भाषा टीका - कनककीर्त्ति । पत्र संख्या-१४१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

विशेष—कनककीर्ति ने जोशी जगन्नाथ से लिपि कराई ।

उमा स्वाति रचित तत्वार्थ सूत्र पर श्रुतसागरी टीका की हिन्दी व्याख्या है । एक प्रति और है ।

२४ त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४१ ।

विशेष – एक प्रति और है।

२५ **त्रिलोकसारसंदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य।** पत्र संख्या–६३। साइज–११$\frac{1}{4}$×८$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८८८ पौष सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५।

विशेष—जयपुर में कंवक ज्ञानजी ने महात्मा दयाचंद से प्रतिलिपि कराई थी।

२६. **द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य।** पत्र संख्या–६। साइज–११$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण वेष्टन नं० १७३।

विशेष—४ प्रतियां और हैं।

२७. **प्रति नं० ७।** पत्र संख्या–५७। साइज–१०×४ इंच। लेखन काल–सं० १७५० फागुन सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० २६४।

विशेष—हिन्दी और संस्कृत में भी अर्थ दिया है।

२८. **द्रव्यसंग्रह टीका—ब्रह्मदेव।** पत्र संख्या–१११। साइज–११×३$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल सं० १४१६ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १७६।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १४१६ वर्षे भादवा सुदी १३ गुरौ दिनें श्रीमधोगिनीपुरे सकल राज्य शिरोमुकुट माणिक्य मरीचिकृत चरण-कमल पाद पीठस्य श्रीमत् पेरोज साहे सकल साम्राज्यधुरां बिभ्राणस्य समये वर्त्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे भट्टारक रत्नकीर्ति कब्ब कयात्व मुर्वीकुर्वाणां श्री प्रभाचन्द्राणां तस्य शिष्य ब्रह्म नाथू पठनार्थं अंग्रोतकान्वये गोहिल गोत्रे मरथल वास्तव्य परम श्रावक साधू साउ भार्या बीरो तयो पुत्र साधु उधम भर्या बालही तस्य पुत्र कुलधर भार्या पाथधरही तस्य पुत्र मल्हपाली भार्या लोघा ही मरहपाल लिखा पितं कर्म क्षयार्थं। कनलदेव पंडित लिखितं। शुभं भवतु।

२९. **द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी।** पत्र संख्या–२६। साइज–१२×६ इंच। भाषा–हिन्दी गुजराती लिपि देवनागरी। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८४२ फागुन सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० १८।

विशेष—पं० केशरीसिंह ने अलवर में प्रतिलिपि की थी।

३०. **नामकर्म प्रकृतियों का वर्णन—**पत्र संख्या–१६। साइज–१०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३११।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

३१. **पंचास्तिकाय टीका मूलकर्ता–आ० कुन्दकुन्द। टीककार अमृतचंद सूरि।** पत्र संख्या–६५। साइज–१२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५४।

विशेष – २ प्रतियां और हैं।

३२. पंचास्तिकाय भाषा टीका – पांडे हेमराज। पत्र संख्या–१११। साइज१०½×५½ इंच। भाषा–प्राकृत हिन्दी गद्य। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल– सं० १७११ पौष सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४।

विशेष—रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३. पाक्षिक सूत्र—पत्र संख्या–६। साइज–१½×३½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–×, पूर्ण। वेष्टन नं० ४२४।

३४ भगवती सूत्र—पत्र संख्या–५७८ से ८५४। साइज १३×६½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८६४ आसोज सुदी १। अपूर्ण। वेष्टन नं० १६२।

विशेष—टब्बा टीका गुजराती, लिपि हिन्दी में है। निहालचंद के शिष्य तुलसा ने किशनगढ़ नगर में प्रतिलिपि की थी।

३५. भावसंग्रह—पंडित वामदेव। पत्र संख्या–३४। साइज–११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८५८ पौष सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६६।

विशेष—सवाई जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय (हसी ठोलियों के मन्दिर में) विबुध आनन्दराम के शिष्य मोचंद्र ने प्रतिलिपि की थी।

विशेष—एक प्रति और है।

३६. भावसंग्रह—देवसेन। पत्र संख्या–२०। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०।

३७. भावसंग्रह—श्रुतमुनि। पत्र संख्या–१३। साइज–११½×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १५१६ माघ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० २८६।

विशेष—ब्रह्म हरिदास ने प्रतिलिपि की। ३ प्रतियां और हैं।

३८. रत्नसंचय—विनयराज गणि। पत्र संख्या–१४। साइज–१०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७७० कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० २०७।

श्री विद्यासागर सूरि के शिष्य लक्ष्मीसागर गणि ने प्रतिलिपि की थी। पं० जीवा कासलीवाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३९. लब्धिसार टीका–माधवचंद्र त्रैविद्यदेव। पत्र संख्या–७७। साइज–११×७½ इञ्च। भाषा–सिद्धान्त। रचना काल–×। लेखन काल×–सं० १८८४ फागुण सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १८२।

४०. **विशेष सत्ता त्रिभंगी**.........। पत्र संख्या–२६ । साइज–१२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २०३ ।

४१ **सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या–२२८ । साइज–१०×८½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५२ ।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं तथा ग्रंथ (श्लोक) संख्या ४८१६ है । २ प्रतियां और हैं ।

४२ **सिद्धान्तसार संग्रह—आचार्य नरेन्द्रसेन** । पत्र संख्या–६६ । साइज–१२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण वेष्टन नं० २५ ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पंडित रामचन्द्र ने माधवसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या २४१९ । एक प्रति और है ।

विषय–धर्म एवं आचार शास्त्र

४३. **अनुभव प्रकाश—दीपचंद कासलीवाल** । पत्र संख्या–५५ । साइज–८½×७½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १७७१ । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० ११६ ।

४४. **आचार शास्त्र** ....। पत्र संख्या–८८ । साइज–११×४ । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन का–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

४५. **आचारसार—वीरनंदि** । पत्र संख्या–१०८ । साइज–११½×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन नं० २५१ ।

विशेष—कुल १२ अधिकार हैं। प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हो चुके हैं।

४६. उनतीसबोल दंडक—पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४½ इंच। भाषा-हिंदी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६५।

४७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचंद। पत्र संख्या-४१। साइज-१०½×५½ इंच। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १९१२ आषाढ सुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६।

विशेष—मूलग्रंथ की गाथाएँ भी दी हुई हैं।

४८. उपासकाध्यन—आ० वसुनंदि। पत्र संख्या-५५। साइज-११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८०८ भादवा सुदी ६। पूर्ण वेष्टन नं० ५४।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है। ग्रंथ का दूसरा नाम वसुनन्दि श्रावकाचार भी है। एक प्रति और है।

४९. प्रति नं० २। पत्र संख्या-३८। साइज-८½×४½ इन्च। लेखन काल-सं० १५६५ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४४।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५६५ वर्षे चैत्र सुदी ५ आदित्यवारे श्रीकुरुजांगल देशे श्री सुवर्णपथ सुमदुर्गे पातिसाह हम्माऊराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे उभय भाषा प्रवीण भट्टारक श्री सहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे चित्रकलाकमलिनीविकाशनैकभास्कर भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैककेसरि, भव्यांबुजविकाशनैकमार्त्तण्ड भट्टा० श्री गुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये पावू वंशे गर्गगोत्रे गोधानह वास्तव्यं अनेक गुण विराजमानु साधु धारणी तस्य समुद्रइव गंभीरान् मेरवद्धीरान् चतुर्विध दानवितरणैक श्रेयांसावतारान् सरस्वती कंठा कंठितान् राज्यसभा-जैनसभा श्रृंगारहारान् परोपकारी पंडितु साधु गोपी तेन इदं श्रावकाचार लिखापितं। कर्म क्षयार्थं।

पत्र नं० ३७ के कोने पर एक म्होर लगी हुई है जिसमें उर्दू में चरनदास मूलचन्द ········· पंडित लिखा है। ग्रंथ में कुछ परिचय ग्रन्थ कर्त्ता का भी दिया हुआ है।

५०. एषणा दोष (छियालीस दोष)—भैया भगवतीदास। पत्र संख्या-७। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४।

५१. क्रियाकोष भाषा—दौलतराम। पत्र संख्या-८५। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-आचार। रचना काल-सं० १७९५ भादवा सुदी १२। लेखन काल-सं० १८६४ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेष एक प्रति और है।

५२. ग्यारह प्रतिमा वर्णन । पत्र सख्या–२ । साइज–$\frac{1}{5}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण वेष्टन न० ६५ ।

५३ चर्चासागर भाषा—पत्र सख्या–२०० । साइज–१३$\frac{1}{2}$×८ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६१ ।

विशेष—१०० से आगे पत्र नहीं है । दो तीन तरह की लिपियां हैं

५४ चौबीसदण्डक—दौलतराम । पत्र सख्या–८ । साइज ८×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ५१२ ।

विशेष—६७ पद्य हैं । दो प्रतियां और हैं ।

५५ जिनपालित मुनि स्वाध्याय—विमल हर्ष वाचक । पत्र सख्या–२ । साइज–१०×४ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न [illegible]३

विशेष—

प्रारम्भ—सिरि पास सखसर अलवेसर भगवत ।
　　पाय प्रणमि जिण पालित मुनि सत ।१॥

अंतिम—सत एहनीय परिजय छडय, अवविरुआ विषयविनाडी ।
　　इह परभव ने थाइ सुखिआ तेहनी कीर्ति गवाणी ॥
　　जगगुरु हीर पट्ट सोहाकार श्री विजयसेन सूरिंद ।
　　श्री विमल हर्ष वाचक तउ सेवक भाव कहइ सानद ॥१६॥

प्रति प्राचीन है ।

५६ त्रिवर्णाचार—सोमसेन । पत्र सख्या–१२४ । साइज–११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । रचना काल–स० १६६७ । लेखन काल–स० १६८२ बसाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ९८७ ।

विशेष—पाटलिपुत्र (पटना) में प्रतिलिपि हुई । कुल १३ अध्याय है । ग्रन्था ग्रन्थ स० ७ ० है एक प्रति और है ।

५७ धर्म परीक्षा—हरिषेण । पत्र सख्या २ से ७६ । साइज–११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । विषय–धर्म । भाषा–अपभ्रंश । रचना काल–स० १०४४ । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

५८. धर्म परीक्षा—अमितगति । पत्र सख्या– ५ । साइज–१२×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–स० १०७० । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

५९. धर्मपरीक्षा भाषा । पत्र संख्या–३० । साइज–११$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन न० १०० ।

६०. धर्मरत्नाकर—जयसेन । पत्र संख्या–१२६ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८१० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

६१. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र संख्या–८ । साइज–११½×५½ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२८ ।

६२. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र संख्या–२१ । साइज–११½×५½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–सं० १५४१ कार्तिक बुदी १३ । लेखन काल–सं० १८३५ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—कुल दश अधिकार हैं । ग्रंथ १४४० श्लोक प्रमाण है । ग्रंथकार प्रशस्ति विस्तृत है पूर्ण परिचय दिया हुआ है । श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

६३ धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या–३५ । साइज–६×६ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८७३ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

६४. नास्तिकवाद—पत्र संख्या–२ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

६५. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्र संख्या–१२७ । साइज–११×५½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१८ ।

६६. पचससारस्वरूपनिरूपण—पत्र संख्या–६ । साइज–१०×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७ पात्रकेसरीस्तवन—वीरभद्र । पत्र संख्या–१६ । साइज–६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८४१ माघ सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

विशेष—पत्र २ व ४ नहीं हैं । मालपुरा में भगवानदास के पठनार्थ पेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६८. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचंद्र सूरि । पत्र संख्या–१०६ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका सुन्दर एवं सरल है ।

६९. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या–१०४ । साइज–१३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । रचना काल–सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । लेखन काल–सं० १९५६ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—चिमनलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी। २ प्रतियां और हैं।

७०. **पुरुषार्थानुशासन—गोविन्द** । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३ ।

विशेष—विस्तृत लेखक प्रशस्ति दी हुई है। श्रीचंद ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

७१. **पुष्पमाला—हेमचंद्र सूरि** । । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ३८५ ।

विशेष—कहीं २ गुजराती भाषा में अर्थ दिया है जोकि सं० १५८६ का लिखा हुआ है प्रति प्राचीन है। इसमें कुल ५०५ गाथाऐं दी हुई हैं। म० वाछा ने प्रतिलिपि की थी।

पत्र संख्या-२ गुजराती गद्य:—

रति सुन्दरी राजपुत्री नंदनपुर नइ राजाइ परिणी। अतिरूप पात्र सांभली हस्तिनपुर नौ राजाइ प्राण लीधी तीणइ इम मनादिक अशुचि पणउ दिखाला राजा प्रतिबोधउ साल राखिउ रिद्धि सुन्दरी श्रेष्टि श्री व्यवहारि पुत्र परिणी समुद्र चढिउ प्रवहण भागउ। काष्ट प्रयोगि शून्य द्वीपि पहुता। बीजा प्रवहणि चढ्या रूपि मोहि तिणि भत्तरि सलइ माहिला खिउ प्राचीने इह प्रवन्यनः।

७२. **प्रश्नोत्तरोपासकाचार—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या-७६ से १४४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल सं० १७५३ मंगसिर सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७४ ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी। दो प्रतियां और हैं।

७३. **प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—बुलाकीदास** । पत्र संख्या-१३८ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १७४७ बैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १६५५ सावन सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ ।

विशेष—चिमनलाल बडजात्या ने अजमेर में स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७४. **प्रायश्चितसमुच्चय चूलिका—श्री नंदिगुरु** । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१८ ।

विशेष—लालचंद टोंग्या ने प्रतिलिपि करवाकर शान्तिनाथ चैत्यालय में चढाई। श्वेताम्बर मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी।

७५. **प्रायश्चितसंग्रह—अकलंक देव** । पत्र संख्या ८ । साइज-८½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

७६. बाईसपरीषह—पत्र संख्या–९। साइज–८×६½ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२१।

७७ भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या–५७४। साइज–११×८ इन्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १९०८ भादवा सुदी २। लेखन काल–सं० १९४१ आषाढ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५।

विशेष—श्लोक संख्या २११६७। एक प्रति और है।

७८. मिथ्यात्व खंडन—बखतराम साह। पत्र संख्या–८९। साइज–८¾×६ इन्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म (नाटक)। रचना काल–सं० १८२१ पौष सुदी ५। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४८।

पद्य संख्या–१४२८ दिया हुआ है। एक प्रति और है।

७९. मिथ्यात्व निषेध—बनारसीदास। पत्र संख्या–२१। साइज–१०×७ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १९०७ सावन सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० १५०।

विशेष—१८ पत्र से सूम सूमनी कथा चानतराय कृत दी हुई है।

८०. मोक्षमार्गप्रकाश—पं० टोडरमल। पत्र संख्या–२७०। साइज–११×८ इन्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १९४८ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

८१. रत्नकरंडश्रावकाचार–पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या–४२०। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १९२० चैत्र सुदी १४। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८१।

विशेष—पं० सदासुखजी के हाथ के खरडे से प्रतिलिपि की गयी है।

८२. रत्नकरंडश्रावकाचार—थानजी। पत्र संख्या–२१। साइज–११¾×५½ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १८२१ चैत्र सुदी ५। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० २५१।

विशेष—हरदेव के मन्दिर में खिवाली नगर में फूलचंद की प्रेरणा से ग्रंथ रचना हुई थी।

८३. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या–१८। साइज–८×४¾ इन्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७९५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८७।

विशेष—बसवा नगर में महात्मा गोरधन ने प्रतिलिपि की थी। गाथा सं० १०० है। एक प्रति और है।

८४. लाटीसंहिता (श्रावकाचार)—राजमल्ल। पत्र संख्या–११। साइज–१२×५ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १६४१। लेखन काल–सं० १८५१ आषाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० २८२।

विशेष—सं० १६४१ में बादशाह अकबर के शासनकाल में श्रावक इदा के पुत्र फाजने ने ग्रंथ रचना कराई थी।

८५. षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकीर्त्ति। पत्र संख्या–१२०। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १२४७ भादवा सुदी १०। लेखन काल–सं० १६४१ आसौज सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३८।

विशेष—१४ संधियां हैं। लेखक का परिचय दिया हुआ है।

८६. षट्कर्मोपदेशमाला—भट्टारक श्री सकलभूषण। पत्र संख्या–१५०। साइज–१०३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १६२७ सावन सुदी ६। लेखन काल–सं० १६४४। पूर्ण। वेष्टन नं० २०३।

विशेष:—संवत् १६४४ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवाम्यां तिथौ रविवासरे हस्तनक्षत्रे सिधियोगे श्री रणथंभ दुर्गे राजाधिराजराजाश्रीजगन्नाथराज्ये प्रवर्तमाने श्री मल्लिनाथचैत्यालय श्री काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जयसेणिदेवाः। तदाम्नाये अग्रवालान्वये गोयलगोत्रे देल्याना वडि साहजी पदारथ तस्य भार्या भावो। तस्य पुत्र ५। प्रथम पुत्र साह श्री भवानीदास तस्य भार्या गोमा तस्य पुत्र साह खेमचन्द तस्य भार्या खाजी तस्य पुत्र द्वयः। प्रथम पुत्र मोहनदास तस्य भार्या कौंजौ। द्वितीय पुत्र चिरंजीव धूडो। द्वितीय पुत्र साहथान तृतीय पुत्र साह बीरदास। चतुर्थ पुत्र साह श्री रामदास तस्य भार्या माण्योती तस्य पुत्र त्रयः। प्रथम पुत्र साह [illegible] द्वितीय पुत्र चिरंजीव साह चोखा तस्य भार्या पार्वती तस्य पुत्र चिरंजीव वेकसी तृतीय पुत्र साह नेतसी। पंचमो पुत्र रमीला। एतेषां मध्ये चतुर्विधि-दानवितरणकल्पवृक्ष साह चोखा तस्य भार्या पार्वती इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञानावर्णीकर्मनिमित्तं रत्नत्रयपुन्यनिमित्तं ज्ञानपात्राय [illegible] श्री रूपाचन्दये दत्तं ॥ इति ॥

८७. षोडशकारणभावना—पत्र संख्या-१६। साइज–११×५१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल-×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४२।

८८ षोडशकारणभावना व दशलक्षण धर्म—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र संख्या–११३। साइज–११×७१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३९।

८९. शिखरविलास—मनसुखराम। पत्र संख्या–६३। साइज–११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय–धर्म। रचना काल–सं० १८४५ आसोज सुदी १०। लेखन काल–सं० १८८६ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१।

विशेष:—शिखर महात्म्य में से वर्णन है। मनसुख [illegible] के शिष्य थे।

९० [illegible] ...... । पत्र संख्या [illegible]। साइज [illegible] इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १०[illegible] बैसाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० [illegible]।

विशेष:—राजनगर में प्रतिलिपि हुई थी। प्राग्वाट ज्ञातीय बाई अमरा ने लिखवाया था।

६१ श्रावकाचार—योगीन्द्रदेव। पत्र संख्या-१४। साइज-११½×५½ इन्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७१।

विशेष—दोहा संख्या २२१ है।

६२. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी। पत्र संख्या-३। साइज-११½×५½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८७।

६३. संबोधपंचासिका टीका—पत्र संख्या-१२। साइज-१०½×५½ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। वेष्टन नं० ३८८।

६४. संयमप्रवहण—मुनि मेघराज। पत्र संख्या-४। साइज-१०×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १६६१। लेखन काल-सं० १६८१ आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३१।

विशेष:—

प्रारम्भ दोहा:—रिसह जिणेसर जगतिलउ नाभि नरिंद मल्हार।
प्रथम नरेसर प्रथम जिन त्रिभोवन जन साधार ॥१॥
चक्री पंचम जाणीइ सोलमउ जिनराय।
शान्तिनाथ जगि शान्तिकर नर सुर प्रणमइ पाय ॥२॥

अन्तिम-राग धन्यासी—
गजपति दरिसणि अति आणंद।
श्रीराजचंद सूरीसर प्रतपउ जा ससि हु रविचंद ॥ ४६ ॥ आंकणी ॥
संयम प्रवहण मालिमगायउ नयर खम्भायत माहि ॥
संवत सोल अनइ इकसठई आणी अति उछाह ॥ गज० ॥
सरवण ऋषि गुरु साधु शिरोमणि, मुनि मेघराज तसु सीस ॥
गुण गजपति ना गावइ भावइ पहुचइ आस जगीस ॥ १५२ ॥

॥ इति श्री संयम प्रवहण संपूर्ण ॥

सुश्राविका पुन्यप्रभाविका धर्मधुनिर्वाहिका सम्यक्त्वमूलद्वादसव्रत कर्पूरपूरवासितोत्तमांगा श्राविकासंघ बाई पठनार्थम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे पुर्णिमादित्यवारे स्थंभ तीर्थे लिखितं ऋषि कल्याणेन।

श्लोक संख्या २०० है।

६५ सम्मेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त। पत्र संख्या–७८ | साइज–११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। रचना काल–सं० १८४५। लेखन काल–सं० १८४८। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१६।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

९६. सागारधर्मामृत—पं० आशाधर। पत्र संख्या–१८१। साइज–११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। रचना काल–सं० १२९६। लेखन काल–सं० १७८७। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०७।

विशेष—एक प्रति और है।

९७. सामायिक टीका—पत्र संख्या–३६। साइज–१२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत प्राकृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२१।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

९८. सामायिक पाठ—पत्र संख्या–१२। साइज–१०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३।

९९. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र संख्या–५३। साइज–११×५½ इन्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १९०१ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ६२।

विशेष—३ प्रति और है।

१००. सुदृष्टितरंगिणि—टेकचन्द। पत्र संख्या–४१७। साइज–११ ×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–सं० १८३८ सावन सुदी ११। लेखन काल–सं० १९६२ माघ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८६।

विशेष—४२ संधियां हैं। चंद्रलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

१०१ सूतक वर्णन—पत्र संख्या–२। साइज–९×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४७।

१०२. हितोपदेशएकोत्तरी—श्री रत्नहर्ष। पत्र संख्या–३। साइज–१०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५२।

विशेष—किशनविजय ने विक्रमपुर में प्रतिलिपि की थी। श्लोक संख्या ७१ है।

विषय—अध्यात्म एवं योग शास्त्र

१०३. अष्टपाहुड भाषा—जयचंद छाबड़ा । पत्र संख्या—१७८ । साइज—१२½×६½ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १६५० फागुन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

१०४. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या—३० । साइज—११×५½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १७६४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८६ ।

विशेष—वसवा नगर में श्री चंद्रप्रभ चैत्यालय में श्री खेमकरं के शिष्य त्रिलोकचंद ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०५. आत्मानुशासन टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—६५ । साइज—६×४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १९२६/१८२६ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८० ।

१०६. आत्मानुशासन भाषा टीका—पं० टोडरमल । पत्र संख्या—१०५ । साइज—१२×५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७९६ भादवा सुदी २ । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१ ।

विशेष—राजा की मंडी (आगरा) के मंदिर में महात्मा संभूराम ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०७. आराधनासार—देवसेन । पत्र संख्या—१३ । साइज—१०×५ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५१ ।

विशेष—एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

१०८. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र संख्या—१८ । साइज—१२½×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२ ।

१०९. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय । पत्र संख्या—७८ । साइज—११×५½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन नं० १० ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र तक संस्कृत में संकेत दिया हुआ है ।

११०. कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—पं० जयचंद छाबड़ा । पत्र संख्या—१४७ । साइज—११×७¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १८६३ सावन सुदी ३ । लेखन काल—सं० १९१४ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

१११   चारित्रपाहुड भाषा—पं० जयचंद छाबडा। पत्र संख्या-१५। साइज-१२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

११२   ज्ञानार्णव—शुभचन्द्र। पत्र संख्या-१७६। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१८। पूर्ण। वेष्टन नं० २८५।

विशेष—संवत् १७८२ में कुछ नवीन पत्र लिखे गये हैं। संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

प्रति-एक प्रति और है।

११३   दर्शनपाहुड—पं० जयचंद छाबडा। पत्र संख्या-२०। साइज-१२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०।

११४   द्वादशानुप्रेक्षा—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या-१९। साइज-१०¾×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चिंतन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८२ द्वि० वैसाख बुदी ७। अपूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—हिन्दी संस्कृत में छाया भी दी हुई है।

११५   द्वादशानुप्रेक्षा—आलू कवि। पत्र संख्या-१८। साइज-८½×४¾ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चिंतन। रचना काल-×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६५।

विशेष—बारह भावना के ३८ पद्य हैं। इसके अतिरिक्त निम्न हिन्दी पाठ और हैं—

(१) जखडी—हरीसिंह।

(२) पद (वंदू श्री अरहंत देव सारद नित सुमरण हृदय धरू)—हरीसिंह

(३) समाधि मरन—धानतराय।

(४) वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना—भूधरदास।

(५) बधावा-(बाजा बाजिया भला)

(६) बाईस परीषह।

रामलाल तेरा पंथी छाबडा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

११६   दोहाशतक—योगीन्द्र देव। पत्र संख्या-६। साइज-१½×८½ इन्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२७ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १२०।

विशेष—श्रीचंद्र ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

११७   नवतत्त्वबालावबोध-पत्र संख्या-३१। साइज-१०¾×४¾ इंच। भाषा-गुजराती हिन्दी। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८५ आसोज बुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १७५।

विशेष—हिम्मतराय उदयपुरिया ने प्रतिलिपि की थी

११८ परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र संख्या–२० । साइज–११½×५¾ इन्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७७४ फागुन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५० ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय में श्री उदयराम लक्ष्मीराम ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं । कुल दोहे ३४६ हैं । ० प्रति और हैं ।

११६. प्रति नं० २ । पत्र सख्या–१२३ । साइज–११×४½ इन्च । लेखन काल–सं० १४८६ पौष सुद ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसमें कुल ४५ अधिकार हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १४८६ वर्षे पौष सुदी ६ रवौदिने श्री गोपगिरौ तोमरवंशमहाराजाधिराजश्रीमद्डोंगरसीदेवराज्यप्रवर्तमान श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तद् शिष्य श्री पद्मकीर्तिदेवा: तस्य शिष्य श्री वादीन्द्रचूडामणी महासिद्धान्ती श्रीब्रह्म हीराकुधानामदेवा । अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्री गल्हा भार्या खेमा तयो. पुत्री मौणी एक पक्षा । द्वितीय पक्षा अग्रोतकान्वये गर्ग गोत्र साधु श्री खेमचरा भार्या हरो । तयापुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र देसलु, द्वितीय वील्हा, तृतीय आल्हा, चतुर्थ भरथा देसल भार्या रुपा. वील्हा भार्या नाथी साधु आल्हा भार्या धानी तयो पुत्राश्चत्वार, साधु श्री चद्रा भा० हरिचंद भा० रना, सा०, साल्हा । श्रीचद्र पुत्रमेवा स्वधर्मरत साधु श्री भर्था भार्या मौणा शीलशालिनी धर्म प्रभावनी रत्नत्रयपाराधिनी बाई जौणी आत्मकर्मक्षयार्थं इद परमात्मप्रकाश ग्रंथ लिखापित ।

इसमें ३४५ दोहा हैं । प्रथम पत्र नया लिखा गया हैं ।

१२०. प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सख्या–३३ । साइज–१०¾×४ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—पत्र ८ तक संस्कृत टीका भी दी है ।

१२१. प्रवचनसार सटीक–अमृतचन्द्र सूरि । पत्र सख्या–१०७ । साइज १०½×४¾ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । रचना काल–× । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । बीच में २४ पत्र कम हैं । आगरे में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति प्राचीन है

१२२. प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या–३० । साइज–११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०६ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४ ।

१२३. प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या–१४२ । साइज–१२×८ इन्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । रचना काल–सं० १७०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १६५२ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

एक प्रति और है।

१२४. बोधपाहुड भाषा—पं० जयचंद छाबड़ा। पत्र संख्या-२१। साइज-१२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६।

१२५. भव वैराग्य शतक—पत्र संख्या-११। साइज-१०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७३।

विशेष—हिन्दी में छाया दी हुई है।

१२६. मृत्युमहोत्सव—बुधजन। पत्र संख्या-३। साइज-८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३०।

१२७. योगसमुच्चय—नवनिधिराम। पत्र संख्या १२३। साइज-९×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। रचना काल-×। लेखन काल-×। वेष्टन नं० ४६०।

विशेष—५० पत्र तक श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

१२८. योगसार—योगीन्द्रदेव। पत्र संख्या-६। साइज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७२ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२१।

विशेष—एक प्रति और है।

१२९. षट्पाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या-६७। साइज-१२×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २४५।

विशेष—२ प्रतियां और हैं जिनमें केवल लिंगपाहुड तथा शीलपाहुड दिया हुआ है।

१३०. षट्पाहुड टीका—टीकाकार भूधर। पत्र संख्या-६२। साइज-११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७५१। पूर्ण। वेष्टन नं० २४४।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। यह टीका भूधर ने प्रतापसिंह के लिए बनाई थी।

१३१ समयसार कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र संख्या-१५१। साइज-११×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२१ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ५०।

विशेष—दौसा में पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।
अमृतचन्द्र कृत आत्मख्याति टीका सहित है। एक प्रति और है।

१३२. समयसार कलशा—अमृतचंद्रसूरि। पत्र संख्या-५६। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७।

१३३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-११२ । साइज-१०×५¾ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४

विशेष—आनंदराम के वाचनार्थ नित्य विजय ने यह टिप्पण लिखा था । टिप्पण टब्बा टीका के सदृश है । प्रति सुन्दर है ।

१३४. समयसारनाटक—बनारसीदास । पत्र संख्या-७३ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १६९३ । लेखन काल-सं० १८०० चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२० ।

विशेष—बसवा में श्री निरमैराम के बेटा श्री मनसाराम ने फतेराम के पठनार्थ लिखी थी । ४ प्रतियां और हैं ।

१३५. समयसार वचनिका—राजमल्ल । पत्र संख्या-१६८ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१३६. समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या-७७ । साइज-६¾×५ इंच । भाषा-गुजराती देवनागरी लिपि । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७५५ फागुन बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—सागपत्तन में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । एक प्रति और है ।

१३७. समाधिमरण भाषा—पत्र संख्या-१३ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१ ।

१३८. सूत्रपाहुड—जयचंद छाबड़ा । पत्र संख्या-१५ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

१३९. आप्तपरीक्षा—विद्यानंदि। पत्र संख्या-६। साइज-१०३/४×४३/४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २९०।

विशेष—पंडित धरमू के पठनार्थ गयासशाहि के राज्य में प्रतिलिपि की गई थी।

१४०. आलापपद्धति—देवसेन। पत्र संख्या-११। साइज-१०×४३/४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०६।

विशेष—एक प्रति और है।

१४१. तर्कसंग्रह-अन्नंभट्ट। पत्र संख्या-६। साइज-१०×४३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०३।

विशेष—मोतीलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१४२. दर्शनसार—देवसेन। पत्र संख्या-३। साइज-१११/२×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७२ मंगसिर बुदी अमावस। पूर्ण। वेष्टन नं० २१७।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

१४३. नयचक—देवसेन। पत्र संख्या-३३। साइज-११३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२६ फागुन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८१।

श्लोक संख्या-४५३ है।

१४४. न्यायदीपिका—धर्मभूषण। पत्र संख्या-४८। साइज-८३/४×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८०६ द्वि० भादवा सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० २९८।

विशेष—देवीदास ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

१४५. परिभाषा परिच्छेद (नयमूल सूत्र)—पंचानन भट्टाचार्य। पत्र संख्या-११। साइज-१०३/४×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३७।

अन्तिम—इति श्री महामहोपाध्यायसिद्धान्त पंचानन भट्टाचार्य कृत परिभाषा परिच्छेदः समाप्तः।
१६६ श्लोक हैं प्रति प्राचीन मालूम देती है।

१४६. षट्दर्शन समुच्चय—हरिभद्रसूरि। पत्र संख्या-७। साइज-१०×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २८४।

विशेष—६६ श्लोक हैं।

१४७. सन्मतितर्क—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र संख्या–८ । साइज–८×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

१४८. अक्षयनिधिपूजा—पत्र संख्या–३ । साइज–११×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—लब्धि विधान पूजा भी दी हुई है।

१४९. अंकुरारोपण विधि—पत्र संख्या–७ । साइज–१०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८० ।

विशेष—छठा पत्र नहीं है।

१५०. अनंतव्रतपूजा—श्री भूषण । पत्र संख्या–६ । साइज–१०×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× ।लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

१५१. अनंतव्रतोद्यापन—पत्र संख्या–२० । साइज–१११/२×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६ ।

१५२. अभिषेकविधि-पत्र संख्या–३ । साइज–७३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत ।विषय–विधि विधान । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—एक प्रति और है।

१५३. अर्हत्पूजा—पद्मनंदि । पत्र संख्या–५ । साइज–६×६३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

१५४. **अष्टक**—पत्र संख्या–१ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

१५५. **अष्टाह्निकापूजा**······ । पत्र संख्या–१० । साइज–७¾×४½ इंच । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

१५६. **अष्टाह्निकापूजा**—पत्र संख्या–७ । साइज–६×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—जाप्य से आगे पाठ नहीं है ।

१५७. **अष्टाह्निकापूजा—शुभचन्द्र** । पत्र संख्या–३ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ब्र० श्री मेघराज के शिष्य ब्र० सवजी के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१५८. **इन्द्रध्वजपूजा—विश्वभूषण** । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८२० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३ ।

१५९. **कलिकुंडपार्श्वनाथपूजा**—पत्र संख्या–६ । साइज–१×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—पत्र ४ से चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजा भी है ।

१६०. **कर्मदहनपूजा—टेकचंद** । पत्र संख्या–१६ । साइज–१½×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१६१. **कौतुककुतुहल**—पत्र संख्या–३८४ । साइज–८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६०१ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७ ।

विशेष—यज्ञादि की सामग्री एवं विधि विधान का वर्णन है । कुल ६१ अध्याय हैं ।

१६२. **गणधरवलयपूजा—शुभचंद्र** । पत्र संख्या–१० । साइज–१०¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६३. **गिरनारसिद्धक्षेत्रपूजा—हजारीमल्ल** । पत्र संख्या–३१ । साइज–१०½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १६२० आसोज सुदी १२ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं०   ।

विशेष—हजारीमल्ल के पिता का नाम हरीकिसन था। वे अग्रवाल गोयल ज्ञातीय थे तथा लश्कर के रहने वाले थे कवि ने साहपुर में आकर दौलतराम की सहायता से रचना की थी।

१६४. चन्द्रायणव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र संख्या-४। साइज-१२½×७¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १७।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

१६५. चारित्रशुद्धिविधान (बारहसोचौतीसविधान)—श्री भूषण। पत्र संख्या-७६। साइज-१२×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८१३। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२।

विशेष—दक्षिण में देवगिरि दुर्ग में पार्श्वनाथ चैत्यालय में ग्रंथ रचना की गयी थी। तथा जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

१६६. चौवीसतीर्थंकरपूजा—पत्र संख्या-५१। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

१६७. चौवीसतीर्थंकरपूजा—सेवाराम। पत्र संख्या-४३। साइज-१२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १८५४ माह बुदी ६। लेखन काल-सं० १८६६। पूर्ण। वेष्टन नं० २८।

१६८. चौवीसतीर्थंकरपूजा—रामचंद्र। पत्र संख्या-५०। साइज-१०½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८८६ चैत सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०।

विशेष—प्रति सुन्दर व दर्शनीय है। पत्रों के चारों ओर भिन्न २ प्रकार के सुन्दर बेल बूटे हैं। स्योजीराम भांवसा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१० प्रतियां और हैं।

१६६ चौवीसतीर्थंकरपूजा—मनरंगलाल। पत्र संख्या-५१। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४।

१७०. चौवीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन। पत्र संख्या-१५१। साइज-११×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी विषय-पूजन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०।

विशेष—३ प्रतियां और हैं।

१७१. चौवीसतीर्थंकर समुच्चय पूजा—पत्र संख्या-४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१।

१७२. **चौसठ ऋद्धिपूजा (गुरावली)—स्वरूपचंद** । पत्र संख्या–७१ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । रचना काल–सं० १६०० श्रावण सुदी ७ । लेखन काल–सं० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २ ।

विशेष—इस प्रति को बहादरजी ठोलिया ने ठोलियों के मन्दिर में चढाई थी ।

१७३. **जम्बूद्वीप पूजा—जिणदास** । पत्र संख्या–३१ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५ ।

१७४. **जलहर तेला को पूजा**—पत्र संख्या–४ । साइज–११×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।

१७५. **जिनयज्ञ कल्प (प्रतिष्ठापाठ)—आशाधर** । पत्र संख्या–१२० । साइज–१०×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । रचना काल–सं० १२८५ । लेखन काल–सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

ग्रन्थाग्र थ संख्या–२१०० श्लोक प्रमाण है ।

विशेष—संवद्वाणधरास्मृतिप्रमिते मार्गशीर्षमूतिष्टा सिते लिखितमिदं पुस्तकं विदुषा श्वेतांबर सुन्दरदासेन श्रीमज्जयपुरे जयवत्तने ।

१७६. **जैनविवाहविधि—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या–४४ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । भाषाकार पन्नालालजी दूनी वाले हैं । सं० १९३३ में इसकी भाषा पूर्ण हुई थी ।

१७७. **ज्ञानपूजा**—पत्र संख्या–४ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

विशेष—श्री मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थं प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७८. **तीनचौबीसी पूजा**—पत्र संख्या–२१ से ६८ । साइज–११×४½ इञ्च भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

१७९. **त्रिंशतचतुर्विंशतिपूजा–शुभचंद्र** । पत्र संख्या–१२० । साइज–६½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ क ।

गुटका के आकार में है ।

१८०. **तेलाव्रत की पूजा**—पत्र संख्या–४ । साइज१०×८½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५ ।

१८१. दशिखयोगोन्द्र पूजा — आ० सोमसेन। पत्र संख्या–५। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७६४ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ८५।

विशेष—पण्डित मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

१८२. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या–५२। साइज–६½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ११८।

विशेष—अन्तिम दोहा—

> डारि मत दश धर्म को लुब्ध हो गुरु सेव।
> रावत सुर नर सर्म इत मरि परमव शिव लेव॥

१८३ दशलक्षणपूजा—पत्र संख्या–३। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११२।

विशेष—नंदीश्वर पूजा (प्राकृत) भी दी है।

१८४. दशलक्षणपूजा—पत्र संख्या–१७ से २४। साइज–८½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२२।

१८५. दशलक्षणपूजा—अभयनंदि। पत्र संख्या–१४। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१।

१८६. दशलक्षणजयमाल—भावशर्मा। पत्र संख्या–११। साइज–१०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७३३द्वि० सावन सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१।

विशेष—रामकीर्ति के शिष्य पं० श्रीहर्ष तथा कल्याण तथा उनके शिष्य पं० चिन्तामणि ने खेम रतनसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१८७. दशलक्षणपूजा जयमाल–रइधू। पत्र संख्या–१६। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८।

संस्कृत टिप्पण सहित है। ४ प्रतियां और हैं।

१८८. द्वादशव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र संख्या–१५। साइज–१२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७७२ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ८०।

१८९. देवपूजा–पत्र संख्या–६। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—२ प्रतियां और हैं। एक प्रति हिन्दी भाषा की है।

१६०. नन्दीश्वरविधान—रत्ननंदि। पत्र संख्या-१७। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८२७ फागुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२।

विशेष—महाराजाधिराज श्री सवाई पृथ्वीसिंहजी के राज्यकाल में बसवा नगर में श्री चंद्रप्रभ चैत्यालय में पंडित आनन्दराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

१६१. नंदूसप्तमीव्रतपूजा—पत्र संख्या-५। साइज-१०½×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १६।

१६२. नवग्रहअरिष्टनिवारकपूजा—पत्र संख्या-१८। साइज-१२½×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ९।

१६३. नित्यनियमपूजा—पत्र संख्या-४०। साइज-८×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। ३ प्रतियां और हैं।

१६४. निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरुपचंद। पत्र संख्या-२६। साइज-११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १९१६ कार्तिक सुदी १३। लेखन काल-सं० १९३८ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ८२।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी

१६५. निर्वाणकाण्डपूजा—द्यानतराय। पत्र संख्या-३। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा भी दी हुई है।

१६६. पद्मावती पूजा—पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७।

विशेष—निम्न पाठों का और संग्रह है:—

पद्मावती स्तोत्र, श्लोक संख्या ३३, पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती कवच, पद्मावती पटल, और घंटाकरण मंत्र।

१६७. पंचकल्याणपूजा—लक्ष्मीचंद। पत्र संख्या-२ से २४ तक। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० ११०६। पूर्ण। वेष्टन नं० ८६।

१६८. पंचकल्याणकपूजा—टेकचंद। पत्र संख्या-२४। साइज-८½×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १९५४ असाढ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४७।

१९९. पंचकल्याणकपूजा पाठ—पत्र संख्या–२२। साइज–१०½×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १९०० वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० २१।

विशेष—चिम्मनलाल भांवसा ने जयपुर में बख्शीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

२००. पंचपरमेष्टीपूजा—पत्र संख्या–४। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७३१। पूर्ण। वेष्टन नं० १११।

विशेष—श्लोक संख्या १०० है।

२०१. पंचपरमेष्टीपूजा—पत्र संख्या–४८। साइज–६×५¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६२।

२०२. पंचमेरुपूजा—पत्र संख्या–७। साइज–७¾×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

२०३. पूजा एवं अभिषेक विधि। पत्र संख्या–१४। साइज–८½×६¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत हिन्दी गद्य। विषय–विधि विधान। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

विशेष—गुटका साइज है।

२०४. पूजापाठसंग्रह–पत्र संख्या–६८। साइज–११×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७३।

विशेष—नित्य नैमित्तक पूजा पाठ आदि संग्रह है। पूजा पाठ संग्रह की ८ प्रतियां और हैं।

२०५. बीसतीर्थंकरपूजा—पन्नालाल संघी। पत्र संख्या–६२। साइज–१२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। रचना काल–सं० १९३४। लेखन काल–सं० १९५४ सावन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० ५।

विशेष—टोंक में मोजसिंह के पुत्र पन्नालाल ने रचना की तथा अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी। २ प्रतियां और हैं।

२०६. भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन। पत्र संख्या–१०। साइज–१०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७८४ कार्तिक सुदी। पूर्ण। वेष्टन नं० १०३।

विशेष—पंडित नानकदास ने प्रतिलिपि की थी।

२०७. मंडल विधान एवं पूजा पाठ संग्रह—पत्र संख्या-६५४। साइज-११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखन काल-सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम पाठ	कर्त्ता	पत्र संख्या	ले० काल	विशेष
(१) जिन सहस्रनाम	आशाधर	१ से १६	—	—
(२) ,, ,,	जिनसेनाचार्य			
(३) तीन चौबीसी पूजा	—	१६ से ३३	—	—
(४) पंचकल्याणकपूजा	—	३४ से ४५	—	मंडल चित्र सहित
(५) पंचपरमेष्ठीपूजा,	शुभचन्द्र	४६ से ७७	ले० काल १८६५	—
(६) कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	७८ से ६७	—	चित्र सहित
(७) बीसतीर्थंकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	— ६८ से १०१	—	—
(८) भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	१०२ से ११२	—	मंडल चित्र सहित
(९) धर्मचक्र	रणमल्ल	११३ से १२६	—	—
(१०) शास्त्रमंडल पूजा	ज्ञानभूषण	१३० से १३४	—	चित्र सहित
(११) ऋषिमंडलपूजा	आ० गुणिनंदि	१३५ से १५५	—	,,
(१२) शान्तिचक्रपूजा	—	१५६ से १६१	—	चित्र सहित
(१३) पद्मावतीस्तोत्र पूजा	—	१६२ से १६६	—	—
(१४) पद्मावतीसहस्रनाम	—	१६७ से १७३	—	—
(१५) षोडशकारणपूजा उद्यापन	केशव सेन	१७४ से १६८	—	—
(१६) मेघमाला उद्यापन	—	१६६ से २१३	—	चत्र सहित
(१७) चौबीसीनामव्रतमंडलविधान		२१४ से २३०	—	—
(१८) दशलक्षणव्रतपूजा	—	२३१ से २६०	—	चित्र सहित
(१९) पंचमीव्रतोद्यापन	—	२६१ से २६७	—	,,
(२०) पुष्पांजलिव्रतोद्यापन	—	२६८ से २८३	—	,,
(२१) कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	२८३ से २६१	—	—
(२२) अक्षयनिधिव्रतोद्यापन	ज्ञानभूषण	२६२ से ३०५	—	—
(२३) पंचमासचतुर्दशी व्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	३०६ से ३११	—	—
(२४) अनंत व्रत पूजा	—	३१२ से ३४१	—	चित्र सहित

नाम	कर्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(२) अनंतव्रतपूजा	गुणचंद्र	३४२ से ३७४	र० का० १६३०	सचित्र
(२६) रत्नत्रय पूजा	केशवसेन	३७५ से ३६६	—	—
(२७) रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	३६७ से ४१२	—	—
(२८) पल्यव्रतोद्यापन पूजा	शुभचंद्र	४१३ से ४२६	—	चित्र सहित
(२६) मासांत चतुर्दशी पूजा	अक्षयराम	४२७ से ४४४	—	चित्र सहित
(३०) णमोकार पैंतीसी पूजा	अक्षयराम	४४५ से ४५०	—	चित्र सहित
(३१) जिनगुणसंपत्तिव्रतोद्यापन	—	४५१ से ४५८	—	सचित्र
(३२) त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	४५६ से ४६६	—	सचित्र
(३३) सोख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	४६७ से ४८१	—	सचित्र
(३४) सप्तपरमस्थान पूजा	—	४८१ से ४८८	—	—
(३५) अष्टाह्निका पूजा	—	४८६ से ५११	—	सचित्र
(३६) रोहिणीव्रतोद्यापन	—	५१२ से ५२४	ले० का० १८८६	—

विशेष—जयपुर में लिपि हुई थी ।

नाम	कर्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(३७) रत्नावलीव्रतोद्यापन	—	४२५ से ४३६	—	सचित्र
(३८) ज्ञानपच्चीसीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	५३७ से ५४५	ले० का० सं० १८४०	—

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभु चैत्यालय में लिपि हुई थी ।

नाम	कर्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(३९) पंचमेरुपूजा	भ० रत्नचंद्र	५४६ से ५५२	—	—
(४०) आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	५५२ से ५६१	—	सचित्र
(४१) अक्षयदशमीव्रतपूजा	—	५६२ से ५६५	—	—
(४२) द्वादशव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	५६६ से ५७६	—	—
(४३) चंदनषष्टीव्रतपूजा	—	५८० से ५८६	—	सचित्र पर अपूर्ण

विशेष—५८७ से ६०५ तक पृष्ट नहीं हैं ।

नाम	कर्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(४४) मौनिव्रतोद्यापन	—	६०६ से ६२१	—	—
(४५) श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	६२२ से ६३६	—	—
(४६) कांजीव्रतोद्यापन	—	६३६ से ६५४	—	—
(४७) पूजाटीका संस्कृत	—	६४५ से ६५४	—	—

इसके अतिरिक्त २ फुटकर पत्र हैं। और २ पत्रों में व्रत पजाओं की सूची दी है महत्वपूर्ण पाठ संग्रह है।

२०८. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-१८। साइज-१४×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०२ सावन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १२७।

विशेष—चाकसू के मंदिर चंद्रप्रभ-चैत्यालय में पंडित रतीराम के शिष्य रामबक्श ने प्रतिलिपि की थी।

२०६. रत्नत्रयजयमाल—पत्र संख्या-५। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११०।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है। ३ प्रतियां और हैं।

२१०. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-६। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६६ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१।

विशेष—पं० श्रीचंद्र ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

२११. रत्नत्रयपूजा—आशाधर। पत्र संख्या-४। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०।

२१२. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-३४। साइज-१२½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६।

२१३. रविव्रतपूजा—पत्र संख्या-१५। साइज-८½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३।

२१४. रोहिणीव्रत पूजा—केशवसेन। पत्र संख्या-६। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १००।

२१५. लब्धि विधान पूजा—पत्र संख्या-२१। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१।

२१६. लब्धि विधान व्रतोद्यापन—पत्र संख्या-८। साइज-१३×८ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८१।

२१७. विमलनाथ पूजा—रामचंद्र। पत्र संख्या-३। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

२१८. षोडशकारण पूजा—पत्र संख्या-८। साइज-६×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है वह भी संस्कृत में है।

२१६. षोडश कारण प्रतोद्यापन पूजा—आचार्य केशव सेन। पत्र सख्या-२१। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४।

२२०. शान्तिनाथ पूजा—सुरेश्वर कीर्त्ति। पत्र संख्या-५। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—अंत में आरती भी है।

सुज्ञानी जन आरती नित्य करो। गुरु वृषचंद सुरेश्वर कीर्ति भव दुख हरो। प्रभु के पद आरती नित्य करो।

२२१. श्रुतज्ञान पूजा—पत्र संख्या-१३। साइज-११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६२।

विशेष – पत्र ६ से आगे पाठों की सूची दी हुई है। हेमचंद्र कृत श्रुत स्कंध के आधार से लिखा गया है। मंडल तथा तिथि दी हुई है।

२२२. सप्त ऋषि पूजा—पत्र संख्या-८। साइज-१०½×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८।

२२३. समवशरण पूजा—ललितकीर्त्ति। पत्र संख्या-४। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७६४ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० ६१।

विशेष—वसवा नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

२२४. समवशरण पूजा—पन्नालाल। पत्र संख्या-६७। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १६२१ आसोज सुदी ३। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३।

विशेष—जवाहरलालजी की सहायता से रचना की गयी थी। पन्नालालजी जीवतसिंह जैपुर के कामदार थे।

२२५. सम्मेदशिखरपूजा—पत्र संख्या-१०। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६६।

२२६. सम्मेदशिखरपूजा—नंदराम। पत्र संख्या-१२। साइज-१३×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १६११ माघ सुदी ५। लेखन काल-सं० १६१२ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ११।

विशेष—रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२२७. सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल। पत्र संख्या-११। साइज-१०½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८३।

विशेष—एक प्रति और है।

२२८. **सहस्रगुणितपूजा**—श्रीशुभचंद्र। पत्र संख्या-५८। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६६८। पूर्ण। वेष्टन नं० ६०।

विशेष—संवत् १६६८ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्तमाने पौष सुदी ७ महाराजाधिराज महाराज श्री मानसिंह प्रवर्त्तमाने अंबावति मध्ये ... .।

२२६ **सहस्रनाम पूजा**—धर्मभूषण। पत्र संख्या-८७। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७४। पूर्ण। वेष्टन नं० ७७।

विशेष—शान्तिनाथ मंदिर के पास जयपुर में पं० जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी।

२३०. **सहस्रनाम पूजा**—चैनसुख। पत्र संख्या-१८। साइज-१०½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ८।

विशेष—पद्य संख्या २२० है।

२३१. **सार्द्धद्वय द्वीप पूजा**—विश्वभूषण। पत्र संख्या-२०८। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८५७ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ७८।

प्रति नं० २—पत्र संख्या-६६। साइज-११×५½। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७६।

विशेष—अढाई द्वीप के तीन नक्शे भी हैं उनमें एक कपडे पर है जिसका नाप ५' ५"×२' ७" फीट है। नक्शे के पीछे द्वीपों का परिचय दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त तीन लोक का नक्शा भी है।

२३२. **सिद्धक्षेत्र पूजा**—। पत्र संख्या-४५ से ५० तक। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ८६।

विषय—निर्वाणकाण्ड गाथा भी हैं। ५ प्रतियां और हैं।

२३३. **सिद्धचक्र पूजा (अष्टाह्निका)**—नथमल बिलाला। पत्र संख्या-१०। साइज-१२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १६।

२३४. **सिद्धचक्र पूजा**—सन्तलाल। पत्र संख्या-११०। साइज-१२½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६८६ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने अजमेर वालों के चौबारे में प्रतिलिपि की थी।

संवत् १६८७ में अष्टाह्निका व्रतोद्यापन में केसरलालजी साह की पत्नी नंदलाल पीजे वालों की पुत्री ने ठोलियों के मन्दिर में भेट की थी।

२३५. **सिद्धपूजा**—पद्मनंदि। पत्र संख्या-४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-　　　आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—एक प्रति और है।

२३६. सुगंधदशमीव्रतोद्यापन पूजा—पत्र संख्या-१२। साइज-८३/४×६१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—कंजिकाव्रतोद्यापन भी है वह भी संस्कृत में है।

२३७. सोलहकारणजयमाल—पत्र संख्या-१४। साइज-११३/४×५ इन्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८३५ सावन सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ७०।

विशेष—श्रीचंद ने जयपुर में श्री शान्तिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२३८. सौख्यकाख्यव्रतोद्यापन विधि—अक्षयराम। पत्र संख्या ८। साइज-१३/४×४१/२ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-सं० १८२० भादवा सुदी ४। लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ११३।

विषय-चरित्र एवं काव्य

२३६. ऋषभनाथचरित्र—सकलकीर्ति। पत्र संख्या-२३१। साइज-११×४१/२ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१६ आह सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २२०।

विशेष—मल्लहारपुर में चांदवाड गोत्र वाली बाई लाडा तत्शिष्या भागा ने प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति और है।

२४०. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि। पत्र संख्या-१६८। साइज-११×५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८१।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र दूसरी प्रति के हैं। पत्र ५२ से १६८ तक दूसरी प्रति के है जिसमें श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२४१. **कुमारसंभव—कालिदास** । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १४८६ आषाढ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रशस्ति—संवत् १४८६ वर्षे आषाढमासे वटपद्रवास्तव्य दीसावालजातीय नरवद सुत व्यास पद्मनामेन कुमार संभवकाव्यमलेखि । शुभंभवतु । भट्टारक प्रभु संसारवारणविदारणसिंह श्री सोमसुन्दर सूरिशिवरंनंदतु । प्रति सुन्दर है ।

२४२. **चंदनाचरित्र—शुभचंद्र** । पत्र संख्या-२७ । साइज-११½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५७ ।

विशेष—शिवलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२४३. **चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनन्दि** । पत्र संख्या-१४३ । साइज-१३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५५७ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

विशेष—इसमें कुल १८ सर्ग हैं ग्रंथा ग्रंथ संख्या २५०० श्लोक प्रमाण हैं । प्रारम्भ के १४ पृष्ठों पर संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

२४४. **चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर** । पत्र संख्या-२०२ । साइज-१२½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७०३ । लेखन काल-१८५० माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३३ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४५. **चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल** । पत्र संख्या-५१ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६ ।

विशेष—पद्य संख्या ११०६ है ।

२४६. **जम्बूस्वामीचरित्र—ब्रह्म जिनदास** । पत्रसंख्या-७२ । साइज-१२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४२ ।

२४७. **जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम** । पत्र संख्या-३२ । साइज-१२¾×८ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८० ।

प्रारम्भ—प्रथम प्रणमी परमेष्टिगण, प्रणमो सारद माय ।
गुरु निर्ग्रन्थ नमो सदा, भव भव में सुखदाय ॥१॥
धर्म दया हरदै धरूं, सब विधि मंगलकार
जम्बू स्वामी चरित, की करूं वचनिका सार ॥२॥

अथ वचनिका प्रारम्भ । मध्यलोक के असंख्यात द्वीप और समुद्रों के मध्य एक लाख योजन के व्यास वाला थाली के आकार सदृस गोल जम्बू नाम की द्वीप है। जिसके मध्य में नाभि के सदृस शोभा देने वाला एक सुदर्शन नाम का पर्वत पृथ्वी से दस हजार योजन ऊंचा है और जिसकी जड़ पृथ्वी में १०००० दश हजार योजन की है।

अन्तिम - जंबूस्वामी चरित जो, पढे सुने मनलाय ।
मनवांछित सुख भोग के, अनुक्रम शिवपुर जाय ॥
संस्कृत से भाषा करी, धर्म बुद्धि जिनदास ।
लमेचू नाथूराम पुनि, छंद बद्ध की तास ॥
किसनदास सुत मूलचंद, करी प्रेरणा सार ।
जंबूस्वामी चरित की, करो वचनिका सार ॥
तब तिनके आदेश से भाषा सरल विचार ।
लघु मति नाथूराम सुत दीपचंद परवार ॥
जगत राग अर द्वेष वश, चहुँगति भर्मै सदीव ।
पावै सम्यक रत्न जो, काटे कर्म अदीव ॥
गत संवत निर्वाण को महावीर जिनराय ।
एकम श्रावण शुक्ल को करी पूर्ण हरषाय ॥
अंतिम है इक प्रार्थना सुनो सुधी नरनार ।
जो हित चाहो तो करो स्वाध्याय परचार ॥
इति श्री जंबूस्वामी चरित्र भाषा मय वचनिका संपूर्ण ।

२४८. **जीवंधरचरित्र—आचार्य शुभचंद्र** । पत्र संख्या–८० । साइज–११$\frac{3}{4}$×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १६२७ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

२४९. **दुर्घटकाव्य—कालिदास** । पत्र संख्या–२० । साइज–११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२५०. **धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य** । पत्र संख्या–१६ । साइज–१२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १७२

विशेष—खंडेलवालवंशोत्थोभून्मुमनचन्द्रो महामना ।
साधुः सुशीलवान् शांतः श्रावको धर्मवत्सल ॥
तस्य पुत्रो बभूवात्र कल्हणो दानवान् वशी ।

परोपकारचित्तस्य न्यायेनार्जितसद्धनः ॥
धर्मानुरागिणा तेन धर्मकर्मनिबंधनं ।
चरितं कारितं पुण्यं शिवापेक्षि शिवार्थिनः ॥
इति धन्यकुमार चरित्रं समाप्तं ।

संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया हुआ है । ७ परिच्छेद हैं ।

२५१. **धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र संख्या–४० । साइज–१२×५इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १५६४ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१४ ।

प्रशस्ति— सवत् १५६४ वर्षे आषाढादि ६५ वर्षे शाके १४३१ प्रथम मागसिर सुदि रुयं श्री गिरेपुरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिः तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्ति स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्त्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म मल्लिदासपठनार्थं हुबड ज्ञातीय वृद्ध शाखायां चौकडी आवाजा तद्भार्या बभलदे तयो द्वौ पुत्रौ । चोकडी साकणा तद्भार्या राजलदे। एते ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं श्री धन्यकुमार- लिखाप्यदत्तं शुभं भवतु पश्चात् ब्रह्म श्री मल्दिासात् शिष्य उल्ही आकेन पठितं । पं० हीरा की पोथी है। सात अधिकार हैं ।

२५२. **धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त** । पत्र संख्या–२५ । साइज- ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है इसके आगे अपूर्ण है ।

२५३. **धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद** । पत्र संख्या–३८ । साइज–१४×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६५६ मंगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२५४. **धर्मशर्माभ्युदय—हरिचंद्र** । पत्र संख्या–१०६ । साइज–१२×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है बीच के कुछ पत्र जीर्ण है । धर्मनाथ तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२५५. **नागकुमारचरित्र**—पत्र संख्या–३६ । साइज–१३×८ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं०७६ ।

२५६ **नेमिदूतकाव्य—विक्रम** । पत्र संख्या–१३ । साइज–१०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

२५७ **नेमिदूतकाव्य सटीक—मूलकर्त्ता विक्रम कवि। टीकाकार पं० गुण विनय।** पत्र संख्या–२३। साइज–१०½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। टीका काल–सं० १६४४। लेखन काल–सं० १६४४। पूर्ण। वेष्टन नं० २६२।

२५८. **प्रद्युम्नकाव्य पंजिका**—पत्र संख्या–८। साइज–१०×६ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–काव्य। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३४२।

विशेष—१४ सर्ग तक है।

२५९. **प्रद्युम्नचरित्र—महसेनाचार्य।** पत्र संख्या–८८। साइज–११¾×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७११ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० २६४।

विशेष—कुल २४ परिच्छेद हैं, कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं।

२६०. **प्रद्युम्नचरित्र—आ० सोमकीर्ति।** पत्र संख्या–२३६। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–×।। पूर्ण। वेष्टन नं० २६३।

विशेष—प्रति प्राचीन है। ग्रंथ सं० ४८५० श्लोक प्रमाण है। एक प्रति संवत् १६४७ की लिखी हुई और है।

२६१. **प्रद्युम्नचरित्र—कवि सिंह।** पत्र संख्या–१४३। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १५१८ चैत सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० १८१।

विशेष—तक्षकगढ (टोडारायसिंह) में सोलंकी वंशोत्पन्न सूर्यसेन के राज्य दावणइया स्थाने खंडेलवालजातीय सोगाणी गोत्रोत्पन्न संघी सोढा के वंशज डूंगा पद्मा सांगा आदि ने प्रतिलिपि कराकर मुनि पद्मकीर्ति को भेंट किया।

२६२. **पार्श्वपुराण—भूधरदास।** पत्र संख्या–८२। साइज–११×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–काव्य। रचना काल–सं० १७८६। लेखन काल–सं० १६११ श्रावण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १७।

विशेष—२ प्रतियां और हैं।

२६३. **पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति।** पत्र संख्या–१०३। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६०५ कार्तिक सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन नं० ५३।

विशेष—श्री बादशाह सलीमशाह (जहांगीर के) शासन काल में प्रयाग में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। ब्रह्म आसे ने इसे सुमतिदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। आचार्य श्री हेमकीर्ति के शिष्य सा० मेघराज की पुस्तक है ऐसा लिखा है।

इस ग्रंथ की भण्डार में एक प्रति और है।

२६४. **प्रीतिंकरचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त।** पत्र संख्या–२७। साइज–११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८०५ द्वि० वैशाख सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० २७१।

विशेष—मधुपुर नगर में श्री चंद्रप्रभचैत्यालय में पं० परसराम जी के शिष्य आनन्दराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२६५. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननंदि। पत्र संख्या-३०। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचनाकाल-×। लेखन काल-सं० १६५२ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन नं० २६७।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ग्रंथ ६८८ श्लोक संख्या प्रमाण है।

२६६. भद्रबाहुचरित्र भाषा—चंपाराम। पत्र संख्या-३८। साइज-१२½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १८०० सावन सुदी १५। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४।

विशेष—ग्रंथ १३२५ श्लोक प्रमाण है।

प्रारम्भ—जैवंतो वरतौ सदा, चौवीसूं जिनराज।
तिन वंदत वंदक लहै, निश्चय थल सुखदाय ॥

चौपई—रिषव अजित संभव अभिनंदन।
सुमति पद्म सुपारिस चंद ॥
पुष्पदंत शीतल जिन राय।
जिन श्रीहांस नमूं सिर नाय ॥२॥

पत्र संख्या-२३ पर—अथानंतर जे जीव तिस ही भव विषै स्त्री कूं मोक्ष गमन कहै है, ते जीव आग्रह रूप ग्रह करि ग्रस्त है अथवा तिनकूं वाय लगी है ॥८३॥ कदाचि स्त्री परयाय धारि अर दुद्धर घोर वीर तप करै। तथापि स्त्रीकूं तद्भव मोक्ष नाहीं ॥८४॥

अन्त—इह चरित्र गुर गम्य लखि रत्ननंदि मुनिराय।
रच्यौ पंसत श्लोक मय मूल महा सुख दाय ॥१॥
लेय तिस अनुसार कछु रच्यौ वचनका रूप।
ज्ञात नाम कुल तास अब कहूं सुनौ गुन भूप ॥२॥
देश ढूंढाहड मध्यपुर माधव सूबस्थान।
जगतसिंघ ता नगरपति पातल राज महान ॥३॥
तहां बसे इक वैश्य शुभ हीरालाल सु जान।
जाति श्रावग न्याति मैं खंडेलवाल शुभ जानि ॥४॥
गोत भांवसा फुनि धरै परम गुनी गुन धाम।
तिनकै अति मति हीन सुत उपनौ चंपाराम ॥५॥

ताकै फुनि भ्रता सुगम लसे सुजन सुख दाय।
तातै कछू भवर समझि सीखी पाय सहाय ॥६॥
तिस पुर मध्य जिन भवन इक राजत अधिक उदार।
मध्य लसै जिन वृषभ सुर नर वंदित पद सार ॥७॥
तहा जात दिन रैन सुभि भयौ कछू अभ्यास।
तब लखि कै सुचरित्र इह रची वचनका तास ॥ ८ ॥
होय दोस यामैं जहां अमिलत अक्षर होय।
सोधौ ताकूं सुघड नर निज लक्षण अब लोय ॥ ९ ॥
संत सदा गुन दुर्जन ग्रहै औगण लेय।
सुख तै तिष्टौ भूमि पोर मो पर कृपा करेय ॥ १० ॥
बुद्धहीन तै मूलवत अर्थ भयो नही होय।
ता परि सजन पुरुष मो क्षमा करो गुन जोय ॥ ११ ॥
अर सोधौ वर थोर तैं लखि अक्षर विनास।
यह मेरी अरजी शुभग भरौ चित्त गुण राशि ॥ १२ ॥
अधिक कहे किम होत है जे है संत पुमान।
ते थोरे ही कहन तैं समझि लेत उर आन ॥ १३ ॥
नर सुर पति वंदत चरण करन हरन गुन पूर।
पर दरसत भंजन करैं धर्म रूप विधि चूर ॥ १४ ॥
जो जिनेश इन गुण सहित सो वंदूं सिर नाय।
सोहु इहा मंगल करन हरन विघ्न अधिकाय ॥ १५ ॥
श्रावण सुदि पूनिम सु रविवार अर्थ रस जानि।
भद ससि संवत्सर विषै भयौ ग्रंथ सुख खानि ॥ १६ ॥
चर थिर भवगति जीवत निति होहु सुखी जगथान।
हरो विघन दुख रोग सब थपौ धर्म भगवान ॥ १८ ॥

— छंद अनुष्टया —

भद्रबाहुमुनेरेतत् चरित्र प्रति दर्सता।
भाषा भयं कृतं चंपारामेण मंदबुद्धिना ॥ १९ ॥

— सोरठा —

तस्य दोष परित्यज्य ग्रह तु गुन सज्जना।
यथा घृष्टौपि सौरभ्यं ददाति चंदनोत्तमं ॥ २१ ॥

तेरह सै पचीस श्लोक रूप संख्या गिनी ।
भद्रबाहु मुनि ईस चरित तनी भाषा भई ॥ २२ ॥

इति श्री आचार्य रत्ननंदि विरचित भद्रबाहु चरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी बालबोध वचनका विषै श्वेताम्बर मत उत्पति वा पर्यसंघ की उत्पति तथा लुकामत की उत्पति नाम वर्ननों नाम चतुर्थ अधिकार पूर्ण भया ॥ इति ॥

२६७. भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह । पत्र संख्या-३५ । साइज-११×५ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७८३ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२६८. भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २३५ ।

विशेष—खंडेलवाल जातीय साह गोत्रोत्पन्न साह लाला के वंशज नाथा खीमा छीतर आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६६. भविष्यदत्तचरित्र—ब्र० रायमल । पत्र संख्या-३६ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

२७०. भविष्यदत्त चरित्र—धनपाल । पत्र संख्या-११२ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६२ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६५ ।

विशेष—सं० १६६२ वर्षे माघ सुदी ११ गुरुवासरे रोहिणीनक्षत्रे श्री मूलसंघे लिखितं खेमकरण कायस्थ हाजीपुरनगरे ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२७१. भोजप्रबंध—पंडित बल्लाल । पत्र संख्या-२६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ११०० प्रमाण है ।

२७२. महीपालचरित्र—नथमल । पत्र संख्या-७० । साइज-१२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६१८ आषाढ सुदी ४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३६ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ तथा अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

श्री नथमल दोसी दुलीचंद के पौत्र तथा शिवचंदजी के पुत्र थे । इनने पं० सदासुखजी के पास रहकर अध्ययन व रचनाएँ की थी ।

२७३. **मेघदूत—कालिदास** । पत्र संख्या–२७ । साइज–१०×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१३ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार सरस्वतीतीर्थ हैं । काशी में टीका लिखी गई थी । पत्र १३ तक मूल सहित (श्लोक ५५) टीका है शेष पत्रों में मूल श्लोकों के लिए स्थान खाली है ।

२७४. **यशोधरचरित्र – वादिराजसूरि** । पत्र संख्या–१७ । साइज–१२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७०० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७७ ।

२७५. **यशोधरचरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र संख्या–५१ । साइज–१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष - आठ सर्ग हैं । प्रति प्राचीन है । पत्र पानी में भीगे हुए हैं । एक प्रति और है ।

२७६. **यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति** । पत्र संख्या–७६ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १६५६ माघ सुदी ५ । लेखन काल–सं० १६६१ जेष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७५ ।

विशेष—६ सर्ग हैं । राजमहल नगर के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री मानसिंह के राज्य काल में उनके प्रधान अमात्य श्री नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७. **यशोधरचरित्र—वासवसेन** । पत्र संख्या–६३ । साइज–१०½×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल -× । लेखन काल–सं० १६१४ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७४ ।

प्रशस्ति—संवत् १६१४ वर्षे चैत्र सुदि ५ शुक्रवारे तक्षकमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाणे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्यश्री ललितकीर्तिदेवा-स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा दामा तद्भार्या चांदो तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सायो जिनपूजापुरंदर चतुर्दानवितरणकल्पवृक्ष शीलगंगेय सा चोहिथ, द्वि० सा नाना । सा० चोहिथ तद्भार्या वालहदे । तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा. सुरताण द्वि० सा. साधु । सा, सुरताण भार्या द्वि ·· ········ ·· ·· ··।

२७८. **यशोधरचरित्र—पद्मनाभ कायस्थ** । पत्र संख्या–८६ । साइज–११½×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २७२ ।

विशेष—६ सर्ग तक है, प्रति प्राचीन है ।

२७९ **यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति** । पत्र संख्या–५१ । साइज–१०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १५३६ पौष बुदी ५ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७० ।

विशेष — आठ सर्ग हैं। श्री शीतलनाथ चैत्यालय गोहिल्यामेघ पाट में ग्रन्थ रचना की गई थी। ग्रंथ श्लोक संख्या–१०१८ प्रमाण है। २० से ४१ तक पत्र दूसरी प्रति के हैं। प्रति प्राचीन है। एक प्रति और है।

२८०. यशोधरचरित्र—खिलमीदास । पत्र संख्या–३६ । साइज–१३×७½ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । लेखन काल–सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२ ।

२८१. यशोधरचरित्र भाषा—खुशालचन्द्र । पत्र संख्या–३३ । साइज–१३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १७८१ कार्तिक सुदी ८ । लेखन काल–सं० १६०० असाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४ ।

विशेष—पं० कालीचरन ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

२८२. रघुवंश—कालिदास । पत्र संख्या–११७ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित हैं। पत्रों के मध्य में मूल सूत्र है तथा ऊपर नीचे टीका दी है। ग्रंथ टीका श्लोक संख्या–५२४० है। मूल श्लोक संख्या–२००० है।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है।

२८३. रामकृष्ण काव्य-पं० सूर्य कवि । पत्र संख्या–२३ । साइज–११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८१७ चैत्र सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४०१ ।

विशेष—अन्वयदीपिका नाम की टीका है। पंडि आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—श्रीमज्ज्ञानकीनाथाय नमः।

श्रीमन्मंगलमूर्तिमार्तिशमनं नत्वा विदित्वा ततः।

रामकृष्णमनोरमं सुगुणकलाचिर जात्मनः ॥

अन्तिम—सुखन्भवठास्तु विलोमवर्ण काव्येऽत्र सभ्येरतिमादधातु।

चातुर्यमायाति यतः कवित्वे, नाशां तथा पाक जातमेति ॥

इति श्री सूर्यकवि कृता रामकृष्णकाव्यस्यान्वयदीपिका नाम्नी टीका संपूर्णा।

२८४ वरांगचरित्र—भट्टारक वर्द्धमान देव । पत्र संख्या–६७ । साइज ११½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–१८६३ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७० ।

विशेष—जयपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में विद्युध अमृतचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२८५. वासवदत्ता—महाकवि सुबंधु । पत्र संख्या–१६ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६

२८६. **विदग्धमुखमंडन—धर्मदास** । पत्र संख्या–३१ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

विशेष—यति अमरदत्त ने जयपुर में सं. १८६१ में पंडित श्रीचंद के शिष्य चि० मनोहरराम के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८७. **शिशुपालवध—महाकवि माघ** । पत्र संख्या–११ । साइज–११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२६ ।

विशेष—केवल १४ वें सर्ग की टीका है, टीकाकार मल्लिनाथ सूरि है ।

२८८. **श्रीपालचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त** । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १५८५ आषाढ सुदी १५ । लेखन काल–सं० १८४४ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २२६ ।

विशेष—पूर्णाशा नगर के आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

२८९. **श्रीपालचरित्र—परिमल** । पत्र संख्या–११५ । साइज–१२×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—४ प्रतियां और हैं ।

२९०. **श्रेणिकचरित्र—शुभचंद्र** । पत्र संख्या–११३ । साइज–११½×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८५ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४१ ।

विशेष:—कांडी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

२९१. **सप्तव्यसन चरित्र भाषा** । पत्र संख्या–११ । साइज–१२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १९२१ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७ ।

विशेष—रचना के मूलकर्त्ता सोमकीर्ति हैं ।

२९२. **सुकुमालचरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र संख्या–४३ । साइज–१०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।

विशेष—९ सर्ग हैं । श्लोक संख्या १२०१ है पत्र पानी में भीगे हुए हैं ।

२९३. **सुकुमालचरित्र भाषा—नाथूलाल दोसी** । पत्र संख्या–६५ । साइज–११×८½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४० ।

विशेष—प्रारम्भ में चरित्र पद्य में दिया हुआ है फिर उसकी वचनिका लिखी गई है ।

प्रारम्भ (पद्य)—श्रीमत वीर जिनेश पद, कमल नमूं शिरनाय।
जिनवाणी उर मैं धरूं जजू सुगुरु के पाय ॥ १ ॥
पंच परम गुरु जगत में परम इष्ट पहिचान।
मन वच तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥

अन्तिम – सर्वारथ सिध लौं गये, शेष जती तज प्रान।
जानौ मवि संक्षेप तैं ईह विध चरित बखान ॥ १२५ ॥
अत्र सुकुमाल चरित्र का सकल ज्ञान के हेत।
देश वचनिका मय लिखूं पढौ सुनौ धरि चित ॥ १२६ ॥
वांशं प्रमाद कहूं भूलि कैं अरथ लिख न जो होय।
पंडित जन सब सोधियो, मूल ग्रंथ अवलोय ॥ १२७ ॥

वचनिका पद्य नं० ८८ की:—

अर झूंठ वचनका बोलना तै बुद्धि को नाश हो है। अपजस फंलै है। अर सर्व जीवन कै अविश्वास का पात्र हो है। बहुरि राजादिकनि तैं हाथ पांव कान नांक जीभ आदि का छेद रुप दंड पावै है।

अन्तिम—आदि अंत मंगल करौ श्री वृषभादि जिनेश।
जैन धर्म जिन भारती, हर संसार कलेश ॥

सवैया – ढूंढाहड देश मध्य जैपुर नगर सो है,
च्यार वर्ण राह चालें अपनें सुधर्म की।
रामसिंह भूपत के राज मांहि कमी नांहि,
कमी कछु दृष्टि परै जानौं निज कर्म की ॥
वैश्यकुल जैनी को पूरव कृत पुण्य थको,
पायो यह खोलो अब मुदी दृष्टि धर्म की।
जैन वैन कान सुनी अतमस्वरुप मूनी,
चार अनुयोग मनौ यही सीख मर्म की ॥ २ ॥

चौपाई—दोसी गोत दुलीचंद नाम। ताकी सुत शिवचंद अभिराम ॥
नाथुलाल ताह सुत भयौ। जैन धर्म को सरणो लयौ ॥ ३ ॥
श्रीदीवाण संगही अमरेश। पाय सहाय भयो श्रुत लेश ॥
कासलीवाल सदासुख पास। फिर कीनी श्रुत को अभ्यास ॥ ४ ॥
श्री सुकुमाल चरित्र रसाल। देख कही हरचंद गंगवाल ॥
होत वचनिका मय जो ऐह। सब जन बांचै हित गेह ॥ ५ ॥

बिन व्याकरण पढे नहीं ज्ञान । मूलग्रंथ को होइ निदान ॥
जैसी प्रार्थना तने बसाय । मूल ग्रंथ को पाय सहाय ॥ ६ ॥
भावारथ सो लिखयो एह । देश वचनिका मय धरि नेह ॥
बाचौ पढौ पढावौ सुनौ । आत्म हित कू नीकूं गुनौ ॥ ७ ॥
जो प्रमाद बस तें कुछ इहा । मोलपने तैं मैने कहा ॥
सो सब मूल ग्रंथ अनुसार । शुध करयो बुध जन सुविचार ॥ ८ ॥
उनबीससतठारहसार । सावण सुदी दशमी शुक्रवार ॥
पूरण भई वचनिका एह । बाचौ पढौ सुनौ धरि नेह ॥ ६ ॥

दोहा—मंगलमय मंगल करन बीतराग चिद्रूप ।
　　मन बच कर ध्यावतै, हो है त्रिभुवन भूप ॥ १० ॥

इति श्री सकलकीर्ति आचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषा वचनिका समाप्ता ॥

६४. सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या–११३ । साइज–१२×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १७०३ मंगसिर सुदी ५ । लेखन काल–सं० १७६८ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२

विशेष—पं० सुखलाल ने केथूण नगर में प्रतिलिपि की थी । पं० सुखराम का गोत ठोलिया, वासी शेखावाटी, बास हिंगूणया था ।

२६५. हनुमतचौपई—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र संख्या–४० । साइज–१०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । रचना काल–सं० १६१६ । लेखन काल–सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८७ ।

विशेष—छोटेलालजी ठोल्या ने मन्दिर दाणावलि (दीवानजी) के पंडित सवाई रामजी से ॥) देकर पुस्तक संवत १६०२ में ली थी ।

२६६. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म अजित । पत्र संख्या–८६ । साइज–१०¾×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

विशेष—ग्रंथ २००० श्लोक प्रमाण है प्रति प्राचीन है ।

२६७. होलिकाचरित्र—जिनदास । पत्र संख्या–१०६ । साइज–११½×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३८ ।

विशेष—ग्रंथ श्लोक संख्या ६४३ प्रमाण है ।

विषय—पुराण साहित्य

२६८. **आदिपुराण—जिनसेनाचार्य** । पत्र संख्या-३४५ । साइज-१२¾×६¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५८ ।

विशेष—पालुम्ब नगर निवासी बिहारीदास के पुत्र निहालचंद जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२६६ **आदिपुराण—पुष्पदंत** । पत्र संख्या-४ से २७६ । साइज-१२×५¾ इंच । भाषा-हिन्दी । भाषा-अपभ्रंश । रचना काल-× । लेखन काल-सं०१५४३ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—एक प्रति और है । लेकिन वह अपूर्ण है ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—अथ श्रीविक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४३ वर्षे आसोज सुदी ६ गुरुवारे श्री हिसारपेरोजाकोट सुलतान श्रीवहलोलसाहराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा. तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवा तत् शिष्य श्री मुनि जयनंदिदेवा तत् शिष्यणी वाई गूजरी निमित्त श्री खंडेलवालान्वये सेत्रपालीय गोत्रे सुनामपुरवास्तव्ये जिनशासनप्रभावकपरमश्रावकसंघपतिकल्हू नामा तत्पत्नी शीलशालिनी साध्वी राणा नाम्नी तयो चत्वार पुत्राः अनेकतीर्थयात्रादिमहामहोत्सवकारायिका अर्हंतादिपंचपरमेष्ठिचरणारविंदसेवनैकचंचरीका संघपति हवा स० धीरा सं० कामा, स० सुरपति नामधेया तन्मध्ये सघपति कामा भार्या विहितानेकव्रतनियमतपोविधानादिधर्मकार्या साध्वी कमलश्री तत्पुत्रौ देवपूजादिषट्कर्मपद्मिनीखंडमार्तण्डौ हस्तिनागपुरतीर्थयात्राप्रभावनाकारणोपपन्न पुन्यबलप्रचण्डौ स० भीवा स बच्छकौ संघपति भीमाख्यजाया देवगुरुशास्त्रभक्तिविधानप्रलब्धछाया साध्वी भीवश्री इति प्रसिद्धि तद्‌नंदने प्रथमनामा गुरुदास तत् कलत्र शीलाद्यनेकगुणपात्रे गुणश्री नामिक तत्सुतौ चिरजीव जैरणमल संघपति बह्म गेहनी विनयादिगुणानुनद्धाहिनी वउलसिरि इति रुधि । तत् तनुजो जिनचरणकमल सेवनैकचंचरीका: स० रावणदासाख्य तज्जननी शीलविनयादिगुणगणधत्तं सरस्वती संज्ञिका । एतेषांमध्ये साध्वीया कमलश्री तया निज पुत्र स० भीवा बच्छूकयो न्यायोपार्जित वित्तेन इदश्री आदिपुराणपुस्तकं लिखापित ॥ लिखितं महेश्वर शोभा सुत ऊधाकेन इदं पुस्तकं ।

३००. **आदिपुराण भाषा—पं० दौलतराम** । पत्र संख्या-६४८ । साइज-१३½×६¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

ग्रन्थ २३७०० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति और है ।

३०१. **उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य** । पत्र संख्या-३८१ । साइज-१२½×६¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६० चैत्र सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन न० १५६ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। अजमेर पट्ट के भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट में आचार्य रामकीर्ति के समय में लश्कर (ग्वालियर) मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गयी थी। इसमें ६६ से ६८ तक पत्र नहीं हैं।

एक प्रति और है। यह प्रति प्राचीन है।

३०२. **नेमिजिनपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त** । पत्र संख्या–१८३ । साइज–११×५ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १६१० आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३० ।

विशेष—तक्षकगढ मे राजा रामचन्द्र के शासन काल में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी।
• प्रतिया और हैं।

३०३ **पद्मपुराण—रविषेणाचार्य** । पत्र संख्या–१ से १४० । साइज–१३×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६१ ।

३०४ **पद्मपुराण—पं० दौलतराम** । पत्र संख्या–६२१ । साइज–१२×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । रचना काल–सं० १८२३ माघ सुदी ६ । लेखन काल–सं० १६०० आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८

विशेष—दयाचंद चांदवाड ने लिपि की थी।

३०५ **पाण्डवपुराण—शुभचन्द्र** । पत्र संख्या–२०२ । साइज१०½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–सं० १६०८ भादवा सुदी २ । लेखन काल–सं० १७६२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

विशेष—श्वेताम्बर यति गोरधनदास ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

३०६ **बलभद्रपुराण—रइधू** । पत्र संख्या–१५५ । साइज–१२×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७१२ फागुन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—औरंगजेब के शासनकाल में वेराठ नगर मे अग्रवाल वंशोत्पन्न मुगिल गोत्रीय संघी साघु के वंशज संघी श्री कुशलसिंह ने पेमराज से प्रतिलिपि कराई थी।

३०७ **रामपुराण (पद्मपुराण)—भ० सोमसेन** । पत्र संख्या–२०४ । साइज–११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–सं० १६५६ । लेखन काल–सं० १८७८ माह सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५६

विशेष—श्वेताम्बर जयदास ने प्रतिलिपि की थी। कुल ३३ अधिकार हैं। ग्रन्थाग्रन्थ संख्या–७०० श्लोक प्रमाण है।

३०८. **वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति** । पत्र संख्या–१६४ । साइज–१०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५७ ।

विशेष—इसमें कुल ११ अधिकार हैं। महात्मा सालगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६. **शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति**। पत्र संख्या-४६ से १८४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१८ माह सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २५८।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं। श्लोक संख्या ४३८० है। एक प्रति और है।

३१०. **हरिवंशपुराण—यशःकीर्त्ति**। पत्र संख्या-१५१। साइज-११½×५¾ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१५ सावनसुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—४००० प्रमाणश्लोक ग्रन्थ है। बादशाह अकबर के शासन काल में अग्रवाल वंशोत्पन्न मित्तल गोत्रीय रेवाड़ी निवासी साह असराज के वंशज सा. भीमसेन ने प्रतिलिपि कराई थी। लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है।

३११. **हरिवंशपुराण—ब्र० जिनदास**। पत्र संख्या-३६६। साइज-१०¾×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७१२ अगहन बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १६८।

लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

३१२. **हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम**। पत्र संख्या-६८४। साइज-१३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १८२६ चैत्र सुदी १। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १४५।

विशेष—बलदेव कृत जयपुर वंदना भी है।

विषय—कथा एवं रासा साहित्य

३१३. **अष्टाह्निकाकथा**—पत्र संख्या-२४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६१० मंगसिर बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२।

विशेष—गुजराती हिन्दी मिश्रित है। प्राकृत गाथाएँ हैं उस पर टीका है। पन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—शान्ति देव प्रणाम करि निश्चय मन में ध्याय।
　　कथा अठाईनी लिखी, भाषा सुगम बनाय॥

यहां समस्त खोट कर्म री पालने वाली, निमल धर्म री उपजावने वाली और कर्म तिवरी नासरी करिने वाली केर, यह लोग रे विषै परलोक रे विषै परलोक रे विषै कियौ छै। घणौ सुख जिन्हे ऐसा पर्यूषणा पर्व आयौ थकौ समस्त देवता भवनपति इन्द्र मेल्या होय ते नंदीश्वर नामा आठमा द्वीप रे विषै धर्म री महिमा करलावे जावे ॥

अन्तिम—प्रति मंदिर किंवो सरस कथा अठाई वेस।
पद में अशुध केई हुवो कवि जन सीझो ह्रेस ॥

३१४. **अष्टाह्निका कथा**—पत्र संख्या–३३। साइज–१०×४½ इन्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–कथा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८८२ आषाढ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८१।

विशेष—पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। अन्त में निम्न दोहा भी है:—

रतन कोह सुख संकडो अलवेली पणीयार।
दंपत पाणि भरै तीसै पुरष री नार ॥ १ ॥

३१५. **अनंतव्रतकथा**—पत्र संख्या–६। साइज–११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६०१ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

३१६. **अष्टाह्निका कथा—रत्ननंदि**। पत्र संख्या–४। साइज–११½×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ७५।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है। श्लोक संख्या–८६ है।

३१७. **आराधनाकथाकोष**—पत्र संख्या–८२। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १५४५ माघ सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ३२५।

विशेष—हिसार पैरोजाबादपत्तने सुरत्राण मयलोलिसाहि राज्ये गुणभद्र देवा–तेषां आम्नाये साधु चांदा………… ………… … पनूत कथाकोषग्रन्थ लिखापितं। ब्रह्म चांदम योगदत्त।

प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है। पत्र २४ से ८२ तक फिर लिखाये गये हैं। अन्तिम पत्र जीर्ण तथा फटा हुआ है।

३१८. **कमलचन्द्रायणकथा**—पत्र संख्या–२। साइज–१०×४½ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

विशेष—१५४ और १५५ वां पत्र अन्य ग्रन्थ के हैं।

३१९. **कालिकाचार्यकथानक—भावदेवाचार्य**। पत्र संख्या–८। साइज–१०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–कथा। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३८४।

विशेष—गाथा संख्या १०० है। पत्रों पर सुनहरी पंक्ति है।

३२०. **आराधनाकथाकोश**—पत्र संख्या-५६ । साइज-१२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८ ।

निम्न कथाओं का संग्रह है:—

सम्यक्त्वोद्योत कथा, अकलंक स्वामी की कथा, समंतभद्राचार्य की कथा, सनतकुमार चक्रवर्त्ती की कथा, संजयंत मुनि की कथा, मधुपिंगल की कथा, नागदत्त मुनि की कथा, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती की कथा, अंजन चोर की कथा, अनंतमति की कथा, उद्यापन राजा की कथा रेवती रानी की कथा, जिनेन्द्र भक्त सेठ की कथा, वारिषेण की कथा, विष्णुकुमार कथा, वज्रकुमार कथा, प्रीतिंकर कथा, तथा जम्बूस्वामी कथा । ये कुल १८ कथाएं हैं ।

३२१. **नन्दीश्वरविधान कथा**—पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२२. **नन्दीश्वरव्रत कथा—शुभचंद्र** । पत्र संख्या-७ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२३. **नागकुमारपंचमी कथा-मल्लिषेण सूरि** । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८१ ।

विशेष—४ सर्ग हैं । ग्रंथ श्लोक संख्या ४६५ प्रमाण है ।

३२४. **निशिभोजनकथा—भारामल्ल** । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

प्रति प्राचीन है ।

३२५. **पुण्याश्रवकथाकोष—दौलतराम** । पत्र संख्या-८१ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल सं० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२६. **भक्तामरस्तोत्र कथा**—पत्र संख्या-३७ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २१५ ।

३२७. **भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा—विनोदीलाल** । पत्र संख्या-१७३ । साइज-११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७४७ सावन सुदी २ । लेखन काल-सं० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—थानजीलाल जी ने प्रतिलिपि कराई थी। कुल ३८ कथायें हैं। एक प्रति और है।

३२८. **मदनमंजरीकथा प्रबन्ध—पोपटशाह**। पत्र संख्या-१५। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-मंगसिर सुदी १०। लेखन काल-सं० १७०६ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २१३।

३२९. **मुक्तावलिव्रतकथा—खुशालचंद**। पत्र संख्या-५। साइज-८½×७¾ इञ्च। विषय-कथा। रचना काल-सं० १८७२। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ११६।

३३०. **मेघकुमारगीत—कनककीर्त्ति**। पत्र संख्या-२। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४०।

विशेष—प्रति प्राचीन है:—४६ पद्य हैं।

> श्री वीर जिणंद पसाइ, जे मेघकुमार रिषि गाइ।
> ताही आगली वीनस वीजाइ, वसी संपति सगली पाइ ॥ ४६ ॥ धन धन रे० ॥
> जे मुनीवर मेघकुमार, जीधो चारित पालउसार।
> गुरुरू श्री जीन माणीक सीस, इम कनक भणय नीस दीस ॥

॥ इति मेघकुमार गीत संपूर्ण ॥

३३१. **राजुलपच्चीसी—लालचंद विनोदीलाल**। पत्र संख्या-४। साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १७६६। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

३३२. **रैदव्रत कथा—देवेन्द्रकीर्त्ति**। पत्र संख्या-४। साइज-११¾×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२।

३३३. **रोहिणीव्रत कथा—भानुकीर्ति**। पत्र संख्या-४। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

३३४. **बंकचोर कथा (धनदत्त सेठ की कथा)—नथमल**। पत्र संख्या-१४। साइज-१२½×७½ इञ्च भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। रचना काल-सं० १७२५ असाढ सुदी ६। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० ३०।

विशेष—एक प्रति और है। चाकसू का विस्तृत वर्णन है। पद्य संख्या २११ है।

प्रारम्भ— —चौपाई—

> प्रणमू पंच परमेष्टी सार। तिहूं सुमरत पावे भवपार ॥
> दूजा सारद नैं विस्तरूं। बुधि प्रकास कवित उचरूं ॥
> गुरु निग्रर्थ नमू जगदीस। संख्या तीस सहस चौबीस ॥
> वाणी तिहू कहै जनसार। सुणत भव्य जिन उतरै पार ॥

गणधर मुनिवर करूं वंदना। वंक चोर की कथा मन तणां ॥
ता कोवा माखी निज मांस। ताको सयौ सोलहो निवास ॥ ३ ॥
दूजी कथा सेठ की कही। नाम धनदत्त धर्म नमरी सही ॥
सदा व्रत पाले निज सार। ऊँच नीच को नही विचार ॥ ४ ॥

अन्तिम—पदली सुणसी जे नर कोय। क्रम २ ते मुक्ति ही होय ॥
सहर चाटसू सुवस वास। तिह पुर नाना भोग विलास ॥ २७७ ॥
नव्वै कूवा नव सै ठाय। ताल पोखरी कह्या न जाय ॥
तामें बडो जगोली राव। सबै लोग देखण को भाव ॥ २७८ ॥
पैडीत माहि बणी चोकोर। नीर भरै नारी चहु ओर ॥
चकवा चकवी केल कराहि। वधिक ताहि नहीं दुख दाय ॥ २७९ ॥
छत्री चोंतरा बैठक घणी। अर मसजद तुरका की बणी ॥
चहुँधा रूंख वृख बहु छाय। पंथी देखि रहे बिरमाय ॥ २८० ॥
चहुंधा घाट अधिक बणाय। पीवै संग बछा अर गाय ॥
सहर बीचि तैं कोट उतंग। ताहि बुरज अति बणी सुचंग ॥ २८१ ॥
चहुंधा खाई भरी सुभाय। एक कोस जाणी गिरदाव ॥
चहुंधा बणे अधिक बाजार। बसै वणिक करै व्यापार ॥ २८२ ॥
कोई सोनो रूपौ कसै। कोई मोती माणिक लसै ॥
कोई बेचै टका रोक। केई बजाजी रोका ठोकि ॥ २८३ ॥
कोई परचूना बेचै नाज। केई एकठे मेलै साज ॥
केई उधार दाम की गांठि। केई पसारी माडै हाटि ॥ २८४ ॥
च्यार देव ए जिणवर तणा। ता महि बिंब बडो अति घणा ॥
करै महोछै पूजा सार। श्रावक लीया सब आचार ॥ २८५ ॥
बाई जती रहण को चाव। उनही हार दीजे करि भाव ॥
और देहुरे वैसनु तणा। धर्म करै सगला आपणा ॥ २८६ ॥
नौरंगसाहि राज ते धरै। पौण छतीसो लीला करै ॥
कहूं चोवा चंदन महकाय। कहूं अगरजा फल विकसाय ॥ २८७ ॥
नगर नायका सोभा धरै। पानु नव रचित वोली करै ॥
ऐसो सहर और नही सही। दुखी दलिद्री दीसै नही ॥ २८८ ॥
हाकिम से मदारखां सही। और जोर कोउ दीसै नही ॥
पालै परजा चालै न्याय। सीलवंत नर लाभ सहाय ॥२८९॥

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५०. सारस्वत धातुपाठ—हर्षकीर्ति । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७८१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

विशेष खंडेलवाल ज्ञातीय हेमसिंह के पठनार्थ ग्रंथ रचना की गई तथा वसु ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५१. सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र संख्या-१७ । साइज-११×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६४ सावन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २११ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं ।

३५२. सारस्वत प्रक्रिया—नरेन्द्रसूरि । पत्र संख्या-७४ से १३३ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—केवल कृदंत प्रकरण है ।

३५३. सारस्वतप्रक्रिया टीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र संख्या-५६ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५० ।

विशेष—द्वितीय वृत्ति तक पूर्ण है ।

३५४. सारस्वत रूपमाला—पद्मसुन्दर । पत्र संख्या-६ । साइज-१०¾×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—श्लोक संख्या-५२ है । पंडित ऋषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३५५. सिद्धान्त चन्द्रिका (कृदन्त प्रकरण)—रामचंद्राश्रम । पत्र संख्या-२१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१६ द्वितीय बैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३८ ।

विशेष—जयनगर में घासीराम ने महात्मा फतेहचंद से प्रतिलिपि कराई । तृतीय वृत्ति है । एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

३५६. सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—सदानंद । पत्र संख्या-२८४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५४ ।

३५७. हेमव्याकरण—आचार्य हेमचन्द्र । पत्र संख्या-२५ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

विशेष—पत्र के कुछ हिस्से में मूल दिया हुआ है तथा शेष में टीका दी हुई है । चुरादि गण तक दिया हुआ है ।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

३५८. अनेकार्थ मंजरी—नंददास । पत्र संख्या-५ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२६ ।

विशेष – पद्य संख्या-११६ है ।

३५९. अनेकार्थ संग्रह—हेमचंद्र सूरि । पत्र संख्या-६६ साइज-१२½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १४७७ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

विशेष—ग्रंथाग्रंथ संख्या २०४ है । पत्र जीर्ण है । पत्र ५८ तक संस्कृत टीका भी है ।

३६०. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-५४ । साइज-१३×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १४८० अषाढ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—७ काण्ड तक है । सागरचंद सूरि ने प्रतिलिपि की थी ।

३६१. अभिधानचिंतामणि नाममाला—आचार्य हेमचंद्र । पत्र संख्या-१२६ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६२. अमर कोष (नाम लिङ्गानुशासन)—अमरसिंह । पत्र संख्या-११२ । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—द्वितीय काण्ड तक है । पत्रों के बीच में श्लोक है । एक प्रति और है उसमें तृतीय काण्ड तक है ।

३६३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१०½×४½ इञ्च । टीका काल-सं० १६८१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है एवं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुऐ हैं ।

३६४. धनंजय नाम माला—धनंजय । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४७ माघ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०५ ।

श्लोक संख्या-२०० है ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई तथा दोधराज ने संशोधन किया ।
एक प्रति और है ।

संवत सतरा सै पचीस । आषाढ बदी आठी वरतीज ॥
वारज सोमवार ते आथि । कथा संपूर्ण भई परमाण ॥ २६० ॥
पढसी सुणसी जे नर कोय । ते नर स्वर्ग देवता होय ॥
भूल चूक कही लिखयौ होय । नथमल क्षमा करो सब कोय ॥ २६१ ॥
॥ इति श्री टंकचोर धनदत्त कथा संपूर्णम् ॥

विशेष – एक प्रति और है ।

३३५. व्रतकथाकोष—श्रुतसागर । पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८४ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५३ ।

विशेष—भिलाय में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । ४ प्रतियां और हैं ।

३३६. व्रतकथाकोष—खुशालचंद । पत्र संख्या–८० । साइज–१२×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २० ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

निम्न १२ कथाओं का संग्रह है—

मेरुपंक्ति कथा, दशलक्षण कथा, मुक्तावलीव्रतकथा, तपकथा, चंदनषष्ठीकथा, षोडषकारणकथा, ज्येष्ठ जिनवरकथा, आकाशपंचमीव्रतकथा, मोक्षसप्तमीव्रतकथा, अक्षयनिधिकथा, मेघमालाव्रतकथा, लब्धिविधानकथा और पुष्पांजलिव्रतकथा ।

३३७. शुकराज कथा (शत्रुंजयगिरि गौरव वर्णन)—माणिक्य सुन्दर । पत्र संख्या–२१ । साइज–१०½×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७१ ।

३३८. सप्तव्यसनकथा—सोमकीर्ति । पत्र संख्या–६६ । साइज–११×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–सं० १५२६ । लेखन काल–सं० १७१७ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—जोशी भगवान ने सिरोर में प्रतिलिपी की थी कुल ७ अध्याय हैं । श्लोक संख्या २११७ प्रमाण है ।

३३९. सिंहासनद्वात्रिंशिका—पत्र संख्या–४१ । साइज–६×४½ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । रचना काल–× । लेखन काल–× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

विशेष—बत्तीसों कथाएँ पूर्ण हैं पर इसके बाद जो कुछ और विवरण है वह अपूर्ण है ।

विषय—व्याकरण शास्त्र

३४०. आख्यात प्रक्रिया ······ । पत्र संख्या–२७ । साइज–१०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—श्लोक संख्या १५० है ।

३४१. दुर्गपदप्रबोध—श्री वल्लभवाचक हेमचंद्राचार्य । पत्र संख्या–३६ । साइज–१०$\frac{१}{४}$×४$\frac{१}{४}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–सं० १६६१ । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४५ ।

विशेष—लिंगानुशासन की वृत्ति है । प्रति प्राचीन है ।

३४२. धातु पाठ—बोपदेव । पत्र संख्या–१४ । साइज–१०$\frac{१}{२}$×४$\frac{३}{४}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८११ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—ग्रंथाग्रंथ संख्या ४०५ है । एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

३४३. पंचसन्धि······ ······ । पत्र संख्या–६ । साइज–८$\frac{३}{४}$×४$\frac{१}{२}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

३४४. पंच सन्धि टीका ······ । पत्र संख्या–२८ । साइज–८$\frac{३}{४}$×४$\frac{१}{२}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७८२ ज्येष्ठ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—सं० १७८२ ज्येष्ठ में नंदलाल यति ने टीका लिखी थी ।

३४५. प्रक्रियाकौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–५१ । साइज ११$\frac{१}{२}$×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

प्रति प्राचीन है । श्लोक संख्या–२५०० है ।

३४६. प्रयोगमुखव्यसार·· ·· ·· । पत्र संख्या–११ । साइज–८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १७४८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८८ ।

३४७. प्राकृतव्याकरण—चंड । पत्र संख्या–३ । साइज–१०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८८ ।

३४८. प्राकृतव्याकरण ·········· । पत्र संख्या–१८ । साइज–११$\frac{३}{४}$×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

३४९. लिंगानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या–५ । साइज–१०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन ४४१ ।

३६५. **शब्दानुशासन-वृत्ति—हेमचंद्राचार्य**। पत्र संख्या-११८। साइज-१०½×४½ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। रचना काल-×। लेखन काल सं० १५२४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४१४।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५२४ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिविजय लब्धविसालगणि, वा० शान्तिरत्नगणि शिष्य वा० धर्मगणि नाम पुस्तकं चिरनद्यात्।

३६६. **वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार**। पत्र संख्या-७। साइज-११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-छंद शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६७ पौष सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० ११।

विशेष—५ प्रतियां और हैं जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है।

३६७. **वृत्तरत्नाकर टीका—सोमचंद्रगणि**। पत्र संख्या-४७। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-छंद शास्त्र। टीका काल-सं० १३२१। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २१६।

३६८. **श्रुतबोध—कालिदास**। पत्र संख्या-१। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-छंद शास्त्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३३।

विशेष—६ फुट लम्बा एक ही पत्र है। पद्य संख्या ४३ हैं। इसके बाद स्वप्नाध्याय दिया हुआ है जिसके ७६ पद्य हैं। इसकी प्रतिलिपि सुखराम मोटे ने (खंडेलवाल) स्वपठनार्थ सं० १८४५ मंगसिर बुदी ६ को बटेश्वर में की थी।

विशेष—एक प्रति और है।

विषय—नाटक

३६९. **प्रबोधचन्द्रोदय नाटक—श्रीकृष्ण मिश्र**। पत्र संख्या-४७। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७८३ फाल्गुन सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६६।

३७०. **मदन पराजय—जिनदेव** । पत्र संख्या-५० । साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विषय-लोकविज्ञान

३७१. **त्रिलोकप्रज्ञप्ति—यति वृषभ** । पत्र संख्या-२८३ । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४ ।

३७२. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२०६ । साइज-१२×६ इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—ग्रन्थ के साथ जो लकड़ी का पुट्ठा है उस पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र हैं । पुट्ठा सुन्दर तथा सुनहरा है ।

३७३. **त्रिलोकसार—नेमिचंद्राचार्य** । पत्र संख्या-२६ । साइज-१३½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखनकाल-सं० १७६६ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०८ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४. **त्रैलोक्यसार चौपई—सुमतिकीर्ति** । पत्र संख्या-२३ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-सं० १६२७ माघ सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४१ ।

विशेष—१६ पत्र से आगे अजयराज कृत सामायिक क्षमावाणी है । जिसका रचना काल-सं० १७६४ है ।

३७५. **त्रिलोकसार सटीक-मू० कर्त्ता-नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार-सहस्रकीर्ति** । पत्र संख्या-८८ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६ ‥ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय–सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३७६. **कामंदकीय नीतिसार भाषा—कामन्द**। पत्र संख्या–४। साइज–१०×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–नीति। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२८।

प्रारम्भ—अथ कामंदकीय नीतिसार की बात लिख्यते। जाकै प्रभावतै सनातन मारग विषै प्रवर्तै। सो दंड को धारक लक्ष्मीवान राज जयवंत प्रवरतो ॥ १ ॥ जो विष्णुगुप्त नामा आचारिन बडे वंश विषै उपजै अयाचक गुणनि करि बडे जे रिषीश्वर तिनके वंश मैं प्रथिवी विषै प्रसिद्ध होतो भयो ॥ २ ॥ जो अग्नि समान तेजस्वी वेद के ज्ञातानि में श्रेष्ठ अति चतुर च्यारू वेदनि कौ एक वेद नाई अध्ययन करतो हुवो ॥ ४ ॥

अन्तिम—विस्तीर्ण विषय रूप वन विषै दोडतो पीडा उपजायवेको है स्वभाव जाको ऐसो इन्द्रिय रूप हस्ती ताहि आत्मज्ञान रूप अंकुश करि वशीभूत करै ॥ २७ ॥ प्रयत्न करि आत्मा विषयनि ग्रह ॥ कमंदकी ॥ गारशरामजी की लीख ॥

३७७. **चाणक्यनीतिशास्त्र—चाणक्य**। पत्र संख्या–२ से १५ तक। साइज–१०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। रचना काल–×। लेखन काल–×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४३०।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है तथा आठवें अध्याय तक है। एक प्रति और है। लेकिन वह भी अपूर्ण है।

३७८. **ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास**। पत्र संख्या–६। साइज–१२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सुभाषित। रचना काल–सं० १७२६ माह सुदी ७। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६३।

३७६. **जैनशतक—भूधरदास**। पत्र संख्या–१८। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। रचना काल–सं० १७८३ पौष बुदी १३। लेखन काल–सं० १८६६ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन नं० १४।

३८०. **प्रति नं० २**। पत्र संख्या–१३। साइज–१०½×५ इञ्च। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ११८।

विशेष—इस प्रति में रचना काल सं० १७८१ पौष बुदी १३ दिया है।

३८१. **नीति शतक—भर्तृहरि**। पत्र संख्या–६। साइज–१२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३७६।

विशेष—श्लोक संख्या–१११ है। एक प्रति और है।

३८२. **नीतिसार—इन्द्रनंदि**। पत्र संख्या–५। साइज–११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१०।

विशेष— श्लोक संख्या ११३ प्रमाण है।

३८३. शतकत्रय—भर्तृहरि । पत्र संख्या-६७ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष - पत्र ३६ तक संस्कृत टीका भी दी हुई है। नीतिशतक वैराग्य शतक एवं शृंगार शतक दिये गये हैं।

३८४. मनराम विलास—मनराम । पत्र संख्या-१० । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६५ ।

विशेष—दोहा, सवैया, कवित्त आदि छंदो का प्रयोग किया गया है तथा विहारीदास ने संग्रह किया है।

प्रारम्भ— करमादिक अरिन कौ हरैं अरहंत नाम, सिद्ध करैं काज सब सिद्ध को भजन है।
उत्तम सुगुन गुन आचरत जाकी संग, आचारज भगत बसत जाके मन है॥
उपाध्याय ध्यान तैं उपाधि सम होत, साध परि पूरण कौ सुमरन है।
पंच परमेष्ठी कौ नमस्कार मंत्रराज ध्यावै मनराम जोई पावै निज धन है॥

३८५. राजनीति कवित्त—देवीदास । पत्र संख्या-२४ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—११६ कवित्त हैं एवं गुटका साइज है। पत्र १,२,५ तथा अन्तिम बाद के लिखे हुए हैं। ताजगंज आगरे के रहने वाले थे तथा औरंगजेब के शासन काल में आगरे में हीं रचना की।

३८६. सद्भाषितावली—पन्नालाल । पत्र संख्या-५३ । साइज-१३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६४२ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४ ।

३८७. सिंदूर प्रकरण—बनारसीदास । पत्र संख्य -३७ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । रचना काल-सं० १६९१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

विशेष—१८ पत्र से आगे भैया भगवतीदासजी कृत चेतन कर्म चरित्र है जो अपूर्ण है।

३८८. सुभाषितरत्न सन्दोह—अमितगति । पत्र संख्या-७२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-सं० १३५० । लेखन काल-सं० १८०६ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४३

विशेष—मेवात देश में सहाजहानाबाद में प्रतिलिपि हुई। अहमदशाह के शासन काल में लाल इन्द्रराज ने देवीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई।

३८९. सुभाषित संग्रह.........। पत्र संख्या-२२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

श्लोक सख्या -१११ हैं।

३६०. सद्भाषितावली—सकलकीर्ति। पत्र संख्या-२८। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७७६। पूर्ण। वेष्टन नं० २२१।

विशेष—अमरसिंह छाबड़ा ने टोंक में प्रतिलिपि की थी।

३६१. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र। पत्र सख्या-६५। साइज-११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७६० भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० २७४।

विशेष—बसवा मे दीपचंद संघी ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है जो सवत् १०८० की लिखी हुई है।

३६२. सुभाषितावली—चौधरी पन्नालाल। पत्र सख्या-१०५। साइज-११×६½ इञ्च। भाषा-हिंदी। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४९।

३६३. सूक्तिमुक्तावलि—सोमप्रभाचार्य। पत्र संख्या-४५। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०८।

विशेष - प्रति संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम पुष्पिका में टीकाकार भीमराज वैद्य लिखा हुआ है। ४ प्रतियां और है। जो केवल मूल मात्र है।

३६४ प्रति नं० २। पत्र सख्या-१८। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५२।

३६५. प्रति नं० ३। पत्र संख्या-६०। साइज-१२×६½ इञ्च। लेखन काल-सं० १७६०। पूर्ण। वेष्टन नं० २१०।

विशेष—प्रति सटीक है। टीकाकार हर्षकीर्त्ति हैं।

विषय-स्तोत्र

३९६. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र संख्या-४ । साइज-१२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०५ ।

विशेष—ब्र० धर्मसागर के शिष्य पं० केशव ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३९७. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र संख्या-८ । साइज-७¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

३९८. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र संख्या-४ । साइज-१०¾×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८९३ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं । जिसमें एक प्रति टीका सहित है ।

३९९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्र । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६९५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । तथा ग्रन्थ कर्त्ता का नाम सिद्धसेन दिवाकर दिया हुआ है । ऋषि रामदास ने प्रतिलिपि की थी । निम्न श्लोक टीका के अंत में दिया हुआ है ।

मालवाख्ये महादेशे सारंगपुरपत्तने ।
स्तोत्रस्यार्थो कृतो नव्यः छात्राय उत्तमधिया ॥

विशेष—६ प्रतियां और हैं जो केवल मूलमात्र हैं ।

४००. कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—बनारसीदास । पत्र संख्या-३ । साइज-११¾×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

४०१. कुबेरस्तोत्र........ । पत्र संख्या-१ । साइज-१३½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× लेखन काल-सं० १६१४ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४०२. चैत्यवंदना........ । पत्र संख्या-८ । साइज-७½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त महावीराष्टक (संस्कृत) भी है ।

४०३. चौबीसजिनस्तुति—शोभन मुनि। पत्र संख्या-१०। साइज-१०½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ३४८।

विशेष—श्लोक संख्या ६४ है। प्रथम पत्र नहीं है प्रति प्राचीन है। इसका शोभन सूत्र नाम भी है।

४०४. चौबीसतीर्थंकरस्तवन—ललित विनोद। पत्र संख्या-१। साइज-१०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६६ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

४०५. ज्वालामालिनी स्तोत्र ....। पत्र संख्या-२। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३।

४०६. ज्वालामालिनी स्तोत्र ....। पत्र संख्या-२। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८६८ प्र० आसोज सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

विशेष—छोटेलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

४०७. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य। पत्र संख्या-२३। साइज-११×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १५२।

४०८. जिनसहस्रनाम—आशाधर। पत्र संख्या-१४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३३४।

४०९. जिनसहस्रनाम टीका—श्रुतसागर। पत्र संख्या-१२८। साइज-१२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-× लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० २५६।

विशेष—कुल इसमें १००० (१२३४) पद्य हैं।

४१०. जिनसहस्रनाम टीका—अमर कीर्ति। पत्र संख्या-८४। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २५५।

प्रति प्राचीन है। मूल कर्ता जिनसेनाचार्य है। एक प्रति और है।

४११. जखड़ी—बिहारीदास। पत्र संख्या-४। साइज-६½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४८।

विशेष—३६ पद्य हैं।

४१ . दृष्टांत ....। पत्र संख्या-२। साइज-९½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४७।

४१३. दर्शनाष्टक ...... । पत्र संख्या-१। साइज-११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४१४. देवकपद्मत्रिशतिका । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

४१५. देवागमस्तोत्र—आचार्य समंतभद्र । पत्र संख्या-६ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४५ ।

विशेष—श्लोक संख्या-११७ प्रमाण है ।

४१६. देवप्रभास्तोत्र—जयानन्दिसूरि । पत्र संख्या-४ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७८ ।

विशेष—संस्कृत वृत्ति सहित है । सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१७. निर्वाणकाण्डगाथा ...... । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४१८. नेमिनाथस्तोत्र—शालिपंडित । पत्र संख्या-१ । साइज १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× पूर्ण वेष्टन नं० १५१ ।

४१९. पद्मावतीस्तोत्रकवच ...... । पत्र संख्या-१ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र एवं मंत्र शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२८ ।

४२०. पचपरमेष्ठीगुणस्तवन—प० डालूराम । पत्र संख्या-२१ । साइज-७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३४ ।

✓४२१. पंचमंगल—रूपचंद । पत्र संख्या-१८ । साइज-६¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

४२२. पार्श्वदेशान्तरछंद ...... । पत्र संख्या-४ । साइज-११¾×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४२३. पार्श्वनाथस्तोत्र—मुनिपद्मनंदि । पत्र संख्या-१७ से २५ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

४२४. पार्श्वनाथस्तवन .... । पत्र संख्या-१ साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६५ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४२५. पार्श्वनाथस्तोत्र .... । पत्र संख्या-१ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४२६. भगवानदास के पद—भगवानदास । पत्र संख्या-६५ । साइज-८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७१ ।

विशेष—१४८ पदों का संग्रह है । विभिन्न राग रागिनि यो में कृष्ण भक्ति के पद हैं ।

श्रीराग—हरि का नाम बिसाहौ रे सतगुरु चोखा बनिज बनाया ।

गोविंद के गुन रतन पदारथ नफा साथ ही पाया । जनम पदारथ पाइ कै किन्हूँ बिरलै नेग लगाया ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मैं मूरख मूल गवाया । हरि हरि नाम अराधि कै जिनि हरि ही सौं मन लाया ।
कहि भगवान हित रामराय तिनि जग मैं आनि कमाया ॥११२॥

विशेष—प्रत्येक पद के अन्त में "कहि भगवान हित रामराय" लिखा हुआ है । ६५ पत्र के अतिरिक्त अन्त में ६ पत्रों में विषय वार भिन्न २ रागिनियों की सूची दी है । इसमें कुल ११३ पद तथा ५०० श्लोकों के लिये लिखा है । गोविंदप्रसाद साह के पठनार्थ रूपराम नंदीश्वर के गुसाई ने प्रतिलिपि की । पदों की सूची के लेखन का सम्वत् १८२२ दिया है ।

४२७. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या-१६ । साइज-५½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २४१ ।

विशेष—१२ पत्र से कल्याण मंदिर स्तोत्र है जो कि अपूर्ण है । इसी में २ फुटकर पत्रों पर संस्कृत में लक्ष्मी स्तोत्र भी है ।

विशेष – २ प्रति और है ।

४२८. भक्तामर टीका .... । पत्र संख्या-४३ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २८३ ।

४२९. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रत्नचन्द्र सूरि । पत्र संख्या-८४ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १६६७ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल-सं० १७२५ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

विशेष—वृन्दावती नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं० सदामल्ल ने स्वपठनार्थ व परोपकारार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति मंत्र तथा कथाओं सहित है ।

ग्रन्थकार परिचयात्मक श्लोक—

श्रीमद् वखवंशेमंडणमणिर्महीपेति नामा वणिक ।

तद्भार्या गुणमंडित भतयुता चंपामिति नामधा ॥

तत्पुत्रो जिनपादपकंज मधुपो श्रीरत्नचन्द्रो मुनिः ।

चक्रे वृत्तिमिमां स्तवस्य नितरां नत्वा श्री वादीन्दुकम् ॥ ॥

सप्तषष्ठ-याकिते वर्षे शोडषाख्येहि संवते ।

आषाढश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारके ॥६॥

श्रीवापुरे महीसिन्धोस्तट भागं समाश्रिते ।

श्रोत्तु गदुर्गसंयुक्ते श्री चन्द्रप्रभसद्मनि ॥७॥

वर्णिनः कर्मसी नाम्नः वचनात मया व्यारचि ।

भक्तामरस्य सद्वृत्ति रत्नचन्द्रेण सूरिणा ॥८॥

४३०. **भक्तामरस्तोत्र भाषा—जयचंदजी छाबड़ा** । पत्र संख्या-३७ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १८७० कार्तिक बुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४३१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा कथा सहित—नथमल** । पत्र संख्या-४७ । साइज-१२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र एवं कथा । रचना काल-सं० १८२९ ज्येष्ठ सुदी १० । लेखन काल-सं० १८५२ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४० ।

विशेष—यह ग्रंथ लिखवाकर ब्रह्मचारी देवकरणजी को दिया गया ।

४३२. **भारती स्तोत्र**…………। पत्र संख्या-१ । साइज-१०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

४३३. **भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—भूपाल कवि** । पत्र संख्या-६ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष - संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं । एक प्रति और है ।

४३४. **लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मनंदि** । पत्र संख्या-१ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

४३५. **लघु सहस्रनाम**…………। पत्र संख्या-३ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

४३६. विवारपदर्त्रिंशिका स्तोत्र—धवलचन्द्र के शिष्य गजसार। पत्र संख्या-४। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३५६।

विशेष—सिरि जिणहंस मुणीसर रजे धवलचंद।
सिसण गजसारेण लहिया एसा अप्प हिया ॥४२॥

४३७. विषापहार स्तोत्र—धनंजय। पत्र संख्या-२। साइज-११×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३४६।

पद्य संख्या ४० हैं।

४३८. विषापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति। पत्र संख्या-१६। साइज-१०½×५। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २०१।

विशेष—पत्र ५ से आगे हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र भाषा भी है। २ प्रतियां और हैं।

४३९. विषापहार टीका—नागचंद्रसूरि पत्र संख्या-२६। साइज-८½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २१०।

विशेष—भट्टारक ललितकीर्ति के पट्ट शिष्यों में नागचंद सूरि थे।

४४०. विनती—अजयराज। पत्र संख्या-२। साइज-११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२५।

विशेष - दूसरे पत्र पर रविवार कथा भी दी हुई है पर वह अपूर्ण है। २३ पद्य तक है।

४४१. शत्रुञ्जय मुख मंडन स्तोत्र (युगादि देव स्तवन)। पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-गुजराती। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० २६६।

विशेष—ग्रन्थ में २१ गाथाऐं हैं जिन पर गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है। अर्थ के स्थान पर "बखान" नाम दिया है।

४४२. शान्तिनाथ स्तोत्र—कुशलवर्धन शिष्य नगागणि। पत्र संख्या-४। साइज-१०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६२।

विशेष—पद्य संख्या ५२ है।

प्रारम्भ—सकल मनोरथ पूरणो वांछित फल दातार।
वीर जिणेसर नायके जय जये जगदाधार ॥१॥

अन्तिम—ईय वीर जिणवर सयल सुखकर नयर वडली मंडनो।
सिधुराणो मगति प्रवर युगति रोग सोग विहंडनो ॥

तप गच्छ निरमल गगन दिनयर श्री विजयसेन सूरिसरो ।
कवि कुशलवर्धन सीस ए मणइ नगागणि मगल करो ॥५२॥

४४३ समवशरण स्तोत्र । पत्र संख्या-७ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०० ।

४४४ स्तुति सग्रह—चन्द कवि । पत्र सख्या-१ साइज-८ $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।

विशेष—शान्तिनाथ, महावीर तथा आदिनाथ की स्तुतियां हैं ।

दोहा—स्तुतिफल तै मैं ना चहू इन्द्रादिक सुरवास । चद तणी यह वीनता दीज्यो मुक्ति निवास ॥१८॥
॥ इति आदिनाथजी स्तुति सपूर्ण ॥

४४५. स्तोत्रटीका—आशाधर । पत्र सख्या-३० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६१ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६८ ।

विशेष—रायमल्ल न प्रतिलिपि की थी ।

४४६ स्तोत्र सग्रह । पत्र सख्या-८ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-सग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

निम्न लिखित स्तोत्र हैं—

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	र० का०	ले० का०	विशेष
पार्श्वनाथस्तोत्र	जगतभूषण	हिन्दी	×	×	
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मनंदि	सस्कृत	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	
कलिकुण्ड पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	× मत्र सहित	
चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	”	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	हिन्दी	×	×	

४४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनदि । पत्र सख्या-५ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १३० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

विषय—ज्योतिष एवं निमित्तज्ञानशास्त्र

४४८. अरिष्टाध्याय—पत्र संख्या—१० | साइज—१०$\frac{३}{४}$×५ इञ्च | भाषा—प्राकृत | विषय—ज्योतिष | रचना काल—× | लेखन काल—सं० १८५६ मंगसिर सुदी ११ | पूर्ण | वेष्टन नं० ३३१ |

विशेष—कुल २०३ गाथाएँ हैं | अन्त में ८ पद्य में छाया पुरुष लक्षण है | पं० श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी |

४४९. क्षीरार्णव—विश्वकर्मा | पत्र संख्या—१८ | साइज—१२×५$\frac{१}{२}$ इञ्च | भाषा—संस्कृत | विषय—ज्योतिष (शकुन शास्त्र) | रचना काल—× | लेखन काल—× | अपूर्ण | वेष्टन नं० ३७६ |

४५०. चमत्कारचिंतामणि—नारायण | पत्र संख्या—७ | साइज—१०$\frac{१}{२}$×५ इञ्च | भाषा—संस्कृत | विषय—ज्योतिष | रचना काल—× | लेखन काल—सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ४ | पूर्ण | वेष्टन नं० ४६१ |

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी |

४५१. ज्योतिषरत्नमाला—श्रीपति भट्ट | पत्र संख्या—१५ | साइज—१०×४$\frac{१}{२}$ इञ्च | भाषा—संस्कृत | विषय—ज्योतिष | रचना काल—× | लेखन काल—× | अपूर्ण | वेष्टन नं० ४६४ |

४५२. नीलकंठज्योतिष—नीलकंठ | पत्र संख्या—५६ | साइज—११×५ इञ्च | भाषा—संस्कृत | विषय—ज्योतिष | रचना काल—शक सं० १५०१ आसोज सुदी ६ | लेखन काल—× | पूर्ण | वेष्टन नं० ४६७ |

विशेष—नीलकंठ काशी के रहने वाले थे |

४५३. पाशाकेवली—पत्र संख्या—६ | साइज—११$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$ इञ्च | भाषा—संस्कृत | विषय—ज्योतिष | रचना काल—× | लेखन काल—× | पूर्ण | वेष्टन नं० ४०० |

श्लोक संख्या ४५ है | पाशा फेंक कर उसके फल निकालने की विधि दी हुई है |

४५४. भड्डलीविचार—सारस्वत शर्मा | पत्र संख्या—१४ | साइज—११$\frac{१}{२}$×५ इञ्च | भाषा—हिन्दी पद्य | विषय—ज्योतिष | रचना काल—× | लेखन काल—× | पूर्ण | वेष्टन नं० ४६८ |

विशेष—प्रत्येक नक्षत्र तथा तिथियों में मेघ की गर्जना को देखकर वर्ष फल जानने की विधि दी हुई है |
कुल ३१६ पद्य हैं |

४५५. शीघ्रबोध—काशीनाथ | पत्र संख्या—३४ | साइज—१०×६$\frac{१}{२}$ इञ्च | भाषा—संस्कृत | विषय—ज्योतिष | रचना काल—× | लेखन काल—सं० १८६६ वैशाख सुदी १४ | पूर्ण | वेष्टन नं० ४६६ |

विशेष—चतुर्थ प्रकरण तक है | श्लोक संख्या—७५ है | उदयचन्द ने स्वपठनार्थ लिपि की थी | गुटका साइज है |

४५६. षट्पंचासिका बालावबोध—भट्टोत्पल। पत्र संख्या–१५। साइज–१०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १६५० वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६२।

विशेष—मुनि नीरत्नवीर ने नंदासा ग्राम में प्रतिलिपि की थी। यह ग्रंथ कपूर विजय का था। संस्कृत मूल के साथ गुजराती भाषा में गद्य टीका दी हुई है।

प्रारम्भ—प्रणिपत्य रविं मूर्द्ध्ना वराहमिहरात्मजेन सतयशसा।
महनो ऽर्थं गहनाधरार्थमुद्दिश्य पृथु यशसा ॥१॥

टीका—प्रणिपत्य कहीइ नमस्कार करी नइ सूर्य प्रति मूर्द्धा मस्तकि करी वराहमिहरज पंडित तेह आत्मज कहीइ पुत्र पृथुयशा पुत्र वर नामि प्रश्न नइ विषइ प्रश्न तीविया कता कहीइ की थी।

४५७. संक्रान्ति तथा ग्रहातिचारफल—पत्र संख्या–१८ से ४२ तक। साइज–८×६½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७७२ माघ सुदी ४। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४७०।

विशेष—व्यास दयाराम ने प्रतिलिपि की थी।

विषय–आयुर्वेद शास्त्र

४५८. अंजनशास्त्र—अग्निवेश। पत्र संख्या–१३। साइज–११½×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १७५४ आश्विन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० ४५१।

विशेष—श्लोक संख्या २२४ है। नेत्र संबंधी रोगों का वर्णन है। मुल्तान नगर में रामकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी।

४५९. अष्टांगहृदयसंहिता—वाग्भट्ट। पत्र संख्या–११। साइज–११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। रचना काल–×। लेखन काल–×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५५०।

विशेष—सूत्र मात्र है। जयमल ने प्रतिलिपि की थी।

४६०. कालज्ञान—पत्र संख्या–११। साइज–१०×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। रचना काल–×। लेखन काल–सं० १८२७ चैत सुदी १५। वेष्टन नं० ४५८।

विशेष—श्लोक संख्या–४०० है। सहजराम ने चित्रकोट में अन्नपूराव जी के पास प्रतिलिपि की थी।

४६१. त्रिशतिकाटीका—पत्र संख्या-२० | साइज-११½×५½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-× | पूर्ण | वेष्टन नं० ४५८ |

४६२. योगशत—अमृतप्रभसूरि | पत्र संख्या-१६ | साइज-१०½×५ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-सं० १८५५ श्रावण बुदी ६ | पूर्ण | वेष्टन नं० २२ |

विशेष—संपतराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी |

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री अमृतप्रभ सूरि विरचित योगशतं | सम्पूर्ण ||

सं० १८५५ का वर्षे शाके १७२० प्रवर्तमाने मासानामाशुभमासे दुतियश्रावणमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ठम्यां भृगवासरे लिखितं संपतिराम श्रावक गोत्र छाबड़ा निज पठनार्थं |

४६३. रसरत्नसमुच्चय—पत्र संख्या-१३१ | साइज-११½×४ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-सं० १८१० चैत्र सुदी ३ | पूर्ण | वेष्टन नं० ४५६ |

विशेष—गुलाबचंद छाबड़ा ने जयपुर में भवानीराम तिवारी की प्रति से लिपि की थी |

४६४. रससार—पत्र संख्या-८ | साइज-१०×८½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-सं० १७३६ | पूर्ण | वेष्टन नं० ४५५ |

विशेष—

प्रारम्भ—श्री गौडीपार्श्वनाथाय नमः पंडित श्री ५ भावनिधानमपि सद्गुरुभ्यः नमः |

अन्त—इति श्री रससार प्र थ निर्विघ्नम् अनभूतिसंग्रीहतम् बहुशास्त्रसम्मत सम्पूर्ण |

४६५. रोगपरीक्षा—पत्र संख्या-७ | साइज-१२×५½ इञ्च | भाषा-हिन्दी संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-× | अपूर्ण | वेष्टन नं० ४५७ |

४६६. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज | पत्र संख्या-२६ | साइज-१२×५½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-सं० १८१३ आसोज बुदी १ | पूर्ण | वेष्टन नं० ४५३ |

विशेष—श्लोकों के ऊपर टीका दी हुई है |

४६७. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण—पत्र संख्या-३६ | साइज-१२×६ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | रचना काल-× | लेखन काल-× | पूर्ण | वेष्टन नं० ४५१ |

विषय-गणित शास्त्र

४६८. षट्त्रिंशिका—महावीराचार्य। पत्र संख्या-४५। साइज-११×४३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६६१ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६५।

विशेष—संवत् १६६५ वर्षे आसोज सुदी ८ गुरौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा। तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषणदेवास्तद्गुरुभ्राता ब्र० श्री भीमा तत् शिष्य ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० केशव पठनार्थ। ब्र० नेमिदास की पुस्तक है।

४६९. प्रति नं० २। पत्र संख्या-१८। साइज-११×४३/४ इञ्च। लेखन काल-१६३२ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६६।

विशेष—प्रति पर अच्छी टीका भी लिखी है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

संवत् १६३२ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ गुरुवासरे इलाप्राकारे श्रीसंभवनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टानुसरिणा भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्तिदेवा तच्छिष्य ब्र० श्री सुमतिदास लिखापितं शास्त्रं। भट्टारक श्री गुणकीर्ति शिष्य श्रीमुनिश्रुतकीर्ति पुस्तकं।

विषय-रस एवं अलंकार शास्त्र

४७०. इश्कचिमन—नागरीदास। पत्र संख्या-३। साइज-११३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-शृंगार रस। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४३८।

प्रारम्भ—इश्क उसी की झलक है ज्यों सूरज की धूप।
जहां इश्क तांहां आपहं कादर नागर रूप ॥१॥

कहु कीया नहि इस्क का इस्तमाल सवार ।
सो साहिब हू इस्क है करि क्यां सकै गंवार ॥२॥

अन्तिम—जिरह जख्म आरी जहां नित लोहू का कीच ।
नागर आसिक लुट रहे इस्क चिमन के बीच ॥४४॥
चलै तेज नागर इक है इस्क तेज की धार ।
और कटैं नहीं धार सौ कट्टै करै रिभवार ॥४५॥

४७१ कविकुलकंठाभरण—दूलह । पत्र संख्या–११ । साइज–६×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अलंकार शास्त्र । रचना काल–× । लेखन काल–× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

प्रारम्भ—पारवती शिव चरन मैं कवि दूलह करि प्रीति ।
थोरे क्रम क्रम तें कहे अलकार की रीति ॥१॥
चरन वरन लछन ललित रचिरी क्यों करताव ।
बिन भूषन नहि भूषई कविता वनिता चाव ॥२॥
दीरघ मत सत्र कविन के अरथा सै लघु तरन ।
कवि दूलह यातै कियौ कविकुलकठाभरन ॥३॥
जो यह कठाभरन को कठ करै सुख पाई ।
सभामध्य सोभा लहै अलकृती ठहराई ॥४॥
चद्रादिक उपमान है वदनादिक उपमेय ।
तुल्य अरथ वाचक लहै धर्म एक सो लेय ॥५॥

मध्य—अप्रस्तुत वरनै प्रससा लिए प्रस्तुत की ।
पचधा अप्रस्तुत प्रससा होति चाहे तै ॥
पच्छिन मैं याही तें बडो है राजहस ।
एक सदा नीर छीर के विवेक अवगाह तै ॥
प्रस्तुत में प्रस्तुत को द्योतन जहाई होइ
प्रस्तुत अकुर तहां वरनौ उछाह तैं ।
फूली रस रखी भली मालती समीप तैं
भली कनैर कली कोकले सुदेत काह तैं ॥३२॥

अन्तिम—सूरता उदारता कौ अदभुत वरनन ।
मिथ्याध्य अति उक्ति भाषै सब लोक्ष है ॥
दानि हू कें जाचक हुवे रक भरे तेज ।

सूखे सिंधु तेरी रिपु रानी करि सोग़ु है ॥
नाम जोग औरे अर्थ थापिए निरूक्ति ।
सांचे गुपाल भए जो रच्यो राधे सो वियोगु है।
प्रगट निषेध को अनुकथन प्रतिषेध ।
गिर गहिबो नयो तो मा'मन को मोग़ु है ॥

४७२ वैनविलास—नागरीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष—प्रारम्भ के ४ पत्रों में स्नेहसंग्राम प्रतापतेज कृत दिया है जिसके २५ पद्य है। इसे सं० १८६४ में छोटेलाल ठोलिया ने ३ आने में खरीदा था ॥१॥

स्नेहसंग्राम—प्रारम्भ—कुंडलिया:—

भौं हैं बाकी बाकसी लखी कुंज की ओट ।
समर सस्त्र बिछुवा लग्यो लालन लोटहि पोट ॥
लालन लोटहि पोट चोट जब उर मे लागी ।
कियो हियो दुस्यार पीर प्राम्न मैं पागी ॥
ब्रजनिधि बाकेवीर खेत में खडे अगोहे ।
तहां घाव पर घाव करत राधे की मोहे ॥१॥

अन्तिम—नेही वृजनिधि राधिका दोउ समर सधीर
हेत खेत आवत तही आके बाके वीर ॥
आके बाके वीर इन्थ बथ्थ न मरि छूटैं ।
दोऊ करि करि दाव घाव छिन हू' नहि छूटैं ॥
यह सनेह संग्राम सुनत चित होत विदेही ।
प्रताप तेज की बात जानि है सुघर सनेही ॥२५॥

वैनविलास—प्रारम्भः—

अहे बावरी वसुरिया ने तप कीनौं कौन ।
अधर सुधारस तैं बिमौ हम तरफत विच भौन ॥१॥

अन्तिम - मुरली सुनित में भई आसू द्रगनि बिसाल ।
मुख आवै सोही कहे प्रेम विवस ब्रज बाल ॥२६॥
नागर हरहि पलास की दाख धरी दवाय।
अंग राग वंशी लपट्यो हो विउडी नस काय ॥३०॥
इति श्री नागरीदास कृत वैनविलास संपूर्ण ।

४७३. रसिकप्रिया—केशवदास । पत्र संख्या-५६ । साइज-१२½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६८ ।

विशेष—पद्य संख्या-५०४ हैं । मिश्र आमानेरी वाले ने बसवा में प्रतिलिपि की थी । स्वामी गोविंददास की पोथी से प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८६८ माह सुदी ६ को छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने सवाई जयपुर में १।) रु० निछरावलि देकर यह प्रति खरीदी थी ।

४७४. शृंगारतिलक—कालिदास । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

विशेष—२३ पद्य हैं ।

४७५. शृंगारपच्चीसी—छविनाथ । पत्र संख्या-६ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७५ ।

प्रारम्भ—कोकिल न हो हिये मतँग महा मस्तक कै ।
वात मातु मंत्र की वताई भली वस्त है ॥
फूलै न पलास लाल पौष आइ फैलि गये ।
जग चहुंधा राखिवे को वडो दस्त है ॥
मेरी समझाई हिल मिल प्यारी पीतम सौं ।
कानि काम भूपति की मान वो प्रस्त है ॥
कहै छविनाथ आज बकसीष संत छोडि ।
मान गढ पस्त करिवे की करी कस्त है ॥१॥

अन्तिम—छाडि मकरंद कमलन के मरंद भई पाइ कै ।
सुगंध जाकी हरत न टारै है ॥
खंजन चकोर मृग मीन सेदखत जाहि ।
चौकत से जहां तहां झपत निचारै हैं ॥
कहै छविनाथ छवि अंगन की देखि ।
जासौं हारि गई तिलोत्तमा आने जग वारे हैं ॥
प्यारे नंद नंदन तिहारे मुख चंद पर ।
वारि वारि डारे वहि नैनन के तारे हैं ॥२५॥

दोहा—माधव नृप की रीझ को कवि छविनाथ विसाल ।
कीन्हे रस शृंगार के कवित पच्चीस रसाल ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री माधवेश प्रसन्नता व्यवस्थापक गोविंददासात्मज कवि अविनाथ विरचिता शृंगारपच्चीसी शोभते ॥ विजैय नाम संवत्सरे दक्षिणायणे हेमत ऋतौ पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया शुक्रवासरे लिखितमिद पुस्तकं ।

महाराजा माधवसिंह के प्रसन्न करने को गोविंददास के पुत्र अविनाथ ने रचना की थी।

४७६. हृदयालोकलोचन—पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७८ ।

स्फुट-रचनायें

४७७. अकलनामा—पत्र संख्या ३ । साइज-११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४२७ ।

४७८. अक्षरबत्तीसी—मुनि महिसिंह । पत्र संख्या-२ । साइज-६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्फुट । रचना काल-सं० १७२५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष अन्तिम पद्य—

सतरसई पच्चीस संवत् कीयो बखाण ।
उदयपुर उद्यम कीयो मुनि महसहि जाण ॥

४७९. ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका—पत्र संख्या-१० । साइज-१०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३१२ ।

४८०. गोरसविधि—पत्र संख्या-४ । साइज-६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

४८१. गोत्रवर्णन—पत्र संख्या-१० । साइज-६×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-इतिहास । रचना काल-× । लेखन काल-× पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—गोत्रों के नाम दिये हुये हैं ।

४८२. **चौरासी गोत्र**—पत्र संख्या-१ । साइज-२१½×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—खण्डेलवालों के चौरासी गोत्रों के नाम हैं ।

४८३. **चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन**—नन्दनन्द । पत्र संख्या-१२ । साइज-६×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य विषय-इतिहास । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—पद्य संख्या-१११ है । खण्डेलवालों के ८४ गोत्रों की उत्पत्ति का वर्णन है ।

प्रारम्भ दोहा—श्री युगादि रिसमादि गुण, सरण आय गुण गाय ।
श्रावक वंस सुग्रंथ रचि अतुल सु संपति थाय ॥१॥
वैस्य वरण में उच्य पद, धर्म दया को पाभि ।
श्रय कल्यान श्रावक प्रगट, रच्यै गोत्र कुल ग्राम ॥२॥

छंद—श्रावक व्रत तीर्थंकर सेय सुच्यारहि वर्ण सु पालत है ।
च्यार ही वर्ण सुकर्म क्रिया तब मुक्ति गया सु भालत है ॥
श्रीवरवर्द्ध सु मान्य सु स्वामी जु मुक्ति गया सुभ तालत हैं ।
फेर सुवर्स छह सतीयासिह वा तब मुनि प्रगटालत है ।

चौपाई—अपराजित मुनि नाम सुस्वामी । थान सीधाडा मध कहामी ॥
अपराजित मुनि तप सु प्रभाक । जिणसेनाचार्य सु भये ताक ॥
श्री जिणसैनचार्य तब होये । संवत येक साल मध्य जोये ॥
जिणसैनाचार्य सु मध्य सारा । छह सात मुनि काज सिधारा ॥
प्रभु पदम पद्म ध्यान तहां धर्ता । श्री जिण जोग रटण मुनि कर्ता ॥
फिर अवसर इक असहु आया । ग्राम खंडेला वन मधि आया ॥
मुनिहूँ पाच सह पंक्तावलि तह । भूत भवषित वर्त ज्ञान लह ॥
मूनी सकल सुनि मुनि की वानी । हैगी यह उपसर्ग पिछानी ॥
होनहार उपसर्ग अठही । होनहार नहि मिटै कठही ॥
सावधान मुनि ध्यान सुहावा । जोग सु ध्यान समर्थ सु जूवा ॥
ग्राम लगै चतुरासि खंडेलै । ताहां इक विप्र मरी उपजेलै ॥
ताहां नरनारी बहुत अति होये । ताहां अपति चींता उपजोये ॥
तबै अपति सब बीप्र बुलाये । विप्र मिटै सो करो दुजोये ॥

तब इक वीप्र कही सुधि राख्ये । नरहि मेध को जग काज्ये ॥
तब उह न्रपति वाक्य सत्य कीन्हों । नरहि मेध सायत रचि दीन्हो ॥
नर सब चौरासी के आए । वध्यो विघ्न ताहा बहोत कहाये ॥
दुज्य कहि न्रपति मनुष सत चाहै । मिटै विघ्न यह होन कराहै ॥
ताहा मुनी तप करै सु त्याकुं । पकडि मंगाय होम किये ज्याकुं ॥
हाहाकार वोहोत तहां होयो । न्रपति दुष्टतै काहा कर धोयो ॥
तब वाहा मुनिराज सब आये । जैनसैन आचार्य ताहाये ॥
बडा बडा सब मुनि का स्वामी । जोग ध्यान श्री अंतरयामी ॥
नगर सुफल सध्यान लगायो । चक्रेसुरी सु आप जजायो ॥
बहुरी गुवो जिन थापन कीनो । शांत भई न्रप ग्यान उपीनो ॥
तब आय न्रप बंदन कीनी । क्षमा करो अपराध मुनीनी ॥
न्रपति कहै मुनिराज दयालं । विघ्न मिटै सो करो कृपालं ॥
न्रप सु कही मुनी सर वानी । लग्यो पाप मानुष को घानी ॥
स्व आतम क्रत नींदत राजा । परयो पाय मुनि के सु समाजा ॥
कही भूप मम अघ मेटो । तुम पारस्य मुनिराज सु मेटो ॥
कही मुनि सुनि हे न्रप राजा । श्री जिणधर्म सर्व तुव आजा ॥
दया रूप जिण धर्म प्रकासा । मिटे पाप बुधि निर्मल मासा ॥
श्रावक धर्म न्रपति मुनि लीन्हों । मीटे पाप निर्मल अंग तीन्हों ॥
नगर खंडेल गाव बयासी । बत्या छा छत्री त्या वासी ॥
द्वय सुनार बत्या छा त्याही । कही भूप ये दोउ ज्याही ॥
दोउ कैसु दीहाडी न्यारी । श्रावक धर्म मूल सुखकारी ॥
इक कही आमणी देवी । दूजा कसु मोहणी तेवी ॥
चोरासी सुगोत्र श्रावक का । नीकै रचौ मली बुधि सुलका ॥
गोत्र वंस अरु नाम की हाडी । जिणसु धर्म तरु नीकी वाडी ॥

अन्तिम—संवत १८ सह गिनो अग्रनीवासी लाल ।
चैत क्रस्न तेरसि बुध सुभ ग्रंथ पूर्णास ॥ १०६ ॥
मन वंछित पठियो सुनै कुल श्रावक सुखसार ।
नंद नंद सेवग सुख, न देवा सिर भार ॥ ११० ॥

इति श्री ग्रंथ श्रावक गोत्र गुण सार नंद नंद रचिते संपूर्ण । सुभः ॥

लीखी गणेश लाल कवी स्वयं कृत । लिखायतं राज्य श्री चंपाराम का नंद चिरंजीव ।। पुत्र पौत्र कुल वृद्धि सुख संपति फल प्राप्ती सत्येव वाक्यं ।। १११ ।।

४८४. **जैनमार्तण्डपुराण—भ० महेन्द्र भूषण** । पत्र संख्या–१०२ । साइज–१२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त एवं आचार । रचना काल–× । लेखन काल–सं० १८५३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—भ० महेन्द्रभूषण ने प्रतिलिपि कराई थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम कर्म विपाक चरित्र भी है ।

प्रारम्भ:—अखंडात्मप्रज्ञानलजनित: तीव्रातिशयितज्वल: ।

ज्वालावलीनिचय: परिदग्धाखिलमल: ॥

महासिद्ध: सिद्धै: कृतचरणपंकेरुहनुति ।

महावीरस्वामी जयति जगतां नाथ उ दत: ॥१॥

अन्तिमस्तीर्थंकरो महात्मा महाशय: शीलमहांबुराशि: ।

नमोस्तु तस्मै जगदीश्वराय श्रीमन्महावीरजिनेश्वराय ॥२॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीमज्जैनमार्तंडमहापुराणे श्रीमद्भट्टारक जिनेन्द्रभूषण पट्टाभरण श्री भट्टारक महेन्द्रभूषण द्वितिय नाम कर्मविपाक चरित्र कृते चित्रांगदादि मोक्षप्राप्तवर्णनो नवमोऽधिकार समाप्तोयंग्रंथ ॥

४८५. **नंदबत्तीसी—हेमविमल सूरि** । पत्र संख्या–४ । साइज–१०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । रचना काल–सं० १५६० । लेखन काल–सं० १६...... । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०४ ।

प्रारम्भ—गाथा—

आगमवेदपुराणमग्गे जंजकवंति कवीयण तं शारद तुह पसायउ ।

दूहा—पहिलउ प्रणमउ सरसती, जगवति लील विलास ।

श्री जिणवर शंकर नमु मांगु बुद्धि पयास ॥१॥

आपीय अविरल बुद्धि घण जन मन रंजन जेह ।

नंद बत्तीसी जे सुणउ चरीयर चंपुरि तेह ॥२॥

नयरागर अहि ठाम जे तेह तणां बोलेस ।

नंद बत्तीसी चुपई पूहज नामठ भ्योस ॥

चौपई—पुर पाडलीय नगर अभिराम । पुहवि प्रगटउ जेह नु नाम ॥

वरण वरण बसि तहां लोक । आवस जाय तणा तिहां थोक ॥

सजल सरोवरनि वन खंड । राजा लोक न लेवि दंड ॥

गढ मढ मंदिर मैडी पोलि । चुरासी चहुंटा नीरा वलि ॥

अन्तिम—हीयडि अति ऊमाहु करी । नंदरायनु बोल्यु चरी ॥
हुण विनोद कथा चुपई । नंद बत्तीसी चुपई ॥५१॥
तप गछ नायक पुह मुखिंद । जय श्री हेम विमल सूरंद ॥
ज्ञान सील पंडित सुविचार । तास सिस्य कहि येह विचार ॥
संवत १५ साठा मझार । चैत्र सुदि तेरसि वार ॥
जे नर विदुर विसेष सुथि । मुनिवर कुल संघ मथि ॥
भणतां गुणतां लहीर बुद्धि वृद्धि सयल काज ती सिद्धि ॥
बवृधि फलीइ वंछित सदा नितु नवर संपदा ॥१५४॥
॥ इति विनोदे नंद बत्तीसी चुपई समाप्त ॥

संवत् १६ ·····श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये तदाम्नाये भ० उदयसेन तत्पट्टे भ० श्री त्रिभुवनकीर्ति तत्पट्टाभरण वादिगजकेसरी उभयभाषाचक्रवर्ति भ० श्री रत्नभूषण नरसिंह पुरा ज्ञातीय सांपडीया गोत्रे सा० यांगा भार्या विनादे सूत ब्रह्म श्री वछराज तत्सिष्य ब्र० श्री मंगलदास ।

४८६. **दशस्थानचौबीसी—द्यानतराय**। पत्र संख्या-७ । साइज-८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों के नाम, माता पिता के नाम, ऊंचाई, आयु आदि १०, बातों का वर्णन है ।
मीठालाल शाह पावटा वाले ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४८७. **समयसार कलशा—अमृतचंद्र**। पत्र संख्या-१४ । साइज-११½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८८ ।

४८८ **पद्मनन्दिपंचविंशतिका—पद्मनंदि**। पत्र संख्या-५६ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १ ।

विशेष—१०५ से आगे के पत्र नहीं हैं । २ प्रतियां और हैं ।

४८९. **पंचदशशरीरवर्णन** - पत्र संख्या-१ । साइज-११½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५ ।

४९०. **प्रतिक्रमण सूत्र**··········। पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१० ।

४९१. **प्रशस्तिका**—पत्र संख्या-१६ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२३ ।

४६२. फुटकर गाथा—पत्र संख्या-२ । साइज-११×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन नं० ४२५ ।

४६३. बारहव्रतोद्यापन (द्वादस व्रत विधान)—पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७ ।

४६४ बारहखड़ी—सूरत । पत्र संख्या-१६ । साइज-७½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२५ ।

४६५. भावनाबत्तीसी—अमितिगति । पत्र संख्या-३ । साइज-१०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चिंतन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६१ ।

विशेष—पद्य संख्या ३३ है ।

४६६. मानवर्णन—पत्र संख्या-५ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०२ ।

४६७. मालपच्चीसी—विनोदीलाल । पत्र संख्या-४ । साइज-६½×· इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०४ पौष सुदी ११ । अपूर्ण वेष्टन नं० १८४ ।

४६८. सास बहू का झगड़ा—देवाब्रह्म । पत्र संख्या-१ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-समाज शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

विशेष—देवाब्रह्म यो देखि समासो ढाल बणाई सार । मात पिता की सेवा कीज्यो कुलवंता नर नारी ॥१७॥ सांची बात कहूं छू जी ॥

५००. लीलावती—पत्र संख्या-८ । साइज-१०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० [illegible] ।

विशेष—संकलण सूत्र तक दिया हुआ है ।

५०१. स्नानविधि—पत्र संख्या-४५ । साइज-८½×३½ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४ ।

प्रति प्राचीन है ।

५०२. समस्तकर्मसन्यास भावना—पत्र संख्या-७ । साइज-१०½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

श्लोक संख्या-१३३ हैं ।

५०३. स्तवन—पत्र संख्या-१ | साइज-१०½×४½ इञ्च। भाषा-फारसी। लिपि-देवनागरी। विषय-स्तवन। रचना काल-× । लेखन काल-× | पूर्ण। वेष्टन नं० १४७।

विशेष—अदालत में मुकदमा पेश होने का पूरा रूपक है। जिस प्रकार अदालत में अर्जे की जाती है ठीक उसी तरह भगवान से प्रार्थना की गई है।

गुटके एवं संग्रह गून्थ

५०४. गुटका नं० १—पत्र संख्या-२७५। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेखन काल-सं० १८५३। पूर्ण।

मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

(१) व्रत विधान रासो—संगही दौलतराम। बाटनी पत्र संख्या-१ से २३। भाषा-हिन्दी। रचना काल-सं० १७६७ आसोज सुदी १०। लेखन काल-सं० १८३८ आसोज सुदी ३। पूर्ण।

प्रारम्भ—प्रथम सुमिरों स्वामी वृषभ जिनंद, आदि तीर्थंकर सुख के जो वृंद।
तो नमो तिर्थंकर वीस है, नमो सनमति सदा सिव सुखधाम।
नमो परमेष्टी जी पच पद, ता सुमिरें होय सुख अभिराम।
तो वरत कथौ भवि जैन का॥ १॥

रस ओजली—अहो तप रस ओजली मास बैशाख, सुकल तीजसौं जी करि अभिलाष।
तो व्रत चौईस अति निर्मला, तीन रस ओजली जल मन माय॥

बहुरी जल लेन संख्या नही, ईसु चढाई जे जिन पद जाय ॥
तो वरत करौ भवि जैन का ।। १४१ ।।

अन्तिम पाठ— अहो बूंदी जी नग्र हाडा तनौ थान, राज करैं बुधसिंह कुल भानु ।
पोन छतीस लीला करैं, गढ अरु कोट बन उपवन वाय ।
महल तलाव देवल छत्रां, श्रावण धर्म चलै बहु भाय ।। तो वरत० ।।
अहो जगत कीरति भट्टारक परमान, मूल संघी सरस्वती गच्छ जान ।
तो कुंदकुंदा मुनि पाटई, ब्रह्मचार आचारिज पंडित भाय ।।
और आरयिका जी संग मैं, मानत श्रावग यह अमनाय ।। तो० ।।
अहो पार्श्वनाथ चैत्यालौ जी गाय, तहां पंडित तुलसी जी दास रहाय ।
तो सास्त्र समूह विद्या धणी करइ, निरंतर धर्म दिढ़भाव सुख स्यों काल पूरण करै ।
तास चरचा रचि गंथ पसाव ।। तो० ।।
अहो साह मामा सुतधर धनपाल, ताकौ चतुरभुज रूप दसाय ।
तो सुत दौलतिराम हुव कछुयक, जिन गुण कहि अभिराम ।।
वरत विधान रासौ रच्यौ, ताकै पुत्र हरदेराम सवाराम ।। तो० ।।
अहो पाटणी गोत परसिद्ध मही मांही, खंडेलवाल जिन मतिय कहाहि ।
तो श्रावग धर्म्म मारग मालै, करहि चरचा जिन वचन विलास ।
आन धर्म नही ऊचरै, सहु परिवार बूंदी गढ वास ।। तो० ।।

× × ×

अहो संवत् सतरासै सतै सुदि लीन, आसोज सुक्ल दशौं दिन परवीन ।।
तो लगन मुहुरत सुभ घरी वार, गुरु वार नक्षत्र जो ता मांहि ।।
ग्रंथ पूरण भयो भविय संबोधन यह उपयोग ।।
अहो दोय सें इकस्या जी छंद निवास, सातसै पचास संख्या तास ।।
तो एक सौ इकसठि तामै तप कथा, दौलतराम विविध बुरणाय ।।
भवि करि मन वच काय सौं, अनुक्रम सुर सुख शिव पद पाय ॥ २८१ ।।

।। इति श्री व्रत विधान रासो संग्रहो दौलतराम कृत संपूर्ण ।।

(२) १५८ व्रतों के नाम - पत्र संख्या २३-२४ ।

(३) पूजा स्तोत्र संग्रह—पत्र संख्या-१ से २५१ तक ।

विशेष— ६३ प्रकार के पाठ व पूजा स्तोत्र आदि का संग्रह है । गुटका के कुल पत्रों की संख्या २७५ है ।

५०५. गुटका नं० २—पत्र संख्या—२४ । साइज—८३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं। एवं मंत्रों का संकलन है। सभी मंत्र आयुर्वेद से सम्बन्धित हैं। स्तोत्र आदि भी हैं।

५०६. गुटका नं० ३—पत्र संख्या-२८। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ हैं।

५०७. गुटका नं० ४—पत्र संख्या-६०। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

निम्न पाठों का संग्रह हैं:—

(१) ज्ञानसार—रघुनाथ। पत्र सं० १ से ३४। भाषा-हिन्दी। पद्य संख्या-१७०।

प्रारम्भ - छप्पय छंद—

गनपति मनपति प्रथम सकल शुभ फल मंगलकर।
स्वरमति अति मति गूढ देत आरूढ हंस पर ॥
निगम धरन जग मरन करन लगि चरन गंगधर।
अमर कोटि तेतीस कहत रघुनाथ जोरकर ॥
भवि तिरन हरन जामन मरन सरनि जानि इह देह वर।
श्री हरि पद कौ पाऊ गुननि गाऊं मन वच काय कर ॥१॥

दोहा—हरि दरसावन सब सुखद अघ हर ज्ञान उदोत।
गंगनीर गुरु के चरन छुवत सुधि गति होत ॥२॥
तुम सर्वज्ञ दयाल प्रभु कहो कृपा करि बात।
अनत रूप हरि गति अलख लखे कौन विधि जात ॥३॥
तब अपनौ जन जानि मन मानि करी प्रतिपाल।
स्नै दयाल तिह काल कर बोले वचन रसाल ॥४॥

संत दशा वर्णन सवैया—

जग सौं उदास मन वास किये नास मन, धारत न श्रास रघुनाथ यौं कहैत है।
क्रोधी से न क्रोध, न विरोधी से विरोध, नहिं लोभी सौं प्रमोद नित ऐसे निवहत हैं ॥
जीव सकल समानि समझै न कछु अनुराग दोग, अभिमान भ्रम तो देहत है।
ज्ञान जल मंजन मलीन कर्म भंजन कै, रांचै है निरंजन सौ, अंजन रहत है ॥१०६॥

×   ×   ×

अमल रूप माया मिल्यो मलनि भयो सब ठांव।
सोनौं लोनी संग तें भूषन नाना नांव ॥१४३॥

बिन जानें बहु दुख है जानें तें उडि जात ।
तीन काल में एक रस सो निज रूप रहात ॥१८७॥
गृह त्यागी रागी नहीं, भागी भ्रम जग प्रीति ।
हरि पागी जागी सुबुधि इह वैरागी रीति ॥२१७॥

अन्तिम पाठ—अैसो हरि को निज धर्म सुनि मन भयो हुलास ।
तातैं इह भाषा करी लघु मति राघो दास ॥२६४॥
गुनी मुनी पंडित कवि चतुर विवेकी सोध ।
कियो ग्रन्थ उनमान विधि छिमा सकल अपराध ॥
वक्ति जुक्ति तुक छद गति भाव बरन गन हीन ।
इक गुन हरि को गुन बरन तातैं गुन्यौ प्रवीन ॥२६६॥
सतरसैं चालीसत्रिय संवत् माघ अनूप ।
प्रगट भयो सुदि पंचमी ज्ञान सार सुख रूप ॥२६७॥
सुनत गुनत जे ज्ञान सत नसत अस्त भ्रम रूप ।
भव नावत गावत निगम पावत ब्रह्म सरूप ॥२६८॥
सुद्ध अपार अधार सब सोखन सकल विकार ।
पार करत संसार सर महासर को सार ॥२६९॥
राघव लाघव केरि करि कहत सब संतन सौ झुक्ति ।
अभै दान द्यो जानि जन संत संग हरि भक्ति ॥२७०॥

॥ इति ज्ञानसार रघुनाथ सा० कृत संपूर्ण ॥

(२) गण भेद—रघुनाथ साह । पत्र संख्या ३ । भाषा–हिन्दी पद्य विषय–छंद शास्त्र (पत्र ३४ से ३७ तक) । पद्य संख्या–१५ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—गवरिनंद आनन्द कर विघन घाय बहु भाय ।
आदि कवि के राज कवि मंगल दाय मनाय ॥१॥
प्रथम चरित्र ब्रजराज के गाय सु मन बचकाइ ।
जन्म सुधारिउ धारि कुल कल मल सकल नसाइ ॥२॥
हरि गुन भेद बिना अमल फल दुह लोक अपार ।
रहन सकत नर कवित्त बिनि तिन प्रथि विबधि विचार ॥३॥

मध्य भाग दोहा—अष्ट गणागण अमरफल अशुभ च्यारि शुभ च्यारि ।
राघव भनि कवि राज सुनि धरहु विचारि विचारि ॥१०॥

अन्त भाग —सुगत गुणत गण भेद कौ रचा प्रकासत ज्ञान ।

हर जस कवि रस रीति कों पावत सकल सुजान ।१५॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत गण भेद संपूर्ण ॥

विशेष—छंद शास्त्र की संक्षिप्त रचना है किन्तु वर्णन करने की शैली अच्छी है ।

(३) नित्य विहार (राधा माधो) रघुनाथ—पत्र संख्या-२ । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य सं० १६ । पूर्ण ।

आरम्भ—छंद चरचरी राजत ब्रज रूप अंग अंग छवि अनूप ।

निरखि लजत काम भूप बहु विलास मीनै ॥

रत्न जटित मुकट हार्क मनि अमित बरन ।

कुंडल दुति उदित करन तिमर परत छीनै ॥१॥

भाल तरल तिलक लस्त भौहै जुग अंग रिसत ।

नैन चपल मीन चिसंत नाशा शुक मोहे ॥

कुंद कली दसन रसन वीरी ज्रुत मंद हसन ।

कल कपोल अधर लोल मधुर बोल सोहै ॥२॥

अन्तिम—जे जन अघ नाम रटत मंगल सब सुपनि जटत ।

अघ कटित जम जार फटित जगत गीत गावैं ॥

श्री बाल मित्ति विहार आनंद तउर जे उदार ।

राधो मय होत पार प्रेम भक्ति पावैं ॥१६॥

॥ इति राधो माधो नित्य विहार संपूर्ण ॥

विशेष रचना शृंगार रस की है ।

(४) प्रसंग सार—रघुनाथ । पत्र सख्या-४३ से ५६ तक । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य संख्या-१६० । रचना काल-सं० १७४६ माघ सुदी ६ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—एक रदन राजत वदन गन मंगल सुख कंद ।

राघव रिधि सिधि बुधि दे नव निस गवरी नंद ॥१॥

बांनि गति बांनीनतै कास वखानी जात ।

हरि मांनी रांनी सकल बर दानी जग मात ॥२॥

गुरु सत गुरु तीरथ निगम गंगादिक सुख धाम ।

देव त्रिदेव रखी सुमनि पूरत सबके काम ॥३॥

सीस नाय सब गाय हो राघो मनि इह रीति ।
सकल देव की सेवकौ फल हरि पद सौं प्रीति ॥४॥

अन्तिम पाठ—निस दिन रचि पचि मरत सठ सबको इह उनमान ।
सकल जानि मन जानि मन राधा भजो भगवान ॥१५६॥
भजनि भजै तिन तैं भजै पाप ताप दुख दानि ।
भागवत भगवंत जन ग्यान वंत सो जानि ॥१५७॥
सब सुख जुत सुंदर सुमत सतरासें गुनचास ।
कीयो माघ सुदि पंचमी सार प्रसंग प्रकास ॥१५८॥
रंग रंग बहु अंग के बरने विवधि प्रसंग ।
सुनै गुनै सुख में सनै अति रति है सतसंग ॥ १५६ ॥
अंग उधारत गंग ज्यों मलिन कर्म करि भंग ।
उक्ति जुक्ति हरि भक्ति है समझै सार प्रसंग ॥ १६० ॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत प्रसंगसार संपूर्ण ॥

विशेष:—रचना सुभाषित, उपदेशात्मक एवं भक्ति रसात्मक है ।

५०७. गुटका नं० ५—पत्र संख्या–४० । साइज–८½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—केवल नित्य नियम पूजा पाठ हैं ।

५०८. गुटका नं० ६—पत्र संख्या–२५ । साइज–८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १६६३ भादवा सुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—बारह भावना, इष्ट छत्तीसी भाषा, भक्तामर भाषा, निर्वाणकाण्डभाषा एवं समाधिमरण आदि पाठों का संग्रह है ।

५०६. गुटका नं० ७—पत्र संख्या–५४ । साइज–८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८३६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द कृत चौबीस तीर्थंकरों की पूजा है ।

५१०. गुटका नं० ८—पत्र संख्या–२३ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

(१) वैराट पुराण—प्रभु कवि । प्रारम्भ के पत्र नहीं है ।

विशेष—प्रभु कवि चरणदासी संप्रदाय के है ।

अन्तिम पाठ—कांक मिले ते पंड कहाये, रुधिर ब उटी पीछे मरकाये।
कवन पवन तें वाक उचारा, कवन पवन के रहैय अधारा।
याकी भेद बताओ मोय, प्रभु कहे गुरु पुछूं तोय ॥ १ ॥

(२) आयुर्वेद के नुसखे—भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

५११. गुटका नं० ६ – पत्र संख्या-२७ : साइज-६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—यंत्र चिन्तामणि के कुछ पाठ हैं।

५१२. गुटका नं० १०—पत्र संख्या-३४। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—भक्तामर आदि पाठ एवं पूजा संग्रह है।

५१३. गुटका न० ११ – पत्र संख्या-७१। साइज-८½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी. लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—प्रथम तत्वार्थ सूत्र है पश्चात् पूजाओं का संग्रह है।

५१४. गुटका नं० १२—पत्र संख्या-। साइज-१०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पद	कबीरदास	हिन्दी	
(२) शब्द व धातु पाठ संग्रह	—	संस्कृत	पत्र ५५ तक
(३) लक्षण चौबीसी पद	विद्याभूषण	हिन्दी	
(४) षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य सं० ३७

प्रारम्भ—श्री जिनवर चोबीस नमुं, सारद प्रणमी अघ निगमुं।
निज गुरु केरा प्रणमुं पाय, सकल संत वंदत सुख पाय ॥ १ ॥
षोडश कारण व्रतनी कथा, भांषु जिन आगम छे यथा।
श्रावक सुण जो निज मन शुद्ध, जे थी तीर्थंकर पद वृद्ध ॥२॥

अन्तिम भाग—जे नर नारी ए व्रत करे, तें तीर्थंकर पद अनुसरे।
इह भवि पावे रिद्धि अपार, पर भव मोक्ष तणो अधिकार ॥
पामे सकल भोग संयोग, टले आपदा रौरव रोग।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्म ज्ञान सागर कहे सार ॥३७॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(५) दशलक्षण व्रत कथा ...	ब्रह्म ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य सं० ५५

प्रारम्भ —प्रथम नमन जिनवर नें करू', सारद गणधर अनुसरू' ।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखु' जिन आगम अनुसार ॥१॥

अन्तिम पाठ—ए व्रत जे नर नारी करे, विर्गेते भव सागर तरे ।
सकल सौख्य पावे नव निद्ध, सर्वारथ मन वांछित सिद्ध ॥५४॥
भट्टारक श्री भूषण धीर, सकल शास्त्र पूरण गंभीर ।
तस पद प्रणमी बोले सार ब्रह्म ज्ञान सागर सुविचार ॥५५॥

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(६) रत्नत्रय व्रत कथा	ब्र० ज्ञानसार	हिन्दी	—
(७) अनन्त व्रत कथा	"	"	—
(८) त्रैलोक्य तीज कथा	"	"	—
(९) श्रावण द्वादशी कथा	"	"	—
(१०) रोहिणी व्रत कथा	"	"	—
(११) अष्टाह्निका व्रत कथा	"	"	—
(१२) लब्धि विधान कथा	"	"	—
(१३) पुष्पांजलि व्रत कथा	"	"	—
(१४) आकाश पंचमी कथा	"	"	—
(१५ रक्षा बन्धन कथा	"	"	—
(१६) मौन एकादशी व्रत कथा	"	"	—
(१७) मुकुट सप्तमी कथा	"	"	—
(१८) श्रुतस्कंध कथा	"	"	—
(१९) कोकिला पंचमी कथा	"	"	सं० १७३६ चैत्र सुदी ६ रविवार को सूरत में ब्रह्म कनकसागर ने प्रतिलिपि की थी।
(२०) चंदन षष्ठी व्रत कथा	"	"	—
(२१) निशल्याष्टमी कथा	"	"	—
(२२) सुगंध दशमी व्रत कथा	"	"	—
(२३) जिन रात्रि व्रत कथा	"	"	—
(२४) पल्य विधान कथा	"	"	—

(२५) जिनगुनसंपति व्रत कथा	"	"	—
(२६) आदित्यवार कथा	"	"	—
(२७) मेघमाला व्रत कथा	"	"	—
(२८) पंच कल्याण बडा	—	"	—
(२९) " " "	—	"	—
(३०) परमानंद स्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	

प्रारम्भ—परमानंद संयुक्तं निर्विकारं निरामयं ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितं ॥१॥

(३१) वर्द्धमान स्तोत्र	—	संस्कृत	—
(३२) पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	"	—
(३३) आदिनाथ स्तवन	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	

स्वामी आदि जिणंद, करू वीनती आपणीय । तु ं जग साचो देव त्रिभुवन स्वामी तू ं धर्णा ए ॥१॥
लाख चोरासी योनि थावर जंगम हू ं भम्यो ए । तुहु न लाधो छेह संसार सागर तेह तणो ए ॥२॥
चिहु ंगति संसार माहि पाम्या दुःखमि अति घणा ए । जामन मरण वियोग, रोग दारिद्र जरा तेह तणाए ॥३॥
क्रोध मान माया लोभ इन्द्रि चोरेंहु मोलव्योए । राग द्वेष मद मोह-मयण पापी घणु ं रोलव्योए ॥४॥
कुदेव कुगुरु कुशास्त्र मिथ्या मारग रंजियुए । साचो देव सुशास्त्र सह गुरु वयण नमे दीयुए ॥५॥
सजन कुटुंब ने काज कीधां पापमि अति घणाए । ते पातिकनीवार जिनवर स्वामी अम्ह तणां ए ॥६॥
तु ं माता तु ं बाप, तु ं ठाकुर तु ं देव गुरु । तु बांधव जिन राज, वांछित फल हवं दान कर ॥७॥
हवें जो तुम्हें जग देव करम निवारो अम्ह तणांए । भवि भवि तुम्ह पाय सेव गुण आयो स्वामी अम्ह घणां ए ८॥
सकलकीरति गुरु वंदि, जिनवर विनति जे भणेए । ब्रह्म जिणदास भणेसार, मुगति वरांगना ते वरे ए ॥९॥

(३४) चउवीस तीर्थंकर विनती	ब्रह्म तेजपाल	"	—
(३५ जिनमंगलाष्टक	—	संस्कृत	—

५१५. गुटका नं० १३ - पत्र संख्या-२८ । साइज-६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष – नित्य नियम की पूजाऐं हैं । ये पूजाऐं बाल सहेली जयपुर में प्रत्येक शुक्रवार को होती थीं ।

५१६. गुटका नं० १४—पत्र संख्या-११ । साइज-६×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत लेखन काल-सं० १९८३ भादवा सुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन का पाठ एवं कथा है ।

५१७. गुटका नं० १५ - पत्र संख्या-१६२ । साइज-४×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	ले० का०	विशेष
ज्ञान तिलक के पद	कबीरदास	हिन्दी	सं० १८०६ कार्तिक सुदी ७	—
कबीर की परचई	"	"	"	—
रेखता	"	"	"	—
काया पाजी	"	"	"	—
हंसमुक्तावली	"	"	"	—
कबीर धर्मदास की दया	"	"	"	—
अन्य पाठ	"	"	"	—
साखी	"	"	कितने ही प्रकार की है	—
सोसट बंध	"	"	"	—

विशेष—कबीर दास कृत रचनाओं का अपूर्व संग्रह है।

काशी वसे कबीर गुसाईं एव। हरि भक्तन की पकड़ी टेक॥

बहोत दिना संकिट में गये। अब हरि को गुन लीन भये॥ (कवि की परचई)

५१६. गुटका नं० १६—पत्र संख्या-१३ से ६०। साइज-६×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—महाभारत के पांचवें अध्याय से ३० वें तक है प्रारम्भ के ४ अध्याय नहीं है। जिसके कर्ता लालदास हैं।

५ वें अध्याय से प्रारम्भ—दरसन भीषम को प्रीय जबा, सकल रथीस्वर आये तिहां।

सरसउया भीषम विश्राम, अब मुनि प्रगट रिषिन के नाम॥ २॥

भृगु वसिष्ठ पारास्वर व्यास, चिवन अत्रिय अंगिरा प्रवगाम।

अगस्त नारद परवत नाम, जमदग्नि दुरवासा राम॥ २॥

२८ वें अध्याय का अन्तिम भाग - धर्म रूपज राजा सिव भयौ, जिहि धरकाज अपनपौ दयौ।

तिन्हही आराधै हरि रीति धरम कथा सुनै करि प्रीति॥ १६॥

जो याह कथा सुनै अरु गावै, धरम सहित धरम गति पावै।

यौ सौ कथा पुरानन कही, लालादास भाख्यौ यो सही॥ २०॥

५१६. गुटका नं० १७—पत्र संख्या-१०६। साइज-६×६। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १८७५ पौष सुदी ७। पूर्ण।

विशेष—महाभारत में से 'उषा कथा' है जिसके रचयिता 'रामदास' है।

प्रारम्भ—श्री गणेसाइनमः। श्री सारदा माताजी नमः। वो नमो भगवत वासुदेवाय श्री ऊषा चरण लिखते।

बासुदेव पुराण चित लाउं, करी हो कृपा रिछु ह गुण गाउं।
सुमरो गुण गोविंद मुरारी, सदा होत संतन हितकारी॥
सुमरो आदि सुरसति माता, सुमरो श्री गणपती सुखदाता।
बुधकर जोड चरण चीत लाउ, करी हो कृपा कछु हरि गुणगाउ॥
सुमरो मात पिता बडभाई, सुमरो श्री रघुपति के पाई।

दोहा—अडसठी तीरथ कथे, सुमरो देव कोटी तेतीस।
रामदास कृपा कर बुधी देहो जगदीस॥ १॥
ज्यांहां चत्रभुज रोय वीराज, प्रमसह तीतहि पुरको राजा।
जाके धरम कथा अधीकाई, दानव जुध वी वोहोत बडाई॥
अकलोकाष सृ दरसण पुज सुखमान, गऊ विप्र की सेवा जान॥ २॥
नारद उकती व्यास कही नाहा, दसम सकंद भागवत कीन्हा।
व्यास पुराण कह सब साखी, श्री सुखदेव नृप सुभाषी॥

दोहा—चित दे सुनी नृपति धनी परीछत राय।
व्यास पुत्र उपदेश तै रस हीयो अघाय॥
भमर कोक पग गुल नहीं देखों, पंच संग सलव सेषा।
रामदास तवी संगति पाई, भाषा करी हरी कीरति गाई॥ ६
प्रेम सयाना पुछत बाता, तुम कंसन कहा भये विधाता।
आदि देस तुमाहारो कहा होइ, हम सुवचन कहो न जसोई॥
महमा कह राम को दाथ, देस मालवो भ्रती सुखवासु।
सहर, सरुंजु निकट ताहां ठाहु, पावो जनम मालनी गाउ॥
पिता मनोहर दास विधाता, वीरम ने जनम दोयो माता।
रामदास सुत तीन को भाई, क्रसन नाव को भगतो ताही॥

दोहा—लालदास लालच कथा, सोध्यो भगवंत सार।
रामदास की बुधी लघु पंथ कुदे न भार॥ १०॥
नृप पुछ सुख है वसु सुनो, सुनाय करो हो मोहि।
अनरव ऊषा हरन की कथा, कह सुनावो मोही॥ ११॥
कैसे चत्रा हरी ले गई, कैसे कवट भेंट भई।
कृष्ण पुनी बाणासुर लीया, घर वसी हरी दरसण दीया॥
सो भ्रंभा मुनी ध्यान लगायो, आदि पुरुष को अंत न पायो।
कहै प्रताप हरी पूजा पाइ, सो हम सुं कहीये समझाई॥

अन्तिम पाठ—धनी सो सुरता चीत दे सुन, अरथ वीचार प्रेम गुनमम ।

धनी सोही देस धनी सोही गांव, नीस दिन कथा कृष्ण को नांव ।

उषा श्री भागोत पुराना, सहजही दुज दीजे दाना ॥

छुद्र मसक पवन मर सोही, कृष्ण भगति बिना अवरथा देही ।

रामदास कथा कियो पुराना, पढत गुणत गंगा असनाना ॥

दोहा—चंद बदन यो होय कल, तो पातु दल पान ।

ई विध हर पूजही, कथे हो पुत्र की लाण ॥

इति श्री हरिचरित्रपद समो असकंदे श्री भागोतपुराणे ऊषा कथा वरणनो नाम संपत दसो अध्याय ॥ १७ ॥

॥ इति श्री उषाकथा सपूर्ण समाप्ता ॥

५२०. गुटका नं० १८—पत्र संख्या-१३२ । साइज-९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७९७ फागुन वुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—कवि बालक कृत सीता चरित्र है ।

५२१. गुटका नं० १९—पत्र संख्या-१३१ । साइज-९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—नंददास कृत भागवत महा पुराण भाषा है । केवल ६१ पत्र है ।

५२२. गुटका नं० २०—पत्र संख्या-३ से ३२ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हितोपदेश कथा भाषा गद्य में है । रचना नवीन प्रतीत होती है भाषा अच्छी है आदि अंत भाग नहीं है ।

५२३. गुटका नं० २१—पत्र संख्या-१३६ । साइज-९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी गद्य में राम कथा दी हुई है । प्रति अशुद्ध है ।

५२४. गुटका नं० २२—पत्र संख्या-२८ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-सं० १८१५ । पूर्ण ।

विशेष—पं० नकुल विरचित शालि होत्र है । संस्कृत से हिन्दी पद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२५. गुटका नं० २३—पत्र संख्या-१० । साइज-८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—कृष्ण का बाल चरित्र वर्णन है । १२२ पद्य हैं ।

आदि—गर गनेस वंदन करि के संतननि कों सिर नाऊ ।
बाल बिनोद यथा मति हरि के सुंदर सरस सुनाऊ ।।१ ।
भक्तन के वत्सल करुना मय अद्भुत तिन की क्रीडा ।
सुनो संत हो सावधान हो श्री दामोदर लीला ।।२।।

५२६. गुटका नं० २६—पत्र संख्या-३० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२३ आसोज बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—लच्छीराम कृत करूना भरन नाटक है । कृष्ण जीवन की बाल लीला का वर्णन है ।

प्रारम्भ—रसिक भगत पंडित कवितु कही महाफल लेहु ।
नाटक करूणा भरन तुम लछीराम करि देहु ।।१।।
प्रेम बढे मन निपट हो अरु आवै अति रोइ ।
करुणा अति सिंगार रस जहां बहुत करि होइ ।।
लछीराम नाटक कर्यो दीनौं गुनिन पटाइ ।
मेष रेख निरंन निपट लायें नर निसि लाइ ।।२।।

अन्तिम पाठ—श्रीकृष्ण कथा अमृत सर बरनी, जन्म जन्म के कल्मल हरनी ।
अति अगाध रस वरन्यौ न जाई, बुधि प्रमान कछु बरनि सुनाइ ।।३४।।
सो मति थोरी हरि जस सागर, सिंधु सुमाइ कहां लो गागर ।
लछीराम कवि कहा वखानौ, हरिजस को कोई हरिजन जानै ।।३५।।

इति श्री कृष्ण जीवन लछीराम कृत करूणा भरन नाटक संपूर्ण । सं० १८२३ आश्वन बुदी ३ रविवासरे । सप्तमो अध्याय ।

५२७. गुटका नं० २५—पत्र संख्या-३८ । साइज-६×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण

विशेष—गुटके में भद्रबाहु चरित्र है । यह रचना किशनसिंह द्वारा निर्मित है जिसको उसने सं० १७८३ में समाप्ता की थी । प्रति नवीन है ।

भद्रबाहु चरित्र—

प्रारम्भ—केवल बोध प्रकास रवि उदै होत सखि साल ।
जग जन अंतर तम सकल छेयो दीन दयाल ।। १ ।।
सनमति नाम जु पाइयौ अैसे सनमति देव ।

मोको सनमति दीजिए नमौ त्रिविध करि सेव ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—अनंत कीरति आचारज जानि, लखित कीर्ति सु सिष प्रमान ।
रतनंदि ताको सिष होय, अलप मति धरि करना सोय ॥
श्वेतांबर मत को अधिकार, मूढ लोक मन रंजन हार ।
तिनही परीक्षा कारन जान, पूर्व श्रुत कृत मानस आनि ॥ १० ॥
किया नहीं कविताइ करी, काव कर्न अभिमान ही भरी ।
मंगलीक इस चरितह जानि, रच्यौ सबै सुखदाइ मान ॥
मूल ग्रंथ कर्त्ता भये रतन नंदि सु जानि ।
तापरि भाषा ग्रहरि कीनी मती परमान ॥ ११ ॥
नगर चाल सुदेस मै बरवाडा को गांव ।
माधुराय वसंत कौ दामपुरौ है नांव ॥
तहा बसत संगही कानो गोट पाटणी जोय ।
ता सुत जाणो प्रगट सुख देव नाम तसु होय ॥
ताकौ लघु सुत जानीयौ किसन सिंघ सब बान ।
देस ढूंढाहर को मयौ सांगानेर सुथान ॥ १४ ॥
तहां करी भाषा यह भद्रवाहु गुणधारी ।
सुमति कुमति को परख कै द्वेव भाव न विचारि ॥
किसनसिंघ विनती करै, लखि कविता की रीति ।
वह चरित्र भाषा कियौ, बाल बोध धरि प्रीति ॥ १७ ॥
जो याको वाचै सुनै विपुल मति उरधारी ।
कहुँ ठौर जो भूल है लीज्यो सुधी सवारी ॥ १८ ॥
सुमति कुमति कौ परख कै, कीज्यौ कुमत निवार ।
ग्रहण सुमति कौ कीजियौ जो सुर सिव पदकार ॥ १९ ॥
संवत् सतरह से असी उपरि और है तीन ।
माघ कृष्ण कुज अष्टमी ग्रंथ समापत कीन ॥ २० ॥

४२८. गुटका नं० २६—पत्र संख्या-२०० । साइज-८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
श्रीपालरास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
नेमीश्वररास	"	"	—
विवेकजखडी	—	"	—
पद संग्रह	—	"	—
जखडी	रूपचंद	"	—
मांगीतुंगी की जखडी	रामकीर्ति	"	—
जखडी	जिनदास	"	र० का० सं० १६७६
कर्म हिंडोलणो	हर्षकीर्ति	"	—
गीत	चंद्रकीर्ति	"	—
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	"	—
चेतनगीत	देविदास	"	—
चेतन गीत	—	"	—
पंचवधावा	—	"	—
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्ति	"	—
शालिभद्रचौपई	—	"	अपूर्ण

५२९. गुटका नं० २७ – पत्र संख्या–२५ । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—स्फुट पूजाओं का संग्रह है ।

५३०. गुटका नं० २८—पत्र संख्या–२५ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

५३१. गुटका नं० २९—पत्र संख्या–१५ । साइज–८½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

५३२. गुटका नं० ३०—पत्र संख्या–१४ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष —निम्न पाठों का संग्रह है:—

विनती संग्रह	—	हिन्दी	—
संबोधपञ्चासिका भाषा	द्यानतराय	,,	—
अठारह नाता	—	,,	—

५३४. गुटका नं० ३२—पत्र संख्या-२० । साइज-७¾×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—६५ चतुराई की वार्ता दी है जिसका रचना काल वीर सं० १५४२ है ।

५३५. गुटका नं० ३३—पत्र संख्या-२३ से १४२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
स्तोत्रविधि	जिनेश्वरसूरि	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	—
पद संग्रह सतर प्रकार पूजा प्रकरण)	साधुकीर्ति	हिन्दी	र. का. १६१८ आ. सु. १
रागमाला	,,	,,	—
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर (वाचनाचार्य)	,,	—
पद २	जिनदत्तसूरि	हिन्दी	—
स्तंभनक पार्श्वनाथ गीत	महिमासागर	,,	—
पद	जिनचन्द्र सूरि, जिनकुशल सूरि व कुमुदचंद्र ।		
कवित्त	—	हिन्दी	र. का. सं १४११

इनके अतिरिक्त और भी हिन्दी पद हैं ।

सतर प्रकार पूजा प्रकरण—राग धनाश्री—माथि गुणि घनजि के । सठि दिन तेज तरणि सुख राजइ ।
कवित शतक आठ थ्युणति शक्रस्तव । धय धुप रगह भक्षाजइ ॥भ०॥
अणहिल पुर शान्ति सब सुखदाई । सो प्रभु नवनिधि सिधि आव जइ ॥
सतर सुपूज सुविधि श्रावक की । भणीमई भनति हिज काजइ ॥भ०॥
श्रीजिनचंदसूरि गरू खरतरपति । धरमनि वचन तासु तसु राजइ ॥
संवत् १६ अठार श्रावण सुदि । पंचमि दिवसि समाजइ ॥भ०॥

दयाकलशागणि अमरमाणिक गुरु । तासु पसाइ सुविधि हुं गाझइ ।
कहइ साधु कीरति कर भजन संस्तव सवि ।
साधुकीरति करत जन संस्तव सविलील सव सुख साजइ ॥

॥ इति सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण ॥

५३६. गुटका नं० ३४—पत्र संख्या–१४ से ८६ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—द्रव्य संग्रह की गाथायें हिन्दी अर्थ सहित है तथा समयसार के २०१ पद्य हैं ।

५३७. गुटका नं० ३५—पत्र संख्या–२ से ३८ । साइज–६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५३८ गुटका नं० ३६—पत्र संख्या–६ से ६३ । साइज–८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—महाकवि कल्याण विरचित अनंग रंग नामक काव्य है । काम शास्त्र का वर्णन है आगे इसी कवि द्वारा निरूपित संभोग का वर्णन है । आयुर्वेद के नुसखे दिये हुए हैं ।

५३९ गुटका नं० ३७—पत्र संख्या–१६ । साइज–६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल–× । पूर्ण ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम के अतिरिक्त अन्य भी पाठ हैं ।

५४०. गुटका नं० ३८—पत्र संख्या–१५० । साइज–६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल–सं० १७६६ पौष सुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न साधारण पाठों का संग्रह है ।

५४१. गुटका नं० ४०—पत्र संख्या–७ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८८३ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—चाणक्य राजनीति शास्त्र का संग्रह है ।

५४२. गुटका नं० ४१—पत्र संख्या–३८ । साइज–५×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । लेखन काल–× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

५४३. गुटका नं० ४२—पत्र संख्या–२६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत (दर्शन, चारित्र, सूत्र, बोध, भाव और मोक्ष) षट पाहुड का वर्णन है।

५४४. **गुटका नं० ४३**—पत्र संख्या-४८। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण एवं जीर्ण।

विशेष—देहली के बादशाहों की वंशावलि दी हुई है अन्य निम्न पाठ भी हैं—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्ण का बारह मासा	धर्मदास	हिन्दी	—
विरहनी के गीत	—	"	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	"	—
दोहे	दादूदयाल	"	—

५४५. **गुटका नं० ४४**—पत्र संख्या-६८। साइज-८½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण

विशेष—मंत्र शास्त्र से सम्बन्धित पाठ है।

५४६. **गुटका नं० ४५**—पत्र संख्या-६०। साइज-·×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र-संस्कृत, क्षेत्रपाल पूजा शनिश्चर स्तोत्र-हिन्दी आदि पाठ हैं।

५४७. **गुटका नं० ४६**—पत्र संख्या-१२। साइज-५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—चरनदास के पद हैं। कुल १५ पद हैं।

५४८. **गुटका नं० ४७**—पत्र संख्या-१६। साइज-८½×८½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—भुवनेश्वर स्तोत्र सोमकीर्ति कृत है।

५४९. **गुटका नं० ४८**—पत्र संख्या-३४। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-सं० १८६२ अषाढ सुदी ६। पूर्ण।

विशेष—ऋषि मंडल स्तोत्र तथा अन्य पाठ हैं।

५५०. **गुटका नं० ४९**—पत्र संख्या-२० से ६०, १७२ से २१२। साइज-५×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—पंचस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, पंचपरमेष्ठीस्तोत्र एवं वज्रपंजरस्तोत्र (अपूर्ण) आदि हैं।

५५१. गुटका नं० ५०—पत्र संख्या-४ से २१० | साइज-६×४ इञ्च | भाषा-हिन्दी संस्कृत | लेखन काल-× | अपूर्ण |

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह है |

५५२. गुटका नं० ५१—पत्र संख्या २६ | साइज-५×३½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-संग्रह | लेखन काल-× | अपूर्ण |

विशेष—स्तोत्र आदि के संग्रह है गुटके के अधिकांश पत्र खाली हैं |

५५३. गुटका नं० ५२—पत्र संख्या-४० | साइज-७×५ इञ्च | भाषा-हिन्दी | लेखन काल-× | पूर्ण |

विशेष—गुटका जल्दी में लिखा गया है | कोई उल्लेखनीय पाठ्य नहीं है |

५५४. गुटका नं० ५३—पत्र संख्या-६ | साइज-७×४½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | लेखन काल-× | अपूर्ण |

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह है |

५५५. गुटका नं० ५४—पत्र संख्या-६-२८४ | साइज-९½×४½ इञ्च | भाषा-संस्कृत-हिन्दी | लेखन काल-× | अपूर्ण |

विशेष—प्रारम्भ में स्वर्ग लोक का वर्णन है और पीछे तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की हिन्दी टीका है | कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है |

५५६. गुटका नं० ५५—पत्र संख्या-२० | साइज-५×३½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | लेखन काल-× | अपूर्ण |

विशेष—भक्तामर, पार्श्वनाथ, लक्ष्मीस्तोत्र आदि हैं |

५५७ गुटका नं० ५६—पत्र संख्या-४१ | साइज-७×५ | भाषा-संस्कृत | लेखन काल-सं० १९७३ | पूर्ण |

विशेष – सामान्य पाठ संग्रह है |

५५८. गुटका नं० ५७—पत्र संख्या-३-४१ | साइज-७×४ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-संग्रह | लेखन काल-सं० १९२३ | अपूर्ण |

विशेष—उल्लेखनीय पाठ नहीं है |

५५९. गुटका नं० ५८—पत्र संख्या-८० | साइज-८½×६½ इञ्च | भाषा-हिन्दी | लेखन काल-× | अपूर्ण एवं जीर्ण |

विशेष—अक्षर घसीट होने पढ़ने में नहीं आते हैं।

५६०. गुटका नं० ५६—पत्र संख्या–८ से १७। साइज–६½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत, हिन्दी। लेखन काल–×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस तीर्थंकर पूजा	—	संस्कृत	—
सरस्वती जयमाल	—	"	—
अकृतिम जयमाल	—	"	—
परमज्योतिस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	—

५६१. गुटका नं० ६०—पत्र संख्या–५ से ३८। साइज–७×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—हितोपदेश की कथाएँ हैं।

५६२. गुटका नं० ६१—पत्र संख्या–१०३। साइज–९×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

५६३. गुटका नं० ६२—पत्र संख्या–१७। साइज–६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७५४। अपूर्ण।

विशेष—१ से १६ एवं १०७ से आगे के पत्र नहीं है। निम्न विषयों का संग्रह है।

विषय–सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
भट्टारक पट्टावली	—	हिन्दी	र. का. सं. १७३३
कृष्णदास का रासो	—	"	र. का. सं. १७४६ ले. का. १७५२
पर्वत पाटणी को रासो	—	"	ले. का. सं. १७५४
चीचड़ रासो	—	हिन्दी	—
नवरत्न कवित	—	"	—

५६४. गुटका नं० ६३—पत्र संख्या–६० से १०५। साइज–७×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७६० माघ सुदी १५। अपूर्ण।

(१) भृंतृहरि की वार्ता—पत्र संख्या-६८ से ७८ । भाषा-हिन्दी गद्य । लेखन काल-सं० १७६० माघ सुदी १५ । अपूर्ण

अन्तिम पाठ—भरथरी जी गोरखनाथजी का दरसण नै चालता रह्या । प्रणी को माव सारो देखी करि प्रकत चीत हुवी । सारो जगत को सुख । हैद ताको सुध । श्रीयी पराजमन मो देखता श्रोर सुनां मंडल में चित दीजो । इति भरथरी जी का बात संपूरण । पोथी मान स्वंघ चत्रभुज का बेटा की लिखी जैराम काइथ वाचै जैजैराम । मी. माह सुदी १५ सं० १७५० ।

(२) आसावरी को बात—पत्र सं०-८० से १२५ । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

श्री गणेसाई नीमो । अबै आसावरी की बात ऊतिपति बरण ववरणी जे छै । ईतरा मांही राणी के पुत्र हुवो । नाम सीधु नीसरयो । उछाव हुवो । जाति कर्म हुवो । दान पुनि बाजा अतोसुं बाजवा लागा । नम माहै वुछाह घरि घरि हुवो । आवतै दीनि कन्या को जनम हुवो । पंडिता नाम आसावरी काढ्यो । सिधि को वचन छै । सोई नाम जनम को नीसरयो । आसावरी देव अंग अपछरा को औतार हुई तदि आसावरी वरस छहकी हुई । तदि पढिवानै बैठी ।

५६५. गुटका नं० ६४—पत्र संख्या-१३ । साइज-७½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

विषापहार, एकीभाव एवं भूपालचतुर्विंशति ।

५६६. गुटका नं० ६५—पत्र संख्या-४४ । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल सं० १७७६ । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मान मञ्जरी	नंददास	हिन्दी	अपूर्ण
जानकी जन्म लीला	बालचन्द	,,	पूर्ण ले० का० सं० १७७६
सीता स्वयंवर लीला	तुलसीदास	,,	माघ सुदी ६

आदि पाठ—गुर गणपति गिरजापति गौरी गिरा पति,
सारद सेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ।
हाथ जोडि करि विनय सकल सिर नाऊं,
श्री रघुपति विवा. जथामति मंगल गाऊ ॥१॥
सुम दिन रच्यौ सुमंगल मंगल दाइक ।
सुनत श्रवन हिए वसहु सीय रघुनाइक ।
देस सुहावन पावन वेद बखानिये ।
भौमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन मानिये ॥२॥

जानकी जन्म लीला—

आदि भाग—श्री रघुवर गुर चरन मनाऊं, जानकी जनम सुमंगल गाऊं।
काम रहित सुधर्म जग जोहै, देस विरोहित तनु धरि सोहै॥
ता महि मिथुला पुरि सुहाई, मनउ ब्रह्म विद्या छवि छाई ॥२॥

अन्तिम पाठ—भये प्रगट भक्ति अनंत हित द्रग दया अमृत रस भरे।
सकल सुरनर मुनिन केई है छिनहि सब कारिज सरे ॥३॥
जै देवि दांनि सिरोमने करि, दया यह वर दीजिये।
सदा अपनें चरनदास के दास हम कहुँ कीजिये ॥४॥

॥ इति श्री जानुकी जनम लीला स्वामी बालमन्दजी कृत संपूरन ॥ माह सुदी ६ संवत् १७७६

४६७. गुटका नं० ६६—पत्र संख्या–८० । साइज–६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १८२४ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
भूषाभूषण	महाराज जसवंतसिंह	हिन्दी	पद्य सं० २१०
छवितरंग	महाराजा रामसिंह	,,	पद्य सं० ६४

प्रारम्भ—असुर कदन मोहन मदन वदन चंद रघुनंद।
सिया सहित बसियो सुचित, जय जय मय आनंद ॥१॥

यहां कवि की रीति प्रधानता करिकै राम जू सौ भिज्य होत है। तातै भाव धुनि। अरु प्रथम अनेक चरन अनेक बेर फिरत है तातै छिति अनुप्रास चंद रघुनंद यह रूपक।

दोहा—आनंदित बंदत जगत सुख मिकंद सिव नंद।
भाव चंद तुव जपत ही दूरि होत दुख दंद ॥२॥

अन्तिम पाठ—परी परोसनि सौ अटक, चटक चहचही चाह।
भरि भादों की चोथि को चंद निहारत नाह ॥६३॥
कछुक गुन दोहान के, बरने और अनूप।
ऐसे ही सहृदय सवै औरौ लखौ अनूप ॥६४॥

इति श्री महाराजा रामसिंहजी विरचिते छवितरंग संपूर्णं।

अष्टजाम	कवि देव	हिन्दी	पद्य सं० १३१
औषधि वर्णन	—	,,	—

५६८. गुटका नं० ६७—पत्र संख्या-५ से ११३ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्णलीला वर्णन	—	हिन्दी	पत्र ५-१७
होली वर्णन	—	"	—
बारहमासा	—	"	पत्र सं० ७४ से ७७
स्फुट पद	—	"	पत्र ७८ से ११३

५६९. गुटका नं० ६८—पत्र संख्या-२३ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल- । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पीपाजी की पत्रावलि	—	हिन्दी	—
ध्रु चरित	सुखदेव	"	—
विनति	—	"	—
पद्मावती कथा	—	"	—

५७०. गुटका नं० ६९—पत्र संख्या-२४ । साइज-५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न रचना है—

कल्मष कुठार—रामभद्र हिन्दी ।

मध्यम भाग—करनी हौ सो कीजियो करनी की कछु ठौर।
मो करनी जिन देखियो तो करनी की ओर ॥ २१ ॥
मो सो करनी कुटिल जग तो सो तारक ताज ।
यही भरोसो मोहि तो सरन गहे की लाज ॥ २२ ॥

इति श्रीमत् काम्यवनस्थ बाधूल समोत्रोत्पन्न गणेश भट्टात्मज रामभद्र भट्टेन.......................... विरचिते कल्मषकुठार ग्रंथ संपूर्ण ॥

५७१. गुटका नं० ७०—पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—रसराज नामक ग्रंथ है ।

५७२. गुटका नं० ७१—पत्र संख्या-५ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८१२ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । पद्य संख्या-२५ ।

विशेष—गुटके में नंदराम पच्चीसी दी है। रचना सं० १७४४ अब नंदराम पच्चीसी लिखते।

दोहा—गनपति को ज मनाय हरि, रिद्ध सिद्ध के हेत।
　　वाद वादनी मात तु, सुम अछिर बहु देत॥
　　कछु कह्यो हु चाहत हू, तुम्हार पुनि प्रताप।
　　ताहि सुएया सुख उपजै, दया करो अब आप॥ २॥

अन्तिम पाठ—नंद खंडेलवाल है अंबावति की वासी।
　　सुत बलिराम गोत है रावत मत है कृष्ण उपासी॥ २४॥
　　संवत् सतरासै चवाला कातिक चन्द्र प्रकासा।
　　नंदराम कछु ··· ··· ·· ··· ··············· ॥
　　कली ब्योहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मति तेरी।
　　कलजुग की ज बानगी यहै है और रासी बहुतेरी॥
　　राखे राम नाम या कलि मैं नंद दासा।
　　नंदराम तुम सरनै आयो गायो अजब तमासा॥ २५॥

इति श्री नंदराम पच्चीसी संपूर्ण। संवत् १८१२ चैत बुदी १२।

५७३. गुटका नं० ७२—पत्र संख्या-१६। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—कुछ हिन्दी के कवित्त हैं।

५७४. गुटका नं० ७३ पत्र संख्या-११-२६३। साइज-६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-× अपूर्ण।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठ हैं—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रीपाल रास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	ले. का. सं. १८२५
मधु मालती कथा	चतुर्भु जदास	”	—
गोरख वचन	बनारसीदास	”	—
वैद्य लक्षण	”	”	—
शिव पच्चीसी	”	”	—
भवसिन्धु चतुर्दशी	”	”	—
ज्ञानपच्चीसी	”	”	—

तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी	—
ध्यान बत्तीसी	”	”	—
अध्यात्म बत्तीसी	”	”	—
सूक्ति मुक्तावली	”	”	—

मधु मालती कथा—

प्रथम—बरबीर चित नया वर पाउं, संकर पूत गणपत मनाऊं।
चातुर हेत सहत रिझाउ, सरस मालती मनोहर गाऊं ॥ १ ॥
लीलावती ललित ऐक देसा, चन्द्रसेन जिहां सुघड नरेसा।
सुभग यामिनी हो गगन प्रवेसा, मानू मंडप रचो महेसा ॥ २ ॥
बसहपुर नगर जोजन चार, चौरासी चोहटा चोवार।
अति विचित्र दीसे नरनार मानूं तिलक भूम मझार ॥ ३ ॥

मध्य भाग—चंपावती निपूत मलियंदा, ताको कवर नाम जसु चंदा।
वरस बीस बाईस मैं सोई, तास पटंतर अवर न कोई ॥
जास मंत्र ग्रह कन्या सुन्दर, वरस अठारह मांहि पुलंदर।
रूपरेख तसु नाम सोहै, जा देखे सुर नर मन मोहे ॥ ४५ ॥

अन्तिम पाठ—हम है काम अंस अवतारी, इहै कहै कहै सोनी की न्यारी।
औसे कही मधु नृप समझायो, राजा सुनत बहोत सुख पायो ॥
राज पाट मधुक सब दीनों, चन्द्रसेन राजा तप लीनों।
राजरिषत्रिय बोहत होई, उनकी कथा लख न्ही कोई ॥ ८६२ ॥

दोहा—कायथ नैगमा कूल अहै, नाभा सुत भए राम।
तनय चतुर्भुज तास कैं, कथा प्रकासी ताम ॥ ८६३ ॥
अलख वधू दीठ दई, काम प्रबंध प्रकास।
कवियन सुं कर जोर करि, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६४ ॥
काम प्रबंध प्रकास पुनी, मधू मालती विलास।
प्रदुंमनी का लाला इहै, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६५ ॥
बनासपति में अंबफल, रस में एक रसंत।
कथा मध्य मधु मालती षट् रति मधि बसंत ॥ ८६ ॥
लता मध्या पवंग लता, सो धन में धनसार।
कथा मै मधु मालती, आभूषण मैं हार ॥ ८६७ ॥

राजनीत कीया मैं साखी, पंचाख्यान बुध ईहां माखी ।
चरना ऐका चातुरी बनायी, थोरी थोरी सबहु आई ॥ ८६८ ॥
पुनि बसंत राज रस गायो, यामैं ईश्वर का मद आयो ।
ताका ऐह विलाबसतारी, रसिकनि रसक श्रवन सुखकारी ॥ ८६९ ॥
रसिक होय सो रस कूं चाहे, अध्यात्म आतम अवगाहे ।
चातुर पूरष होई है जोई, ईहे कल रस समझू सोई ॥ ८७० ॥
किसन देव को कुंवर कहावै, प्रदुमन काम अंस मधु गावै ।
पुत्र कलत्र सब सुख पावै, दुख दालिद्र रोग नहीं आवै ॥ ८७१ ॥

दोहा – राजा पढै ही राज नीत, मित्र पढै ताही बधू ।
काभी काम विलास रस, ग्यानी ज्ञान सरूप ॥ ८७३ ॥
संपूरन मधु मालती, कलस भयो संपूरण ।
सुरता बकता सवन कूं, सुख दायक दुख दूर ॥ ८७४ ॥
कैसर के पति सामजी, तीण उपगार माहाराजै ।
कनक बदनी कामनी, तै पामी मै आजै ॥ ८७५ ॥

॥ इति श्री मधु मालती की कथा संपूर्ण ॥

फागुण बुदी ७ मंगलवार संवत् १८२५ का दसकत नन्दराम सेठी का ।

५७५. गुटका नं० ७४— पत्र संख्या-३४ । साइज-७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८७३ पूर्ण ।

विशेष — नन्ददास कृत मानमञ्जरी है । पद्य संख्या-२८६ है ।

प्रारम्भ—तं नमामि पदम परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन ।
जग कारण, करुणार्णव गोकुल जाको अैन ॥
नाम रूप गुण भेद लहि प्रगटत सब ही ठोर ।
ता बिन तहां जु आन कछु कहे सु अति बड बोर ॥

अन्तिम पाठ—

जुगल नाम-जुगल जुग्म जुग द्वंय द्वय उभय मिथुन विविवीप ।
जुगल किशोर सदा बसहुं नंददास के द्वीप ॥८७॥

रस नाम—सरस्य मधु पुनि पुष्प रस कुसुम सार मकरंद ।
रस के जाननहार जन सुनियैं है आनंद ॥८८॥

माला नाम—मालाष्टक ज गुणवती यह जु नाम की दांम ।
जो नर कंठ करैं सुनैं ह्वै है कवि को दाम ॥२८६॥

इति श्री मानमंजरी नंददास कृत संपूर्ण । संवत् १८७३ मंगसिर बुदी १३ दीतवार ।

५७६. गुटका नं० ७५—पत्र संख्या-६० ; साइज-६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । अशुद्ध ।

विशेष—साधु कवि की रचनाओं का संग्रह है । चरणदास को गुरू के रूप में कितने ही स्थानों पर स्मरण किया है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है । प्रति अशुद्ध है ।

५७७. गुटका नं० ७६—पत्र संख्या-२४ से १८६ । साइज-८×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—विविध पाठों का संग्रह है ।

५७८. गुटका नं० ७७ —पत्र संख्या-६२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

दस अछेरा, मुनि अहार लेता के पांच अरथ, मनुष्य राशि भेद, सुमेरु गिरि प्रमाण, जम्बू दीपका वर्णन, शील प्रमाद के भेद, जीव का भेद, अढाई द्वीप में मनुष्य राशि, अष्ट कर्म प्रकृति, विवाह विधि आदि ।

५७९. गुटका नं० ७८—पत्र संख्या-१८ से २०४ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-सं० १७९९ फागुण बुदी ६ । अपूर्ण ।

(१) श्री ध्रू चरित—हिन्दी । लेखन काल-सं० १७९९ फागुण बुदी ६ ।

अन्तिम पाठ—राजा प्रजा पुत्र समाना, संकट दुखी न दीसै आंना ।
राजनीति राजा जु वीचारै, स्वामी धरम प्रजापति पाले ॥
चक्र सुदरशन रछया करई, आग्या भंग करत सिर हरई ।
तातै सबको आग्या कारी, चक्र सुदर्शन कौ डर भारी ॥४॥
अैसी विधि करै ध्रू राजु, हरि क्रिया सरै सब काजू ।
घर में बन, बन में घर माई, अंतर नाही राम दुहाई ॥५॥
पानी तेल मिलै पुनि न्यारौ, यो ध्रू बरतौ राम पीयारो ।
परबनि पत्र मिलै नहीं पानी, येहि विधि बरतै दास बी रानी ॥६॥
उलटौ मोल चलै जल मांही, यो हरि भगत मिळन हरि जांहि ।

जैसे सीप समद तै न्यारी, स्वाति बुंद बरषै सुष भारी ॥७॥
जैसे चंद कमोद निभावै, जल में बसै भर प्रेम बढावै ।
जैसे कंवल नीर तै न्यारो, असी विधि धू पीयारो ॥८॥
जैसे कनिक न काई लागै, अग्नि दीया तै बाती जागै ।
सुत लपेटि अग्नि में दीजै, मोहरै की सत्या नही छीजै ॥६॥
धू चरित जे को सुनै, मन बच क्रम चित लाय ।
हरिपुरवै सब कामना, भक्ति मुकति फल पाय ॥१०॥
बसुधा सब कागद करूं, सारदा लिखुं बनाय ।
उदधि घोरि मसि कीजिये, धूमैह ग्रान समाय ॥
मैं जानी मति आपनी, कलिप कही कछु बात ।
बकसत सुत अपराध को, जन गोपाल पित मात ॥११॥

इति श्री धू चरित संपूरण समापता ।

(२) भक्ति भावती—(भक्तिभाव) हिन्दी

प्रारम्भ—सब संतन को नाय माथा, जा प्रसाद तै भयो सुनाथा ।
भव जल पार गयौ की चाहै, तो संत चरन रज सीस चढावै ॥१॥
जे नारायण अंतरजामी, सब की बुधि प्रकासक स्वामी !
तुम वाणी मैं प्रगटो आई, निर्वर्ति परवति देह बताई ॥२॥

दोहा—पर्म हंस आस्वादित चरन, ... कंवल मकरंद ।
नमो .... रामानंद नमो अनतानंद ॥३॥
जे प्रवृतिं को दुख नहि जानै, तो निवृति सौ क्यौ मनमानै ।
कलि अग्यान भयौ विस्तारा, पुरव ....नही संचारा ॥४॥

अन्तिम—भगति भावती याको नामा, दुख खंडन सब सुख विसरामा ।
सीखै सुणैर करै विचारा, तौं कलि कुसमल कौ ह्वै स्यौ कारा ॥ २७५ ॥
अलप सुख नाही जायैं केता, सु सुख पावै चाहै जेता ।

दोहा—जो बहु गुरु तैं मति लहै बहू पंडित बुझैं होई ।
सो सब याही मै लहै जै निकै सोधै कोय ॥ २७६ ॥

चौपई—लरिका कछु बस्त जो पावै, ले माती आगे गुदरावै ।
भली बुरी वै लेहि पिछांनी, यौ तुम आगै मैं यह आनी ॥ २७७ ॥
अब बहैको कहा तै करई, अपणो फल ले आगै धरई ।
जैसी क्रिपा तुम मोस्युं कीन्ही, तैसी मैं वाणी कहि दीन्ही ।

संवत् सौलहसै नव सालै, मथुरापुरी केसवा आलै ।

असुन पहल ग्यारसि रविवारी, तहा षट पहर मांहि विस्तारी ॥ २७६ ॥

करि जागरवौ प्रकथा दीनी, तब ठाकरनै समरपण कीनी ।

भगत समेत संतोखे सोई, ज्यौ तो तद वचन सुन के सुख होई ॥ २८० ॥

दोहा—नमहं राम रामनंदा, नमहं अनंतानंद ।

चरन कंवल रज सिर धरै, पर पनगै सानंद ॥ २८१ ॥

॥ इति श्री भगति भावती ग्रंथ समाप्ता ॥

(३) राजा चंद की कथा—पं० फूरो । पत्र संख्या-१३१-२०४ । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १६६३ फागुण सुदी २ ।

विशेष—राजा चंद आभानेरी की कथा है । चन्दन मलयगिरी कथा भी इसका दूसरा नाम है ।

५८०. गुटका नं० ७६—पत्र संख्या-२-२२ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—चरनदास कृत सतगुरु महिमा है:—प्रथम व अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—.................................. ।

सुख देव जी पूरन विसवा वीस ।

परम हंस तारन तरन गुरु देवन गुरु देवा ।

अनमै बानी दीजिए सहजो पावे मेवा ।

नमो नमो गुर देवन देवा ॥

५८१. गुटका नं० ८०—पत्र संख्या-३० । साइज-७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—तीर्थंकरों के माता, पिता, गणधर, वंश नाम आदि का परिचय, नन्दीश्वर पूजा तथा जीव आदि के भेदों का वर्णन किया गया है ।

५८२. गुटका नं० ८१—पत्र संख्या-२६ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पंचमंगल, सिद्धपूजा-सोलह कारण, दशलक्षण, पंचमेरु पूजा आदि का संग्रह है ।

५८३. गुटका नं० ८२—पत्र संख्या-१०२ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । लेखनकाल-× । अपूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार गाथा मात्र है, महबल विचार आदि पाठों का संग्रह है।

५८४. गुटका नं० ८३—पत्र संख्या-२३-१७। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—नारायण लीला के हिन्दी के २४६ पद्य हैं लेकिन वे कहीं २ अपूर्ण हैं।

५८५. गुटका नं० ८४—पत्र संख्या-४०। साइज-७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—गुटके में कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

५८६. गुटका नं० ८५—पत्र संख्या-८५। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—शीलकथा-(भारामल्ल,) लावणी तथा समाधिमरण भाषा का संग्रह है।

५८७. गुटका नं० ८६—पत्र संख्या-२२। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण

विशेष—विभिन्न चक्र दिये हुए हैं जो भिन्न २ कार्य पृच्छा से सम्बन्धित हैं। आगे उनके अलग २ फल लखे हुए हैं।

५८८. गुटका नं० ८७—पत्र संख्या-५०। साइज-६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—मोह मर्दन कथा है। रचना काल-सं० १७६३ कार्तिक बुदी १२ है। जीर्ण तथा अशुद्ध प्रति है।

५८९. गुटका नं० ८८—पत्र संख्या-१४६। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, सिद्धप्रियस्तोत्र, पाइर्श्वनाथस्तोत्र (पद्मप्रभ), विषापहारस्तोत्र, परमज्योतिस्तोत्र, आयुर्वेदिक नुसखे, रत्नत्रय पूजा आदि पाठों का संग्रह है। बीसा यंत्र भी है जो निम्न प्रकार है—
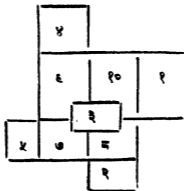
५६०. गुटका नं० ८९—पत्र संख्या-६१ से १७१ । साइज-६×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—ज्वालामालिनीस्तोत्र, चक्रेश्वरीस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, क्षेत्रपालस्तोत्र, परमानंदस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र, चैतनबंधस्तोत्र, शांतिकरस्तोत्र-(प्राकृत), चिन्तामणिस्तोत्र, पुण्डरीकस्तोत्र, भयहरस्तोत्र, उपसर्गहरस्तोत्र, सामायिक पाठ, जिन सहस्र नाम स्तोत्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

५६१. गुटका नं० ९०—पत्र संख्या-६८ । साइज-६×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८६६ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं:—

न्हवण, सकलीकरणविधान, पुण्याहवाचन और याग मंडल ।

५६२. गुटका नं० ९१—पत्र संख्या-६० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६३. गुटका नं० ९२—पत्र संख्या-७१ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—अधिकांशतः नन्ददास के हिन्दी पदों का संग्रह है । कुछ पद सूरदास के भी हैं । राधाकृष्ण से संबंधित पद हैं । पदों की संख्या १५० से अधिक है ।

५६४. गुटका नं० ९३—पत्र संख्या-१६१ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७६३ बैसाख सुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—नेमीश्वररास, श्रीपालरास (ब्रह्मरायमल्ल) हैं ।

५६५. गुटका नं० ९४—पत्र संख्या-२३ से ५४ । साइज-६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६६. गुटका नं० ९५—पत्र संख्या-१४० । साइज-४½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र से संबंध रखने वाले पाठ हैं ।

५६७. गुटका नं० ९६—पत्र संख्या-२६ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५१८. गुटका नं० १७—पत्र संख्या-२७६ । साइज-७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—२ गुटकों का सम्मिश्रण है । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरि	हिन्दी	र० का० सं० १६७८ आसोज सुदी ६

प्रारम्भ—सासण नायक समरियइं, वर्द्धमान जिनचंद ।
अमिय विघन दूरइं हरइं, आपइ परमानंद ॥१॥

अन्तिम पाठ—साधु चरित कहवा मन तरसइ, तिणए भास्यउ हरसइजी ।
सोलह सय अठित्तरि वरसइ, आसू वदि छठि दिवसइजी ॥
सा० जिनसिंह सूरि मतिसारइ भविषण नइं उपगारइंजी ।
श्री जिनराज वचन अनुसारइं, चरित कह्यउ स विचारइजी ॥
इणि परिसाधु तणा गुण गावइ, जे भवियण मन भावइजी ।
अलिय विघन तसु दूरि पुलावइ मन वंछित सुख पावइजी ॥१०॥
ए संबंध भविक जे भणिस्यइ, एक मना सांभलिस्यइजी ।
दुख दुह गतस दूरि गमावस्यइ, मनि वंछित फल लहिस्यइंजी ॥११॥

(२) शीतलनाथ स्तवन	धनराजजी के शिष्य हरखचंद	हिन्दी	र० का० सं० १७१६ कार्तिक सुदी १५
(३) पार्श्व स्तोत्र	"	"	र० का० सं० १७५४ कार्तिक सुदी ५
(४) नेमिनाथ स्तोत्र	—	"	र० का० सं० १७१३
(५) पदसंग्रह	"	"	र० का० सं० १७५८
(६) नेमिनाथ स्तवन	धनराज	"	र० का० सं० १७४८
(७) चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति जन्मोत्सव स्वध्याय	—	"	—
(८) गणनायक क्षेमकरण जन्मोत्पत्ति	धर्मसिंह सूरि	"	र० का० सं० १७६६ माघ सुदी
(९) पुण्यसार कथा	(पुण्यकीर्त्ति)	"	र० का० सं० १७६६

प्रारम्भ—नाभि राय नंदन नमुं, शांति नेमि जिन पाशि ।
महावीर चउवीसमउं प्रणम्या पुरइ आस ॥१॥

श्री गौतम गणधर सदा, लीला लब्धि निधान ।
समरी सह गुरु सरस्वती, वेविण वखारइ वांन ॥२॥

अन्तिम पाठ—खरतर गच्छ मति महिय विराजिउ, युग प्रधान जिनचंद ।
आचारज मिहमागिर मुनि वरूए, श्री जिनसिंह सुरंद ॥२००॥
हर्षचंद्र गणि हर्ष हितकरू, वाचक हंस प्रमोद ·
तासु सीस पून्यकीरत इम भायइ, मन धर अधिक प्रमोद ॥१॥
संवत् सोलह सइ छासट्ठि समइ विजय दसमी गुरुवार ।
सांगानेर नगर रलिया मणउ, पमणयउ एह विचार ॥२॥
पद्मप्रभ जिन सुपसाउलउ, दोष दोह गत जा दिन ।
उदय वद्धी मणउ, सुख संपद संतान ॥३॥
एह चरित्र भवियन जे सांभलइ दुख दोह गतसु जाइ दीन ।
उदय अद्वकउ न हुवइ, तसंघरन वनि धवाइ ॥४॥

इति अष्ट प्रवचन माता उपर पुण्यसार कथा संपूर्ण ।

(१०) सीमंधर स्वामी जिन स्तुति	—	हिन्दी	विशेष
(११) छः जीव कथा	—	"	—

विशेष—१५ पत्र के आगे ८ पत्र किसी के द्वारा फाड दिए गये हैं ।

(१२) श्रावक सूत्र (प्रतिक्रमण)	—	प्राकृत	—
(१३) अतिचार वर्णन	—	"	—
(१४) नेम गीत	लब्धिविजय	हिन्दी	—
(१५) स्तवन	—	"	—
(१६) सीमंधर स्तवन	गणिलाल चंद	"	—
(१७) चउसरण परिकरण	—	"	—
(१८) भक्तामरस्तोत्र	—	"	—
(१९) नवतत्व	—	"	—
(२०) नेमिराजुलस्तवन	जिनहर्ष	"	—
(२१) नेमि राजुल गीत	—	"	—
(२२) सुभद्रासती सज्झाय	—	"	—
(२३) विजय सेठ विजया सेठाणी सज्झाय	सूरिहर्षकीर्ति	"	—
(२४) पद—करि अरिहंतनी चाकरी	जिनवल्लभ	"	—

(२५) सज्झाय	—	"	ले० का० सं० १७८१
(२६) पंचाख्यान पंचतंत्र)	कवि निर्मलदास	"	—

प्रारम्भ—प्रथम जपु अरिहंत, अंग द्वादश जु मानधर।
गणधर गुरु संजुत, नमो प्रति गणधर तिसतर ॥
नमो गणेश सारदा अवर गुरू गोतम स्वामी।
तीर्थंकर चौबीस सकल मुनि भए शिवगामी ॥
नमो ग्याति श्रावक सकल रस हाय मिल भविक सम।
तुम्हरे प्रसाद यह उच्चरो पंचतंत्र की कथा अब ॥
पंचख्यान वखानि हो न्याय नीति संसार।
अल्प बुद्धि भाषा रचुं करूं ग्रन्थ विस्तार ॥१॥

अन्तिम पाठ—राम नाम निज हीरदै धरै, मुख तैं मिष्ट वचन उचरै।
सब जिय,सुख सौं अपनै थान, सदा कहै निज मन में ग्यान।

दोहा—सभ निज थानक सुख लहै, सब मुख सुमरै राम।
सहस किरत भाषा कियो श्रावक निरमल नाम ॥

इति श्री पचाख्यान श्रावक निरमल दास कृत भाषा संपूर्ण। लेखन काल सं० १७५४ जेठ सुदी ५। ग्रंथ ५१ पत्रों में है। तथा ११४१ पद्य हैं।

(२७) सात व्यसन सिज्झाय	खेम कुशल	हिन्दी	—
(२८) ज्ञान पच्चीसी	—	"	—
(२९) तमाखु गीत	सहसकर्ण	"	—
(३०) नल दमयन्ती चौपई	समयसुन्दर	"	र० का० सं० १७२१ पद्य सं० १०
(३१) शांति नाथ स्तवन	केशव	"	—
३१ क पार्श्वनाथ स्तवन	—	"	—
(३२) महावीर स्तवन	—	"	—
(३३) राजमती नो चिट्ठी	—	"	—
(३४) नववाडी नो सिज्झाय	—	"	—
(३५) शीलरासो	विजयदेव सूरि	"	पद्य सं० ७६
(३६) दान शील चौपई	जिनदत्त सूरि	"	ले० का० सं० १७४२
(३७) प्रमादी गीत	गोपालदास	"	२५ पद्य

(३८) आत्म उपदेश गीत	समय सुन्दर	,,	—
(३६) वादुरासो	गोपालदास	,,	—
(४०) रात्रिभोजन सज्झाय	—	,,	—
(४१) तमाखु गीत	मुनि आणंद	,,	—
(४२) शांति नाथ स्तवन	गुण सागर	,,	—
(४३) पंच सहेली	छीहल	,,	र० का० सं० १५७५ फागुण सुदी १५
(४४) मति बत्तीसी	यशःकीर्ति	,,	र० का० सं० १६८८
(४५) यादवरासो	पुण्य रतन गणि	,,	ले० का० सं० १७४३
(४६) सिंहासन बत्तीसी	—	,,	ले० का० सं० १६३६
(४७) नेमिराजमतिगीत	—	,,	—
(४८) मुनिगीत	—	,,	—
(४९) मास	मनहरण	,,	र० का० सं० १७३५
(५०) सिंघासन बत्तीसी	हरि कलश	,,	र० का० सं० १६३२ आसोज बुदी २

५९९. गुटका नं० ९८—पत्र संख्या–१७४। साइज–९½×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लेखन काल–सं० १७१८ वैशाख सुदी ९। पूर्ण।

विशेष—पर्वतधर्मार्थी कृत समाधितंत्र की बाल बोध टीका है। प्रति जीर्ण है।

६००. गुटका नं० ९९—पत्र संख्या–१४१। साइज–१०×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–सं० १७९७ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रस्तवन	आशाधर	संस्कृत	—
नवग्रहपूजाविधान	—	,,	—
ऋषिमंडलस्तोत्र	—	,,	—
भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	,,	—
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	हिन्दी	४६ पद्य
सामायिक पाठ टीका सहित	जयचंदजी छाबड़ा	,,	—

६०१. गुटका नं० १००—पत्र संख्या–२८ । साइज–१०×७ इञ्च । भाषा–प्राकृत–हिन्दी । लेखन काल–सं० १७०६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणचंद्र सूरि के शिष्य छात्र कल्याण कीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । त्रिभंगी का वर्णन है ।

६०२. गुटका नं० १०१—पत्र संख्या–१२२ । साइज–६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–× । अपूर्ण ।

विशेष—लक्ष्मीदास कृत श्रेणिक चरित्र है । भाषा–हिन्दी है । कुल पद्यों की संख्या १६७५ है, अन्तिम के कुछ पद्य नहीं हैं । श्रेणिक चरित्र के मूलकर्ता भ० शुभचन्द्र हैं ।

६०३. गुटका नं० १०२—पत्र संख्या–८० । साइज–१०×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । लेखन काल–सं० १६४८ । पूर्ण ।

विषय–सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
पद	संघपति राइ डूगर	हिन्दी	—
	श्री जेण सासण सकल सुह गुरु थिर दे राउर भाव ।		
पद	—	"	—
	कुशल करि कुशल करि कुसल सुरिंद गुरु ।		
पद	कालक सूरि	"	—
	जय जय सदा जय जय नंदा वनिता वचन विकासइरे ।		
मणिहार गीत	कवि वीर	"	—
	वीर जी वयणे विरचीया, श्रेणिक मन माहि सोइ ।		
गीत	—	"	—
	करि शृंगार पहिर हार तजि विकार कामनी ।		
जइतपद वेलि	कनकसोम	"	४६ पद्य हैं ।
	र० का० सं० १६२५, ले० का० सं० १६४८ भादवा सुदी ८ ।		

प्रारम्भ—सरसति सामणि वीनवुं, मुझ दे अमृत वाणि ।
मूलधकी खरतरतणा, करिस्यूं विरद वखान ॥१॥
श्रावक श्रावी मिलि सुणउ मनि धरि अति आणंद ।
थिति जिण वादन को करउ, साचउ कहर मुणिंद ॥२॥
सोलह पचीसइ समइ, वाचक दया मुनीस ।
चउमासि भाया आगरइ, बहुपरि करि सुजगीस ॥३॥

रतनचंद वइरागि गणि, पंडित साधु कीरति ।
हरिरंग गुण आगलउ ज्ञानादेवकी रति ॥४॥

अन्तिम पाठ—दया अमर माणिक गुरु सीस, साधु कीरति लहीय जगीस ।
मुनि कनक सोम इम आखइ चउ विह श्री संघ की साखइ ॥४६॥

इति श्री जहत पद वेलि । संवत् १६४८ वर्षे अषाढ बुदी अष्टमी ।

(६) चूनडी	साधुकीत्ति	हिन्दी	—

(आउलपुरि सोहामणउ, गढ मढ मन्दिर वाई हो)

(७) मंजारी गीत	जिनचन्द्र सूरि	"	—

आखी वारउ उदिरउ, नित खेलइ आलि ।

(८) वइरागी गीत	—	"	—
(९) शील गीत	मानदास	"	—
(१०) पद	—	"	—
(११) दानशीलतपभावना	—	हिन्दी	१४ पद्य हैं ।

सरसति स्वामिणि वीनव वरदेई सारदा मोहि हो ।

(१२) गोरी काली वाद	—	"	—
(१३) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र	—	प्राकृत	—
(१४) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभयदेव	"	—
(१५) रागरागिनी भेद, संगीत भेद	—	हिन्दी	—
(१६) नेमिनाथ स्तवन	—	"	—

प्रारम्भ—श्री सहगुरना पाय नमी, जिणवाणी पणमेवि ।
नय भव नेमीसर तणा संखेपइ पभणेसु ।
सील सिरोमणि गुण निलउ, जादव कुल सिणगार ।
सुणता तेह तणा उचरी, पामीजइ भवपार ॥१॥

अन्त—इय नेमि जिण जगदीस गुरु, परम सिव लक्षी वरो ।
हरिवंस खीर समुद्र ससिहर सामि सुह संपइ करो ।
उदाम काम कुरंग केसरि, सिवादेवि नंदणउ ॥
मह देहि नीय पइ कमल सेवा, सयल जण आणंदणो ॥४३॥

(१७) वैताल पच्चीसी	वैतालदास	हिन्दी

प्रारम्भ—सरसति सुललित वचन विलास, आपउ सेवक पूरइ आस ।
तुम्ह पसाइ हुमइ बुद्धि मिशाल, कविता रसके कहउ रसाल ।
महियल मालव देस विख्यात, धरमी लोक विसन नहीं सात ।
उज्जेणी नगरी सु विसाल, राज करइ विक्रम भूपाल ॥१॥

अन्तिम—प्रगट हुई सर्व सिधि रिधि बहु बुधि नरेसर ।
सरउ काज तुम्हि करउ राज, जाम तपइ दिणेसार ॥
इंद्रइ दीधउ मान वली, वरदान इसी परि ।
ए प्रबंध तुम्ह तणउ प्रसिधि होसी जग भीतरि ॥
रंजउ राउ सुपसाउ लहि विक्रमा इत आव्यउ घरहि ।
उज्जेण नगरि उछव हुय हरष करी अति विस्तरिहि ॥३६७॥
राज रिधि सव सिधि सुजस विस्तरइ महीतलि ।
जरा मरण अवहरण, जन्म लब्भइ उत्तिम कुलि ॥
धरम धराउ धरण करण सुख अहि निसि ।
रमण रूपि रमा समाण, तिजि माण हुउ वसि ॥
चिहु पदहि प्रथम अक्षर करी, जास नाम अछइ प्रसिद्धि ।
तिणि कही कथा पच वीसए सरस वाचउ विबुध ॥३६७॥

इति वेतालपचीसी चउपई समाप्त ।

(१८) विक्रमप्रवन्ध रास विनयसमुद्र हिन्दी र० का० सं० १५८३
२६४ पद्य हैं ।

प्रारम्भ—देव सरसति २ प्रथम पणमेवि, वीणा पुस्तक धारिणी ।
चंद्र विहंसि सु प्रसंसि वल्लइ कासमीरपुर वासिणी ॥
देइ नाण अनाण पिल्लइ कवियणनी माडली दिउ मुझ बुधि विशाल ।
जिम विक्रम राजा तणउ कहउं प्रवन्ध रसाल ॥१॥

मध्य भाग—विक्रमा दत्य तेज आदित्य बोलइ वचन करइ ते सत्य ।
वलि मागइ सीजउ आदेस खंस नयरि करि वेग प्रवेश ॥२४२॥
श्री जयकर्ण राय मेघरे त्रीजीमि चडि साहस करे ।
पेटी आणि वेगि तिहां जाइ, राजा चाल्यु करि समदाइ ॥२४६॥

अन्तिम भाग—संवत पनरइ सई त्रासीयइ, ए चरित्र निसुणी हरि सीयइ ।
साहसीक जे होइ निसंकि, कायर कंपइ जे वलि रंकि ।

श्री खरतरगच्छ नयण वर सूरि, चरण करण गुण किरण मयूर।
रयण प्रभु गुणगण भूरि, तसु अनुक्रमि जंपइ सिद्धसूरि ॥६७॥
तेह नइ वाचक हर्ष समुद्र तसु अनु उजल कीर समुद्र।
तसु विनये विन या बुद्धि एह, रच्यु प्रबंधि निरषि तयोह।
पंच छंद नामा सुचित्रि, देखी वेहनउ भावि विचित्र।
तिथि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुणतां सुख रसाल ॥४६६॥

(१६) विद्याविलास चउपई　　आज्ञासुंदर　　हिन्दी　३६४ पद्य हैं।
रचना काल सं० १५१६

प्रारम्भ—गोयम गणहर पाय नमी सरसति हियइ धरेवि।
विद्या विलास नरवइ तणउ, चरिय भणु संखेवि ॥१॥
जिम जिम संभालियइ श्रवणि पुण्य पवित्र चरित्र।
तिम तिम परमाणंद रस अहनिसि विलसइ चित्त ॥२॥
भय कय कचंण सुवण जण राणिम भोग विलास।
मन वंछित सुख संपजइ जसु हुय पुण्य प्रकाश ॥३॥

चउपई—पुण्य पसाई पाम्यउ राज, पुण्य प्रमाणि चक्षा सविकाज।
धन धन विद्या विलासहचरी, तेहिय निसणउ आदर करी ॥४॥

मध्य भाग—कमलवती पुत्री तणउ पाणि ग्रहण करंत।
तउमु तउ नरवइ सुणउ वाचा अरणहुंत ॥६८॥

अन्तिम पाठ—इण परि पूरउ पाली आउ, देवलोकि पहुतउ नरराउ।
खरतर गछि जिन वरद्धन सूरि, तासु सीस बहु आणंद पूरि॥
श्री आज्ञासुंदर वसु वज्झाय, नव रस कि‍द्ध प्रबंध सुभाव।
संवत् पनरह सोल वरसंमि सध वयणिएविय सुरम्म॥
विद्या विलास नरिंद चरित्र, भविय लोय एह पवित्त।
जे नर पढइ सुणइ साभलइ, पुण्य प्रभाव मनोरथ फलइ ॥३६४॥
इति श्री विद्या विलास चउपई।

(२०) साठि संवत्सरी　　—　　हिन्दी　　—
सं० १६४८ से सं० १६६० का वर्णन है। विषय—ज्योतिष।

६०४. गुटका नं० १०३—पत्र संख्या-७५। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण
विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियों तथा चौबीस-दंडकों का वर्णन है।

६०५. **गुटका नं० १०४** — पत्र संख्या-३१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विशेष—सकलीकरणविधान, न्हवनविधि, तथा पूजा संग्रह है ।

६०६. **गुटका नं० १०५**—पत्र संख्या-१२० । साइज-५½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजायें आदि हैं ।

६०७. **गुटका नं० १०६**—पत्र संख्या-२१८ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

६०८. **गुटका नं० १०७**—पत्र संख्या-२५५ । साइज-५½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशे—पूजा पाठ संग्रह है ।

६०९. **गुटका न० १०८**— पत्र संख्या-२०० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) यशोधर चरित्र	खुशालचंद	हिन्दी	र० का० सं० १७७५ पद्य ५६६
(२) सप्तपरमस्थानकथा	"	"	— पद्य सं० ८३ लेखनकाल
(३) मुकटसप्तमीव्रतकथा	"	"	सं० १८३६ पद्य सं० ५२
(४) मेघमालाव्रतकथा	"	"	सं० १८३० पद्य ४४
(५) चन्दनषष्ठिव्रतकथा	"	"	"
(६) लब्धिविधानव्रतकथा	"	"	"
(७) जिनपूजापुरंदरकथा	"	"	"
(८) षोडशकारणव्रतकथा	"	"	"
(९) पद (५)	"	"	"
(१०) रूपचंद की जखडी	रूपचंद	"	१८३०
(११) एकीभावस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	१८३१ वैशाख सुदी ३
(१२) भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	"	"
(१३) कल्याणमंदिरभाषा	—	"	"
(१४) शनिश्चर देव की कथा	—	"	१८७४ जेठ सुदी १५

(१५) आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१८७४ आषाढ सुदी ४
१६) नेमिनाथ चरित्र	अजयराज	"	

पद्य संख्या-२६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७९३ असाढ सुदी १३ । लेखन काल-सं० १७६८ चैत्र सुदी ८ ।

प्रारम्भ—श्री जिनवर बंदौ सबै, आदि अंत चवबीसै ।
ज्ञान पुंजि गुण सारिखा, नमो त्रिभुवन का ईस ॥१॥
तामै नेमि जिणंद को बंदौ बारंबार ।
तास चरित वखाणिस्यो, तुछ बुधि अनुसार ॥२॥

मध्य भाग—जो होइ वियोग तिहारो, निरफल है जनम हमारो ।
तातै संजम अब तजिए संसार तणां सुख भजिए ॥
जल बिन मीन जिव किम मीन, तैसे हूं तुम आधीन ।
तुम भाव दया की कीन्हा, सब जीव छुडाई दीन्हा ॥

अन्तिम भाग—अजयराज इह कीयो वखाण, राज सवाई जयसिंह जाण ।
अंबावती सहरै सुभ थान, जिन मन्दिर जिम देव विमाण ॥
नीर निवाण सोहै वन राई, बेलि गुलाब चमेली जाइ ।
चंपो मरवो अरै सेवति, यौ हो जाति नाना विध कीती ॥२५८॥
बहु मेवा विधि सार, वरणत मोहि लागै बार ।
गढ मन्दिर कछु कह्यो न जाइ, सुखिया लोग बसे अधिकाइ ॥२५९॥
तामै जिन मन्दिर इन सार, तहां विराजै श्री नेमिकुमार ।
स्याम मूर्त्ति सोभा अति घणी, ताकी ओपमा जाइ न गणी ॥२६०॥
जाकै भाग उदै सुभ होइ, करि दरसण हरषै मेट सोई ।
आवै जातै सरावग घणा, काटै कर्म सबै आपणां ॥२६१॥
अजैराज तहां पूजा कराई, मन वच तन अति हरष धराई ।
निति प्रति बंदै ते बारंबार, तारण तरण कहै भव पार ॥२६२॥
ताको चरित कह्यो मन अपणा बुधि सारू उपजाई ।
पंडित पुरुष हंसो मति कोई, भूल चूक यामै जो होई ॥२६३॥
संवत् सतरासै त्रैणवै, मास असाढ धाई वर्णयो ।
तिथि तेरस अंधेरी पाख, शुकवार शुभ उतिम दाख ॥

इति श्री नेमिनाथजी की चौपई संपूर्ण ।

इह पोथी है साह की, सुहड नाम तसु नाम ।
मान महातमा लिपि करी, नगर चंपावती धाम ॥

इसके अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकर स्तुति एवं कक्का बत्तीसी आदि पाठ और हैं ।

६१०. **गुटका नं० १०६**—पत्र संख्या-१६४ । साइज-५३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—सुदर्शन रास—पद्य संख्या २०१ । लेखन काल-सं० १८०१ कातिक सुदी ८ । पूर्ण ।
इसके अतिरिक्त १० और पाठ है ।

६११. **गुटका नं० ११०**—पत्र संख्या-१२० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
डंडाणागीत	—	हिन्दी	—
शिवपच्चीसी	बनारसीदास	"	—
समवशरणस्तोत्र	—	संस्कृत	—
पंचेन्द्रियबेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	—
पद	सुन्दर	"	—
बत्तीसी	मनराम	"	—

अंत में बहुतसी जन्मकुंडलियां दी हुई हैं ।

६१२. **गुटका नं० १११**—पत्र संख्या-५ से १२४ । साइज-६×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	"	—
भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	बनारसीदास	"	—
पद	दीपचंद	"	—
	सेवा में जाय सोही सफल घडी ।		
पद	—	"	—
	मेरे तो यह चाव है निति दरसन पाउं ।		

पद	कनककीर्ति	"	—
	अवगुनहु बकसो नाथ मेरो।		
पद	द्यानत	"	—
	सुमरण ही में त्यारो द्यानत प्रभू		
पद	मनराम	"	—
	अखियां आज पवित्र भई मेरी		
पद	सोभा कही न जिनवर जाय जिनवर मूरति तेरी		

इस तरह के २२ पद्य और हैं।

त्रेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	"	—
पंचमकाल का गण भेद	करमचंद	"	—

६१३. गुटका नं० ११२—पत्र संख्या-३०। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १८८६ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण।

विशेष—गुणविवेक वार नियाणी है।

६१४. गुटका नं० ११३—पत्र संख्या-४६। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—संबोधपंचासिका भाषा, बारह भावना, एवं पंचपरमेष्ठियों के मूल गुण आदि का वर्णन है।

६१५. गुटका नं० ११४—पत्र संख्या-५४। साइज-५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—त्रेपन भावों का वर्णन, नरकों के दोहे, भक्तामर आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१६. गुटका नं० ११५—पत्र संख्या-८७। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा, चौबीसठाणा चर्चा, समायिक पाठ आदि का संग्रह हैं।

६१७. गुटका नं० ११६—पत्र संख्या-३७। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—भिन्न पाठों का संग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनकुशलसूरि छंद	—	हिन्दी	—
स्तवन	जिनकुशलसूरि	"	—

गंगाष्टक	शंकराचार्य	संस्कृत	—
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	"	—
रंगनाथ स्तोत्र	—	"	—
गोविन्दाष्टक	शंकराचार्य	"	—

६१८. गुटका नं० ११७—पत्र संख्या-६६। साइज-७×५३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। निम्न संग्रह है:—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभय देव	प्राकृत	—
(२) अजितशांति स्तोत्र	—	"	—
(३) अजितशांति स्तवन	जिनवल्लभ सूरि	"	—
(४) भयहर स्तोत्र	—	हिन्दी	—
(५) सर्वाधिष्टायिक स्तोत्र	—	"	—
(६) जैनरक्षा स्तोत्र	—	"	—
(७) भक्तामर स्तोत्र	—	"	—
(८) कल्याणमंदिर स्तोत्र	—	"	—
(९) नमस्कार स्तोत्र	—	"	—
(१०) वसुधारा स्तोत्र	—	"	—
(११) पद्मावती चउपई	जिनप्रभसूरि	"	—
(१२) शक्र स्तवन	सिद्धिसेन दिवाकर	"	"
(१३) गोतमरासा	विनयप्रभ	"	र० का० सं० १४१२

६१९. गुटका नं० ११८—पत्र संख्या-२२०। साइज-६३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—बीच २ में से पत्र काट लिये गये गये हैं।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पीपाजी की चतुराई	—	हिन्दी	—
(२) नाग दमन कथा (कालिय नागणी संवाद)	—	हिन्दी गद्य	—
(३) महाभारत कथा		गद्य में ३३ अध्याय हैं	ले० का० सं० १७८१ आसोज सुदी ८
(४) पद्मपुराण (उत्तर खंड)	—	"	ले० का० सं० १७८२ श्रावण सुदी ३

(५) पृथ्वीराजवेलि पृथ्वीराज „ ३०० पद्य हैं
(कृष्ण रूकमणी वेलि)

लेखन का० १७८२ श्रावण सुदी १३ । हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

६२०. **गुटका नं० ११६**—पत्र संख्या-१२ से ६६ । साइज-४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र टीका है । प्रति जीर्ण है ।

६२१. **गुटका नं० १२०**—पत्र संख्या-३४ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—परमानन्द स्तोत्र, दर्शन पाठ, सहस्रनाम (जिनसेन), सकलीकरण तथा द्रव्य संग्रह आदि पाठों का संग्रह है ।

६२२. **गुटका नं० १२१**—पत्र संख्या-४० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
रामस्तवन	—	संस्कृत	
	सनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामस्तवराज संपूर्ण ।		
आदित्यहृदय स्तोत्र	—	”	
	भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे ।		
सप्तश्लोकी गीता	—	”	
चतुश्लोकीगीता	—	”	
कृष्णकवच	—	”	

६२३. **गुटका नं० १२२**-पत्र संख्या-११७ ।साइज-४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, देवसिद्ध पूजा, लघु चाणक्य नीति शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४. **गुटका नं० १२३**—पत्र संख्या-६० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—यंत्र लिखने तथा उसके पूजने की दिनों की विधि दी हुई है ।

६२५. **गुटका नं० १२४**—पत्र संख्या-१२५ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) संघ पच्चीसी	—	हिन्दी	२५ पद्य

चौबीस तीर्थंकरों के संघों के साधुओं आदि की संख्या का वर्णन है।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(२) बाईस परीषह वर्णन	—	"	—
(३) मांगीतुंगी स्तवन	अभयचन्द सूरि	"	—
(४) सामायिक पाठ	—	"	—
(५) भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	—
(६) एकीभाव स्तोत्र भाषा	—	"	—
(७) नेमजी का व्याह लो (नव मंगल)	लालचंद	"	रचना काल सं० १७४० भादवा सुदी ३

विशेष—अलग २ नो मंगल हैं। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:—

> एरी इह संवत सुनहु रसालारी हां,
> एरी सतरैसे अधिक चवालारी हां।
> एरी भादु सुदि तीज उजारी री हां,
> एरी तां इह दिन गीत सुधारी रीहां जी॥
>
> इह गीत मंगल नेम जिनका, साहजादपुर में गाइया।
> अग्रवाल गरग गोती अनक चूर कहाईया॥
> पातिसाह वैठाठिक या च्यौरा चक वैन वाईया।
> नौरंगस्याह वली के वारै लाल मंगल गाइया॥

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(८) चरचा संग्रह	—	हिन्दी	—

विभिन्न चर्चाओं का संग्रह है।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(९) परमात्म छत्तीसी	भगवतीदास	"	रचना काल संवत् १७५०
पद संग्रह	—	"	

ब्रह्म टोडर, विजयकीर्ति, विश्वभूषण, नवलराम, जगतराम, द्यानतराय, खुशालचंद, कनककीर्ति, लालविनोद आदि कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१०) पंचपरमेष्टी चरचा	—	हिन्दी	—
(११) भक्तामर स्तोत्र भाषा	—	"	—

६२६. गुटका नं० १२५—पत्र संख्या-२ से ३३५। साइज-६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७१२ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) गुनगंजनम	—	हिन्दी	४२२ पद्यों

की संख्या है। प्रारम्भ के १०४ पद्य नहीं है। पद्य सुन्दर है लिपि विकृत है। ले० सं० १७१२ जेठ सुदी २।

(२) डूंगर की बावनी	पद्मनाभ	"	र० का० सं० १५४३

बावनी में ५४ पद्य हैं। कवि ने प्रारम्भ और अन्त में अपना परिचय दे रखा है प्रति अशुद्ध है। लेखन काल सं० १७१३ असाढ सुदी २। बावनी के प्रत्येक पद्य में डूंगर श्रीमाल को सम्बोधित किया गया है।

(३) विवेक चौपई	ब्रह्मगुलाल	"	—
(४) चेतन गीत	जिनदास	"	—
(५) मदनजुद्ध	बूचराज	"	र० का० सं० १५८९
(६) छीहल की बावनी	छीहल	"	५० पद्य है।
(७) नन्दु सप्तमी कथा	—	"	र० का० सं० १६४३
(८) चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"	—
(९) पंथीगीत	छीहल	"	—
(१०) साधु वंदना	बनारसीदास	"	—
(११) जोगीरासो	जिनदास	"	—
(१२) श्रीपाल रासो	ब्रह्मरायमल्ल	"	अपूर्ण

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ संग्रह भी है। भक्तामर स्तोत्र, पूजा, जयमाल, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पञ्चमंगल, मेघकुमार गीत (पूर्ण) आदि।

६२७. **गुटका नं० १२६**—पत्र संख्या-१४६। साइज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६२८. **गुटका नं० १२७**—पत्र संख्या-२४०। साइज-१×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पंचाणुव्रत की जयमाल	बाई मेघश्री	हिन्दी	(सुणि चेतन सुगुण घणा जीहां जीव दया व्रत पालौं)
(२) सिद्धों की जयमाल	—	"	—
(३) गोमट्ट की जयमाल	—	"	

(४ मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	,,	—
(५) योगसार	योगचन्द्र	,,	
		गद्य में दोहों पर अर्थ दिया हुआ है।	
(६) अध्यात्म सवैया	रूपचंद	,,	—

प्रारम्भ—अनभौ अभ्यास में निवास सुध चेतन को।
अनभौ सरूप सुध बोध को प्रकास है॥
अनभौ अनूप उप रहत अनंत ग्यान।
अनभौ अनीत त्याग ग्यान सुखरास है॥
अनभौ अपार सार आप ही को आप जानै।
आप ही मैं व्याप्त दीसै जामैं जड नास है॥
अनुभौ सरूप हैं सरूप चिदानन्द चंद।
अनुभौ अतीत आठ कम स्यौं अकास है॥१॥

अन्तिम पाठ—चौथे सरवांग सुधि आनै सो मिथ्याती जीव,
स्यादवाद स्वाद बिना भूलौ मूद मती है।
चौथे अति इन्द्री ग्यान जानै नहीं सो अजान,
वहे जगवासी जीव महा मोह रतो है॥
चौथे बंध्यो खुल्यौ मानै दुहं नैं को भेद जानै,
दानैं यो निदान कीयौ साचौ सील सती है।
बार चाल्यौ धारा दोइ ग्यान भेद जानै सोइ,
तेरहे प्रगट चौदे गयो सिध गती है॥

इति श्री अध्यात्म रूपचंद कृत कवित्त समाप्त। ग्रन्था ग्रन्थ ४०१।

६२६. गुटका नं० १२८—पत्र संख्या-१३०। साइज-६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखनकाल-×। अपूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

काल चरित्र	कबीर	हिन्दी	अपूर्ण
साखी	,,	,,	२१ पद्य हैं

अन्तिम पद्य—ऐसे राम कहे सब कोई, इन बातीन तौ भगतिन न होई।
कहै कबीर सुनहु गुर देवा, दूजौ जानैं नाही भेवा॥

साखी, कबीर धनी धर्मदास की माला, सबद, रमानी, रेखता तथा अन्य पदों व पाठों का संग्रह है।

गुटका अधिक प्राचीन नहीं है।

६३०. **गुटका नं० १२६**—पत्र संख्या–२ से ८। साइज–८×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—संस्कृत में अभिषेक पाठ है।

६३१. **गुटका नं० १३०**—पत्र संख्या–१६। साइज–७½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। लेखन काल–×। अपूर्ण।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

६३२. **गुटका नं० १३१**—पत्र संख्या–२२५। साइज–६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी-संस्कृत। लेखन काल–सं० १७७४ मंगसिर सुदी ३। पूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मोक्ष पैडी	बनारसीदास	हिन्दी	—
विनती	मनराम	,,	—
विनती	अजयराज	,,	—
अठारह नाता का चौढाल्या	लोहट	,,	दो प्रति हैं।
श्रीपाल स्तुति	—	,,	२१ पद्य हैं।
साधु वंदना	बनारसीदास	,,	—
आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	,,	१५० पद्य हैं। ले० का० सं० १७७६ फागुण सुदी ३।
गुणाक्षरमाला	मनराम	,,	४० पद्य हैं।

आरम्भ—मन बच कर या जोडि कैरे बंदौ सारद मायरे।
गुण अक्षिर माला कहुं सुणौ चतर सुख पाई रे।
माई नर भव पायौ मिनख को ॥१॥
परम पुरिष प्रणमौ प्रथम रे, श्री गुर गुन आराधौ रे,
ग्यान ध्यान मारिगि लहै, होई सिधि सब साधो रे।
माई नर भव पायौ मिनख कौ ॥२॥

अन्तिम भाग—हा हा हासी जिन करै रे, करि करि हासी आनौ रे।
हीरौ जनम निवारियो, बिना भजन भगवानौ रे ॥३७॥
पढै गुणै अर सरदहै रे, मन बच काय जो पोहारे।
नीति गहै अति सुख लहै, दुख न व्यापै ताही रे।
माई नर भव पायौ मिनख कौ ॥३८॥

निज कारण उपदेस मेरे, कीयौं बुधि अनुसार रे ।
कवियण दूसण जिनवरो लीज्यौ सब सुधारी रे ।
यह विनती मनराम की रे, तुम हो गुणह निधान रे ।
संत सहज भव गवात जो, करै सुगुण परवानौ रे ।
भाई नर भव पायों मिनख कौ ॥४०॥

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
विनती	दीपचन्द	"	
	अविनासी आनन्द मय गुण पूरण भगवान ॥		
विनती	कुमुदचंद	"	—
	प्रभु पाय लागौं करूं सेव थारी ॥		
विनती	मनराम	"	—
	पारस प्रभु तुम नाम जी जो सुमरै मन वच काय		
पंचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	"	—
प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	"	—

६३३. गुटका नं० १३२—पत्र संख्या-१० से ३७ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र (ब्रह्मरायमल्ल) तथा प्रद्युम्नरास, (ब्रह्मरायमल) अपूर्ण हैं ।

६३४. गुटका नं० १३३—पत्र संख्या-३५ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-सं० १७७२ माह बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—चिन्तामणि महाकाव्य तथा उमा महेश्वर के संवाद का वर्णन है ।

६३५. गुटका नं० १३४—पत्र संख्या-१०१ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण

विशेष —ऋषिमंडल पूजा, दशलक्षण पूजा तथा होम विधान (आशाधर) आदि हैं ।

६३६. गुटका नं० १३५—पत्र संख्या-१६ । साइज-७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

वच्छराज हंसराज चौपई—जिनदेव सूरि ।

प्रारम्भ— आदीसर आदि करी, चौबीसउ जिणंद ।
सुरसती मन समरू सदा, श्री जिनतिलक सुनिंद ॥१॥
सद गुरु पायि प्रणमु करी पामु गुरु आदेस ।

पुनित पामल बोलिसु, कहसुं अक्लेस ॥२॥
पुनि सु सुख उपजै ही, पुन्य संपति होइ ।
राजरीभ लीला घणी, पुण्य पावै सोई ॥३॥
पुण्य उत्तम कुल होवै, पुण्य पुरष प्रधान ।
पुण्य पुरो आवुषो, पुण्य सुधी निधान ॥४॥
पुण्य उपरि सुणी जो कथा, सुणता अचिरज थायि ।
हंसराज वच्छराज नृप हुआ पुण्य पसाई ॥५॥

मध्यभाग—

कामनी—विविध तेल ताहा कादि घं.रे कुमर न जाणै भेद ।
कुमरी नगणे नरीबई रे देखी धरौ विषाद ॥७१॥

कामनी—कंत मणै ताहां कामनी के दाहारै छेई मन कुड ।
नस टालसी साथि परि करसी सगलो ग्रो घुड ॥७२
वच्छराज कहै कामनी रे, चिंता म करि काय ।
जेइ वे जिण नई चितवई रे, तेह वो तिण नै थाय ॥७३॥

अंतिम पाठ नहीं है

६३७. **गुटका नं० १३६**—पत्र संख्या-११३ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

निम्न लिखित पूजा पाठ संग्रह है—रत्नत्रयपूजा, त्रिपंचाशतक्रियाव्रतोद्यापन, जिनगुणसंपत्तिव्रतपूजा (म० रत्नचन्द), सारस्वतयंत्रपूजा, धर्मचक्रपूजा (अपूर्ण), रविव्रतविधान (देवेन्द्रकीर्त्ति) वृहत् सिद्धचक्रपूजा ।

६३८. **गुटका नं० १३७**—पत्र संख्या-४-३६ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—गणधरवलय पूजा, एवं आचार्य केशव विरचित षोडशकारणपूजा है ।

६३९. **गुटका नं० १३८**—पत्र संख्या-६८ । साइज-८×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

भक्तामरस्तोत्र, (मंत्र सहित) तथा भक्तामर भाषा हेमराज कृत । एकीभावस्तोत्र मूल एवं भाषा । निर्वाण काण्ड भाषा । तत्वार्थसूत्र, पंचमंगल रूपचन्द कृत । चरचा संग्रह-(आठ कर्मों की प्रकृतियों का वर्णन, जीव समास वर्णन आदि हिन्दी में) तथा संस्कृतमंजरी ।

६४०. गुटका नं० १३६—पत्र संख्या-१०२। साइज-७½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
मधुमालती की बात	चतुर्भुजदास	हिन्दी	अपूर्ण

६४५ पद्य तक है।

पंचतंत्रभाषा	—	हिन्दी गद्य	

विशेष—मित्र लाभ तथा सुहृद भेद तो पूर्ण है किन्तु विग्रह कथा अपूर्ण है।

६४१. गुटका नं० १४०—पत्र संख्या-५६। साइज-७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
नेमीश्वरराजुलसंवाद	बिनोदीलाल	हिन्दी	—
पद	नेमकीर्त्ति	”	—
	सरणागति तेरो नाथ त्यारिये श्री महावीर।		
पंचकुमारपूजा	—	”	—
वीस विद्यमान तीर्थंकर पूजा	—	”	—
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
परीषह वर्णन	—	हिन्दी	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	”	—

६४२. गुटका नं० १४१—पत्र संख्या-६२। साइज-६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र (मंत्रसहित) तथा देवसिद्धपूजा है।

६४३. गुटका नं० १४२—पत्र संख्या-१५ से १८६। साइज-७×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण एवं जीर्ण।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) अजितशांति स्तवन	—	प्राकृत	४० गाथा
		प्रथम चार गाथायें नहीं है।	
(२) सीमंधरस्वामीस्तवन	—		
(३) नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ स्तवन,			
(४) वीर स्तवन और महावीर स्तवन —		संस्कृत	—

(५) पार्श्वनाथ स्तवन	—	संस्कृत	—
(६) शत्रुंजयमंडल श्री आदिनाथ स्तवन	—	„	१३ पद्य हैं
(७) गौतम गणधर स्तवन	—	„	६ पद्य हैं
(८) वर्द्धमान जिन द्वात्रिंशिका	—	„	—
(९) मारी स्तोत्र	—	„	१२ पद्य हैं।
(१०) भक्तामर स्तोत्र	—	„	४४ पद्य हैं।
(११) सचरित्र स्तोत्र	—	„	—
(१२) शान्ति स्तवन एवं वृहद् शान्ति स्तवन	—	„	—
(१३) आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	„	७७ पद्य हैं
		र० का० सं० १०४० भादवा सुदी १५।	
(१३) अजितनाथ स्तवन	जिनप्रभ सूरि	„	
(१४) वर्द्धमान स्तुति	—	„	
(१५) वीतरागाष्टक	—	„	
(१६) षष्टिशतं	भंडारी नेमिचन्द्र	„	
(१७) गौतम पृच्छा	—	प्राकृत	
(१८) सम्यक्त्व सप्तति	—	संस्कृत	
(१९) उपदेश माला	—	हिन्दी	
(२०) भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	संस्कृत	

६४४. **गुटका नं० १४३**—पत्र संख्या-५५। साइज-५×२ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों का सामान्य परिचय है।

६४५. **धर्मविलास**—द्यानतराय। पत्र संख्या-४४। साइज-१०½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८।

विशेष—धर्म विलास द्यानतरायजी की स्फुट रचनाओं का संग्रह है।

६४६. **पद संग्रह**—पत्र संख्या-४१ से ६६। साइज-११×६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० १४७।

६४७. **पाठ संग्रह**—पत्र संख्या-८८ से ११३। साइज-७¾×४¾ इंच। भाषा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२५।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	
(२) परमज्योति	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) निर्वाणकाण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	"	
(४) छहढाला	द्यानतराय	"	

६४८. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) पंच मंगल	रूपचंद		
(२) कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
(३) विषापहार	—	"	
(४) एकीभाव स्तोत्र	भूधर	"	
(५) जिनस्तुति	श्रीपाल	"	
(६) प्रभात जयमाल	विनोदीलाल	"	
(७) बीसतीर्थंकर जखडी	हर्षकीर्त्ति	"	
(८) पंचमेरु जयमाल	भूधरदास	"	
(९) बीनती	नवलराम	"	
(१०) बीनतियां	भूधरदास	"	
(११) निर्वाण काण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	"	
(१२) साधु वंदना	बनारसीदास	"	
(१३) संबोध पंचासिका भाषा	द्यानतराय	"	
(१४) बारह खडी	सूरत	"	
(१५) लघु मंगल	रूपचंद	"	
(१६) जिनदेव पच्चीसी	नवलराम	"	
(१७) बारह भावना	आलू कवि	"	
(१८) बाईस परीषह	भूधरदास	"	
(१९) वैराग्य भावना	"	"	
(२०) गज भावना	"	"	

(२१) चौबीस दंडक दौलतराम „
(२२) अक्षरी भूधरदास „

६४६. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-४ से १२ तक। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष—भक्तामर भाषा पूर्ण है एकीभाव स्तोत्र अपूर्ण है।

६५०. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-६१। साइज-१०×४½ इञ्च। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४३५।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	पत्र
(१) पाक्षीसूत्र	कुशल मुनिंद	प्राकृत	१ से २० तक
(२) प्रतिक्रमण	—	„	२० से २६ तक
(३) अजितशान्तिस्तवन	—	संस्कृत	३६ से ४१ तक
(४) पार्श्वनाथ स्तवन	—	„	४६ से ५० तक
(५) गणधर स्तवन	—	प्राकृत	५० से ५३ तक
(६) भक्तामर स्तोत्र	—	संस्कृत	५४ से ५८ तक
(७) शान्तिनाथ स्तोत्र	मालदेवाचार्य	„	

इनके अतिरिक्त ये पाठ और:—स्थानक स्तुति, नवपद स्तुति, शत्रुंजय स्तुति, कल्याणमन्दिर स्तोत्र। संध्या चौ विहार, पंचक, विचार, षटत्रिशंक, सामायिक विधि एवं संथारा विधि।

६५१. बुधजनविलास—बुधजन। पत्र संख्या-५६। साइज-१०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

विशेष—पं० बुधजनजी की रचनाओं का संग्रह है।

६५२. भूधरविलास—भूधरदास। पत्र संख्या-११६। साइज-७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १३२।

विशेष—भूधरदास की स्फुट रचनाओं का संग्रह है।

६५३. मित्रविलास—घीसा। पत्र संख्या-५१। साइज-१०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६५३। पूर्ण। वेष्टन नं० ११०।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री जिन चरण नमूं सदा, भ्रम तम नाशक भान।
जा सुम दर्शन दर्शतैं, प्रगटत आतम ज्ञान ॥१॥

चौपई—बंदू श्रीमत वीर जिनंद, मेटत सकल कर्म जग फंद,
बन्दू सिद्ध निरंजन देव, अष्टगुणातम त्रिभुवन सेव।
बंदो आचारज गुण लीन, जिन निज भाव सुद्ध अति लीन ॥
बंदो उपाध्याय करि ध्यान, नाशक मिथ्यातम अज्ञान,
बंदू साधु महा गंभीर, ध्यान विषय अति अचल शरीर।
बंदू वीतराग हित भाव, आतम धर्म प्रकाशन चाव ॥४॥
मित्र विलास महासुख दैन, बरनूं वस्तु स्वभाविक ऐन।
प्रगट देखिये लोक मझार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥५॥

—सवैया—

अन्तिम— कर्म रिपु सो तो च्यारु गति में घसीट फिर्यो,
ताही के प्रसाद सेती घीसा नाम पायो है।
मारामल मित्र वो वहालसिंह पिता,
तिनकी सहाय सेती ग्रंथ यो बनायो है ॥
यामें भूल चूक होय सोधि सो सुधार लीजो,
मो पै कृपा दृष्टि कीजो भाव यो जनायो है।
दिग निध सत ज्ञान हरि को चतुर्थ गन,
फागुन सुदि चोथ माल जिन गुन गायो है ॥

दोहा—आनंदमय आनंद करन हरन सकल दुख रोग।
मित्र विलास ग्रंथ यह निज रस अमृत भोग ॥

इसमें निम्न लिखित पाठों का संग्रह है:—

षट द्रव्य निर्णय—दूसरे अधिकार तक। भावों का पूर्ण सैद्धान्तिक विवेचन है।

द्वादस व्रत वर्णन, कषाय के पच्चीस भेद वर्णन, सम्यक् दृष्टि अवस्था वर्णन, गुरु स्वरूप वर्णन, द्वादसानुप्रेक्षा वर्णन, बाईस परीषह वर्णन, पंच प्रकारचारित्र वर्णन, मोक्ष तत्व वर्णन, एवं सुख दुख निर्णय/ग्रंथ का विषय है आत्मा में स्व और परभावों का सैद्धान्तिक विवेचन।

६५४. वचनशुद्धिव्याख्यान—पत्र संख्या-६। साइज-१२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६४३ जेष्ठ बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टन नं० १५१।

विशेष—व्याख्यान कर्त्ता झूंथालालजी को कहा गया है।

६५५. विनती पद संग्रह—पत्र संख्या-१४३ से १७६ । साइज-११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्फुट संग्रह लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४७ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विषय
विनती	भूधरदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	"	—
सम्मेदशिखर पूजा	नंदराम	"	—
स्फुट श्लोक	—	संस्कृत	—
पद	आतमराम	"	—
उपदेशी पद	—	"	—
पद	नवलराम	हिन्दी	—
आलोचना पाठ	जौंहरीलाल	हिन्दी	—
पद	द्यानतराय	हिन्दी	—

卐 ग्रन्थानुक्रमणिका 卐

अ

आ

द

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नेमिजी को व्याहलो	लालचंद	(हि०)	१०३
नेमि व्याहलो (नव मंगल)	हीरा	(हि०)	८४
नेमिनाथ का व्याहला	नाथू	(हि०)	१२०
नेमिराजमति वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	११७
नेमिनाथराजुल गीत	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	१६६
नेमिनाथचरित्र	अजयराज	(हि०)	२१८
नेमिजिनपुराण	ब्र० नेमदत्त	(सं०)	६४, २२३
नेमिनाथ मंगल	—	(हि०)	१२१
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	(हि०)	१४७
नेमिराजमति जखड़ी	हेमराज	(हि०)	१५१
नेमिदूत काव्य	विक्रम	(सं०)	२१०
नेमिदूत काव्य सटीक	टीका० गुण विनय	(सं०)	२११
नेमिनाथस्तवन	धनराज	(हि०)	२८६
नेमिनाथस्तवन	—	(हि०)	२१४
नेमिनाथस्तवन	—	(सं०)	३०६
नेमिनाथस्तोत्र	—	(हि०)	२८६
नेमिनाथस्तोत्र	शालि पंडित	(सं०)	२४०
नेमिशीलवर्णन	—	(हि०)	१३८
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	(हि०)	१५६
नेमीश्वरगीत	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	१६६
नेमीश्वरराजमतिगीत	विनोदीलाल	(हि०)	१५६
नेमीश्वरराजमति गीत	—	(हि०)	१६६
नेमीश्वरराजुल संवाद	विनोदीलाल	(हि०)	३०६
नेमीश्वर के दशभवांतर	ब्र० धर्मरुचि	(हि०)	१५७
नेमीश्वरगीत	छीहल	(हि०)	११७
नेमीश्वरजयमाल	भंडारी नेमिचंद्र	(अप०)	११७
नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	११३, १३२, २७२, २८८
नेमीश्वररास (हरिवंशपुराण)	नेमिचंद	(हि०)	१२७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नेमीश्वर लहरी	—	(हि०)	१५२
नेमीश्वर विनती	—	(हि०)	१५५
नैणसी (नैनसिंहजी) के व्यापार का प्रमाण		(हि०)	१४०
नैमित्तिक पूजा	—	(हि०)	१५४
पट्टावलि भद्रबाहु से पद्मनंदि तक		(सं०)	११७
पत्रिका	—	(सं०)	१७१, १३१, १३२
पद	अजयराज	(हि०)	११०, १६३
पद	कनककीर्त्ति	(हि०)	३००
पद	कृष्ण गुलाब	(हि०)	१५५
पद	कबीरदास	(हि०)	२६४
पद	कालिक सूरि	(हि०)	२८३
पद	किशनसिंह	(हि०)	१६३
पद	कुमुदचंद्र	(हि०)	२७३
पद	किशोरदास	(हि०)	१२७
पद	खुशालचंद्र	(हि०)	२६७
पद	चरनदास	(हि०)	२७५
पद	छीहल	(हि०)	११७
पद	जगजीवन	(हि०)	१२०
पद	जगतराम	(हि०)	१३३, १३७, १५५
पद	जगराम	(हि०)	१६२
पद	जिनकुशलसूरि	(हि०)	२७३
पद	जिनदत्तसूरि	(हि०)	२७३
पद	जिनदास	(हि०)	१६४, १२२, १५५
पद	जिनवल्लभ	(हि०)	२६०
पद	जीवनराम	(हि०)	१५५
पद	जोधा	(हि०)	१३७, १५३
पद	जौहरीलाल	(हि०)	१७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पद्मावतीपूजा	—	(सं०)	२०२, ६६ १५८
पद्मावतीकथा	—	(हि०)	१८०
पद्मावतीस्तो	—	(सं०)	१०४, २०२ २७५
पद्मावतीस्तोत्र	—	(हि०)	१०४
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	(सं०)	२०४
पद्मावतीसहस्रनाम	—	(हि०)	२०२, २०४
पद्मावतीस्तोत्रकवच	—	(सं०)	२४०
पद्मावतीचउपई	जिनप्रभसूरि	(हि०)	३०१
पंचकल्याणकपूजा	पं० जिनदास	(सं०)	५६
पंचकल्याणकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५६
पंचकल्याणकपूजा	—	(हि०)	५७, २०३
पंचकल्याणकपूजा	लक्ष्मीचन्द्र	(हि०)	२०७
पंचकल्याणकपूजा	टेकचन्द	(हि०)	२०२, ५७
पंचकल्याणकपूजा	—	(सं०)	२०४
पंचकल्याणकवडा	—	(हि०)	२६६
पंचकुमारपूजा	जवाहरलाल	(हि०)	५०
पंचकुमारपूजा	—	(हि०)	३०१
पंचमंगल	रूपचन्द	(हि०)	१०५, ११९ ११६, १२०, १२३, १४१, १४६ १५३, १५४, १५७, १६१, २४० २८६, २०४, २०५, ३०७, ३११
पंचमगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	११७, १३० १६५
पंचदशशारीरवर्णन	—	(सं०)	२५६
पंचपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५७
पंचपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	(हि०)	५७
पंचपरमेष्ठीगुण	—	(हि०)	१२१
पंचपरमेष्ठीपूजा	—	(सं०)	२०३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पंचपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	२०३
पंचपरमेष्ठीपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	२०४
पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन	पं० डालूराम	(हि०)	२४०
पंचपरमेष्ठीस्तोत्र	—	(सं०)	२७५
पंचपरमेष्ठियों के मूलगुण		(हि०)	३००
पंचपरमेष्ठियों की चर्चा	—	(हि०)	२७३
पंचपरमेष्ठीमंत्रस्तवन	प्रेमराज	(हि०)	१४१
पंचतंत्र	—	(हि०)	३०१
पंचमकाल का गण भेद	करमचंद	(हि०)	३००
पंचमीस्तवन	समय सुन्दर	(हि०)	१४७
पंचमीस्तुति	—	(सं०)	१४२
पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	(भ० सुरेन्द्र कीर्त्ति)	(सं०)	२०४
पंचमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	२०४
पंचमेरुपूजा	टेकचंद	(हि०)	५७
पंचमेरुपूजा	भूधरदास *	(हि०)	५७, ३११
पंचमेरुपूजा	विश्वभूषण	(हि०)	१५२
पंचमेरुपूजा	—	(हि०)	२०३, २८६
पंचमेरुपूजा	भ० रत्नचंद	(सं०)	२०५
पंचमेरुपूजा	अजयराज	(हि०)	१३०
पंचबधावा	—	(हि०)	१५८, १६६ २०२
पंचबधावा	पं० हरीवैस	(हि०)	१६५
पंचलब्धि	—	(सं०)	१६४
पंचसंसारस्वरुपनिरूपण	—	(सं०)	१८५
पंचसंधि	—	(सं०)	२३०
पंचसंधिटीका		(सं०)	२३०
पंचस्तोत्र	—	(सं०)	२३०
पंचस्तोत्र	—	(सं०)	२०५
पंचसहेली	छीहल	(हि०)	२६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
प्रवचनसार सटीक	अमृतचंद्र सूरि	(सं०)	१६३
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	बुलाकीदास	(हि०)	११,१८६
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३१, ३२, १८६
प्रश्नोत्तरमाला	—	(हि०)	१३७
प्रशस्तिका	—	(सं०)	२५६
प्रसंगसार	रघुनाथ	(हि०)	२६२
प्रस्ताविकदोहा	जिनरंग सूरि	(हि०)	१४१
पल्यविधानपूजा	रत्ननंदि	(सं०)	४८, १७२
पल्यविधान	—	(हि०)	१५७
पल्यविधानकथा	—	(सं०)	१५७
पल्यव्रतोद्यापनपूजा	शुभचंद्र	(सं०)	२०५
पल्यविधानकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि० प०)	२६५
पहेलियाँ	—	(हि०)	१३६
पाखण्डदलन	वीरभद्र	(सं०)	१८१
पाखीसूत्र	कुशाल मुनिंद	(प्रा०)	३१२
पाठसंग्रह	—	(प्रा०)	१७२
पाठसंग्रह	—	(हि०)	१७२,३१०
पाठसंग्रह	—	(सं०)	१७२
प्राकृतव्याकरण	चंड	(सं०)	२३०
प्राकृतव्याकरण	—	(सं०)	२३०
पांडवपुराण	बुलाकीदास	(हि०)	६४
पांडवपुराण	भ० शुभचंद्र	(सं०)	६४, १२३
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५८
पार्श्वनाथजयमाल	—	(सं०)	१५६
पार्श्वनाथ की बीनती	—	(हि०)	१५२
पार्श्वनाथजिनस्तवन	—	(सं०)	१४०
पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	१३८,२४०, २६१
पार्श्वनाथस्तवन	रंगवल्लभ	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तवन	विजयकीर्त्ति	(हि०)	१४१
पार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	१०६,११०, ३१२
पार्श्वनाथनमस्कार	अभयदेव	(प्रा०)	३०१,२६४
पार्श्वदेशान्तर छन्द	—	(हि०)	२४०
पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	१६५
पार्श्वनाथस्तुति	भाव कुशल	(हि०)	१४६
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	१०४,२८८, १४७, २४०, २७५
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(प्राचीन हि०)	१३३
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	(सं०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	कमललाभ	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	मनरंग	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनरंग	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	१५२
पार्श्वनाथस्तोत्र	मुनि पद्मनंदि	(सं०)	२४०
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(सं०)	२६६
पार्श्वनाथलघुस्तोत्र	समयराज	(हि०)	१४०
पार्श्वनाथ का सालेहा	अजयराज	(हि०)	३०,१६३
पार्श्वजिनस्थान वर्णन	सहजकीर्त्ति	(हि०)	१४७
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२१३
पार्श्वपुराण	भूधरदास	(हि०)	७२,१११, २१३
पार्श्वलघुपाठ	—	(प्रा०)	१०४
पार्श्वस्तोत्र	—	(सं०)	११२,२७६
पार्श्वस्तोत्र	पद्म प्रभदेव	(सं०)	११२,२८७
पार्श्व भजन	सहज कीर्त्ति	(हि०)	१४७
पार्श्वस्तोत्र	हरखचंद (धनराज के शिष्य)	(हि०)	२८६
प्रायश्चित्तसमुच्चय	नंदिगुरु	(सं०)	३१,१८६
प्रायश्चित्तसंग्रह	अकलंक देव	(सं०)	१८६

म

★ ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
१.	अध्यात्मसवैया	रूपचंद	—	६२८
२.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७७६	१
३.	आदिनाथ के पचमंगल	अमरपाल	—	८५६
४.	आदिनाथस्तवन	ब्र० जिनदास	—	५१५
५.	आराधनास्तवन	वाचक विनयविजय	सं० १७२६	६२१
६.	इश्कचमन	नागरीदास	—	४७०
७.	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा	—	सं० १७७२	१५२
८.	उपासकदशासूत्रविवरण	अभयदेव सूरि	—	१५४
९.	ऊषा कथा	रामदास	—	५१६
१०.	एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ	लक्ष्मणदास	सं० १८२४	५
११.	करुणाभरन नाटक	लच्छीराम	—	५८६
१२.	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	—	११
१३.	कर्मस्वरूपवर्णन	—	—	१८
१४.	कविकुलकंठाभरण	दूलह	—	४७१
१५.	कामन्दकीयनीतिसार भाषा	कामंद	—	२७६
१६.	काल और अंतर का स्वरूप	—	—	१८
१७.	गणभेद	रघुनाथ साह	—	५०७
१८.	गुणाक्षर माला	मनराम	—	६३२
१९.	गोमट्टसारकर्मकांड भाषा	पं० हेमराज	—	३७
२०.	गौतमपृच्छा	—	—	५४५
२१.	चंदराजा की चौपई	—	सं० १६०३	७३२
२२.	चन्द्रहंसकथा	टीकम	सं० १७०८	५४६
२३.	चारित्रसारपंजिका	—	—	१६१

क्रम संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
२४.	चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	सं० १८७१	१६२
२५.	चौबीसठाणाचौपई	साह लोहट	सं० १७३६	८६१
२६.	चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	नंदानंद	—	४८३
२७.	छवितरंग	महाराजा रामसिंह	—	५६७
२८.	छंदरत्नावली	हरिराम	सं० १७०८	५८२
२९.	जइतपदवेलि	कनकसोम	सं० १६२५	६०३
३०.	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	—	२४७
३१.	जानकीजन्मलीला	बालवृन्द	—	५६६
३२.	जिनपालित मुनि स्वाध्याय	विमलहर्ष वाचक	—	५५
३३.	जैनमार्त्तण्ड पुराण	भ० महेन्द्र भूषण	—	४८४
३४.	ज्ञानसार	रघुनाथ	—	५०७
३५.	तत्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	—	१६
३६.	तत्वार्थबोध भाषा	बुधजन	सं० १८७९	६५
३७.	तत्वार्थसूत्र भाषाटीका	कनककीर्त्ति	—	८२, ६२
३८.	तमाखू की जयमाल	आणंदमुनि	—	८०८
३९.	त्रिलोकसारबंधचौपई	सुमतिकीर्त्ति	सं० १६२७	७१६, ५६४
४०.	त्रिलोकसारभाषा	उत्तमचन्द	सं० १८४१	५६८
४१.	दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	—	५१४
४२.	दस्तूरमालिका	वंशीधर	सं० १७६५	८६४
४३.	द्रव्यसंग्रहभाषा	वंशीधर	—	१२४
४४.	श्री धू चरित्त	—	—	५७६
४५.	नववाडसज्झाय	जिनहर्ष	—	८८८
४६.	न्यायदीपिकाभाषा	पन्नालाल	सं० १९३५	३१२
४७.	नागदमनकथा	—	—	७५८
४८.	नित्यविहार (राधामाधो)	रघुनाथ साह	—	५०७
४९.	नेमिजी का ब्याहलो (नवमंगल)	लालचन्द	—	६२५
५०.	नेमिब्याहलो	हीरा	सं० १८४८	५५४
५१.	नेमिनाथचरित्र	अजयराज	सं० १७९३	६०६

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
५२.	नंदबत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १५६०	४८४
५३.	नंदरामपच्चीसी	नंदराम	सं० १७४५	५७२
५४.	परमात्मपुराण	दीपचन्द	--	२६८
५५.	पाकशास्त्र	अजयराज पाटनी	सं० १७६३	७२६
५६.	पार्श्वनाथ स्तुति	भावकुशल	—	८०६
५७.	पुरंदरचौपई	ब्र० मालदेव	---	५५७
५८.	पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्त्ति	सं० १७६६	५६७
५९.	पंचाख्यान (पंचतंत्र)	कवि निरमलदास	—	५६७
६०.	पंचास्तिकायभाषा	बुधजन	सं० १८६२	१३२
६१.	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्ल कवि	सं० १६०१	५८६
६२.	प्रतिष्ठासारसंग्रह	वसुनंदि	—	४०५
६३.	प्रद्युम्नचरित्र	सधारु	सं० १४११	४६७
६४.	प्रसंगसार	रघुनाथ	--	५०७
६५.	बारहखडी	श्रीदत्तलाल	—	८४०
६६.	बुधरामा	—	—	८०८
६७.	भक्तामरस्तोत्रभाषा	गंगाराम पांडे	—	७३१
६८.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	सं० १६६७	४२६
६९.	भक्तिभावती (भक्ति भाव)	—	—	५७६
७०.	भद्रबाहुचरित्रभाषा	चंपाराम	सं० १८००	२६६
७१.	भद्रबाहुचरित्र	किशनसिंह	सं० १७८३	५२७
७२.	मदनपराजय भाषा	स्वरूपचंद बिलाला	सं० १९१८	५६०
७३.	मधुमालतीकथा	—	—	५७४
७४.	महाभारत	लालदास	—	५१८
७५.	मानमंजरी	नंददास	---	५०५
७६.	मितभाषिणी टीका	शिवादित्य	—	३१६
७७.	मूलाचारभाषाटीका	ऋषभदास	सं० १८८८	२११
७८.	मृगीसंवाद	—	—	७२६
७९.	मोडा	हर्षकीर्त्ति	—	८०७
८०.	यशोधरचरित्र	परिहानंद	सं० १६७०	५१४
८१.	रामकृष्णकाव्य	पं० सूर्यकवि	—	२६३

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
८२.	रूपदीपपिंगल	जयकृष्ण	सं० १७७६	५८५
८३.	वच्छराजहंसराजचौपई	जिनदेव सूरि	—	६३६
८४.	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १७६०	७१६
८५.	वर्द्धमानपुराणभाषा	पं० केशरीसिंह	सं० १८७३	४७१
८६.	वंकचोरकथा	नथमल	सं० १७२५	३३४
८७.	विक्रमप्रबंधरास	विनयसमुद्र	सं० १५८३	६०३
८८.	विद्याविलासचौपई	आज्ञासुन्दर	सं० १५१६	६०३
८९.	वैतालपच्चीसी	—	—	५६२, ६०३
९०.	वैनविलास	नागरीदास	—	४७२
९१.	वैराग्यशतक	—	—	२७९
९२.	व्रतविधानरासा	संगही दौलतराम	सं० १७६७	५०४
९३.	शांतिनाथस्तोत्र	कुशलवर्द्धन शिष्य नगागणि	—	४४२
९४.	शालिभद्रचौपई	जिनराज सूरि	सं० १६७८	५९७
९५.	श्रृंगारपच्चीसी	छविनाथ	--	४७५
९६.	षट्मालवर्णन	श्रुतसागर	सं० १८२१	७९२
९७.	षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	—	५१४
९८.	सतरप्रकारपूजा प्रकरण	साधुकीर्त्ति	सं० १६१८	५३५
९९.	सप्तपदार्थी	भावविद्येश्वर	—	३१७
१००.	संखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुति	रामविजय	—	८०८
१०१.	संयमप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६६१	९४
१०२.	संबोधसत्तरी सार	—	—	२४१
१०३.	संबोधपंचासिका	रइधू	—	२३९
१०४.	साखी	कबीरदास	—	६२९
१०५.	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति	सं० १८३२	६८७
१०६.	सारसमुच्चय	कुलभद्र	—	२४४
१०७.	सारसमुच्चय	दौलतराम	—	२४५
१०८.	सुकुमालचरित्र भाषा	नाथूलाल दोसी	—	२९३
१०९.	सुबुद्धिप्रकाश	थानसिंह	सं० १८४७	६११

★ लेखक प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रन्थ सूची का क्रमांक
१.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	सं० १७६६	१
२.	आत्मानुशासन टीका	पं० प्रभाचन्द्र	सं० १५८१	२५३
३.	आदिपुराण	पुष्पदंत	सं० १५४३	४६६
४.	आराधनाकथाकोष	—	सं० १५४५	३१७
५.	उत्तरपुराण	पुष्पदंत	सं० १५५७	४७६
६.	उपासकाध्ययन	आ० वसुनंदि	सं० १८८८	४८
७.	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १६०४	६
८.	कर्मप्रकृति	,,	सं० १६७६	१२
९.	गोमट्टसार	,,	सं० १७६६	२६
१०.	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक पूजा	जयकीर्त्ति	सं० १६८४	३४५
११.	चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचन्द्र	सं० १५८४	३५३
१२.	जंबूस्वामीचरित्र	महाकवि वीर	सं० १६०१	४८५
१३.	जिणयत्तचरित्त	पं० लाखू	सं० १६०६	४८६
१४.	जिनसंहिता	—	सं० १५६०	३५६
१५.	णायकुमारचरिए	पुष्पदंत	सं० १५१७	४६०
१६.	,,	,,	सं० १५२८	४६१
१७.	तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	सं० १६५६	७८
१८.	तत्वार्थसूत्र वृत्ति	—	सं० १५५७	७६
१९.	त्रैलोक्य दीपक	वामदेव	सं० १५१६	६०१
२०.	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	—	१११
२१.	द्रव्यसंग्रहटीका	ब्रह्मदेव	सं० १४१६	९८
२२.	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	सं० १६५६	४६३
२३.	धन्यकुमारचरित्र	,,	सं० १५६४	३५१
२४.	धर्मपरीक्षा	आ० अमितगति	सं० १७६२	१७७
२५.	नंदबत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १६.....	५८५
२६.	पद्मनंदिपंचविंशति	पद्मनंदि	सं० १५३२	१६१

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
२७.	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	सं० १४८६	११६
२८.	प्रबोधसार	पं० यशःकीर्त्ति	सं० १५७५	१६५
२९.	प्रवचनसारभाषा	हेमराज	सं० १७११	२७१
३०.	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	सं० १६३२	१६६
३१.	बाहुबलिदेवचरिए	पं० धनपाल	सं० १६०२	५००
३२.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरि	सं० १७२५	४२६
३३	भगवानदास के पद	भगवानदास	सं० १८७३	४२६
३४.	भविसयत्तचरिए	पं० श्रीधर	सं० १६४६	५०५
३५.	भविसयत्तचरिए	,,	सं० १६०६	५०६
३६.	भावसंग्रह	देवसेन	सं० १६२१	१३३
३७.	,,	,,	सं० १६०६	१३४
३८.	,,	श्रुतमुनि	सं० १५१०	१३५
३९.	भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	सं० १६०७	५०७
४०.	मृगीसंवाद	—	सं० १८२३	७२६
४१.	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्त्ति	सं० १५८१	२१०
४२.	यशोधरचरित्र	वासवसेन	सं० १६१४	२७७
४३	लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १५५१	१३६
४४.	वड्ढमाणकहा	नरसेन	सं० १५८४	५१८
४५.	वड्ढमाणकव्व	पं० जयमित्रहल	सं० १५५०	५१६
४६.	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १८५५	७१६
४७.	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	सं० १५२४	३६५
४८.	षट्कर्मोपदेशमाला	अमरकीर्त्ति	सं० १५५६	५२३
४९.	षट्कर्मोपदेशमाला	भ० सकलभूषण	सं० १६४४	८६
५०.	षट्पंचासिका बालाबोध	भट्टोत्पल	सं० १६५०	४५६
५१.	समयसार टीका	अमृतचन्द्राचार्य	सं० १७८८	२८३
५२.	,,	,,	सं० १८०७	२८६
५३.	समयसारनाटक	बनारसीदास	सं० १७०३	२९०
५४.	संयमप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६८१	६४
५५.	सिद्धचक्रकथा	नरसेनदेव	सं० १५१५	५३३
५६.	हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	सं० १५८२	५३६

❋ ग्रंथ एवं ग्रंथकार ❋

संस्कृत-भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	२१३
	पुराणसंग्रह	६४
	मूलाचार प्रदीप	३३
	यशोधर चरित्र	५४, २१७
	शांतिनाथपुराण	६६, २२४
	सद्भाषितावली	८४, ६६, २३७
	सिद्धान्तसारदीपक	२०, १८२
	सुकुमालचरित्र	२१६
	सुदर्शनचरित्र	७६
सकलभूषण—	उपदेशरत्न माला	२३, १८८
	(षट् कर्मोपदेशरत्न माला)	
सदानंद—	सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति	२३१
आ० समन्तभद्र—	देवागमस्तोत्र	४०, २४०
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	३४
	समन्तभद्रस्तुति	१०८
	समाधिशतक	४६
	स्वयंभूस्तोत्र	१०५, ११०, १३७
सहस्रकीर्त्ति—	त्रिलोकसार सटीक	२३४
सिद्धसेन दिवाकर—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	१२६
	सन्मतितर्क	१६७
	शक्रस्तवन	३०१
सुधाकलश—	एकाक्षरनाममाला	८८
सुधासागर—	पंचकल्याणक पूजा	५६
सुबन्धु—	वासवदत्ता	२१८
सुमतिकीर्त्ति—	जिन विनती	१६४
	कर्मप्रकृति वृत्ति	१७६
	गोमट्टसार कर्मकांडटीका	८
सुमतिसागर—	दशलक्षण पूजा	५४
सुरेश्वरकीर्त्ति—	शान्तिनाथ पूजा	२०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पं० सूर्य कवि—	रामकृष्णकाव्य	२१८
सोमचन्द्र गणि—	वृत्तरत्नाकर टीका	२३३
सोमकीर्त्ति—	प्रद्युम्न चरित्र	२१३
	यशोधर चरित्र	७५, २१७
	सप्तव्यसन कथा	८६, २२६
सोमदेव—	यशस्तिलक चम्पू	७४
सोमप्रभाचार्य—	सूक्तिमुक्तावली	१००, २३७
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	१८४
	दक्षिणयोगीन्द्र पूजा	२०१
	भक्तामरस्तोत्र पूजा	२०३
	वर्द्धमान पुराण	२२३
हरिचंद—	धर्मशर्माभ्युदय	२१२
हरिभद्र सूरि—	षट् दर्शन समुच्चय	१८६
श्री वल्लभवाचक हेमचन्द्राचार्य—		
	दुर्गपदप्रबोध	२३१
हर्षकीर्त्ति—	सारस्वत धातु पाठ	२३१
	सूक्तिमुक्तावली टीका	२३०
हेमचन्द्राचार्य—	प्राकृतव्याकरण	२३०
	हेमव्याकरण	२३१
	अभिधानचिंतामणिनाममाला	२३०
	अनेकार्थसंग्रह	२३२

प्राकृत-भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयदेव—	पार्श्वनाथ स्तवन	२६४, ३०१
स्वामी कार्त्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	४६, १६१
आचार्य कुन्दकुन्द—	अष्ट पाहुड	३६
	द्वादशानुप्रेक्षा	१६२
	पंचास्तिकाय	१६, १८०
	प्रवचनसार	४२, १६३

अपभ्रंश भाषा

हिन्दी भाषा

* ये सब कथाएँ व्रतकथा कोष में संग्रहीत हैं।

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचपरमेष्ठी गुणस्तवन	२४०
	पंचपरमेष्ठी पूजा	५७
	बारहअनुप्रेक्षा	१४७
	सम्यक्प्रकाश	३६
संघपतिराय डूंगर—	पद	२१३
डूगरसी बैनाडा—	श्री जिनस्तुति	१६७
पं० डूंगो—	नेमिजी की लहर	१९५
तुलसीदास—	सीतास्वयंबर लीला	२७८
ब्र० तेजपाल—	चउबीसतीर्थंकर विनती	२६६
	श्रीजिनस्तुति	१६७
त्रिभुवनचन्द्र—	अनित्य पंचाशिका	४, १६४
	संबोध पंचासिका	११४
त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति—	सामायिकपाठ भाषा	१०८
श्रीदत्तलाल—	बारहखडी	१६२
थानसिंह -	रत्नकरण्डश्रावकाचार	१८७
	सुबुद्धिप्रकाश	८५
अह्लादयाल—	पद संग्रह	१०४
दरिगह—	जखड़ी	११६
द्यानतराय—	अष्टाह्निका पूजा	५०
	१०८ नामों की गुणमाला	१०१
	एकीभाव स्तोत्र भाषा	२६७
	चर्चाशतक	६, १३४, १७७
	जकड़ी	१३७, ३११
	दशस्थान चौबीसी	२५६
	धर्मविलास	२८, १३४, ३१०
	निर्वाणकाण्ड पूजा	२०२
	पदसंग्रह	१०४, १२६, १३७
		१६३, ३००
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२४४
	रत्नत्रयपूजाभाषा	५८
	शास्त्र पूजा	६०
	समाधिमरण	१६२
	सिद्धचक्र पूजा	६२
	सोलहकारण पूजा	६२
	संबोधपंचासिका	३७, ११६, १३२
		२७३, ३११
	स्तुति	१३४
दादूदयाल—	दोहा	२७५
दीपचन्द—	अनुभव प्रकाश	२३, १८२
	आत्मावलोकन	४०
	चिद्विलास	२७
	पद संग्रह	११३, १२७, १३२
		१५१, १५२, १६३, २६१
	परमात्मपुराण	४१
	विनती	३०७
बाबा दुलीचंद—	धर्मपरीक्षा भाषा	२६
	पूजनक्रिया वर्णन	५८
	मृत्युमहोत्सव भाषा	४२
दूलह—	कविकुलकंठाभरण	२४१
कवि देव—	अष्टजाम	२७१
मुनि देवचंद्र—	आगमसार	२७५
देवाब्रह्म—	विनती	१३२
	सास बहूका झगडा	२५७
देवीदास—	राजनीति कवित्त	२३६
देवीदास नन्दन गणि—		
	चेतनगीत	२७२
	वैराग्य गीत	१२२
संगही दौलतराम—	अध्यात्म बारहखडी	२५८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचमंगल	१११
	राहुल पच्चीसी	१३१, १३२, १४६ १५१, १६६, २२७
	समवशरण पूजा	११४
लालदास—	महाभारत कथा	१३६, २६७
मुनि लावन स्वामी—	शालिभद्र सज्झाय	१७४
साह लोहट—	अठारह नाता का चौढाला	११३, १३२ १६१, १६६, ३०६
	चौबीसठाणा चौपई	१६६
वर्धमान—	गुणस्थान गीत	११६, १६४
वृन्द—	दोहा	१३६
	पद	१३२
	वृन्द सतसई	१११
वृन्दावन—	चतुर्विंशति जिनपूजा	५१, १६६
	छन्द शतक	८८
	तीस चौबीसी पूजा	५२
	प्रवचनसार भाषा	४२
भ० विजयकीर्त्ति—	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	६१
	पार्श्वनाथस्तवन	१४१
	श्रेणिकचरित्र	७६
विजयतिलक—	आदिनाथ स्तवन	१४०
विजयदेव सूरि—	शीलरास	११३, २६१
विजयभद्र—	सज्झाय	१७४
विद्याभूषण—	लघु चौबीसी पद	२६४
विनयसमुद्र—	विक्रम प्रबंध रास	२६५
विनयप्रभ—	गौतम रासा	२०१
विश्वभूषण—	पद	१२१
	पंचमेरु पूजा	२५२
वाचक विनय सूरि—	आराधनास्तवन	२००

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विनोदीलाल—	नेमीश्वर राजमति गीत	१५६
	नेमीश्वर राहुल संवाद	३०६
	प्रभात जयमाल	३११
	भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा	२२६
	मान पच्चीसी	२५७
	राहुल पच्चीसी	१६५
मुनि विमलकीर्त्ति—	नंद बत्तीसी	६४
विमलहर्ष वाचक—	जिनपालितमुनि स्वाध्याय	१८४
विहारी—	विहारी सतसई	१११, १३८
कवि वीर—	मणिहार गीत	२६३
वील्हव—	नेमीश्वर गीत	
श्यामदास (गोधा)	पद	१६४
	नेमिनाथ का बारहमासा	१६६
पं० शिरोमणिदास—	धर्मसार चौपई	९६
शिव कवि—	किशोर कल्पद्रुम	१६६
शुभचन्द्र—	चतुर्विंशति स्तुति	१४३
	तत्वसार दोहा	१७८
शोभचन्द—	ज्ञान चूनडी	१२६
	पद	१५५
श्रीपाल—	जिनस्तुति	३११
श्रुतसागर—	षट्माल वर्णन	१४३
सदासुख कासलीवाल—		
	अकलंकाष्टक भाषा	३४, १८७
	अर्थप्रकाशिका	१४
	तत्वार्थसूत्र भाषा	१४
	भगवतीआराधना भाषा	३३, १८७
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	३४, १८७
	लघु भाषा वृत्ति	१४
	षोडशकारणभावना तथा	१८८

✱ शुद्धाशुद्धि विवरण ✱

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१× १ ३१५×१५	अन्तगडदशाओ वृत्ति	अन्तगडदशाओ वृत्ति
१× ७	इक्कीसठाणा चर्चा	इक्कीसठाणा—सिद्धसेनसूरि
१×१३	जीवपाठ	जीवसंख्यापाठ
१×१४	माघ सुदी	पोस बुदी
२×१६	—	१ से १७ तक सभी पाठ रामचन्द्र कृत हैं।
४× ६	कणयणिंद्	कणयणंदी
५×२२	पावछी	यावछी
८×१५	वोछं	वोच्छं
६×२१	समोसरमवर्णन	समोसरणवर्णन
१३×२१	१८३६	१८४६
१५×१७	×	१४२६
२०×२२	जिनाय	—
२४× ७	भंडार	भंडारी
२८×२२	—	भाषा—हिन्दी
२६× ६	रचनाकाल ×	रचनाकाल—
३६×२३ ३४५×२५ ३५३×२४	रइधू	अज्ञात
३८×१६	मैं प्रतिलिपि की थी	मैं संशोधन करके प्रतिलिपि करवाई थी
३६× ७	५१	२५१
३६×२०	चिन्तान	चित्तान्
३६×२०	धर्म रंजितचैतसान	धर्मरंजितचेतसान
४१× ६	भाषा—अपभ्रंश	—
४५×१८	विद्यानन्दि	विद्यानन्द

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४६×१४	१८८३	१८६३
४६× ७ ३४६×१२	आ. समन्तभद्र	पूज्यपाद
४७×१०	यति	अभिनव
४७×१३	३१	३१२
५८×१०	सं० १५२७ श्रावण सुदी २	सं० १८६३ अषाढ सुदी ४ बुधवार
६०×२३	—	भाषा-संस्कृत
६१× ३	प्राकृत	अपभ्रंश
६५×२५	रामचन्द	रायचन्द
६६× ८	अधुसारि	अनुसारि
६६× ७	बसतपाल	वसंतपाल
७०×१८	प्रद्युम्नचरि	प्रद्युम्नचरित – सधारु
७३×२४	भविसपत्त	भविसयत्त
७४× २	संस्कृत	अपभ्रंश
७५× ४ ३३६×२३ ३५२×३०	परिहानन्द	नन्द
७६×२२	परिहानन्द	परि हां नन्द
७८×१६	सं० १६१८	सं० १६७८
७८×२६	आराधना	दौलतरामजी कृत आराधना
७६× ३	श्रेणिक चरित्र	श्रेणिक चरित्र (वर्द्धमान काव्य)
७६×२१	कवि बालक	कवि रामचन्द "बालक"
८१×१६	गौतम पृच्छा	गौतमपृच्छा वृत्ति
८२× १	अंतिमपाठ—"पाठक पद संयुक्त" के पूर्व निम्न श्लोक और पढ़ें:—	

श्रीजिनहर्षसूरिणां सुशिष्या पाठकवरा ।
श्रीमत्सुमतिहंसाश्च तच्छिष्योमतिवर्द्धते ॥ १ ॥

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८४×१८	अ० मालदेव	मालदेव
८४×२१	अनुरुव कोठ	अतरुव कोठ
८४×२५	अगर्या मील तो	अगमी मीलतो
८५×२५	मारामल्ला	मारामल्ल

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८५×२५	पथ	पथ्य
८६× ८	आ०	अ०
८७× ७	१७०८	१७६५
८७× ७	लेखनकाल ×	लेखनकाल–सं० १८०६ फागुण बुदी १२
८७×२१	रचन	रचना
६०×१५	प्रारंभिक पाठ के चौथे पद्य से आगे निम्न पद्य और पढ़ें—	

अंतर नाडी सोखै वाय, समरस आनंद सहज समाय ।
विस्व चक्र मैं चित न होय, पंडित नाम कहावै सोय ॥ ५ ॥
जब वर खेमचन्द गुर दीयो, तब आरंभ ग्रंथ को कीयौ ।
यह प्रबोध उतपन्यो आय, अंधकार तिहि घाल्यो खाय ॥ ६ ॥
भीतर बाहर कहि समुझावै, सोई चतुर तापै कहि आवै ।
जो या रस का भेदी होय, या मैं खोजै पावै सोइ ॥ ७ ॥
मथुरादास नाम विस्तारयो, देवीदास पिता कौ धारयौ ।
अंतर वेद देस में रहै, तीजै नाम मल्ह कवि कहै ॥ ८ ॥
ताहि सुनत अदभुति रुचि भई, निहचै मन की दुविधा गई ।
जितने पुस्तक पृथ्वी आंहि, यह श्री कथा सिरोमणि ताहि ॥ ६ ॥
यह निज बात जानीयो सही, पर्चै प्रगट मल कवि कही ।
पोथी एक कहुं तै आनि, ज्यो उहां त्यौं इहां राखी जानि ॥ १० ॥
सोरह सै संबत जब लागा, तामहि वरष एक अद्ध भागा ।
कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादसी, ता दिन कथा जु मन में बसी ॥११॥
जो हों कृष्ण भक्ति चित करौं, वसुदेव गुरु मन में धरौं ।
तो यह मोपैं ह्वै ज्यौं जिसी, कृष्ण भट्ट भाषी है तिसी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मथुरादास विलास इहि, जो रमि जानैं कोय ।
इहि रस बैधे मल्ह कहि, बहुरनि उलटै सोय ॥१३॥
जब निसु चन्द्र प्रकासै होइ, तब जौ तिमिर न देखै कोइ ।
तैसे हि ज्ञान चन्द्र परकासै, ज्यौं अज्ञान अंध्यारो नासै ॥१४॥
परमात्म परगट है जाहि, मानौ इहैं महादेव आहि ।
ग्यान नेत्र तीजैं जब होई, मृगतृष्णा देखै जगु सोई ॥१५॥

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
	अनुमै ध्यान धारना करै, समता सील मांहि मन धरै । इहि विधि रमि जो जानै सही, महादेव मन वच क्रम कही ॥१६।	
६०×२६	या र	यार
६१×३ / ३६४×७	उतमचंद	टोडरमल
६४×६	बनारसीदास	द्यानतराय
१००×१८	वाचक विनय सूरि	वाचक विनय विजय
१०१×६	उगणसीयइ	उगणतीसइ
१०१×६	राते रचउ	राते
१०१×७	कारयां	कारणां
१०१×६	इठवन	इतवन
१०३×२६	नेमिदशाभववर्णन	नेमिदश भववर्णन
१०५×२२	मानतुंगाचार्य टीकाकार	मानतुंगाचार्य । टीकाकार
१०७×२१	६	५
१०६×१	प्रथम पंक्ति के आगे निम्न पंक्ति और पढ़ें— "शिष्य ताहि भट्टारक संत, तिलोकेन्द्रकीरति मतिवंत ।	
११०×११	प्राकृत („)	अपभ्रंश
११४×१,१८	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
११४×२३	दोह	दोहा
११५×२४	१६६१	१६६३
१ ७×१४	नि कनकामर	मुनि कनकामर
१२१×२	१०६०	१७१७
१२७× २	ोष	विशेष
१३ ×६	मनरकट	मरकट
१३५×३	बडा चादन्त	बड़ाचा दन्त
१३७×५	बंदो के पठनार्थ ने	चंदो के पठनार्थ
१३८×११	" " क	धार्मिक
१३६×१	का नाम	कर्त्ता का नाम
१३६×२६	चरित	धू चरित

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४६×५	ललचचंद	लालचन्द
१४७×१६ ३६३×२७	अमरमणिक	अमरमणिक के शिष्य साधुकीर्ति
१४८×२	माणिक सूरि	पुण्यसागर
१४८×२४, २६ ३३८×२६ ३५०×२६	मोडा	मोरडा
१४६×२१	गुजराती	हिन्दी (राजस्थानी)
१४६×३	मोडो	मोरडो
१५०×११	असुमालीया	असु मालिया
१५०×१८	कापथ	कायथ
१५०×२०	पखार	परवार
१५१×६	नारी चरित्र	नारी चरित्र संबंधी एक कथा
१५५×१०	जैन	जे न
१५५×२१	बुधजन	द्यानतराय
१५०×६	राज पट्टावली	देहली की राजपट्टावली
१५६×१०	राजाओं के	देहली के राजाओं के
१६३×१५ ३७०×२१	ज्ञानबत्तीसी	अध्यात्म बत्तीसी
१७०×६	३५ वें पद्य के आगे की पंक्ति निम्न प्रकार है— तस शिष्य मुनि नारायण जंपइ धरी मनि उल्हास ए ॥१३५॥	
१६६×८	पत्र संख्या– ।	पत्र संख्या–१६ ।
१७८×२६	रचनाकाल–× ।	रचनाकाल सं० १४२६ ।
१८०×१६	कण कणत्व	देवपट्टोद्याद्रितरुण तरुणित्व
१८०×१८	लोधा ही	लोधाही
१८४×६	विमलहर्षवाचक	भाव
१८७×११	१६०७	१६००
१८७×१६	१८२१	१६२१
१८८× ६	१४४४	१६४४
१६०×२१	श्रीरत्नहर्ष	श्री रत्नहर्ष के शिष्य श्रीसार
१६४× ४	भव वैराग्य शतक	वैराग्यशतक

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१६४×१८	भूधर	पं० भूधर
१६६×१७	धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
२००×२५	तेलाव्रत	लब्धिविधान तेला व्रत
२०४×१५ २१८×१०	आ० गणिनंदि	आ० गुणिनंदि
२०५×२४	पीले	पील्या
२१८×१६	पंडि	पंडित
२१६×२४	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १६१८
२२१×१२	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
२२१×१३	सं० १७०३	१७१३
२२४×१६	अष्टान्हिका कथ	अष्टान्हिका कथा-मतिमंदिर
२२७× ७	कनककीर्ति	कनक
२२७×२१ ३३६× २	बंकचोरकथा (धनदत्त सेठकी कथा)	बंकचोरकथा, धनदत्त सेठ की कथा
२२८×२१	देव ए	देवरा
२२८×२६	सै मदारखां	सैमदारखां
२३५× २ ३५०×१८ ३६४×५	कामन्द	—
२३५×१५	१७२६	१७२८
२३७× ७	१०८०	१७८०
२३८×१०	कुमुदचन्द्र	मू० क० कुमुदचन्द्र/टीकाकार उतमऋषि
२४०× ८	जयानंदिसूरि	जयनंदिसूरि
२४०×१४	शालिपंडित	शालि पंडित
२४३×१७	(युगादि देव स्तवन)।	(युगादिदेव स्तवन) विजयतिलक
२४३×२७	मिघुण्यो	मिंघुण्यो
२४४× २	ए मणाइ	एमणाइ
२४५× ६	ज्योतिष (शकुनशास्त्र)	वास्तुविज्ञान
२४६× ७	वराहमिहरज	वराहमिहर
२५२×१०	महिसिंह	महेस

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२५२×१४	महसंहि	महेसहि
२५२×१९	गोत्रवर्णन	खंडेलवालों के गोत्र वर्णन
२५३× ६	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १८८९
२५३× ६	लेखनकाल सं० १८८९	लेखनकाल × ।
२५३×१५	छइ सतीयासिंह	छइस तीयासिंह
२५४×२५	अब्दनीवासी	अब्द नीवासी
२५५×१४	हेमविमलसूरि	हेमविमल सूरि के प्रशिष्यगण संघकुल
२५७×१६	समासो	तमासो
२५८× ९	व्रतविधानवासों	व्रतविधानरासो
२५९× ५	श्रावण	श्रावक
२६०× ८	२७०	२७० रचना काल सं० १७४३
२६७× ९	५१६	५१८
२६९×१२	बालक	रामचन्द्र 'बालक'
२७०× ६	२६	२४
२७१×१२	गोट	गोत
२७३× ६	वीर सं०	विक्रम सं०
२७३×११	हिन्दी	संस्कृत
२७३×१५	१६५८	१६१८
२७३×१८	पद २	जिनदत्त सूरि गीत
२७३×१८	जिनदत्तसूरि	
२७६×८	पाठ्य	पाठ
२७९×१३	भूषाभूषण	भाषाभूषण
२८०×१०	पत्रावली	रूपत्रावली
२८४×१८, ३२८×१६, ३५१×२२	श्री धूचरित	श्री धूचरित—जनगोपाल
२८९×२८	१७६६	१६६६
२९०× ६	भाथइ	भाषइ
२९०×१२	तसंघरन वनि घथाइ	तसं घर नवनिधथाइ
२९०×१२	अहुकउ न तरुवइ	अधक उनत हुवइ

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२६१×२८	जिनदत्त सूरि	समयसुन्दर
२६१×२०	र० का० सं० १७२१ पत्र १०	—
२६२×८ ३१८×१८	भाति छत्तीसी	प्राति छत्तीसी
२६२×८ ३३८×१८	यशः कीर्त्ति	सहजकीर्त्ति
२६२×१४	हरिकलश	हीरकलश
२६२×१४	सं० १६३२	१६३६
२६४×७	थाकलपुरि	पाडलपुरि
२६४×११	भारवदा	भैरवदास
२६४×२८	वेतालदास	—
२६७×६	२१८	३१८
३०१×१६	„ (१२)	संस्कृत (१२)
३०१×२०	„ (१३)	हिन्दी (१३)
३०१×२५	चतुराई	परिचाई
३०३×६	१७४०	१७४४
३०४×२ ३२०×२४	गुनगंजनम	गुनगंजन कला
३१०×१५	षष्ठिशतं	षष्ठिशत प्रकरण
३१०×१५	„	प्राकृत
३१२×६	६१	८१
३१२×६	कुशलमुनिद	—
३१५×८	चैनसुखदास	चैनसुख
३१५×१५	मुनि महिसिंह	मुनि महेस
३१६×७	गणचन्द्र	गुणचन्द्र
३१८×६	उपदेशशतक-बनारसीदास	उपदेशशतक-द्यानतराय
३२०×१६	यति धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
३३१×११	मेदास	धर्मदास
३४१×२२	२६१	२६०
३५०×१८	२७६	३७६
३६२×१४	गोयमा	गोयम
३६३×१४	संबोध पंचासिका	—
३६४×७	उत्तमचंद्र	टोडरमल
३६५×५	कामन्द कामन्दकीय नीतिसार	—